गहामारतम्।

বিরাটপর্ব।

म र विरित प ता मि थ गे छ म्

শ্রীনীলক্ঠ বির্চিত্র। 'ভারতভাবদীপ' সমাখায়া টাক্যানুগত্য।

প্রাচীনার্য-বিদ্যান্ত্রাগিণঃ স্থাবিখনত-চতুর্রী-বংশাবতং সস্য শ্রীযুক্ত হরিশ্চগ্রৈ দেব মহামুভাবস্থা অভাগন্যা

<u> এীযুক্ত এই রচুড়ামণি ভট্টাচার্যোণ অনুবাদিতমু</u>

প্রীযুক্ত উমেশচন্দ্র বিদ্যারত্ন ভট্টাচার্য্যের
নংশে,থিতম্, প্রকাশিতম্
নর্মাং প্রয়াবেশিক্তম্ব

dade visition de aste

শ্রারামপুর।

আল্ফেড্ যতে

আঁষত্নাথ বন্দ্যোপাধ্যাক্ষেন প্রযন্তামূজিতম্।

म क्रांकाः ३९५१।

শ্রীশ্রীজগদীশ্বরো।

জয়তি।

--: :-

মহাভারতীয় বিরাটপর্বাণ

कृठीश <u>डम्</u>

মূলপা

| প্রকরণ | | পৃষ্ঠায়াং | পড়েক) |
|--------------------------------------|-------|--------------|--------|
| অজ্ঞতি বাসাথ মুগিছিরী দীনাং মন্ত্রণা | | ۵ | 5 |
| পে.ম্যাসেপ্ৰলেশঃ | | 2 @ | 2 |
| অক্ত সং স্থাপন্ম্ | | ₹ c c | ۵ |
| <u> ঐজুগ'তেজাত্র্য</u> | . , | ₹७ | 25. |
| যুধিষ্ঠিরসা বিরাট ভবনে প্রবেশঃ | | ৩৪ | . 9 |
| ভীষ্ঠা প্রেশঃ | | 80 | 3 |
| (जोशमाः अत्यनः | . • • | ं ४० | ò- |
| সহদেবস, প্রেশঃ | | 86 | ٥ |
| जञ्जूनमा अहरमः | ••• | a s | ٠ ع |
| নকুলস্য প্রেশঃ | ••• | aa | 4 |
| জীমৃতস্বধঃ | • • • | ৫৯ • | ۵ |
| (जोभनी की ठक मश्रमः | - | ৬৫ | 5 |
| (जीभनाः श्रा वाद्यसम् | | 42 | 5 |

| এ ক ং ণ | | প্ঠায়াং | পতে |
|---|---------------|---------------|------------|
| কীচকেন জে: পদিস্ভাবমী্নন্ | | ์ ¶8 | 2.5 |
| टकार्यनी जैभ नचानः | | ۲۶ | 9 |
| चे के मी दशः | | 200 | 2€ |
| উপকী इकम्। दश् | | *558 | α |
| क) क्षा म।इः | | 224 | \$ |
| ভূটিয়াধনমূম দেশ চারগণীনাং প্রভাগ গ | মনন্ | 5 22 | 2 |
| কৰ্ণ হঃশাসন বক্তা | | 258 | ; a |
| দ্রো নে কে তৃত্য | e # • | ३ २१ | • |
| ভীষ্সাবজ্তা | | タミケ | 27 |
| রূপার্ শ্যন িব ক ৃতা | • | 3 00 | 2 |
| মৎ मात्र (१ स्माया मिना १ युक्त या वा 🗸 | | ५ ७ a | 2 |
| भ व मा ताज मा मभ द्रा दन्य भिः | ** | 20% | α |
| স্থৰ্মগ্ৰহ বিৱাট্যা যুদ্ধং | | 585 | : २ |
| সুশশ্ৰে। বিএ≢েম্ | | 28 <i>⁄</i> a | â |
| বির্টিসা বিজয় ঘোষন্ | | 5.0 | ·y |
| উত্তরস্য আত্মন্থ। | | 200 | 28 |
| ्जिशिमा। इश्तनामात्रशः कथनम् | | 238 | 53 (|
| উত্তরসাযুদ্ধ যাতা | | 292 | ង |
| কুৰুদৈনঃ দশনে উত্তরদা ভয়ষ্ সজ্জু | ८ नम | | |
| অংশ:সন্থ | | <i>ડ હ હ</i> | 9 |
| কৌরবাুনাং অআছুন বিষয়ক কে | अ श्चि | | |
| ক্থীৰুন্ | | 293 | 30 |
| উত্তরং প্রতি অর্জ্জনসঃ সম্রগ্রহণাদে | ** | ১ 98 | 7.9 |
| উভ্রেণ অঠারে∤পণ্ | | ১৭৬ | > |
| উত্তরদা অ্স্রবিষয়ে প্রশ্ন্ | | 299 | á |
| অর্জুনসঃ প্রভুত্তরম্ | ••• | >> • | å |
| | | | |

·---

| শ ^হ ংর,গ | | পুর্বাহাৎ | পড়িক |
|--------------------------------------|-------------------|-----------|------------|
| উত্তরমা পাওব পরিচয় প্রাপ্তিঃ | | 228 | 7 |
| ञार्জ्यमा शुरक्ष श्रमग् | | 359 | · bu |
| কৌরবানাং উংপাত দর্শনন্ | ••• | د ۵۵ ٠ | • 1 |
| ছুৰোগনদা বক্তা প | | \$19 | b ~ |
| কৰ্পা আল্লেখ্য। | | . 200 | ς. |
| রূপাচ্যাদা বক্ত তা | | २०० ' | 201 |
| অশ্বাহা কৰ্মা উৎসন্ | | , 40% | Œ. |
| জে শিবিষ্ স ্তত্তা | | >,>8 | 22 |
| ভীশ্ব হর্মা | | \$2 b | \$ |
| গোধন প্রত্যাহরণ মূ | | 2 8 5 | ٥ د |
| অৰ্জুনেন নহ কৰ্ণ দলেং আমং প্ৰ | দ ন গ্ৰ | १२ 🛚 | ຶ 2 |
| অৰ্জুনেন সহক্ৰাগ্ৰা সংসং গ্ৰামং | (₩- | | |
| বান: মাগমনং কুণ্ ন্য পালায়ন | Ska . | २७७ | 9 |
| দোণদা যুদ্ধং পলায়নঞ | | ₹83 | Œ |
| তাশ্বস্থায় হৃদ্ধং | • | २०१ | 70 |
| কণ্ম্য পুন যুদ্ধং প্লায়নঞ | | २७० | α |
| इ ः गामनामीनाः यु क र | | २ ७७ | 23 2 |
| मक्रून युक्तः | | ₹9₽ | 2 |
| ভী¶ সাযুদ্ধং পল¦য়ন%। | | २९७ | 22 |
| ভুৰেশ্ধনসা যুদ্ধং প্ৰায়ন্ত | | ३ १४ | ٤٠ |
| युक्तमा উপमः इ⊹दः | | २ ४ २ | 5 a |
| অৰ্জুনোত্তরয়েঃ কথে।প কথনং | ••• | २०४ | 3 0 |
| উত্তরস্য নগর প্রবেশঃ সুধিষ্ঠির বিরাট | र _{क्} र | | |
| দুতি ক্রীডাউত্তরং প্রতি বিরু | টিশ্য" | | |
| সময় বিষয়ক প্রশাঞ্চ | | २५७ | |

· · · · · ·

| প্রকরণ | | পৃষ্ঠায়াং | পঙ্জী |
|------------------------|-----|------------|-------|
| বিরাটোত্তর সমাদঃ | ••• | ७०७ | ٥ د |
| পাত্ৰানাং আৰু প্ৰকাশঃ | ••• | ৩ ৬ | * |
| উত্তরা বিবাহ প্রস্তাবঃ | ••• | ७५० | 2 |
| উত্তরায়া: বিবাহঃ | *** | ₹\$@ | 2 |
| | | | |

স্থূচীপত্রম্। মূলভা সম্পূর্ণং।

মহাভারতীয় বিশ্লাইপ্রধাণঃ ভাষপত্তি। —:○:—

| | মূৰ ন্ত | | | | | |
|---|----------------|-------|---------------|---------------------------|-----------------------|--|
| | পৃষ্ঠায়াৎ | | পঙ ুকো | षशकाः | छिकि: | |
| | ર | ••• | 9 | পিতামহ:্ | শিতামহা: | |
| | ૭ | • | , >4 | প্রভূ ঃ | প্রভুঃ | |
| | 9 | ••• | ۵ | নিয়োৎসান্তি | নিযোৎ <i>স্যান্তি</i> | |
| | b - | ••• | ъ | বর | বরঃ | |
| | 78 | ••• | > | रमतिक्रा | देमबदक्तुः। | |
| | 38 | •.• | v | टेमबिक्री | टेमब क् री | |
| | 22 | | * | বশতিং | ব সতি ং | |
| | 92 | ••• | 2 | বাহ | বাহু | |
| | ৩৯ | ••• | ٤. | কৰিত। | কৰ্শিতা | |
| ! | 60 | ••• | ર | ব্ৰুয়া | জ্ঞায় : | |
| | 89 | | 3 2 | ₹ | হ | |
| | 88 | ••• | • | নাশ্ৰদ্ধ ত | নশ্ৰদ ধত | |
| | ¢0 | ••• | 20 | ৰ্কদিতং | ৰ্কিদিতং . | |
| | α२ | ••• | 9 | जीन! | ন্ত্রীণা | |
| | () | ••• 1 | ર | য ূৰপো | যুখপো | |
| | ৬৪ | ••• | 39 | কুৰ্মানাঃ | কুৰ্কানাঃ | |
| | 66 | ••• | 2 | রম্ম্যুলাঃ | রম্যশ্বঃ | |
| | 49 | ••• | ર | रि मञ् का । | रेमब्रक्कुतां . | |
| | 90 | ••• | 2 p.* | रेम त्रक्रूग | रमत्रक्रु, ग | |

| পৃষ্ঠারণ | e, | পঙ্কো | অশু দ্ধঃ | र क |
|-------------|------------------------|------------|-------------------------|----------------------------|
| 95 | 4.4.1 | ફ 🔨 | <i>ক</i> ত _ু | ক ঠ |
| 25 | | b. ** *** | ক ্ষ ুুুুুুুুুু | कार्यान् |
| . کون نواج | \mathcal{A}_{γ} | 20 1 | সংহাধিতা | সহেগ্যিতা; |
| : 49 | ••• | 22 | মহ স্থিঃ | म र्शेख |
| 7 : P | | ઢ | ভশাং | তন্মাৎ |
| 3051 | | α΄ | ম্ৎস্যাপ্ৰাং | মংস্যান্যং |
| 202 | | હ | নিবীয়ান্ | নিবীয্যান্ |
| 200 | | २० | (ঘ্রাং | (বয়ং |
| २७० | | ີ | সানাগা ্ | সন(গা |
| २०৮ | | ৬ | रञ्जू | ই ভূ রু |
| २८ व | | 28 | , প্রতিরন্ধ | প্র তিন ংর দ |
| 3 88 | • • • • | 58 | প্ৰকাশত্তে | প্রকাশন্তে |
| २०२ | | 8 | ব্যশায়স্ত | ব∫শায়ন্ত |
| २७8 | | 3 9 | नीमखि" | मीम छ |
| ३७१ | ••• | 55 | ভীগ্যভি | ভীমাভি |
| २९७ | • • • | 5 0 | रिमनाष्ट् | रेमरमञ्जू |
| ર અ્ | • • | 29 | অভূর | অ ∤হ ূয় |
| ر ده | | > | প্ৰবিশৈ | প্রবিশোব |
| ೦೦೦ | | ২ | त्रमञ्ल∖ | রুছন্লেশ্ |
| ຸ່ວເວ | ••• | ? | মহেযুভিঃ | মহে যু ভিঃ |
| 022 | | २० | ম <i>ভ্</i> ষ্য | মভ্যা |
| | | | | |

সম্পূর্ণস্—মূলস্য। শুদ্ধিপত্রস্।

এশ্রজগদীশ্বরো।

ব্রুর তি।

-:::-

মহাভারতীয় বিরাটপর্ব্ব টাকায়াঃ

শুৰি পত্ৰয়।

| | | • | • | |
|------------|------|----------|-------------|--------------|
| পৃষ্ঠায়াং | | পঙ,কো | অভিদি: | छिद्रिः |
| > | •••• | >< | বদন | यम न् |
| 8 | 4 | ٠ | শঙ্ক | ₹ |
| b - | ••• | > | বস্থকেঃ | ৰাস্থকেঃ |
| ٥٤ | 4++ | • | অভিঃ | ত†ভি: |
| 20 | ••• | ~ | मानामीम् | मानामीन् |
| 78 | ••• | ર | লিকা | মতল্লিকা |
| 28 | ••• | ৩ | ইত্যেমতব | • ইত্যেব |
| 59 | ••• | ۵ | হুফা | इंख |
| | | | | |

| - | | - | | |
|-----------------------|-------|------------|--------------------|------------------|
| পুঠারাং | | পঙ্কৌ | অশুদ্ধি: | শুদ্ধি: |
| \$17 | ., | عسما | ্ৰেৰ স্ব | (দেব |
| ₹ • ₫′• | | 5 | অন্ স্য | অন্যস্য |
| ٥. | | 2 | আকাশাৎ | আকাশং |
| હ ₍ | * · • | 8 | মুক্ত | मू खुन् |
| <i>७</i> ऽ | ••• | 9 | বিবিধানা | বিবিধান্য |
| ৩১ | ••• | 8 | भू त्नी | পুৰেৰ্ |
| ં ૧ | *** | ર | जा क | আৰ্দ্ধ |
| ত প | ••• | 9 | कृंटन | कूटुल |
| ৬৭ | • • • | : ₹ | जगार्था | এবা থে |
| © 3 | • • • | ં | ব্ৰুয়†ঃ | ক্রায়া: |
| ×° | • • | r | रप्र{ | যদ্ব। |
| 88 | | Çn. | নখেন্ | নংখ্যু |
| 1 (10 | | · . | শতেভংজ | শতেতাত্ত্ |
| e n . | ••• | ν. | পুতকে | পুস্তকে |
| ৬১ | ···· | ৩ | স ত্ৰব†ৰ্থঃ | স এবার্থঃ |
| ৬৮ | ••• | ٥٥ | গজেতি | গজেতি |
| · ૧ ૨ | | ۵ | ববন† | বচনা |
| 99 | ••• | ৬ | শাগাচ্ছ | মা গক্ |

| পৃষ্ঠায়াঃ | | পঙ্কো | অশুদ্ধি: | ग्राह्यः |
|--------------------|----------|------------|---------------------------|------------------------|
| ४२ | | کر پیری | | स् ठाट ङ |
| ৮9 | : | 2 | ষ তীন∤ং | য ীৱা |
| b 9 | | •α | मृक्षे १ | দৃষ্ট্ 1 |
| 25 | | ર | অভ্যকীয়ান্ত: | অভ,কীৰ্মান্ত |
| ಶಿತ | • • • | 2 | বেষেণ | ে ংশন |
| 86 | | , a | ভূ স্করং | ুষ্ |
| > a | ••• | ર | কু স্তী | \$.® |
| 222 | | 2 | ্রি গর াদ ং | िला । पन |
| 25 y | | b | যুক্ত। | যুক্ত\ |
| 300 | ••• | 70 | भःमदी | মৎসরী |
| 20g | ••• | ૭ | বিভে | বিভৌ |
| 209 | | 30 | র† জ্ঞ ুৎ | র†জ্ঞাং |
| 292 | | 2 | ছ্ম্ন | छ्म्रन। |
| ১৬৭ | ••• | ર | বহ্নিডি | বহিংতি |
| > > 9 | ••• | 2 | इम्ब | জু দামি |
| 367 | | 7.0 | সঙ্ল | • সঙ্গ |
| २ :5 | ••• | ৬ | धनर्थी | धनार्थी . |
| २२α | ••• | ৬ | রথাসিংছ | র্থ সিংহ |

| পৃষ্ঠায়াং | পঙ্কো | অশুদ্ধিঃ | শুদি: |
|-------------|----------|-----------------|-------|
| २८० ••• | 2 - | चीर 🐷 | मील |
| ₹ 26 | 8 | थ। कि | 46 |
| 908 | 9 | হ ৰ্ষোভূ | হৰোভূ |

শুদ্ধিপত্রম্। টীকায়াঃ সম্পূর্ণং। শ্রীশ্রীজগদীখারে। জয়তি

মহাভারত্য্।

বিরাটপর্ব।

পাপ্তবপ্রবেশ পর্বা।

গ্রথমোহধারিঃ।



ওঁনারাখানং নমস্কৃত্য নরক্ষৈব নরোজ্যস্। দেবীং সরস্বতীক্ষৈব ততো জয় মুদীর্ঘেং। ১॥

প্রাপ্ত শার্ষন্যঃ। প্রাথিত প্রাণাল মান্যা প্রাণিলার্য্য বর্মনা শিরটে পর্ব প্রেলার ভাবদীপো বিতনাতে ॥ ১ ॥ তত্র পূর্ববিদ্যার পর্বের দিট্যা পঞ্চয়বজাইদি দিট্যাতে ষ্ট্রপনী জিতা ছেগুর্বের মধ্যমে ছে ছোরের সাম্পরায়িকে ইতি শান্তোদান্ত উপরত স্তিভিন্তঃ সমাহিতো ভূয়জানা বাজানং পানাতীতি ভাতি প্রাদিদ্যাত্ম দর্শন সাধ্যের শমা দ্রক্তঃ বড়ার্ম লক্ষণাং ষ্ট্রপনীং জাত মাত্রসাশনা পিপাসে প্রাণালং গোক মোহেই হৃদ্য মতোতীতি গেদের প্রান্ধানা পিপাসে প্রাক্ত মোহং জরাং হৃদ্য মতোতীতি গেদের প্রান্ধানা পিপাসে প্রাক্ত ভারাহ হৃদ্য মতোতীতি গেদের প্রান্ধানার জরাই ছু তাং ভাইজিতবভা ত্রাহ হৃদ্য মতোতীতি গেদের প্রান্ধানার জরাই ছু তাং ভাইজিতবভা ত্রাহ ইতোতং পাওবা চরন প্রদর্শনের দর্শান্ত বির্টিশর্জারভাত ত্রেবর্ষণ হোদশ মিনং মংপ্রানাহ কুর্মহা বির্টি নগরে গুন প্রিক্তিরভাত ত্রেবর্ষণ হোদশ মিনং মংপ্রানাহ কুর্মহা বির্টি নগরে গুন প্রিক্তিরভাত ত্রেবর্ষণ হোদশ মিনং মংপ্রানাহ কুর্মহা বির্টি নগরে গুন প্রিক্তিরভাত ত্রেবর্ষণ হোদশ মিনং মংপ্রান্ধান কুর্মহা বির্টি নগরে গুন প্রিক্তিরভাত ত্রেবর্ষণ হোদশ মিনং মংপ্রান্ধান কুর্মহা বির্টি নগরে গুন প্রিন্তির ভাত ত্রেবর্ষণ হাদশ মিনং মংপ্রান্ধান হার্থিক মন্ত্রির নামের উন্নান্ধানিত। পূর্বের পিতা পরীক্ষিৎ তত্র বিতা মহার জ্বাত ব্যাহ হব, নান

ज्नास्य ज इ छ व ।

কথ- বিরাটনগরে মন প্র্কুপিভামক্র।

অজ্ঞাতুব সমুখিতা জ্থ্যোধন ভ্যাদ্দিতার ॥ ২॥
পতিত্রতা মহাভাগা সততং ব্রহ্মবাদিনী।

টোপদী চ কথং ব্রহ্মাঞ্জাতা জ্বতাবসং॥ ৩॥

रिवमन्याशम छेता ।

্ষা কথং উহিতাঃ বাসং কৃতবন্তঃ সমুস্থাতং নান্ধী দিতিবং ক্যাদিহা
ছনতেরল্প প্রান্ধি বাস সিতি নমুস্তং ॥ ২॥ প্রশাদিনী আরুঞ্চ কীতন
শীলা। ৩॥ ৪। ৫॥ অরণী সহিতং অরণা সিমুনং অরণী নাহতং মন্থু
ামিতি পাঠে মন্থোমি নির্মান দশুতং অরণীভাগে সাহতং প্রান্ধার নাবেদর দিতাখঃ॥ ৬॥ সারবর্তা একর আন্দীর অরুবর্ততিগতার্থঃ নাস পুনরাহর্তত ইতাদি প্রোগা দর্শনাথে সারক্ষোতি পাঠেপি স্থাব্যথঃ॥ ৭॥
বিজ্ঞান স্থাব্যামান্তি ব্যাহাশে। ৮॥ বংস্থামাই,ত প্রেচ

^{*} ধর্মাধ্যে তাত্র ধর্মাদ্ধর্মেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🛧] স্নিংত।ইডাত্র সান্নিরুব।ই ত পাঠঃ ক পুন্তকে।

[্]রাজাবিপ্রোবভাবর্মিভাত্ত স্বরাক্টাৎপ্রোবিভাবর মিতি পাঠ: ক পুতকে।

স সাধু কৌত্তের ইতে। বাসমর্জ্জন রোচ্য। সংবংরমিমং যত্র বসেমাবিদিতাঃ পরেঃ॥ ৯॥ বিশ্বীজ্ঞী

তকৈব বরদানেন ধর্মন্ত মনুজাধিপ!।

অ্জাতা বিচরিব্যানো নরাণাং নাত্র সংশারঃ॥ ১০ এ

তত্র শ্বাসায় রাষ্ট্রানি কীর্ত্তিবিয়ানি কানিচিৎ।
রমণীবানি গুপ্তানি তেবাং কিঞ্চিৎ আ রোচয়॥ ১১ ॥

সন্তি রম্যা জনপদা বহুরাঃ পরিতঃ কুরুন্।
পাঞ্চালাশ্চেদ্মিৎস্তাশ্চ শূর্মেনাঃ পটকরাঃ॥ ১২ ॥

দশানা নবরাষ্ট্রশ্চি মল্লাং শালা মুগল্পরাঃ।

† কুন্তিরাষ্ট্রগণিপুলং সুরাষ্ট্রাবন্তরস্তর্থা॥ ১৩ ॥

এতেবাং কতমো রাজন্ নিবাসন্তব রোচতে।

বৎস্তামো যত্র রাজন্দ সংবৎরমিনং ব্যন্॥ ১৪ ॥

মুধিচির উবাচ।

‡ প্রত্যেতন্মহাবাহো ! যথা স ভগবান্ প্রভূঃ। অব্রবীৎ সর্ব্বভূতেশস্তত্তথা ন তদন্যথা ॥ ১৫॥ অবশ্যমের বাসার্থং রমণীয়ং শিবং সূথ্য। সম্মন্ত্রা সহিতৈঃ সইব্রিক্তব্যমকুতোভবৈঃ॥ ১৬॥

অবিদিতা ইতিছেদ: ॥৯॥ নরাণামজাতা ইতি সংস্কঃ ॥১০॥ ১১॥
॥১২॥১৩ ॥১৪॥ প্রভুর্মঃ ঘদাপ স্বেন রূপেন চরিওথ ছৌমিমীং
নবোধিজায়তে কশ্চিৎ তিয়ু লোকেয়ু কশ্চনেতি অএবীং॥১৫॥ ঘদাপেওঁই
তথাপি কচিৎ প্রচন্ত তয়া বস্তব্য মেবেডাছে অবশ্যং ক্রিবেতি॥১৬॥

তত্তেতাত্ত্র কিন্তু ইতি পাঠঃ ক পুন্তকে।

[†] কুভিরাউঞ্বিপুলামতাত কুভিরাউৎ স্থাবন্তীণ মিতি পাঠি ক পুস্তকে।

[🛨] ভাতমিত্যত্র এবমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

18

মৎক্যো বিরাটো বলবানভিরক্তে হৈথ পাগুবান।
ধর্মনীলো বদানাশ্চ কুন্ধশ্চ সতত্ত প্রিয়ঃ ॥ ২৭ ॥
বিরাটনগরে তাত সম্বংসর্কি নং বিষয়।
কুর্ন্ধিন্ত কর্মাণ বিহরিষ্যাম ভারত ॥ ২৮ ॥
যানি যানি চ কর্মাণি ততা বক্যামহে ব্যম্।
আসাদ্য মৎতাং তথ কুর্মা প্রবাত কুরুনন্দনাঃ ॥ ২৯ ॥
আর্দ্ধিন উন্থাত।

নরদেব কথং তস্য র । খ্রে কর্মা করিষ্যসি।
বিরাট নগরে সাধো রংগ্যসে ল কেন কর্ম্মণা হও॥
মৃত্রকালন্যে ইনিংশু ধার্গিকঃ প সভাবিক্রনঃ।
রাজ শুসাপদার্কটঃ কিং করিষ্যসি পাওব ॥ ২১॥
ন তুংখ্যুচিতং কিঞ্চিজাজা বেদ যথা জনঃ।
স ইমামাপদং প্রাপ্য কথং ঘোরাং তরিষ্যসি॥ ২২॥
যুধিন্তর উংচ।

শৃণুধং যথ করিষামি কর্ম বৈ কুরুনন্দনাঃ। বির:টমনুস্প্রাপ্য রাজানং পুরুষর্যভাঃ। ২০॥ স্ভান্তারো ভবিষামি তদ্য রাজো মহাত্মনঃ।

ককো নাম বিজে ভূত্বা মভাক্ষঃ প্রেষদেবনঃ ॥ ২৪॥
॥ ২৭॥ ১৮॥ বক্ষামহে নির্কোচ্ছ শক্ষামহে ইতি বছেরিদং রূপং
প্রেত্ত প্রতাক মিতিশেষঃ ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ সভাস্তারঃ
ক্ষভাং সভাসদঃ সভাস্তারা ইতামবঃ ক্ষোনামতঃ শক্ষত্ম দিজেখাতো
লোহ পৃষ্ঠে কৃত্যংত্যো রিতি বিশ্বকোষাৎস্বস্ত কৃতান্ত স্কৃত্বেন আতাবি
পুত্রনামাসতি জ্বতে স্তদ্দনাহাৎ তর্মায়ে। ধারণে মিখ্যা বাদিরং ন
ত্বিষাতীতিভাবঃ মতাক্ষঃ বছদশাৎ জ্ঞাতাক্ষ তথঃ প্রিয়দেবনঃ ক্রীড়াপ্রিয়ঃ
॥ ২৪॥ দাভাব্ গাল্ড ম্যান্দভঃ পর্বতি সাত্র তৎ স্কৃণান বা শারীন্

^{*} রংসাসেইভাত্ত বংসাসে ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে। † সভাবিক্রমইভাত্ত সভাসদর ইভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বৈদুর্য্যান কাঞ্চনান্ দান্তান্ কলৈক্যোতীরদৈঃ সহ।
ক্ষাক্ষান্ লোহিতাক্ষা শুচ নিকাৎস্যামি মনোরমান্॥ ২৫॥
বিরাটরাজং রমযন্ সামাত্যং ক্ষান্তবম্ ।
ন চ মাং বেৎস্যতে কলিজোষ্যিষ্যে চ তং নৃপম্॥ ২৬॥
আন্ত যুবিন্তিরস্যাহত পুরা প্রাণসমঃ স্থা।
ইতি বক্ষ্যাম নৃপতিং যদি মাংসোহত্বযোক্ষ্যতে॥ ২৭
ইত্যেতদ্বো মযাখ্যাতং বিহরিষ্যাম্যহং মথা।
ব্কোনর বিরাটে ত্বং বৎস্যাসে কেন শতহতুনা॥ ২৮॥
ইতি বিরাটগর্কানি পাশুবপ্রবেশ পর্কানি যুবিন্তিরাদি-

मञ्जर्ग व्यथरमार्थायः ॥ > ॥

নির্ব্বংশ্রাম চাল্যবান্ত্র দতঃ সাত্রনি কথাত ইতি বিশ্বঃ তানের চতুর্বর্গানাই বৈত্র্বান্ ইরিত মনিময়ান নীলান্ কাঞ্চনান্ সৌবর্গান্ পাতান্ জ্যাত থ্র চ রসাশ্চ জ্যোতীরসা তৈঃ সহজেণতিঃ শব্দেনাত্র লোহিতং লক্ষাতে যদয়ে রোহিতং রূপ স্তেজস শুদ্রপ মিতিজ্ঞতেঃ জ্যোতীরূপাঃ লোহিতাঃ রসঃ পারাঃ তজপাঃ শ্বেতাঃ তৈ কভয়েঃ সহঃত্র্ব স্পুপ্তিঃ তথা ফলৈঃ লারীস্থাপনার্থানি কোঠ জুক্তানি কাঠাদি ময়ানি ফলকানি তৈঃ সহ তেবাং নির্বর্তনে করনমাহ কৃঞ্চাকান্ কৃঞ্চাঃ অক্ষাঃ পাশাঃ যেয়ার্র চালনার্থ মিতি কৃঞ্চাকা শুন্র নারীনের তথা লোহিতাক্ষানিতাপি ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ যুধিন্তিরখান্ত শরীর র যথা প্রাণ উত্থাপক শুদ্রিদাত্বাপীতি প্রাণ সামেন যুধিন্তরখান্ত শরীর র যথা প্রাণ উত্থাপক শুদ্রিদাত্বাপীতি প্রাণ সামেন যুধিন্তরখান্ত বিবক্ষিত ইতিকাবঃ অমুযোক্ষাতে প্রশ্বং করিবান্তিঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারতভাব দীপে প্রথমে ২ধ্যায় ॥ ১ ॥

^{*} হেতুনাইত্যত্ত্ৰ কৰ্মণা ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

ভীম উবাচ।

পৌরোগবো ক্রবাণেছিকং ব্লুবোনাম ভারত!।
উপস্থাস্থামি রাজানং বিরাসীনিতি মে মতিঃ। ১॥
ইপানিতা করিষামি কুশলোহিন্মি মহানসে।
কুতপুর্নিণি ণ যান্যন্ত বাজনানি স্থানিকিতে। ২॥
ভান্যপ্রভিভবিষ্যামি প্রীতি মজনযন্ত্রহামি দাকাণং নিচ্যান্মহতোহিপি চ॥ ৩॥
যং প্রেক্ষ্য বিপুলং কর্ম্ম রাজ! । নংযোক্ষ্যতে সমা ।
ভানামুষাণি কুর্বিণি স্তানি কর্ম্মাণি ভারত॥ ৪॥
রাজ্ঞস্ত পরিভেন্যা মংসান্তে মাং যথা নুপম্।
ভক্ষ্যান্মসপানানাং ভবিষ্যামি তথেশ্বরঃ॥ ৫॥
বিশ্বাহা যদি ম্যা নিজ্বীষ্যামি তানপি॥ ৬॥

পৌরোগবঃ পুরঃ পুরস্তাৎ গাবোরশ্বো যন্ত সপুরোগুঃ বাতুঃ পিণ্ডোৎ-পতে হি প্রথমং রজো রেত্সোঃ ক,ল্ক রাতুরশ্বিভূতঃ প্রাণ আনির্ভবতি পশ্চাদিন্দ্রিয়ান্তরাণী,ত শাস্ত প্রসিদ্ধং ত্যা পুতঃ পৌরোগবঃ লোকেতু পশ্চাদৈরোগবো মহানস্থাক্ষঃ বলবঃ স্পকারঃ এতদেব মমার্থং নাম হ । ৩ ॥ ও ॥ ঈশ্বরঃ যথেটিং বিনিযোগ কর্তাহতএব নৃপো যথা তথা । বিয়োহং লোকানাং ভবিষ্যামি ইত্যুক্তং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ নিয়োহ্যামি নিহীনং

^{*} ভারতেতাত্র নামত ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বান্দোতাত্র যৈরস্যেতি পাঠঃ ক পুস্তকৈ।

কু নং যেকি তেসমামিতাত্র প্রীভো ভবিষ্যতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

যে চ কেচিনিযোৎস্থান্তি নমাজেষু নিযোধকাঃ।

" তানহং হি নিযোৎস্থানি ব্রতি তুর্স বিবর্দ্ধবন্ ॥ १ ॥
ন স্কেতান্ যুধামানান্ বৈ হনিষ্যামি কথকান।
তথৈতান্ পাত্যিযামি যথা যাস্থান্তি ন ক্ষমন্॥ ৮ ॥
আবালিকো গোবিকর্ত্তা স্থাকর্তা নিযোধকঃ।
আমং যুধির্তিরস্থাহামতি বক্ষামি প্ছেতঃ ॥ ৯ ॥
আলানমাল্যনা রক্ষংশ্চরিব্যামি বিশাস্পতে।
ইত্যেতং প্রতিজ্ঞান্মি বিহরিব্যাম্যহং, যথা॥ ১০ ॥
যুধিতির উল্লে

যনমিত্র কিণো ভূতা সমাগচ্চর্ণার । দিধকুং খাওবং দাবং দাশাইনহিতং পুরা॥ ১১॥

হথাসান্তথা মারণ বর্তং বােংজামি॥ ৭॥ তদেবাছ নহিতি॥ ৮॥ আরা নি,কোনাে বিকরা ছপকরা নিয়েধক ইতি অরলঃ মন্তর্গনাঃ তৈঃ সহ-ক্রীডিভান জয়তি বা আয়ানিকঃ জয়নঃ কুটিলে সর্জরেস্বৈমন্ত দতিনীতি বিশ্বঃ গােবিকরা গবাং মহতাং বলাবিধানামিশি বিকর্তা দমনেন বিকৃত্যিজনকঃ ব্যুত্ত ন্ বা মহাবলানি এই বামীতাপ ক্রমাং স্থপক। মুল্যাদি বিকার কর্তা পক্ষে স্তরাং উপকর্তা।নিয়েধ মার। বর্জং মার্যুদ্ধকর্তা পক্ষে নিতরাং যোধকঃ বিষম শ্লোকী কৃতন্ত আয়ালিকঃ প্রকৃতীনাং গুল দোম স্চবঃ হন্তি দমকোবা তথা বিক্রমাদিতাঃ আয়ালিকঃ প্রান্তরা হত্তিনাং দমকত্যেতি গােবিকরা গবাং বাচাং বিকর্তা গানা পদ্যাদি ভেনাই প্রেয়াক্তি কেন্ত্রিভা আয়ালিকেরশাকী আহু স্থাক্তী তু শাক্রেই তেলারং পাচতে যন্ত্র গােবিকর্তা, স উন্যত ইত্পেদাহরন্তি তত্ত মূলং ক্রেইবাং ৯॥১০॥১১॥

^{*} তানহংহি নিয়েৎ স্যামীতাত্ত তানহং নিহনিবণামীতি পাঠঃ ক পুতকে।

পঠনাখ্যায়িকাকৈব প্রীভাবেন পুনঃ পুনঃ।
রম্মিয়ে মহীপালমন্যাং শুরান্তঃ পুরে জনান্ ॥ ২৮
গীতঃ নৃত্যুং বিচিত্রপঃ বাদিত্রং বিবিধং তথা।
শিক্ষ্মিরান্যহং রাজন্ধ বিরাট্যপুর স্ত্রিয়ঃ ॥ ২৯ ॥
প্রজানান সমুদাচারং বহু কর্মা রুতং বদন্!
ছাদ্মিয়ামি কৌন্তেয মান্যাল্মানমাজানা ॥ ৩০ ॥
যুধিতিরস্থা গেছে বৈ ফ্লোপদাঃ পরিচারিকা।
উ্যিতাশ্মীতি বক্ষামি পুটো রাজ্ঞা চ দ পাগুব। ॥ ৩১ ॥
প্রতেন বিধিনাচ্ছরঃ ঠাতকেন যথানলঃ।
হির্রিয়ামি রাজ্জের ! বিরাটভবনে স্থাম্॥ ৩২ ॥
ইতি বিরাটপ্রেণি পাগুবপ্রশেশক্ষিণি যুধিতিরাদিমস্ত্রণে
ছিতীয়েহিধ্যায়ঃ॥ ২ ॥

বৈশাপারন উবাচ। । । ইত্যেবমুক্ত্যা পুরুষপ্রবীরস্তথাজ্জুনো ধর্মাভ্তাহরিষ্ঠা। বাকাং তথাসৌ বিররমে ভূযো।

নূপোহপর আতিরমাবভাষে ॥ ১॥
রিকা: পূর্বরাজ চরিতানি ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ সমুদাচারং সমীনীনং উংক্ষেউতরং
মধাবদান্যথাদি রূপং অভিঃকৃতং বহু কর্মচবদন্ মার্যা কপট ক্লীববৈদেশ
আত্মনং শর্মীরং আত্মনা বুদ্ধা ॥ ৩০ ॥ পরিতঃ চার্য্নিত্বং শীলং যতাঃ
সাংপরিচারিণী সৈব পরিচারিকা দেশিকারী । ৩১ ॥ ৩২ ॥

িইতি বিরাট পর্ব্ধ ণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে বিভীয়োহধ্যায়॥ ২॥

रेट्यार्विड । : ।

বিরাটদ্য পুরব্রিয়ইতাত্ত বিরাট ভবনেত্রিয় ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে
 পাঞ্বতাত্ত ভারতেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

যুধি জির উবাত।

কিং স্বং নকুল ! কুর্বাণস্তত্ত্ত্ত্ত ! চরিবাসি। কর্মা গুল্পু সমাচক্ষু রাজ্যে তথ্য মহীপতে:। স্থাকুমারক শ্রক্ষ দর্শনীয়ং স্থাংচিতঃ ॥২॥

মকুল উবাচ।

শংশবিদ্ধা ভবিষ্যামি বিরাটনুপতেরহম্।
সর্বাথা জ্ঞানসম্পন্ধঃ কুশলঃ পরিরক্ষণে ॥ ৩॥
গ্রান্থকো নাম নায়াছং কর্ম্মৈতং স্কুপ্রিষণ মৃম।
কুশলোহস্মাশ্রনিকাষাং তথৈবাশ্বচিকিৎসতে।
'প্রিষাশ্চ সততং মেহশ্বাঃ কুরুরাজ ষ্থা তব ॥ ৪॥
ষেমামা শ মন্ত্রায়ান্তি বিরীটনগরে জনাঃ।
তেভাএবং প্রক্রানি বিহরিষ্যামাহ্র যুধা॥ ৫॥
পাপ্তবেন পুরাতাত অশেষ্ট্রিকুতঃ পুরা।
বিরাটনগরেজ্নশ্রব্যামি মহীপতে।॥ ৬॥

॥ ২॥ পরিরক্ষণে অশ্বানামিতি পেবঃ ॥ ৩॥ প্রিরক্ষণে আশ্বানামিতি পেবঃ ॥ ৩॥ প্রিরক্ষণে আশ্বানামিতি পেবঃ অবিন্তি কেবানাম ভিষজা-বশ্বিনাবঃ মূলি ডিজ্জাতেঃ ॥ ৪॥ ৫॥ জনেই নান্তি শোষেবাং ভেশ্বাঃ সমটো তুনীকৃত প্রাণা স্তেমু অধিকৃতে মুখাইতি গুঢ়াশয় পকে স্পটোর্থঃ ॥ ৬॥

^{*}বেমামামন্ত্রিষাতি ইতাত প্রাক্তি অনুষ্ঠান্ত ভবিষাতা তালি লোকন্তরং ক পুত্তকতা পাঠঃ যথা অনুষ্ঠান্ত ভবিষাতি কিলোরো ইভবা অপৈ ন চ ইষ্ট্র ভবিষাতি প্রেষ্চ রবেষ্চ ॥ ১ ॥ যেচ মাং মন্ত্রিষাতি বিরাটনগারে জনাঃ প্রা বৃধিন্তিরভাষ্য হবজো ভরতর্ভ। ১৩ছেব সংপ্রবক্ষামি বিষ্কিষ্ঠান্তহং মধা ॥ ই ॥ বিরাটনগারে ছলক্রিষামি মহীপতে ন চ মাং বেংভাতে কন্তিবোষ্বিষ্টাচ হং নৃপান্ ॥ ৩ ॥

য়ুধিষ্ঠির উনাচ। সহাদেব কথং তম্ম সমীপে বিহরিষ্যাস। কিং বা ত্বং কর্ম্ম 🕆 কুর্মোণঃ প্রচ্ছিনো বিহরিষ্যাস। ৭॥

नक्टमन छेत्रा ।

গোষ্থ্যাতা ভবিষামি বিরাটক্ত মহীপতে:।
প্রতিষেদ্ধা চ দেখা চ দ্খ্যানে কুশলো গবাম্॥৮॥
তিন্তিপাল ‡ ইতিখ্যাভো নামাহং বিদিতস্থা।
নিপুণস্ত চরিষ্যামি গ্রেভুতে মানসো জ্বঃ॥৯॥
অহং হি ** সতত্ত গোষু সত্ত প্রহিতঃ পুরা।
ভত্র যে কৌশল সর্বি মববুদ্ধং বিশাস্পতে॥১০॥
লক্ষণং চরিত চাপি গবাং যচ্চাপি মঙ্গলম্।
ভৎ সর্বাণ মে সুবিদিতমন্যচাপি মহীপতে!১১॥

॥ ৭ ॥ সংখ্যানে পরীক্ষারাং ॥ ৮ ॥ তন্তিপালঃ তন্তির্বলী বদার্যাস্যাৎ
দীর্ঘস্থল রক্ষাং বিশিষ্ট রুপে দামতি বধ্যন্তে সাপ্রক্রতোপ বোগিনী
গুঢ়াভিসদ্ধে তু তন্তিগাক্ তদাবাক্ তন্তির্নামানি দামানীতিশ্রুতে বাক্স্কান্তনার্থান্তনার্থান্তনার্থান্তনার্থান্ত ॥ ১ ॥ ১ ॥ ১ ॥ ॥ ১ ॥

ণ কর্ম ইতার তাত্তেতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

† তন্তিপাল ইতাএ তন্ত্রিপাল ইতি পাটঃ কু কুল্লের

** সতত মিত্যুত্র ভবতা ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

ন ব্যক্তানপি জানামি রাজন পূজিতলক্ষণান্।
যেষাং মূত্রমুপাছায় অপি বক্ষ্যা প্রস্থয়তে ॥ ১২ ॥
সোহহমেবং চরিষ্যামি প্রীতিরত হি মৈ সদা।
ন চ মাং বেৎস্ততে কশ্চিত্তোধ্যিষ্যে চ পার্থিবন্॥ ১ ১ ॥

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ইয় হিনঃ প্রিয়া ভার্য্যা প্রাণেভ্যোইপি গরীয়দী।
মাতেব পরিপাল্যা চ পূজা জ্যেতের চন্দ্রদা॥ ১৪ ॥
কেন স্ম দ্রৌপদী কৃষ্ণা কর্মাণা বিচরিব্যভি।
ন হি কিঞ্চিল্লগানাতি কর্মা কর্তুং যথা স্ত্রিষঃ॥ ১৫ ॥
স্কুমারী চ বালা চ রাজপুত্রী যশস্বিনী।
পতিব্রতা মহাভাগা কথন্ন বিচরিষ্যতি॥ ১৬ ॥
মাল্যং গল্পানলঙ্কারান্ বস্ত্রাণি বিবিধানি চ।
এভান্যেবাভিজানাতি যতো জাতা হি ভাবিনী॥ ১৭॥

॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ হীতি ইয়ংমাতা কুলর্ত্তিং আদিভূমিং গৌর্মা মাতাগোগাদি জননি গো একাণানি ভূমিয় ইতি মেদিনী বানাঅগ্নিকা পার্মতীবং পূজা ইতার্থং এয়তে ক্রেভাগং সহক্ষমাং-।
বিক্যাতং জ্যুব্ধ শর্মা অস্যাংবিকাক্ষ্যেতিমন্ত্র ব্রাহ্মণদর্শনাং জানা
গার্হপত্যং পুরোধাহার্য পাচন ইতি তদ্যা অপি দেবতাত্বন সংস্ত্রাং
মাতা সমাবতী ভূম ধেল্ল জ্যোক্ষ্যা ভবেদিতা প্রাদাক্ষ্যন্তি ॥ ১৪ ॥
॥ ১৫ ॥ বালা নিভাল্লনা ॥ ১৬ ॥ যতোব্যিন্ দিনে জাতা তত আরভামা
লাদিন্ ভোগানেব বেত্তি নক্ষেণা নিভার্থং ॥ ১৭ ॥ সৈর্দ্ধীতি সীরংপ্রতি সীরান্তং পটং ব্রিয়তেনয়া হার্মাবেতি সীরদ্ধা দৈব দৈর্দ্ধী
ক্যার্থেত্দ্বিতং অতঃপুর প্রিচারিকা রাজভার্যা বা সৈরদ্ধী পরবেশ্ব
ভা নিপ্তাহৎ অবংশা ব্রিয়াং বর্ণসম্ব সংভূত স্ত্রী মহিল্লিক্ষারপীতিবিশ্বঃ

দ্রে প্রাবাচ।

সৈরিক্ষো রক্ষিতা লোকে ভুক্তিয়াঃ সন্তি ভারত!।
নৈর্মন্যাঃ স্তিযো যাতি ইতি লোকস্থা নিশ্বঃ।
সাহং ক্রবাণা সৈরিক্ষ্মী কুশলা কেশকর্মনি । ১৮॥
যুধিন্টিরস্থা গেহে বৈ দ্রৌপদ্যাঃ পরিচারিকা।
ক্রিতাম্মীতি কক্ষামি পৃষ্টা রাজ্ঞা চ ভারত!॥ ১৯॥
আরগুপ্তা চরিষামি ষ্মান ত্বং পরিপৃক্ত্রিন॥ ২০॥
স্থানেষ্টাং প্রত্যুপস্থান্তে রাজভার্যান যশ্বিনীম্!
সা রক্ষিষ্যতি মান প্রাপ্তান মা ভূত্তে তুঃখ্মীদৃশম্॥ ২১॥
যুধিন্ঠির উবাচ।

কল্যান্থ ভাষদে কৃষ্ণে। কুলে জাতাসি ভামিনি।।
ন পাপমনুজানাসি সাধু সাধীত্রতে স্থিতা॥ ২২॥
যথা ন তৃষ্ঠ দঃ পাপা ভবন্তি সুখিনঃ পুন্ত।
কুর্যান্তথা স্বন্দ কল্যানি। লক্ষ্যেযুর্ব তে যথা॥ ২০॥
ইতি বিরাটপর্বনি পাণ্ডবন্দ্রবেশপর্বানি যুধিন্তিরাদীনান
মন্ত্রনে তৃতীয়োহ্ধ্যায়ঃ॥ ৩॥

দৈত লিকায়ে বিভি মেদিনী পাঠঃ আদ্যে মহিলিক। রাজদারাঃ দিও রৈ ক্লিকাঃ প্রশস্ত জির ইতি দাসী পক্ষে অর ক্ষতা ইতিক্ছেনঃ অবশাইতা ক্রেঃ শুলিকাঃ প্রেরিকিতা ইতেমেত বভূজিষ পালনীয়া প্রেরিকিতা ভূজপালনাভাবহারারোরিতাসার্দ্ধপ নৈবমনা জিয়োরপ্রতীর্ঘান্তি প্রাপ্র পশান্তীতরেইতার্থঃ দাসীতিভাবঃ পক্ষেনিবং প্রকাশে যান্তি সঞ্চঃন্তীত্যরঃ ॥১৮॥
ক্রেপিদারঃ পরিচারিকেতি রাহোশির ইতিবদভেদেপি ভেদেপিচারঃ জৌলদীরপা মুধিছিরসা পরিচারিকেতার্থঃ ॥১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২১॥ ২০॥
ইতি বিরাটপ্রাণি নৈলকগীরে ভারত ভাবদীপে তৃতীরোহধারঃ॥ ০॥

ষুধিষ্ঠির উবাচ।

কর্মাণুক্তোনি যুগাভির্যানি ঘানি করিষার।
ম্ম চাপি যথাবুজিরুচিতা বিধিনিশ্চযাৎ ॥ ১॥
পুরোহিতোহ্যমন্মাকমগ্লিছোতানি রক্ষতু।
ক্ষ স্থানোগরৈং সার্দ্ধং দ্রুপদক্ষ নিবেশনে ॥ ২॥
ইন্দ্রেমনাদয়শ্চমে রখানাদায় কেবলান্।
যাস্ত ভারবতীং শীঘ্রমিতি মে বর্ততে মড়িং ॥ ৩ ॥
ইমাশ্চ নার্য্যো দ্রোপদ্যাং সর্কাশ্চ পরিচারিকাং!
পাঞ্চালানের গচ্ছস্ত স্থানপারাগরৈং সহ॥ ৪॥
সার্করিপি চ বক্তবাং ন প্রাক্তবিভ পাগুরাং।
গতা স্থানপাকীয়া সর্বের দৈত্রবাদিতি॥ ৫॥

বৈশস্থারন উবার।

এবত্তেহন্যোন্যমাসন্ত্য কর্মাণুক্তে,। পৃথক পৃথক্। ধৌম্যমাসন্ত্রযামাস্থা দ চ তান্ মন্ত্রমত্রবীৎ॥ ৬॥
ধৌম্য উবার।

ৰিহিতং পাণ্ডবাঃ সৰ্বাং ব্ৰাহ্মণেষু স্থছৎস্ক চ।
যানে প্ৰহরণে চৈব ভবৈধ্বাগ্নিষু ভারত ! । ৭ ।

কর্মানীতি ॥ ১ ॥ অগ্নিছোরাণি অগ্নিছোত্ত পাত্রাণারনী সহিতানি ছোম,
সাধন ভূতা ধেনুর্বা। ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ন প্রাক্তারন্তেতিযথার্থমেব রহস্যেবৃত্তি
ম্বিস্যা দেশেবস্তব্য মিতি মান্তেত্বাব ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ বিহিতং শাল্পোক্তং ব্রাদ্ধ্র
পাদির্ উপস্থিতের পরিচর্যাদিকং পাশুবাঃ সর্বাব জানস্কাতি শেষঃ যানে
বিজয়বারায়াং প্রহরণে মুদ্ধে যন্যপোবং তথাপি কিঞ্চিদ্ধামীতি ভাবঃ॥ ৭ ॥

^{*} হদেত্যত স্তেতি পাঠঃ ক পুত্তক।

ত্বধা রক্ষা বিধাতব্যা কৃষ্ণাখাঃ কাল্পনেন চ।
বিদিতেং বাে শ যথাসর্ব্ধ লােক্র্ডামদং † তব ॥ ৮॥
বিদিতে চাপি বক্তব্যং সুক্তিরমুরাগতঃ।
আধি ধর্মিক কামল অর্থকাপি সনাতনঃ॥ ৯॥
অতােহ্মপি বক্ষ্যামি হেতুমত্র নিবােধত।
হুল্ডেমাং রাজবস্তিং রাজপুলা ‡ ব্রবীম্য হং॥ ২০॥
যথা রাজকুল প্রাংগ্য সর্বান্ন দোষা স্তরিষ্থ।
ছুর্বসন্ত্বেব কৌরব্য জানত। ** রাজবেশ্মনি॥ ১১॥
অমানিতৈশ্যানিতিকা অজাতেঃ পরিবৎসর্ম।
তত্তক্রদেশে বর্ষে চরিষ্যথ যথাস্থায়॥ ১২॥

তদেবাহ ব্য়েতি ব্য়ায়ুধিন্তিরেণ ইদংলোকরন্তং প্রাক্তজনশীলং
আরক্ষামাণাস্থ্রীয় সাধীধ্বপি অন্যায্য কম্পনং, দতঃ কৃষ্ণা রক্ষাবেতার্থঃ
॥৮॥ বিষাংসোপি স্কন্তিঃ প্রীত্যাবশাং বোধনীয়া এবেতাছে বিদিতে
চাপীতি এবং সৌহার্দপ্রদর্শনেন ধর্মাদরোহ শুসূতা ভবন্তীতি ভাবঃ ॥৯॥
হত্তে তাস্কম্পায়াং রাজবস্তিং রাজকুলেবাসং তদিধিমিতার্থঃ ॥১০॥
হ্র্মেণং দৃঃখেন বন্তং শকাং ॥১১॥ ২২॥ দৃষ্টদ্বারঃ প্রতীহার দ্বারানি বেু দাৈব রাজানং অফু নিচ্ছে মত্বন্ত্জাত ইতার্থঃ দিষ্টেতাপি পাঠঃ পাঠাতবেরহস্যের মন্ত্রকার্যের ন বিশ্ববেৎ সংমতোম্মতি কৃদ্ধা তন্ত্র ন গচ্ছেৎ
প্রাদিশ্বপি আবিশ্বস্তাঃ রাজানোমন্ত্র বিপ্লব ভরাৎ সদ্যো মার্যেয়ু রিতি
ভাবঃ তদ্বেভি পরেণ সহবৈরং মাভূদিতি পরাসনং নাথিছেৎ

^{*} য পাসর্ক(মত্যত্র যথান্যার মিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

† তবেত্যত্র নৃপা ইতি পাঠ: ক পুস্তকে।

‡ ব্রীমাহ মিতাত্র ব্রীমিব ইতি পাঠ: ক পুস্তকে।

* জানতা ইত্যত্র জানতা মিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

* দিউদ্বারো লভেদ্ উ্ রহন্তেরু ন বিশ্বদেশ।
ভদেবাসনমন্তিভেদ্যত † নাভিপতেৎ পরঃ ॥ ১৩ ॥
যোন যান ন পর্যক্ষং ন পাঁচং ন রথং গজম।
ভারোহেৎ সন্মতোহস্মীতি স রাজবস্তি ন ব্দেশ ॥ ১৪ ॥

য়ত্র যত্রনমাসীনং শক্ষেরন্ ছুইচারিণঃ।
ন ভত্রোপবিশেদ্যো বৈ স রাজবস্তিং ব্দেশ ॥ ১৫ ॥
ন চামুশিয্যান্তাজানমপৃক্তন্তং কদাচন।
ভূফীব্রেনমুপাসীত কালে সমন্তিপ্জয়ন্ ॥ ১৬ ॥
ভাষ্থতি হি রাজানো জনানন্তবাদিনঃ।
ভব্যতি চাব্যন্যন্তে মন্ত্রিশং বাদিনং মুখা ॥ ১৭ ॥

॥ ১০॥ যানং পরকীয় মিতি শেষঃ॥ ১৪॥ ছফালিরিগো ছফলারাঃ যত্র
যত্ত দাতমদ্য বেশ্যাদি ছানের অনগরস্থ পরকীয় চারমগুলে বা আসীনমেনং
দ্যতাদি প্রিয়োষং পরের্মেদিতোযমিতি শংকেরন্ তরনোপ বৈশেৎ
রাজগামি পেশুন্য ভ্রাদিতার্থঃ॥ ১৫॥ নানু শিষ্যাং ইদমি বং ক্রিছি
নাজাপরেং ভূফীং মৌনেন কালে পরাক্রম সমরে সমভি পুরুরেং
ভূবীত॥ ১৬॥ ভুতিরপ্য ভূতার্থান কর্তব্যতাহ অভ্রাহীত ভ্রায়ন্তীতার্থঃ
॥ ১৭॥ বৈহতঃ প্রচরাযাংশ্চ রাজা দেকি যেচ রাজ্যেংহিতাঃ দেকারিটিঃ

^{। *} দিফদার ইতাস্য প্রাক্ পাওবাগ্নিরয়ং লোকে সর্বা শাল্রময়েয়য়য়ন্ । তি ভর্তাগোপ্তান্ত বালাপুক্ষ বিপ্রাইত্যেক লোকঃ ক প্রক্রা।

[🕇] নাভিপতেদিভাত্ত নাভিবজেদিভি পাঠঃ ক পুস্তকৈ।

[🕽] যত্তেভাত্ত অধৈতি পঠিঃ ক পুতকে 🖟

নৈষাং দারেষু কৃষ্ণতি দৈত্রী প্রাক্তঃ কদাচন।
আন্তঃপুরচরা যে চ ৰেন্টিযানহিত শা ১৮॥
বিদিতে চাস্তা কৃষ্ণতি কার্যাণি স্বলম্নাপি।
এবং বিদিরতা * রাজ্ঞিন ক্ষতিজ্ঞাষতে ক্ষ্তিং । ১৯॥
গচ্ছমপি পরা প্রাক্তি ন ক্ষতিজ্ঞাষতে ক্ষ্তিং । ১৯॥
গাড্মপি পরা প্রাক্তিয়া ছানিয়েজিতঃ।
জাত্রেলাইর মন্যেত ম্র্যাদামনুচন্তিয়ন ॥ ২০॥
ন হি পুত্রং ন নপ্তারং ন ভাতরমরিক্ষমাঃ।
সমতিক্রান্তমর্যাদ প্রমন্তির নরাধিপাঃ ॥ ২১॥
যত্রাচ্চোপচরেদেনমন্ত্রিক্তিয়েল নরাধিপাঃ ॥ ২১॥
যত্রাচ্চোপচরেদেনমন্ত্রিক্তিয়েল হ।
আন্তেনোপটার্নো হি হিংস্তাদেনমসংশ্বন্ ॥ ২২॥
যচভর্তি কুমুঞ্জীত তদেবাভ্যন্ত্রবর্ত্থে ।
প্রমাদমবলেপঞ্চ কোপঞ্চ পরিবর্জ্জ্বেং ॥ ১৩॥

মধ্যে সহমৈত্রীং কুর্যাং ॥ ১৮ ॥ রাজ্ঞি রাজ্ঞ্যাজি বিচরতো বিচার
পূর্ববেং, বসতো নক্ষতির্মানহান্যাদি জায়তে ॥ ১৯ ॥ গাল্ছার্মিত পারাং
ব্রুক্টাং ভূমি নিত্যং গাল্ছন্ আসনার্থং প্রাপ্ত্রন্ রাজ্ঞা অপ্রটোহ
সংজাবিতোহনিযোজিতঃ স্বেছানে উপরিশ্যেতা নাজ্ঞা জাত্যস্কুইব
তংক্সান মুপান্ত মিবাল্যানং মন্যেত বাবজ্ঞাজা ন সংভারতে নাপ্যাসনং
দিশীত তাবং প্রতিক্ষেতি বেতার্থঃ ॥ ২০ ॥ অনুধা দোষমাহ নহীতি
॥ ২১ ॥ যত্মা দিশ্ত অতি সামিধ্যাদায়িরিব রাজাদহাত অবজ্ঞানাদ্ধেব ইব
্সের্থংহর নিতার্থঃ অনৃতেন কুটকার্যাপাণাদিনা উপটার্ণ আরাধিতঃ হন্যাদেব
॥ ২২ ॥ ভর্তারাজা অনুমুক্তীত আজ্ঞাপারেং পুল্ছেরা অনুবর্তরেং কুর্ব্যাৎ
ব্রেদ্বা প্রমাদং স্থানবধানতং অর্থনেপাং শৌহ্যাদিগার্মাং ॥ ২০ ॥ সমর্থনাস্থ

^{*} রাজীকার রাজ ইতি প্.ঠ: ক.প্রেক্।

সমর্থনাম্ম সর্বাম্য হিতঞ্চ প্রিছমের চ।
সংবর্ণযেন্তদেরান্ত প্রিয়াদিপি হিতং বদেশ ॥ ২৪ ॥
অমুকুলো ভবেচ্চান্ত সর্বাথেয়ু কথা ম চ।
অপ্রয়ন্তাহিতং যথ ভাগে ভদলৈ নামুবর্ণযেশ ॥ ২৫ ।
নাহমন্ত প্রিয়েং মাতি মন্তা সেবেত পণ্ডিতং।
অপ্রমন্তন্দ * সততং হিতং কুর্য্যাথ প্রিয়ন্থ যথ ॥ ২৬ ॥
নান্তানিন্তানি সেবেত নাহিতৈং সহ সংবদেশ ।
অস্থানাম বিকম্পেত স রাজবশ্তিং বদেশ ॥ ২৭ ॥
দক্ষিণং বাথ বামং বা পাশ্ব মাসীত পণ্ডিতং!
রক্ষিণাশ হান্তশক্তানাশ স্থানশ পশ্চাদিধীয়তে ॥ ২৮ ॥
নিত্যাশ বিপ্রতিষ্কিন্ত পুরস্তাদাসনং মত্য ।
ন চ সন্দর্শনে কিঞ্জিৎ প্রস্তাদাসনং মত্য ।

কার্য্য কার্য পরী কাম হিতং পরি নাম মুখং প্রিয়ং অভিমুখঞ্চনদেৎ উভরে।
সমুচ্চযাসংভবে প্রিয়াদিপি। ইতং তবেং প্রিয়ং তাক্তাপিযাজিতং তবেতদেব
বদেরতুহিত বিরোধি প্রিয়ং বদেদিতার্থঃ ॥ ২৪ ॥ অস্য সর্বার্থের সর্ব্বের্থ
সাধনের অভ্রুলোযত্ত্বান্ তবেং নতুপ্রাতি কূল্য মালস্যং বা কুর্যাদিতার্থঃ
॥ ২৫ ॥ পণ্ডিতঃ পরিহাসকঃ পণ্ডিতঃ সিল্লাকেকবাবিতিবিশ্বঃ শণ্ডিওঃ ইতি
পাঠে বিচ্ছিদ্য ন সেবেত কিন্তুবিচ্ছেদেনৈব সেবেতেতার্থঃ অপ্রমত্তোহন
বহিতঃ ॥ ২৬ ॥ কছানাং রাজদতার বিক্রপেত ন চলেং ॥ ২৭ ॥ পণ্ডিতী।
বিদ্যাবান রাজানং কথাতী রময়ন্ পার্যে তিঠেং রিক্যাং রাজগোস্তুপ্রারং পৃষ্ঠিতঃ ॥ ২৮ ॥ শূরেন পণ্ডিতেন বা প্রন্তাং আসনং উপ্রেশ্বন
কর্ত্বর মিতার্থঃ রাজ্যাং সংদর্শনে সমক্ষং প্রব্রুমণি ভক্তীবেতনাদিদানং
আহং পুর্বিক্রানাকারিতঃসন্ ম সঞ্জেত স্বীকুর্বাং ॥ ২৯ ॥ এতকু ধার্য। ১৯

^{*} সভত মিতাত যত্নাচ্ছেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বদেদিতাত বসেদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

1 সংস্কারে দিতাত সংস্কাপে দিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

অপি ছেতদারিদ্রাণাং ব্যলীকং স্থানমুন্তমম্।
ন মৃষাভিহিত * রাজ্ঞাং মমুন্তারু প্রকাশবেং॥ ৩০॥
অস্থান্তি হি রাজ্ঞানো জনানমূত্রীদিন:।
তবৈশ্যেবিমনান্তে জনান্ পণ্ডিতমানিন:॥ ৩১॥
শ্রোহস্মীতি ন দৃশু: স্তাৎ বুদ্ধিমানিতি বা পুন:।
প্রিষ্মেবাচরনাজ্ঞ: থ্রিষে ভবতি ভোগবান্॥ ৩২॥
প্রিষ্মেবাচরনাজ্ঞ: থ্রেষে ভবতি ভোগবান্॥ ৩২॥
প্রিষ্মেবাচরনাজ্ঞ: থ্রেষে ভবতি ভোগবান্॥ ৩২॥
প্রিষ্মেবাচরনাজ্ঞ: থ্রেষ্ ভবতি ভোগবান্॥ ৩২॥
প্রার্মিক প্রাপ্য প্রার্মিক প্রাপ্য হ ।
অপ্রমন্তো ভবেদ্রাজ্ঞ: থ্রেষ্ চ হিতেষু চ॥ ৩৩॥
বস্তা কোপো মহাবাধঃ প্রসাদস্ত মহাফল:।
কন্তক্ষ মনসাপীজ্ঞেদনর্থং প্রাক্তসন্মত্ত:॥ ৩৪॥
ন চৌষ্ঠেই ন ভুজো জামু ন চ বাচ্ন সমাক্ষিপেৎ।
সদা বাতঞ্জ বাচঞ্চ জীবনঞ্চাচরেচ্ছনৈ:॥ ৩৫॥

দরিদ্রাণামণি ব্যলীক স্থানং অপ্রিরপদং কিযুতরাজ্ঞা মিতি ভাবঃ উত্তমং পরমং নেতি রাজ্ঞোদিতমন্তং বহিন প্রকাশরেও॥ ৩০॥ হি যমাও অনৃত বাদিহে। নৃপান হি যাতানো রাজানে। হয়ন্তি দোষ ব্যেন কীর্ত্তরান্ত তামাও আমিনে। ইকীর্ত্তিকরং ন বদে দিতার্থঃ অবমনাতে রাজান ইতি শেষঃ॥ ৩১॥ প্রিরে জোগবাংশ্চ ভবতীতি সম্বন্ধঃ॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ নচেতি জোগচাপলরোঃ স্চকং ওঠাদীনাং সমাক্ষেপৎ প্রয়ালনং ক্রাণাদিতার্থঃ বাতং মুখন্তং অধন্তনং বা শনৈরিতরেণাজ্ঞাতং বথা ভবেত্তথা কুর্যাদিতার্থঃ॥ ৩৫॥ হাস্তেতি অন ক্র রাজদেবকস্ত ক্রান্ত বজুরু হাস্তাম্পদের অয়থান্তিতের উঞ্চীষাদির বর্ত্তমানের বিনিম্নের তদীয়া বৈকলো নাত্যাচাও ন প্রহাণে নাপিছদেৎ

^{*} রাজাং মিতাত্র রাজ ইতি পাঠ: ক পুস্তকে। ় রাজত ইত্যত্র ভারতেতি প্রাঠঃ ক পুস্তকে।

হাক্সবস্তুমু চাপ্যক্ত বর্ত্তমানেমু কেমু চিং।
নাভিগাচং প্রহ্মব্যেত ন চাপুাল্পভবদ্ধনে ॥ ৩৬ ॥
ন চাতি ধৈর্যোণ চরেৎ শুরুতাং হি ব্রক্তেপা।
শিষ্তস্ত মৃত্পুর্বেণ দর্শয়েদপ্রমাদক্ষমা। ৩৭ ॥
লাভে ন হর্ষবেদ্যাস্ত্র ন ব্যথেদেয়াহ্বমানিতঃ।
অসংমূচণ্ট যো নিত্যং স রাজবস্তিং ব্দেং। ৩৮ ॥
রাজানং রাজপুত্রং বা * সংবর্ণযতি যং সদা।
অমাত্যং পণ্ডিতো ভূত্মা স চিরং তিষ্ঠতে প্রিয়ং॥ ৩৯ ॥
প্রস্থাতশ্চ যোহ্মাত্যো † নিগৃহীতশ্চ কার্থে।।
ন নিন্দতি টু চ রাজানং লভতে সম্পদং পুনঃ॥ ৪০ ॥
প্রভাক্ষপ্র পরোক্ষণ্য গুণবাদী বিচক্ষণঃ।
উপজীবী ভবেদ্যান্তো বিষ্ণে চাপি যো ভবেৎ॥ ৪১ ॥

তার্গতের রাজান এনং কুলং মন্ত ইতি ভাবং নচৈবস্তুতে নিমিত্তে সতিবৈর্গে কার্চবং ক্রেমিত্যাহনাতীতি ॥ ৩৬॥ গুরুতাং জডতাং কিমপ্যেয়ং ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবং অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমপ্যেয়ে ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবং অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমিপ্যেয়ে ন জানাতীতিবদেয়ু রিতি ভাবং অতএব স্মিতং মৃহ্পূর্বাং কিমিপ্রাক্তি ॥ ৩৮॥ নাজাতদাভিতাক্তেভাতর । এবেত্যাহরাজান মিতি সংবর্জনতীতি পাচেই স্মরতি তির্গতে প্রকাশতে॥ ৩১॥ ন নির্দাতি ন নিন্দুতি দ্বিতি দ্বিতি প্রাক্তি ভাবাহার আন্তর্গাহরাজান নিন্দুতি ন নিন্দুতি দ্বিতি দ্বাহারাজা বিষয়ে ভবেৎ দেশে বসেৎ বোবারাজ্ঞ উপজীবী সরাজাে গুণবাদীতা দিতি সমৃদ্ধঃ॥ ৪১॥ বলাদ্বিতি ভোকাং কুটিনীকর্ত্থ বেনকেন

^{*} সংবর্ণর তীতাত্ত সংবর্তরতীর্তিপাঠঃ ক পুস্তকে

† নিগৃহীতক্ষ কারনৈরিত্যত্ত নিগৃহীস্থকারনৈ রিতিপাঠঃ পুস্তকে।

1 নিক্ষতীতাত্ত নির্বদ তীতিপাঠঃ পুস্তকে।

णगारिता हि वलारिहाक्ट्र बाकानः श्रीरियक् यः।
न म जिर्छिकित्र स्रांत गरिक्क श्रानमः भयम्॥ ४२॥

(श्रीयः महाद्राना हृश्चेता, श्रीय त्र क्षा न मः वरहर ।

विदेशिर्यक ताकानः स्वांग्रंजृभितु मद्याना ॥ ४०॥

जन्नाता वलवान् श्रीक ।

म्कारा वलवान् श्रीक ।

म्कारानि मृक्षिः म ताकवमिकः वरमः ॥ ४६॥

जनामिन् (श्रीयामार्ग जू श्रीक । मृश्रीयः मग्रू । ४६॥

जास्य (श्रीयामार्ग जू श्रीक । वर्षिः मग्रू । ४६॥

जास्य देवव वर्षाः ह ताक्ष्र यरम्व । ४६॥

जास्य देवव वर्षाः ह ताक्ष्र यरम्व । ४६॥

जास्य देवव वर्षाः ह ताक्ष्र यरम्व । ४५॥

जास्य देवव वर्षाः ।

চিদ্বাজেন লোকান্ দশুয়েতি শিক্ষয়ন্ যঃ প্রার্থিকে সরাজঃ প্রিয়োগি বহুজন বিরোধাৎ চিরং স্থানং পদং নতিছে নাধিতিছে অবশাং পদচাতে। ভবেদিতার্থঃ ভোক্ত মিতি ভুজকোটিলো ইতান্ত রূপং ॥ ৪২ ॥
প্রেয়ইতি রাজঃ সকাশাদাঘনঃ স্বত্য শ্রেয়েধন মানাদি লাভং দৃষ্টা পরং
আনাং সদা সর্বদা রাজ্ঞাসার্নিং ন সংবদের স্যালয়েৎ কিন্তু মহারাজ্ঞা ন
ভবা দৃশান্ মন্ত্রে লক্ষয়তীতোর নোকে পরং দশ্রেৎ গোলভূমিয়ু য়ুদ্ধে
পাররাজ্ঞিকৈঃ সহ সংলাপে বা রাজানং বিশেষয়েৎ রাজ্ঞোপেক্ষয়া স্থীয়ং
শৌর্যাজ্ঞিকৈঃ সহ সংলাপে বা রাজানং বিশেষয়েৎ রাজ্ঞোপেক্ষয়া স্থীয়ং
শৌর্যাজ্ঞিকৈঃ বাহ্রিকং দশ্রেৎ তেন রাজা প্রীয়ত ইতি ভাবঃ
শাহুছা ॥ অমানঃ উৎসাহী বলবান্ ধী বলগুক্তঃ মৃহঃ অনিষ্ঠুরঃ দাতো
ভিত্তিক্রয়ঃ, স্থাক্ষিতোরা ॥ ৪৪ ॥ অন্যান্মিন্ পুংসি কন্ত চিৎ কার্যায়ার্থে
প্রেয়মাণে এহি ইদং কুর্বিভু ক্রমানে সতি যন্তদা গমনাৎ পুর্বং নমুৎপতে
ভৎকার্যাং কর্জুং সাশীএকারী রাজবসতিং বদেৎ ॥ ৪৫ ॥ আভরে ধনদার
সংরক্ষনাদো বাহো সামন্তেরে আদিন্ত আজ্ঞানে নিবকপ্রেত নৈবসংশয়ং ভয়ংবা কুর্যাৎ আনিঃসংশয়ে হারভ্রন্সত ভৎকার্থন প্রবাদেনেতে গ্র্থ
৪৬ ॥ প্রিয়াণ্য প্রিয়াণ জ্ঞীপুত্রায়পানাদি স্থানি ছঃখেন প্রবাদাদেন।

যো-বৈ গৃহেতাঃ প্রবদন্ প্রিয়াণাৎ নানুসংস্থারেৎ।

তঃথেন স্থামন্তিছেৎ স রাজবস্তিং বসেৎ।
সম বেশং ন কুর্বীত নাতুটেচঃ সন্থান বসং।
মন্তং ন বছধা কুর্যাদেবং রাজ্ঞঃ প্রিয়ো ভবেং॥ ৪৮॥
ন কর্মনি নিযুক্তঃ সন্ধনং কিন্নিদিপি স্পূদেশং।
প্রাপ্রোতি হি হরন্ দ্রবাং বন্ধনং যদি বা বধন্॥ ৪৯॥
যানং বন্ধনকার মচান্যং সংপ্রাক্তি।
তদেব ধার্যেনি তামেবং প্রিয়তরো ভবেং॥ ৫০॥
এবং সংয্মাচিওানি যুক্তঃ পাতুনন্দনাঃ।
† সংবংসর্মিমণ তাত্তথাশীলা বুভূবত।
অথ স্বিষ্যং প্রাপ্য যথাকামণ করিষাথ॥ ৫১॥

মুধিষ্ঠির উণাচ।

অপ্লুশিষ্টাঃ স্ম ভদ্রস্তে নৈতম্বক্তান্তি কন্দন। কুন্তীমৃতে মাতরং নো বিচুর্গ বা মহামতিম্॥ ৫২॥

॥ ৪৭ ॥ সমবেষং বস্তালঙ্গারাদিকং রাজ্ঞাসমানং ন কুর্বাৎ উচ্চৈঃ অতিশারেন বহুণা বহুপ্রকারং ন কুর্বাৎ ন ভিন্যাদিত্যর্থঃ ॥ ৪৮ ॥ ধনং-উৎ—
কোচাদিন। প্রাপ্তং কিঞ্চিলপৈ অত্যাপ ন স্পানের ॥ ৪৯ ॥ ষংসংপ্রাফ্রতি
রাজা তদেব রাজভং যানাদিকং ধাররের নতুতদন্তিম্দদ্যাদিত্যর্থ ॥ ৫০ ॥
সংযম্য নিগৃহ্টমং ত্রোদেশং সম্বংসরং হেতাত যুগিন্তির যুগুং সর্বের্ত্ত প্রাণীলাঃ যথোক্ত সন্থতাঃ সভ্যোর্ত্ত্রত প্রার্থিং প্রাপ্ত কিন্ত্রত প্রার্থিং প্রাপ্ত কিন্ত্রত প্রার্থিং প্রাপ্ত কিন্ত্রত ক্রিয়ার ক্রীডা
মিতি শেহঃ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ অনন্তরং অনুপদং কার্যাং শান্তিকং পৌতিকঞ্চ

বদেবিত্যবহর্ণেদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[†] সম্বংসর মিডাস্থাক্ এবং সংঘর্মাচিপ্রানীতি চরণদ্বরং ক পুস্তকে নান্তি।

ষদেবানন্তর কার্যাং তদ্ভবান কর্তুমইতি
ভারণাযান্ত তৃংখন্ত প্রস্থানায় জ্যাব চ ॥ ৫৩ !

ক্ষেত্রায়ন উন্স্চ ।
অকরে জিবিব সর্কার প্রেমান ব্যদিনীয়তে ॥ ৫৪ ॥
তেবাং সমিধ্য ভানমীয়ান্ত্রবচ্চ জুহাব সঃ ।
সমৃদ্ধির্দ্ধিলাভাষ পৃথিবীবিজ্যায় চ ॥ ৫৫ ॥
আগ্রং প্রদক্ষিণং কৃষ্ণা ব্রাহ্মণাংশ্চ তপোধনান্ ।
যাজ্ঞাননীং পুরস্কৃতা যাডেবাথ প্রব্রুজঃ ॥ ৫৬ ॥
গতেষু তেষু বীরেষু ধৌন্যোইথ জপতাম্বরঃ ।
অগ্লিহোত্রাণুপোদায় পাঞ্চালানভাগচ্ছত ॥ ৫৭ ॥
ইন্দ্রানাদ্যশ্চের যথোক্তাঃ প্রাপ্য যাদবান্ ।
রথানশ্বাংশ্চ রক্ষন্তঃ স্বথমুষ্ণ সুসংর্ভাঃ ॥ ৫৮ ॥

ইতি বিরাটপর্কানি পাগুবপ্রবেশপর্কানি ধৌম্যোপদেশে চতুর্থোহ্যায়ঃ॥৪॥

অসা অজ্ঞাতবাস হঃখনা তারণার প্রস্থানার শক্রন্ প্রতি যোদ্ধ গমনার জ্যাবচ রং কর্ম প্রতবতি তৎকর্তুমইনি ॥ ৫৩ ॥ ৫৪॥ সমিধ্য উদ্ধীপ্য শিক্ষাকাতি সম্পতিঃ রাদ্ধি বিশেষঃ লাভো রাদ্ধানাব্ধরা অপি পৃথিবা। বিজয়িরে বশীকরণার ॥ ৫৫॥ ষট্দ্রে পদ্যা সহিতাঃ॥ ৫৬॥ ৫৭॥ ৪৮॥

ইতি বিরাট পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে চতুর্থোৎধ্যায় ॥ ৪ ॥ বৈশন্ধাহন উনাচ।

তে বীরা বন্ধনিস্তিংশান্তথাবন্ধলানির ।
বন্ধনোলাঙ্গুলিত্রাণাঃ কালিন্দামভিতো যয়ুঃ॥ ১॥
ততন্তে দক্ষিণ তীরমন্বগচ্ছন্ পদাত্যঃ।
† নিরন্তা বনবাসাদ্বৈ স্বরাপ্তং পদাত্যঃ।
কালো গিরিত্রগেষু বনত্রগেষু ধন্দিনঃ॥ ।
বিধ্যন্তো মুগজাতানি মহেল্লামান্দ্কিনের তু॥ ১॥
উত্তরেণ দশার্ণাংশ্তে পঞ্চালান্দ্কিনের তু॥ ১॥
অন্তরেণ যক্কলোমান্ শূর্সেনাংশ্চ পাপ্তবাং।
লুকা ক্রন্ধান মহম্মতা বিষ্যান প্রাবিশ্বনাথ ॥ ৪॥
ধনিনো বন্ধনিস্তিশা বিব্লিধ শাক্ষনা ।
ততো জনপদ প্রাপ্যা ক্রন্ডা রাজনামত্রবাথ । ৫॥
পান্যকপদ্যো দৃশান্তে ক্রেলানি বিব্লানি দ।
ব্যক্তং দূরে বিরাট্যা রাজধানী ভবিষ্যানি ।
ব্যামেহাপরাং রাজিশ ব্লবান্ মে প্রিশ্রমঃ। ৬॥

তেবীরা ইতি নিজিংশঃ ধড়্গঃ কলাপিন ভূগবতঃ ততার্থেতি পাঠে সজীকত ধনুহঃ ততার্ধাশ্চতে কলাপিনশ্চেতি বিগ্রহঃ ক্ষংগোধাতলক জামাত বারণাখাঃ অসুলিতালঞ্চযৈতৈ বঁদ্ধগোধাসুলিতালাঃ গোধাতল নিহাক্ষো বিতিমেদিনী ॥ ১ ॥ ২ ॥ ০ অত্রেশ মধ্যতঃ মংস্টেম্য বড়েজ নিল্লি বাধাঃ মাইতি ক্রবাশঃ পাকে বাজাকাংশিকাঃ লুব্ধু আকাজিকান বাধে ইতি মেদিনী বিষয়ং মংসাসোব দেশং লুক্ষাভিন্যার্থং বিবর্ণাঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ একপদাঃ ক্লেত্রগামিনঃ কুল্মাগাঃ ॥ ৬ ॥

^{*} তথা^বদ্ধকৰাপিন ইভ,ত্ত ভতাযুধ কলাপিন ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

[🕆] নিত্তবিন বাসাদিতাৰ নিত্তবন বাসাহ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ধনপ্রর সমুদ্যম্য পাঞ্চালীং বহ ভারত। রাজধান্যাং নিবৎস্যামো বিমুক্তাশ্চ বনাদিতঃ ॥ ৭ ॥ এ অব্যাহন উলাচ।

ইধং কুটে মনুষ্যেক্র ! গহনামহতী শমী ! ভীমশাখা তুরারেহো শ্মশানস্য সমীপতঃ ॥ ১৩ ॥ ন চাপি বিদ্যুতে কশ্চিমনুষ্য ইতি মে মতিঃ।

্য যে হিন্মান্নিদৰতো দ্রফী ভবেচ্জ্রাণি পাগুব! । ১৪ ॥ উৎপথে হি বনে জাতা মূগবালনিষেবিতে। সমীপে চশ্মশানস্য গহনস্য বিশেষতঃ ॥ ১৫ ॥

। ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ কুটেইব কুটে উচ্চ প্রদেশে মারাক্রিশৃঙ্গয়েঃ বুট মিতি মেদিনী ভুরারোহা প্রশানস্থাৎ॥ ১০॥ ১৪॥ উৎপথে মার্গা-

बह्वि ८०॥ ३३॥

^{*} বস্তব্যানীতাত্ৰ প্ৰবেষ্টৰ্যমিতি পাচঃ খ পুস্তকে।

* সুমাধায়াযুধংশমা । গচ্চামো নগরং প্রতি।
এব্যত্ত যথা † জোগং বিহরিষাম ভারত। । ১৬॥
বৈশম্পাযন উবাচ।

এবম্বক্তা স রাজানং ধর্মাত্মান্ মুধিষ্ঠিরম্। প্রচক্রমে নিধানায় শস্ত্রানাং ভরত্র্যভ ! ॥ ১৭॥ (यन (नवाजानुष्याः०० मर्शाः रेव्हकत्ररक्षार क्रयः। ক্ষাতান্ জনপদানন্যানজযং কুরুপুঞ্চবং॥ ১৮॥ ততুদার ে মহাঘোষ সপ্রগণস্দন্য ৮ অপজামকরোৎ পার্থো গাণ্ডীবন স্বভযক্ষরীম্ ॥ ১৯ বেন বারঃ ক্রুফেত্রমভারক্ত পরন্তপঃ। অমুঞ্জনুষস্তম্য জ্যামক্ষয্যার যুগিষ্ঠিরঃ ॥ ২০॥ পাঞ্চল।न् रयन সংগ্রামে ভীমদেনে। হজ্বং প্রভুঃ। প্রতাবেধদয়ুনেকঃ মূপাত্রা দৈব দিগ্জিয়ে॥২১॥ নিশম্য যদ্য বিক্ষারং বিদ্রবন্তি রণে পরে। পক্ষতদ্যের দীর্ণস্য বিস্ফোটসশ্নেরিব॥২২॥ সৈন্ধাৰং যেন রাজানং 🗜 পর্যাসূষিত বান্থ। জ্যাপাশং ধনুষস্তম্ম ভীমদেনোহ্বতার্যৎ ॥২০॥ অজয়ৎ পশ্চিমামাশাং ধনুষা যেন পা গুৰঃ। মাত্রীপুলো মহাবাহস্ত আন্তো মিত ভাষিতা ॥২৪॥

। ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥ সম্পান বলানাং দেবারাধন প্রাপ্তবলঃ নাম স্কাদীনামিটিট স্দনং ॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ইসক্লবং জয়ক্রথং ॥ ২০॥ ২৪ ॥

^{*} সমাধায়ায়্ধংশমান্মিতাত সমাস্থান্ধানাসামিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

^{*} জোগমিতাত জোখমিতি প্রাঠঃ ক পুরকে

^{*} পর্যায়বিত বান্থেতাত্র পর্যায়বিত চান্য ইতি ক পুস্তুকে পাঠঃ।

ভন্ত মৌর্কীনপাকর্যজ্বং সংক্রেন্দ্রো যুধ।
কুলে নাপ্তি সমো কপে যায়েতি নকুলং স্মৃতং ॥ ২৫ ॥
দক্ষিণাশ দক্ষিণাচারো দিশং যেনাজন্ত প্রভুং!
আ'জিনিকরোদ্বীরং সহদেবস্তদাযুধমু ॥ ২৬ ॥
খড়গংশ্চ দীপ্তান্ দীর্ঘাশ্যে কলাপাংশ্চ মহাধনান্।
বিপ্লাঠান ক্রধানাংশ্চপর্ভির্নিধ্যুং সহ ॥ ২৭ ॥
বৈশ্পানন উপ্ত।

অথারশ,সরকুলং কুন্তীপুত্রো যুধিষ্ঠির:।
আরুছেনাং শনাং বির! ধনুংবেতানি নিক্ষিপ । ২৮॥
* তামুপারুহু নকুলোধনুংধি নিদ্ধে স্বযন্।
যানি ভক্ষাবকাশানি দৃতরূপান্যফলাত । ২৯॥
যান চপিশ্যত স বৈ ভিরে৷ বর্ধাণি বর্ষতি।
তত্র তানি দৃটেঃ পাশোঃ স্থগাতং পর্যবন্ধান ।
শরীরপ্ত মৃতক্ষৈক সমবপ্পত্রাঃ।
বিবর্জিযিষ্যন্তি নরা দুরাদেব শনানিমান্॥ ৩১॥
আবন্ধং শবমত্রেতি গল্পযান্তায় পুতিকন্।
অশাতিশতবর্ধেং মাতান ইতি বাদিনঃ॥ ৩২॥

শংক্রেশন শক্রণামাক্রন্দন করঃ ॥২৫ ॥ অপার্জাং জ্যারহিতং ॥ ২৬ ॥
বিপাচাণ্ বাণ বিশেষান্ তাদৃশান্ ক্ষুরধারাংশ্চ ॥ ২৭ ॥ অস্বণাসং আজ্ঞান ভিত্রতান্ ॥ ২৮ ॥ তদাণঃ শমাণঃ বকাশা নিভাগুরি মতেন অলোপঃ অব-বাণাধানি স্থার স্থানানি ॥ ২৯ ॥ বহাতিমেঘঃ তিরোবর্ষানি অসংমুখানি স্থানি স্থাঃ যত্তাপশাত তত্ত্ব পর্যাবন্ধত প্রিরেছাং ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ পুতিকং জিমলং অনীত্যধিক শত্রধানোহস্যাকং ইরমিতি শবনির্দেশঃ পক্ষেণমী
আঙ্গ রক্ষকত্বাং মাত্রগ্রাক্ষ মিতাভি সন্ধ্রঃ॥ ৩২ ॥

^{* ্}রায়পাক্তেতাসা প্রাক বৈশন্পায়ন উবাচ ইত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে

কুল্পর্যোহ্যনন্দাকং পূর্টের রাচরিতোহ্পি চ।
সমাসজ্যাথ রুক্ষেহ ন্দানিতি বৈ ব্যাহর ন্তি তে ॥ ৩০॥
আবোপালাবিপালেভ আচক্ষাণাং পরন্তপাং।
আল্প্রার্নগরাভ্যাশন পার্থাং শক্রনিবর্হণাং॥ ৩৪॥
জয়ে জয়তো বিল্লে। জয়ংসেনো জয়রলং।
ইতি গুল্লান নামানি চল্লে তেবান যুদিন্তিরং॥ ৩৫॥
ততো যথাপ্রতিজ্ঞাভিং প্রাবিশন্নগরং মহং।
অক্তান্ত্রগ্যাং বংস্থান্তো রাষ্ট্রে বর্ষন ক্রমেন্দার্॥ ৩৬॥

ইতি বিরাটণকাণি পাপ্তবপ্রবেশপর্কাণি অস্ত্রসংস্থাপনে পঞ্চমোধ্যায়ঃ॥ ৫॥

বৈশস্পারন উবাচ।

বির্নিনগর প্রম্যং গচ্চমানো যুধিষ্ঠিরঃ।
অস্তবন্ধরীং ॥ ১ ॥
যশোদা গর্ভদপভূতাং নারায়ণ বর প্রিয়াপ।
নন্দগোপকুলেজভোং মঙ্গলাং কুলবর্দ্ধিনী শ ॥ ২ ॥

কুলধামারং ক্ষাত্রধারং যদাবৃধ সংগোপন মিতি গুড আশয়ঃ পাকে। অয়ং মাতুর কৈ বন্ধনাধ্যং ॥৩০॥ ৩৪॥৩৫॥ বংস্টেভ। বসু মক্তঃ

> বিরাট পর্বাণ নৈলকণ্ট রে ভারতভাবদীপে পঞ্চমহিধ্যায়ঃ ॥ ৫ ॥

গচ্ছমানঃ গচ্ছন্ ত্রগাং ত্রগম সঙ্কট তারিবীং ॥ ১ ॥ নারায়ণেন দত্তাযেবরা উমেতি ভক্তকানীতি দেবাস্থাং পুরায়ষ্ঠীত্যেব মানয়ে। বিঞ্ পুরাণাদো শুচতান্তৎ প্রিয়াং মঙ্গল্যাং মঙ্গল প্রদাং ॥ ২ ॥ কংস.বিদ্যাবনকরী মস্ত্রাণাং ক্ষয়ংকরীং।
শিলাতট বিনিক্ষিপ্তামাকাশং প্রতিগামিনী ॥ ৩॥
বাস্ত্রাক্ত্রপ্রতি দিব্যমালা বিভূষিতাং।
দিব্যমিরবরং দেবীং থড় গথেটক ধারিণী ॥ ৪
ভারাবভরণেপুণ্যে যেক্সরন্তি সদা শিবাং।
তানু বৈ এররতে পাপ্তাৎ গক্ষেগামিবছর্কলা ॥ ৫॥
স্তোভুণ প্রচক্রনে ভূরো বিবিধিঃ স্তোত্রসম্ভবিঃ।
আমস্ত্রা দর্শনাকাক্ষ্মী,রাজাদেবাং সহামুকঃ ॥ ৬॥
নমোস্ত বরদে কৃষ্ণে কুমারি ব্রক্ষচারিণি।
বালার্ক সদৃশাকারে পূর্বিদ্রু নিভাননে ॥ ৭॥
চতুভূ ক্ষে চতুর্বক্রে শীন প্রোনি প্রোধ্রে।
ময়ুর পিচ্ছবলরে কেযুরাঙ্গদ ধারিণি।
ভাসিদেবি যথাগ্রা নারায়ণ পরিপ্রহ্ন। ৮॥
অরশং ব্রক্ষচ্যাঞ্জ বিশদ্প তবখেচরী।
কৃষ্ণছ্বিস্মাকুষ্ণাধ্রেরণ স্মাননা ॥ ৯॥

শিলাতটে কংসেনের বিনিক্ষিপ্ত: সভী আকাশং গভা তাং ॥ ৩ ॥ খেটকং
চর্মা ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ শুভার্গমের সন্তর উন্তরেশ্যেশ্যং নামাং বরদে ইত্যাদীনাং তৈঃ আমন্ত্রা সংখ্যা শুভারু প্রক্রমে ইভি পূর্বেন সহস্কঃ ॥ ৬ ॥
ক্ষেত্রক্ষম্বর্গে ॥ ৭ ॥ চতুত্বি চতুর্গজ্যে ইভি িক্ল ব্যারপ্র মুক্তং
মারুর বিক্ষাভানি, ইক্রনীলাদি মনিখতিওান বলরানি ষ্য্যাভ্র্যা বিধে পদ্মা লক্ষ্যীঃ অভ্রব নারারণ পরি গ্রেছা বিক্লকাভা ॥ ৮ ॥ বল্লচ্যা মিতাননা
গামিরং দশিতং তেন লোকিক লক্ষ্যী ভোষাবৃত্তিঃ কৃষ্ণক্র বিনীলি মেঘশেষ্ত্রন স্মা কৃষ্ণা কৃষ্ণবর্গা ॥ ৯ ॥

বিজ্ঞতা বিপুলোবাছ শক্রম্বলসমুজ্ন রো।
পাত্রীচ পক্ষজী ঘণীক্রীবিশুদ্ধাচ্যাভূমি। ১০॥
পাশং ধনুর্মহাচক্রণ বিবিধান্য যুদ্ধানিচ।
কুগুলাভ্যাং স্কুপ্রভ্যান কর্ণভ্যাঞ্চ বিভূবিতা॥ ১০॥
চন্দ্রবিস্পদ্ধিন দেবি মুখেনত্বন বিরজিলে।
মুকুটেন বিচিত্রেণ কেশবর্মেন শোভিনা॥ ১৯॥
ভূজজ্পা ভেলাব নেন জ্যোণ স্থত্রেল রাজ্ঞা।
বিজ্ঞাজসেচাবদ্ধেন ভোগেনেবেইমন্দর্ভ। ১০॥
ধ্বজেন শিথিপিচ্ছানামুচ্ছিন্তেন বিরাজনে।
কৌমারণব্রতমান্থায় ত্রিদবং পাবিত্রন্থা। ১৪॥
তেনত্বংস্থানে দেবিত্রিদশৈ পুলাসেপিচ।
তৈলোকা রক্ষনার্থায় মহিবাস্থা নাশিনি।
প্রমন্নানে স্থাত্রপ্রাং কুরুশিবাভব॥ ২৫॥
জ্যাত্বন ক্রাটেব সংগ্রামে চ জয় প্রদা।
মমাপি বিজয়ং দেহি বর্দারঞ্চ্যাম্প্রত্বন ১৬॥

অউত্সামাহ বিভাগিও বিপ্লো বরাত্য প্রদায়ন উর্জিতে ছোঁপাত তত একঃ পাত্রী পাত্রবান্ পঞ্জনী পদ্ধন্যান্ ঘটা ঘটাবান্ পঞ্জঃ । ১০॥ পাগংগল্ল মহাজক্ষ বিভাগিতি পূর্বেবাবালঃ এতানো বিবিধানা মুগ্রান্ত্র কুণ্ডল পূর্বেবি বেছা কর্নো তাঙাং বিরাজিতা ॥ ১১॥ কুলাবদ্ধেন কর্মী রূপেন ॥ ১২॥ বেণীং বর্গাতি ভূঁজদ্বাত ভূজদা ভোগবাদেন সর্পারীরা কারেন বাসো বাসনাতেন ভদাকার উপলক্ষাতে কটিস্ভেন সহরাজতার শোভমানেন কটিস্ত্রো পরিশ্বমান মা বেনোভাগঃ ভাগেন ভূজদা কারা ভদ্তা ভূজদোনতার্থঃ ভোগেন ভূজদা কারা ভদ্তা ভূজদোনতার্থঃ ভোগিনে বেভি যুক্ত প্রিচঃ ॥ ১০ ॥ ১৪॥ শিব্রক্লান রূপা ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

বিফোটের নগশ্রেষ্ঠে তবস্থান হৈ শাশ্তং। कालि कालि महाकालि मधुमारम পশুপ্রিয়ে॥ ১२॥ ক্লতার্য্যতাভূতৈস্ত্র বরদাকামচারিনি। ভারবিতারে যেচতাং সং অরিষাভিমানবাং ॥ ১৮ ॥ প্রথমন্তিচয়েত্বঃং হিপ্রভাতেত্বরাভূবি। নত্বোংছুল ভিং কিঞ্চিৎ পূত্ৰতোধনতোপিবা ॥ ১৯॥ তুর্গান্তারয়দেতুর্গে তত্ত্বং তুর্গাস্থ্য জানৈ ।। को छ। दिश्ववमञ्चानी १ मा भागा विभाग श्रामी (व ॥ २०॥ দস্তাভির্বানিরুদ্ধানাই ত্রুগতি । প্রমান্থাই। জনপ্রভারণে চৈব কান্তারেম্বট্রীমুচ। ২১॥ (ययाविक्याकारमिविन हमीमिक्रिकायाः। ত্ব^কীর্ত্তিঃ শ্রী ধুৰ্ণতিঃ সিদ্ধিন্ত্রীবিদ্যাসন্ত্রিসন্তিঃ॥২২॥ नकारतावि : अभानिकारकार एकाकारिक : क्रमान्या : I मुगाअवकान स्वाहर शुक्रतामः धनकातः॥ २**७॥** ব্যাধিং মৃত্যুং ভয়ুঞ্চৈব পুজিতানাশ্যিকাসি। সোহং রাজ্যাৎ পরিভ্রম : শরণং স্থান প্রপন্নবান্ ॥ ২৪॥ প্রণভশ্চযথ।মূধ্র তবদেবিস্থরেশ্বরি॥ **ঁতাহিমাণ পদ্ম**পতাকি মত্যেসভ্যাভবস্থন ঃ ২৫॥ ূশর**ণং ভবমেতুর্গে শ**রণ্যেভক্তবংগলে। 🕶 🖘 ং স্কৃত্যাহিসাদেরী দর্শয় নাসহিপাওবং। ২৬।

॥ ১৭॥ কৃতাত্ব বাঁঝে। নিতামত্বসূতা ভূতি ব সাদিনঃ প্রাচীনৈঃ ॥ ১৮॥ ॥ ১৯॥ কান্ডারে মহারণো ॥ ২০॥ কান্ডারে হুর্গমমারেগ ॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ ॥ ২৪॥ ২৫॥ ২৬ উপ্রম্য তুরাজানমিদং বচনমত্রবীৎ॥ দেব্যু বাচ।

শুগুরাত্র মহাবাহো মদীয়ং বচনং প্রভো ॥ ২৭ ॥ ভবিষ্যত্যচিরাদেব সংগ্রামেবিজয়ন্তব। মমপ্রসাদালিজি তাহতা কৌরববাহিনীং ॥ ২৮॥ রাজ্যং নিদ্ধণ্টকং ক্লবা ভোক্ষ্যমেদেনীং পুন:। ভ্রাতৃভিঃ সহিতোরাজন ঐীতিং প্রাপ্দ্যসিপুদ্ধলাও। ২৯%। মংপ্রসাদাচ্চতেসৌধামারোগাঞ্চ ভবিষাতি। (यहम॰ कीर्ङ्सियाछि लाक्तिवंशठकवार्याः ००॥ তেষাংত্তী প্রদায়ামিরাজ্যমায়ু র্বপুঃ স্থতং। প্রবাসে নগরেচ।পি সংগ্রামে শক্রসঙ্কটে॥ ৩১॥ ष्ठियाः पूर्वकाखात्त्र नागत्त भहत्न शित्तो । যেক্সরিষ্যান্তিমাং রাজন্ যথাহং ভবতাক্ষ্তা॥ ৩২॥ নতেষা পুল ভাং কিঞ্চি দিয়েন্লোকে ভবিষ্যতি। ইদং স্তোত্তবর্ণ ভক্ত্যা শৃণুৱাদ্বা পঠেতবা।। ৩৩।। ত্যা স্ক্রাণিকার্যাণি সিদ্ধিং যাস্যন্তি পাওবা :! মৎ প্রসাদাক্ত বং স্কান্ বিরাট নগরে স্থিতান্।। ৩৪।। নপ্রজ্ঞাস্যন্তি কুরবোনরাবাতলিবাসিন : 1

॥ ২৭॥ ২৮॥ ২৯॥ সংকীর্তারিয়ারি মামিতি শেষ: ১ ৩০॥ ৩১॥ ৩২॥ ॥ ৩০॥ ৩৪॥ ইত্যুক্ত্বাবরদাদেবীযুধিষ্ঠির মরিন্দম । রক্ষ্যাং কৃত্বাচ পাণ্ড্নাং ভাতেবান্তরধীয়ত ॥ ৩৫ ॥ ইতি শ্রীমহাভারতেবিরাট পর্বাণি পাণ্ডব প্রবেশ পর্বাণি তুর্গান্তবে বঠোধ্যায় । ॥ ৬ ॥ এতদেশীয় বহুতর পুস্তকে এতদধ্যানোভি ।

বৈশন্পায়ন উবাচ।
ততো বিরাটং প্রথম্ব যুথিন্ঠিরো,
রাজা সভায়ামুপবিকীমাব্রজং।
বৈদুর্য্যরূপান্ প্রতিগৃহ্য কাঞ্চনা,
নক্ষান্ স কক্ষে * পরিরভ্য রাসসা॥ ১॥
নরাধিপো রাষ্ট্রপতিং যশস্থিনং,
মহাযশাঃ কৌরববংশবর্জনঃ।
মহাস্থভাবো নররাজসংক্রতো,
তুরাসদন্তীক্ষবিষো যথোরগঃ॥ ২॥

11 20 11

ইতি বিয়াট পৰ্কনি নৈলকগ্যয়ে ভারতভাবনীপে ছুগান্তবঃ বর্জো২ধগায়ঃ ॥ ৬ ॥

রৈদ্ধা রপানু কাঞ্চনাংশ্চ শারীন্ ইদংখেতবক্ত শারীণাৎ শারিফলকন্ত চোপলক্ষণং অক্ষান্ পাশাংশ্চ বাসসা প্রতিমূচ্য বধা কক্ষে পরিগৃহ আবজ দিতি সম্বন্ধঃ ॥১॥ ২॥

^{*} পরিরভ্যেত্যত্ত পরিগৃহ্যেতি পাঠ: খ পুস্তকে।

বলেন ৰূপেণ নর্ষভো * মহা, নথ স্বৰূপেণ যথামবস্তথা। মহার জালৈরিব সংর্তা রবি, র্যথানলো ভস্মরত ক বীর্যাবান ॥ ৩॥ जगाপ उत्तर था गैभी कं। পा खरः, বিরাটরাডিন্তু মিবার নংরতম্। † সভাগতং পূর্ণশিশপ্রভাননং, া সহারুচারের চিরেণ দৃষ্টবার ॥ । ।। মন্ত্রিজান স্তনুখান্ বিশস্থা, যে চাপি কেচিৎ পরিতঃ স্মানতে। প্রপ্রজ্ঞ কে, হয়ং প্রথমণ সমীষ্টিবান, নুপোপনোহ্যং প্রামীক্ষতে দভাগ। ৫॥ ন তু দ্বিজোহ্যুং ভ্বিতা নরোন্তমঃ, প্রভিঃ পৃথিব্যা ইতি মে মনোগ্র**য্।** ন চাম্ভ * বাজী ন রথো ন কঞ্জর:, সমীপতো ভাজতি চায্যিক্রবং॥৬॥

•॥৩। নচিরেণ শীব্রমেব॥৪॥বিশো বৈশাবন্॥৫॥ ন তুদ্ধিরায়ং দিজী-বেষোপি রাজেব ভবিষাতীভার্থঃ॥৬॥

মহানথস্বরূপেণেতাত্ত মহানপূর্ব্ব রূপেণেতি পাচঃ খ পুস্তকে।

† সভাগতমিতাত্ত নমাগত মৈতিপাচঃ থ পুস্তকে।

‡ সহানুচারৈরিতাত্ত মহাভূতাব মিতি পাচঃ খ পুস্তকে।

* বাজীতাত্ত দাসইতি পাচঃ খ পুস্তকে।

শরীরলিকৈরুপস্থিচিতো হাযং, মূর্দ্ধাভিধিক্তস্তি,তি মেহত্ত মানদম্। मनी भग्रां डिह स्य भंडवार्या, 'যথা গজন্ত।মরসীং মদোৎকটঃ॥ १॥ বিতর্কযন্ত্র নবর্ষভক্ষথা, মুধিষ্ঠিরোংভোতা 'বিরাটমব্রবীৎ। সমাডি জানাত্মিছ জীবিভার্থিনং, বিন্ফীস্কাস্মুপাগতং দ্বিজম্ ॥ ৮ ॥ ইহাহমিচ্ছামি তব্নিঘান্তিকে, বস্তং যথা কামচরস্তথা বিভো। তমব্রবীথ স্বাগ্রতমিত্যন্তরং, * রাজা প্রহৃষ্টিং প্রতিসং গৃহান চ ॥ ৯ ॥ তং রাজিিংহ~ প্রতিগৃহ্য রাজা, প্রীতাল্পনা চৈনমিদ্দ বভাষে। কামেন তাতাভিবদামাহং ত্বাৎ, কস্যাসি রাজ্যে বিষয়।দিহাগতঃ॥ ১০॥ গোত্রক নামাপি চ শংসভত্ততঃ, কিঞ্চাপি শিল্প তব বিদাতে কুত্ম। ১১॥

দিনি কিন্তু আজান্ত্ৰাত্ৰাদিভিঃ তামরসীৎপদিনীং এতেন স্বাভিভবশঙ্কাদিশিতা । ৭॥ দ্বিজং ত্রৈবর্ণিক হাং ॥ ৮॥ কামচরঃ ত্র্দিস্ছান্ত্ৰর্জী ॥ ৯॥
ভীত্যাত্মনা ভীতিমতা মনসা কামেন রাগেণ তাতেতি শ্রেষ্ঠভাং সংবাধ
হাতি॥ ১০॥ শিপ্পং কোশলং কিং বিষয়ং তব ত্বয়াকুতং সম্পাদিতং॥ ১১॥

ব্যিন্তির উরাচ।

মুধিন্তির স্যাসমহং পুরা স্থান

বৈষা প্রপদ্যঃ পুনরন্মি বিপ্রঃ।

তাক্ষান্ প্রযোক্ত্রং কুশলোহন্মি দেবিতাং,

কন্দেতি নামান্মি বিরাট বিশ্রুতঃ ॥ ১২ ॥

বিরাট উবাচ।

দদামি তে হন্ত বরং যমিচ্ছাদি,
প্রশাধি মৎস্থান্ বশগোহস্মাহং তর।
প্রিয়া হি ধূর্তা মৃম দেবিনঃ সদা,
ভবাংশ্চ দেবোপম রাজ্যমর্কতি॥ ১৩ ॥

যুধিঠিরস্থৈতি লোকে পক্ষে যুধিঠিরোহং তবসখাসাগিংভূবাস মিতি সম্বন্ধঃ অন্তেরাণীলি ডিছান্দস আর্দ্ধাতুকরাভাবঃ তেন ভূভাবঃ ম্নোরিতা লোপাভাব ন ভবতঃ সলোপা ভাবোশিক্ষান্দসঃ যুধিঠিরভাহ মহংসখেতি পাঠেপি যুদিঠিরোহং মম সখাসাঃ ভব ইতি সম্বন্ধঃ হ মিতিভূপাদ পুরণার্থে নিপাতঃ পক্ষে অহমহ মিতি দিকক্তিঃ সার্ব্বভৌমে হপরসেবাং চিকীর্যামীতি চিন্তরা বৈতিতা স্থাচিকা বৈরাম্ম পদাঃ বাাম পাদেগাকেতবঃ বাামইবপততীতি ব্যামপাদ্যমঃ তত্তকলে জাতঃ বৈরাম পদাঃ
গার্গাদিলাং মঞ্চ্ বদ্বাবৈরামং ব্যামচর্ম তেন পরিষ্ঠতোরখোপিবৈয়ায়।
স্বাব পদাঃ পাদক্রমণীয়ং বাহন মসোতি বৈরামপদাঃ করিষ্ঠতো রথ
ইতাধিকতাদ্বৈপ বৈরামাদিভাঞ্ বিপ্রঃ বিশেষেণ প্রাতি পুর্রতি বান্ধগাদীন্ ধনাদিভি রিভি বিপ্রঃ ধর্মস্ক্রালা বিপ্রেহং ব্রন্ধাণ ইতি পাঠেতু বিশ্বা বিদিতি মুখাত্রবার্গো গৃহীতুং শক্ষঃ কংক ইতি ক্বান্ত নামেতি প্রাবেশক্তং অক্ষান্ প্রেভিল্ং ক্বালঃ রহদশ্ব শিব্যন্ধ ॥ ১২ ॥ দেবিনঃ দেবন শীলাঃ ॥ ১৬ ॥

4

গুণিটের উনাচ।
প্রাপ্তো বিবাদঃ প্রথম বিশাদপতে,
ন বিদ্যতে কশ্চন মহস্ত হীনতঃ।
ন ক্রেন্ডিডঃ কশ্চন ধার্থেন্ন নং,
ব্রো মনৈধাহস্ত তব প্রাদ্দ ঃ ॥ ১৪॥ ৭

, বিরাট উগ্রহ।

হর্ন্যামবশ্যং যাদ তেহপ্রিয়ঞ্চরেৎ, প্রবাজয়েয়ক বিষয়াদ্দিজ;ংস্তথা। শুন স্কুমে জানপদীঃ সমাগ্রাঃ,

े কল্কো যথাহৎ বিষয়ে প্রভুন্তথা॥ ১৫॥

সমানজঃতো 🔅 ভবিতাসি মে মথা, প্রভূতবস্ত্রো বছপানভোজনঃ।

পশোন্তমন্ত্ৰণ বহিশ্চ সৰ্বাদা,

কুতঞ্চ তে ছার্মপার্তং ম্যা। ১৬॥

প্রাপ্তে। বিনাদ ইতি দ্যতিনাং মধ্যে ইতি গেবঃ দ্যত কৃতাং মধ্যে
হীনতঃ হীনাং পরাজিতাং বংকঞ্কমপি প্রথমং রাজানং রাজপুত্রথ।
মুখাং জয়বন্তং গ্রথম শব্দোত্র শ্রেচবাটী তং প্রতি বিবাদঃ গ্রাপ্তের ন
বিদ্যতে ইতি ন সতা গন্ধরহিতেদ্যতে পরাজিতা জয়বভিঃ মহ নিতাং
কলহং কুর্বন্তো বেতার্থঃ হে বিশালাতে হেমংসাতি আদরার্থং দিঃ
নিংবাধয়তি ফ্মাদেবং তত্মাংকশ্চন কোপি মন্যা জিতো মে মদীরং ধনং
ন ধারয়েং অহংকলহান্তীতঃ হুমেব সভাঃ জারা মদীরং ধনং দাপ্যে
দিতার্থঃ ॥ ১৪ ॥ তেতব অপ্রিয় মিতিছেদঃ হথাহং বিবয়ে দেশে প্রভূত্থা ।
কদ্মেণীতি যোজনা ॥ ১৫ ॥ অন্তর্ম দারাদীন্ বহিঃ সৈন্যা রামাদীন্
প্রোঃ পর্যালোচয় অপারতং অনারতং ॥ ১৬ ॥

^{*} জাতইত্যত্ত যান ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

যে. সুষ্বাদেযুরর্ত্তিকর্ষিতা,
ক্রুরাশ্চ তেষাং বচনেন মাং সদা।
দাস্যামি সর্বাং তদহং ন সংশ্যো,
ন তে ভয়ং বিদ্যুতি স্নিগৌ স্মা । ১৭ ॥

বৈশাশ্যাম উবাচা।
এবং স লক্ষ্যা তু বরং সম্যাসমং,
বিরাটরাজেন নর্মভন্তদা।
উবাস বীরঃ ** প্রমার্চিতঃ স্কুথী,
ন চাপি কশ্চিচরিতং বুবোধতং ॥ ১৮ ॥

ইতি বিরাটপর্ঝনি পাওবপ্রবেশপর্ঝনি মুখিছিরএবেশে সপ্তমোহধ্যায়ঃ ৭॥

অনুবাদ্যেয়ুঃ পূর্ববং দেহীকুজো, দন্ত্রীসার ক্ষেত্রা রামাদেঃ প্রতিবর্ষং গ্রাদেও ছীতি রাজবচনং যদধিকারিণং প্রতি তদত্বাদন্তরিসিত্তং ধেরাং প্রতি অধুঃ প্রাপ্ন মুক্তেয়াং বচনেন সদা হনবসরে পিমাং ক্রয়াঃ ক্ষণমপি প্রাক্ষণ স্থাক্তঃ প্রতিবক্ষো-মাভূদিত্যাশয়ঃ ॥ ১৭ ॥ বরং শ্রেষ্ঠং সনাগ্যাং জ্বী তি ॥ ১৮ ৪ ইতি বিরুট পর্ববিণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাগদীপে

সপ্তমোহ্ধারঃ॥ १॥

^{*} বীরইত্যত্ত্র ধীরইতি পাঠঃ খ পুস্তকে ৷

रिवमान्याश्चन छेत्राह । অথাপরো ভীমবলঃ প্রিয়া জ্বল, न পाययो नि-इविनामविक्रमः। थणक मन्त्रीक करतन धातर्थ, মিঞ্চ কালাঙ্গমকোশমব্রণম্ ॥ ১॥ স স্থাদকপঃ পর্মেণ বর্চ্চদা, রবির্যথা লোকমিম< প্রকাশ্যন। श्रुक्षकारा शितिताक्ष्मात्वाः, স্তং মৎস্যরাজং দিমুপেত্য তস্থিবান্। ২ ॥ 🌞 তং প্রেক্য রাজা রময়নুপাগতং, ততোহব্ৰীজ্জানপদান্ সমাগ্তান। সিংহোরতাং সোহ্যমতীব ৰূপবান, প্রদুশ্যতে কো নু নর্ষভো যুবা॥ ৩। অদুউপূর্ব্ধঃ পুরুষো রবির্যথা, বিতর্ক্যরাস্য লভামি নিশ্চযম। তথাস্য চিত্ত^ ছপি সংবিতর্ক্যন্, নর্গভদ্যাস্য ন যামি তত্ত্তঃ॥ ৪॥

্ খজাং মন্ত্র দণ্ডং অজারাব ক্ষেপণং বা হস্ত্র কারং পিটবিকার প্রমথনার্থং বা দণ্ডং এজামন্থ প্রহন্তরো রিতি বিশ্বঃ দর্মাং শাকাদি পরিবেষবার্থিং অসিং মাংসাদ্যর কর্তনার্থং খজাং কালাদং কৃষ্ণায় সময়ং তীক্ষ্ণ
মিত্যর্থঃ অকোশং পিধান হীনং ॥ ১ ॥ গিরিরাজসারঃ মহামেকবৎ
কৃতিন দেহঃ বদ্ধী গিরিরাজ সারোলোহং তেন তদ্বিকার রূপৎ পাত্র জাতং
লক্ষাতে ভক্ষা দ্রব্য পাকার্থং স্বেহ পাকার্থং বা তদ্বন্ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ তত্বতঃ
তব্বং নয়্মি ম প্রাপ্রে:মি ॥ ৪ ॥

^{*} তংপ্রেক্ষ্য রাজা রময়নু পাগত মিত্যত্ত তংপ্রেক্ষ্য রাজান মিবান্তিকা গতমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

দুকৈ ব চৈন শংল বিচার্যামাহ শংল প্রকরিব জো যদি বা প্রকরেঃ।

জানীত কোহ্যং মম দর্শনে স্থিতো,

যদীপিত শু তল ভতাঞ্চ মা চির্নু । ৫॥
বিরাটবাক্যেন ভু তে গু প্রচোদিতা,

নরা বিরাটমা স্থশীঘ্রগামিনঃ।
উপেতা কোন্তেযমথাক্রবংস্তদা,

যথা ম রাজাবদতাচ্যুতানুজম্ ॥ ৬॥
ততো বিরাটং সমুপেত্য পাপ্তবঃ,

শুস্দীনরূপো বচনং মহামনাঃ।
উবাচ স্থদোংশ্মি নরেন্দ্র বল্লবো,
ভজস্ব মাং ব্যঞ্জনকারমুক্তমম্॥ ৭॥
নিরাট উবাচ।

ন স্থান ক্ষান ক্

॥ ৫॥ অবদতঃ উক্তবাৰ্ অচু:তে। ধর্মঃ কলমদহা ন চাৰত ইতি 'বোগাতিস্যাভ্জং॥ ৬॥ স্থদঃ পাককর্তা বল্লবো নামতঃ । ৭॥ ৮॥ 🗼

ভীম উবাচ।

নরেন্দ্র স্থান পরিচারকোহন্মি তে,
জানামি স্থান প্রথমং শ ন কেবলান্।
আমাদিতা যে নৃপতে পুরাভবন্,
যুধিন্তিরেণাপি নৃপেণ সর্বাশঃ॥ ৯॥
বলেন ভুল্যান্ড ন বিদ্যতে, মঘা,
নিযুদ্ধশীলন্ড সদৈব পার্থিব।
গজৈন্ড সিংহৈন্ড সুমী্যিবানহং,
সদা করিষ্যামি ভ্রান্ঘ প্রিয়ম্ম ১০॥
বিরাট উন্তাচ।

দদামি তৈ হন্ত বরান্ মহানসে,
তথা চ কুর্যাঃ কুশলো হি ভাষদে।
ন চৈব মন্যে তব কর্ম্ম যৎ দ্বমং,
সমুজনেমিং পৃথিবীং অমর্হান । ১১॥
† যথা হি কামন্তব তত্তথা কুত্রু,
মহানসে অং ভব মে পুরস্কৃতঃ।
নরাশ্চ যে তত্ত্ব মমোচিতাঃ ! পুরা,
ভবাংশ্চ তেবামধিপো ম্যা কুতঃ॥ ১২॥

ী ৯॥ ১০॥ তবকর্ম নটেব সমংমন্যে ইতর কর্মণেতি শেষঃ অতিমাস্ত্রং কর্ম বদসীত্যর্থঃ ॥ ১১॥ ১২॥

^{*} নেভাত্র চেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] যথাছিকামন্তৰতত্ত্বা কৃত্যমিতাত্ত্ৰ যথাছিকামন্তৰতন্ত্ৰথা কৃত্যমিতি পাঠঃ ধ পুত্তকে !

[🛊] মমোচিতাইত্যত্ত সমাহিতা ইতি পাঠঃ খ গুস্তকে।

11 00 11

বৈশন্দায়ন উবাচ।
তথা স ভীমো বিহিতো মহানসে,
বিরাটর†জ্ঞো দয়িতোহ ভবদ্দুদ্ম।
উবাস রাজ্যেন চ তং পৃথগ্জনো;
বুবোধ তত্রানুচরাশ্চ কেচন॥ ১৩॥
ইতি বিরাট পর্বানি পাণ্ডবপ্রবেশপ্রবানি ভীমপ্রবেশে
অফমোহধ্যার॥ ৮॥

বৈশলায়ন উবাচ।
ততঃ কেশান্ সমুৎক্ষিপ্য বেল্লিডাপ্রাননিন্দিতান্।
ক্ষান্ স্কান্ মৃদ্ন দীর্ঘান্ সমুদ্য গুটিস্মিতা॥ ३॥
কুগুহে দক্ষিণে পাথে মৃদ্নসিতলোচনা।
বাসন্চ পরিধাবৈকং ক্ষাং শ স্মলিনং মহৎ॥ ২॥
† ক্ষা বেশং হি সৈরন্ধাঃ ক্ষা চ ব্যচরন্তদা।
তাং নরাঃ পরিধাবন্তী অধিক সমুপাদ্রবন্॥ ৩॥
অপৃচ্ছংন্তিব তাং দৃষ্ট্য কা সং কিঞ্চ চিকার্থিন।
সা তালুবাচ রাজেন্দ্র সৈরন্ধ্যহাগতা॥ ৪॥

ইতি বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে অস্টমে(২ধ্যায়ঃ॥৮॥

বেলিভাগ্রান্ আকৃঞ্চিভাগ্রান্ সমুৎক্ষিপ্য বেণীকৃত্য• । ১॥ জ্বগুছে
গোপিতবভী॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

* কৃষ্ণমিতাত ক্ষেতি,পাঠঃ খ পুস্তকে
 † কৃত্বাবেশং হিসৈবন্ধ্যাঃ কৃষ্ণাচ ব্যচর উদা ইত্যত কৃষ্ণাবেষঞ্চ সৈরন্ধ্যা।
 শুতোব্যচরদার্ত্তবিদ তিপাঠঃ খ পুস্তকে॥

কর্ম চেচ্ছামাইং কর্ছ্ তস্য যো মাং * যুযুক্ষতি।
তস্যা রূপেণ বেশেন শ্লক্ষ্মা চ তথা গিরা।
নাশ্রুদ্ধত তাশ দাসীমরহেতোরুপস্থিতাম্। ৫॥
বিরটিস্য তু কৈকেরী ভার্যা প্রমস্মতা।
আলোক্যন্তী দদৃশে প্রাসাদাদ্দ্রুপদার্কাম্॥ ৬॥
সা, সমীক্ষ্য তথা রূপামন্থামেকবাসসম্।
সমাহ্যাত্রবীভজে কা ত্বং কিঞ্চ চিকীর্ষা দি॥ ৭॥
সা তামুবাচ রাজেন্তু গৈরিজ্যুহ্যুপাগতা।
কর্মা চেচ্ছাম্যহং কর্জুং তস্য যো মাং পুপুক্ষতি॥ ৮॥
স্থান্থোবাচ।

নৈবং ৰূপা ভবত্তোৰ যথা বদসি ভামিনি।
পেষযত্তী ব বৈ দাসীদাসাৎশ্চ বিবিধান বহুন ॥ ৯ ॥
† নে চেগুল্ফা সং হতো ক্লিপ্তিগান্তী বা ব ডুন্নতা।
রক্তা পঞ্চস্থ রক্তেষু হংসগলাদভাষিণী ॥ ১ • ॥
স্থাকেশী স্কৃত্তনী শ্যামা পীনশ্রোণিপ্যোধরা।
তেন তেনৈৰ সম্পন্না কাশ্মীরীৰ ভুরঙ্গমী ॥ ১১ ॥

যুযুক্ত যোজনিতু মিছত পুপুষতীতি পাঠে পোষনিতু মিছত ॥ ৫॥ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ নৈবং রূপার্মনি কিন্তু দানান্দানীক প্রেষয়ন্তীব বহুনাং স্থামনী অসীতার্থঃ ॥ ৯॥ নোচ্চোন বহিনিগতো গুটো ইতার্থঃ নোচ্চো ওলাকা পাদগ্রন্থী যদাাঃ দা তথা তিগন্তীরা তিয়ু শব্দ বুদ্ধিনাতিয়ু গ্রহ্মায়ন্তা রেট্সুনাসিকাক্ষিয়র শ্রের্নথন্তল ক্রাটিকাস্থ উদ্ভানা প্রুম্থ স্থানের পাদপানিতদ নেত্রান্তার্থ জিল্লা নথেন্থ এতানোব সংজ্ঞা। প্রুম্বকানি তেয়ুরক্তাহংসবং গলাদংভাষিণী॥ ১০॥ তেন তেন লক্ষণেন মক্ষণতিয়্দিনা॥ ১১॥

* যুষ্কতীতাত পুপুক্ষতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে! † নোচচগুলে্ফতাত গুচগুলে্ফতি পাঠঃ ক পুস্তকে! অপ্নালগক্ষনযান বিষে, তী তনুমধ্যমা।
কলুপ্রীবা গৃচশিরা পূর্বচন্দ্রনিভাননা ॥ ১২॥
শারদােৎ পলপত্রাক্ষ্যা শারদােৎ পলগক্ষযা।
শারদােৎ পলদেবিন্যা ব্রপেণ সদৃশী শ্রিযা॥ ১৩॥
কা স্ব:ক্রছি যথা ভদ্রে নাসি দাসী কথক্ষন।
যকী বা যদি বা দেখী গল্পব্রী যদি বাপ্সরাঃ॥১৪॥
দেবকন্যা ভুজঙ্গী বা নগরস্যাধিদেবতা।
বিদ্যাধনী কিন্নরী বা যদি বা রোহিণী খ্যুমু॥ ১৫॥
অলমুবা মিশ্রদেশী পুঞ্জীকাথ মালিনী।
ইন্দ্রাণী বাবাণী বা স্বং স্বন্ধুবাত্রং প্রজ্ঞাপভ্রেঃ।
দেবেয়া দেবেষু বিখ্যাভাস্তাসাং স্বং কত্রমা শুভে॥ ১৬॥
দেবিয়া দেবেষু বিখ্যাভাস্থাসাং স্বং কত্রমা শুভে॥ ১৬॥
দেবিয়া দেবেষু বিখ্যাভাস্থাসাং

নাম্মিদেবী ন গন্ধকৌ * ন যকী ন চ র ক্রমণী।

দৈরিক্ষা তু ভূজিব্যাম্মি সভামেতদুবীমি ভে ॥ ১৭ ॥
কেশান্ জানাম্যহং কর্তুং পিংঘে সাধু বিলেপনম্।
মল্লিকোং পলপদ্মানাং চম্পকানাং তথা শুভে ॥ ১৮ ॥
প্রথাঘষ্যে বিচিত্রাশ্চ ভ্রজঃ পরমশোভনাঃ।
ভারারমং সত্যভামাং ক্রফ্যা মহিবাং প্রিয়াম্॥ ১৯ ॥

জরালে বক্তে কৃষ্ণে বা পক্ষণীয় যোস্তাদৃশে নয়নে যস্যাঃ সাতৃধীকস্ব প্রীরাশংখবং রেখাত্রয়া ক্ষিত্রীবা ওচশিরা ওপ্তনাডিকা॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥
॥ ১৬॥ সৈরস্থ্রী ভূজিযাপিদে প্রাক্ষ্যবর্থ ব্যাখ্যাতে॥ ১৭॥ কর্তুং সংস্কর্ত্ত্রং
॥ ১৮॥ ১৯॥

^{*} ন যক্ষীতাত্ত্ৰ নাস্থ্যীতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

ক্ষণক ভার্যাং পাণ্টুনাং কুরুনামেকস্থলবীম । তত্ত্ব চরাম্যেবং * লভ্মানা স্থভোজনম্ ॥ ২০॥ বাসাংসি যাবচ্চ লভে তাবস্তাবদ্রমে তথা। গালিনীত্যেব মে নাম স্বর্য়ং দেবী চকার সা। সাহ্মভ্যাগতা দেবী স্থদেষে স্বলিবেশনম্ ॥ ২১॥

মূর্দ্ধ আন বাস্থেয়ণ বৈ সংশ্যো মে ন বিদ্যুতে।
নচেনিচ্ছতি রাজা আং গচ্ছেৎ সর্বেণ চেত্রা॥ ২২ ॥
প্রিযো রাজকুলে যাশ্চ যাশ্চেমা মম বেশানি।
প্রসক্তান্ত্যাং নির্নাক্ষতে পুমান্সং কন্ন মোহযেঃ॥ ২৩॥
রক্ষাংক্ষাবন্থিতান্ পশ্য য ইমে মম বেশানি।
তেহিলি আং সন্নমন্ত্রীব পুমাংস্ক কন্ন মোহযেঃ॥ ২৪॥
রাজা বিরাটঃ স্ক্রোণি দৃষ্ট্রী বপুরমান্ত্রম্।
বিহায মাং বরারোহে আন্ া গচ্ছেৎ সর্বচেত্রা॥ ২৫॥
যং হি অমনবদাজি তরলাযতলোচনে।
প্রসক্তমভিবীক্ষেথাঃ স কামবশ্গো ভবেৎ॥ ২৬॥
যশ্চ আং সততং পশ্যেৎ পুরুষশ্চারুহাসিনি।
এবন সর্বানবদ্যাঙ্গি সচানক্ষবশো ভবেৎ॥ ২৭॥

ুকুঞাঞ্চ ভার্যাং পাণ্ডুনা মিতি স্বান্ত্রনা স্বদ্যারাধনং সংভবতীতিনেরৎ

মুবোক্তিঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ রাজা বাংচের ইচ্ছতি তদাবাং মুর্মি বাসরে পরস্কু
রাজাবাং সর্কো চেতসা গচ্ছেং স্পৃহয়ে দেবেতিশঙ্কে ॥ ২২ ॥ বং জীণামাপ মোহকরী কিমুত পুংসামিত্যাহ জিয় ইতি ॥ ২৩ ॥ বৃদ্ধানিতি রক্ষা
অপি বাং দৃষ্ট্রান্তরাঃ সভীত্যর্বঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ প্রসক্তং আসক্তি যুক্তং
যথাস্যাত্ত্বা ॥ ২৬ ॥ এবমনে নৈবন্ত্রী রক্ষা দি শুরীভাব চিল্লেন ॥ ২৭ ॥

^{*} এবমিত্যত্তএকা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কু বাংগক্ষেৎ সর্ব্যচেত্যেতাত্ত গচ্ছেৎসর্ব্যেতিতাস তিপাঠঃ খ পুস্তকে।

অধ্যারোহেদ্যথা রক্ষং বধায়ৈবাজনো নরঃ। রাজবেম্মনি তে স্কুজরোহিতং ন্যান্ত্রা মন ॥ ২৮॥ যথা কর্কটকী গর্জাধতে মৃত্যুমালনঃ। তথাবিধমহং মন্যে বাসং তব শুর্লিম্মতে। ২৯॥ জোপ্লান্ড।

নামি লভা বিরা টেন ন চান্যেন কদাচন।
গল্পবাং পত্যো মহাৎ যুবানং পঞ্চ ভারিনি । ৫০॥
পূজা গল্পবিরাজস্য মহাসন্ত্রা কন্তাচিৎ।
রক্ষান্তি তে চ মাং নিতাং ছুংখাচারা তথা হাহ্যু॥ ০১॥
যো নে ন দদ্যাছছিটেং ন চ পাদৌ প্রধাব্যেং।
প্রীণেরংস্তেন বাদেন গল্পবাং পত্রো মম॥ ৩২॥
ধাহি মান পুরুষো গুল্যেদ্যথান্যাঃ প্রাকৃতাঃ প্রিষঃ।
* তামের স ততো রাজিং প্রবিশেদপ্রান্ । তনুনু॥ ৩০॥

॥ ২৮॥ কর্কটা বট্পাদবান্জন্তঃ ॥ ২৯॥ মহাংমম গদ্ধবি ইতি দেবতাং
শজ্বাদমান্ন্ৰমাত্ৰং বিবন্ধিতং অভিমান্ত্ৰ কৰ্মাণ ইতাৰ্যঃ ॥ ৩০॥
গদ্ধবি তুলো বাজা গদ্ধবিগাজঃ পাণ্ডুন্তদ্যতি গুঢ়োহভি সদ্ধিঃ চুংখা
ছুংখবতীতি ছুংখদা চাহং প্রপত্নীবাৎ আরা সিংহীব সিংহী প্রৈরনা ক্রমশীয়া আরুঃ পুংসি তরোভেদে তথা কর্কট দংক্রিনে, বিভি মেনিনা আরশকাদ দন্তবাৎ স্ত্রিয়াং টাপ্ স্বর্মেব তীক্ষরতা শীতিভাবঃ ছুংখাচারেতি
কেশকালোরং কিরান্ ম্যান্তীতি দশ্যাত ॥ ৩১॥ ৩২॥ প্রাং তইং
প্রবিশোভানেন প্রলোকং গক্তেদেবভুক্তিং ॥ ৩০॥ •

^{*} তামেৰ সততোরাত্রিসিত্যে তামেৰ নিৰ**্সাস**ল তা মিতি পাঠঃ খপুস্তকে !

[†] প্রবিশেদ পরাং তত্মিতাত্র প্রবিশাচ পরাংতই মিতিপাঠঃ খ প্রস্তকে।

ন চাপ্যাহং চাল্যিতুং শুক্যা কেনচিদঙ্গনে। ছুংখশীলা হি গস্ক্রান্তে•চ মে বলবংগ্রিয়াঃ॥ ৩৪॥ প্রদ্যাক্ষাপি রক্ষন্তি তে সাৎ নিত্যং শুচিসিতে। ক্রেক্ষোর্ড।

এবং আং বাসরিয়ামি যথা জ্বং নন্দিনীচ্ছনী। ৩৫। ন চপোদৌ নচোচ্ছিত শুক্ষানি জ্বং কথঞ্চন।

• বৈশক্ষায়ন উবাচ।

্এবং কুফা বির্টেশ্য জার্যায়া পরিসান্তি তা ॥ ৩৬॥ উবাস নগরে তলিন্ পতিধর্মবর্তী সতী। ন চৈনাৎ বেদ তত্ত্বান্যস্তত্ত্বেন জননেজয় ॥ ৩৭॥ ইতি বির্টিপর্কানি পাণ্ডবপ্রবেশপর্কানি দ্রৌপদীপ্রবেশে॥ নবমোহধ্যায়ঃ ১৯॥

⋖♦**०**

বৈশক্ষ্যারন উবাচ।

সহদেবাহণি গোপানা কৃত্বা বেশসনুত্তমন্॥
ভাষাকৈষা সমাস্থায় বিরাটং * নুপ্যাদথ॥ ১॥
গোঠসাসাদ্য ভিঠন্তং ভবনস্য সমীপতঃ॥
রাজাথ দৃষ্ট্বা পুরুষান্ প্রাহিণোজ্জাতবিস্ময়ং॥ ২॥

তুর্ণি দুঃখদীলা; কেনচিন্নিমিত্তেন দুঃখং সহতীতার্থঃ বল্বস্কদতে প্রিয়াশ্চ ॥ ৩৪॥ ছেনন্দিনি স্থদে॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥

> ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীনত্ত ভারতভাবদীপে নবমোহধ্যারঃ॥ ৯॥

> > -,-

উপরাৎ উপারাৎ ॥ ১॥ २॥

* উপ্যাদ্থেত্যত্র সমুপা্যযৌ ইতিপাঠঃ ক পুস্তকে।

ত্যাযান্তমভিপ্রেক্ষ্য ভাজমানং নর্বভয়। সমুপস্থায় বৈ রাজা পপ্রচ্ছ কুরুনন্দনুষ্ । ৩॥ ক্স্য বা বং কুতো বা বং কিং বা তাত চিকীৰ্যনি। বহি মে দুউপুর্বস্তং তত্ত্বং নহি নর্বভ । ৪ ॥ সং প্রাপ্য রাজানমমিত্রতাপন. खट्याश्ववीरबाष्ट्रमरश्चानः स्वतः। বৈশ্যেহ শ্মি নামাহমরিউনেমি, গোদংখ্য আদং কুরুপুঙ্গনামু॥ ৫॥ বস্তুং ত্বয়াচ্ছামি বিশাৎ বরিষ্ঠ, তানাজিনংহান হি বেলি পার্থান্। ন শক্যতে জীবিহুমপ্যকর্মারা, ন চ স্বদন্যো মম রোচতে নূপ:।। ৬।। বিরাট উবাচ॥ হুং ব্রাহ্মণো বা যদি বাসি ক্ষল্রিয়ঃ, সমুদ্রনেমীশ্বররূপবানসি। আচক্ষু মে ভত্ত্বমমিত্রকর্ষন,

ন বৈশ্যকর্ম স্বয়ি বিদ্যতে ক্ষমম্ ॥ १ ॥

॥ ৩॥ ৪॥ বেশো রূপান্তর প্রকাশনং কর্ম যস্য স্বিশাঃ শ্রুরিটনেমিঃ অপ্রতিহত চক্রোমীতি গুটোভি সন্ধিঃ কুরু পুদ্ধানাং পাণ্ডবানাং মধ্যে গোসংখ্যঃ গো ইতি ইন্দ্রির বাচিতাৎ পঞ্চানাং সংখ্যা গোসংখ্যঃ পঞ্চমংখ্যঃ পঞ্চম ইতার্থঃ ॥ ৫ ॥ তান্গুরাজ সিংহান্ রর্তমানকালে রাজমুদ্ধি ছান্ ন বেদ্মি নোপলতে স্বর্গী হন্ত বিদ্যান্দর্শনাদ্দিনাটো দর্শন মুক্ত মিত্য দোষঃ ॥ ৬ ॥ ৭॥

কস্যাসি রাজ্ঞা বিষয়াদিহাগতঃ,
কিঞাপি শিপ্পণ তব বিদ্যতে কৃত্য।
কথং ত্বমক্ষাস্থ নিবৎস্যসে সদা,
নদপ্র কিঞাপি তবেহ বেতনম্। ৮॥

महत्मव छेवाह।

পঞ্চানাং পাণ্ডুপুজানাং জোষ্ঠো ভ্রাতা যুধিষ্ঠিরঃ।
তদ্যাফশতদাহস্রা গরাং বর্গাঃ শতংশতা ॥ ৯ ॥
অপরে শশতদাহস্রা দ্বিস্তাবন্তম্বাপরে।
তেবা গোসঞ্জা আদং বৈ তন্তিপালেতি মা বিছঃ॥ ১০॥
ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্চ যক্ত সন্থ্যাগতং গবাম।
ন মেহস্ত্যবিদিতং কিঞ্চিৎ সমস্তাদ্দশযোজনম্॥ ১১॥
গুণাঃ স্থবিদিতা হ্যাদন্ মম তদ্য মহাল্মনং।
আসীচ্চ স ম্যা দৃষ্টঃ † কুরুরাজো যুধিষ্ঠিরঃ॥ ১২॥
ক্রিপ্রং হি গাবো বহুলা ভবন্তি,
ন তাস্থ রোগো ভবতীই কশ্চন!
তৈত্তৈরূপ বৈ বিদিতং মইমত,
দেতানি শিপ্পানি ম্যি স্থিতানি॥ ১৩॥

্। ৮।১। গোসংখো গবাং পরীক্ষকঃ ডন্তিপালঃ বচন করঃ।১০। সংখ্যাগতং পরীকায়ামবগতং ॥১১॥ ১২॥১৩॥১৪॥

ঋষভানপি জানামি রাজন্ পুজিতলক্ষণান্।

যেষাং মুত্তীমুপাভ্রায় অপি বন্ধ্যা প্রস্তুষতে॥ ১৪॥

^{*} শ ত জ দশেতিপাঠঃ ক গুন্তকে।

† দৃষ্টই াজ সুফইতিপাঠঃ ক গুন্তকে।

বিরাট উবাচ।

শতং সহস্রাণি সমাহিতানি,

* সবর্ণ বর্ণস্য বিমিশ্রিতান্ গুলৈ:।
পশুন্ সপালান্ ভবতে দদাম্যহ্ন,
ত্বদার্রেখা মে পশবো ভবস্তিহ ॥ ১৫ ॥
বৈশন্দায়ন উবাচ ।
তথা স রাজ্যোহবিদ্তো বিশাম্পতে,
রুবাস তবৈব স্থান নরেশ্বর:!
ন চৈনমনোহপি বিছুং কথঞ্জন,
প্রাদান্ত তক্ষৈ ভরণন যথেপিস্তব্ ॥ ১৬ ॥
ইতি বিরাটপর্কণি পাপ্তব্রেবেশপর্কণি সহদেবপ্রত্বেশে।
দশমোহধ্যায়ঃ॥ ১০ ॥

সমানোবর্ণো যেবাং তে সবর্ণাঃ বর্ণসা বর্ণেন বিমিঞ্জিতাক পাটলাদয়ঃ
বিজ্জালোপ আর্মঃ সবর্ণাক বর্ণবিমিঞ্জিতাকতান্ ভত্তত্ত্তা।
উপালক্ষিজান্ ॥১৫ ॥ রাজ্জো রাজ্জা কর্জুঃ বিশাম্পাতেঃ প্রজ্ঞাপালকস্য ভরণং
বেজনং ॥ ১৬ ॥

, ইতি বিরাট পর্ত্তাণ নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে দশমোহধ্যায়ঃ ॥ ১০॥

^{*} সবর্ণ বর্ণস্য বিমিশ্রিতান্ গুলৈরিতাত্ত্বর্গম্য বর্গস্য বর্গস্য বর্গস্য বর্গস্য বর্গস্য কর্মস্য ক্রিস্ট্রান্ত ক্রেস্ট্রান্ত ক্রিস্ট্রান্ত ক্রেস্ট্রান্ত ক্রিস্ট্রান্ত ক্রিস্ট্রান্ট

বৈশস্পায়ন উবাচ!

অথাপরোহদৃশ্যত ৰূপদৃস্পদা, खौग् मलका तथरता त्र्रिश्मान्। ধাকিরিবপ্রে প্রতিমুচা কু গুলে, দীর্ঘেচ কম্বু পরিহাটকে শুভে। ১। * राष्ट्र मीर्घा० मह विकीया मूर्ककान, মহাভুজো † বার্ণমন্তবিক্রম:। গতে ভূমিৎ প্রতিকল্পায়ৎ স্তদা, বিরাটমাসাদ্য সভাসমীপতঃ ॥২ ॥ তং প্রেক্ষ্য রাজোপগতং সভাতলে, ‡ সত্রপ্রতিচ্ছন্ন্মরিপ্রনাথিনফ। বিরাজমান প্রমেণ বর্চসা, স্তুতং মহেন্দ্রস্য গজেন্দ্র বিক্রমম্॥ ৩ ॥ সব্বানপুচ্চ সমীপচারিণঃ, * কুতোহ্যমায়াতি পুরা ন মে ক্রতঃ। न रेहनभूट्र विषिठ । यहा नताः, স বিন্মিতো বাক্যমিদং নূপোহত্ত্রবীৎ॥ ৪॥

অদৃশ্যত দৃষ্টঃ রূপদম্পদা উপলক্ষিতঃ প্রাকার বপ্রেস্থিতঃ তৎসমীপে বা স্থিতোহ দৃশাত দৃষ্টঃ প্রতিমূচা পরিধার দীর্ঘে কুগুলে তাডকে কন্ধু নাং 'শংখানামুপরিহাটকে কনকময়েবলয়ে পরিমুচ্য । ১ । দীর্ঘান্ মুর্ধজান্ ' वाहू ह व्यविकीशं व्यमार्थ। ॥ २ । ७ ॥ १ ।

^{*} শুহুচ ইত্যত্ত বহুংশ্রেতি পাঠঃ ক পুস্তকে। ণ বারণ মত্তবিক্রম ইত্যত্ত বার্ণ তুল্য বিক্রম ইতিপাঠঃ খ পুস্তকে। া মত্তেত্যব্যাজাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে। ন মীপদারিণ ইত্যত্ত সভাভ্চারিণ ইতি পাঠঃ খ প্রকে।

সজ্বোলপন্নঃ পুরুষো মরোপমঃ, 🌣 শ্যামো যুবা বারণ্মৃথপোপমঃ।/. বিমৃচ্য কন্মু পরিহাটকে শুভে, বিমুচ্য বেণীমপিনহ্য কুগুলে। ৫॥ অথী † সুকেশী পরিধায় বাসসী, শোভস্ব ধন্বী কবচী শরী যথা। আরুহা যানং পরিধাবতাৎ ভবান, স্থতৈঃ সমো মে ভব বা মধা সমঃ ॥ ৬॥ র্দ্ধোহ্যহু বৈ পরিহারকাম, স্কান্ মৎস্যাপ স্তর্মাপাল্যস্থ। নৈবংবিধাঃ ক্লীবৰূপা ভবন্তি; কথঞ্চনেতি প্রতিভাতি মে মনং॥ १॥ অৰ্জুন উবাচ। গাযামি নৃত্যাম্যথ বাদ্যামি, ভদ্রেখি মৃত্যে কুশলোহিমি গীতে! ष्रमुखतारेय अनिमन्त्र ! मान त्रयः,

ভবামি দেবা নরদেব নর্তকঃ॥৮॥

'॥ ৫॥ ৩॥ পরিহার কাম: অমাত্যের রাজ্যভারৎনাস্থকাম: ॥ ৭॥ দেবা। উত্তরায়া: ॥ ৮॥

🛊 অদিশবেতাত পরিধংখেতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

^{*} মরোপম ইতাত্ত মনোরম ইতি পাঠঃ ক পূশুকে।

† স্বকেশীতাত্ত স্বেশঃ বাসদীতাত্ত চাৰ্থা শোভন্যেতাত্ত স্বশোভেতি
পাঠঃ ধ পুস্তকে।

ইদন্ত রূপং মম যেন কিন্তব,
প্রকীর্ত্তবিদ্ধা ভূশশেকবন্ধ নম্।
বৃহন্নলাং মাং নরদেব বিদ্ধি,
শুত্ত পুতা বা পিতৃমাতৃবিদ্ধিতামু ॥ ৯ ॥
বিষাট উবাচ।

দ্দামি তে হস্ত বর্থ বৃহন্নলে,
স্তাঞ্চ মে নর্ত্তি যাশ্চ তাদৃশী:।
ইনন্ত তে কর্ম স্মংন মে মত্ত্র,
সমুদ্রনেমিশ পৃথিবীং অমর্হসি॥ ১০॥
বৈশল্পাঘন উবাচ।
বৃহন্নলাং তামভিবীক্ষ্য মৎস্যরাট্,
কলাস্থ নৃত্যেয়ু তথেব বাদিতে।
সংমন্ত্র্য রাজা বিবিধেং অমন্ত্রিভিং,
পরিক্ষ্য হৈন্ত্র প্রমদাভিরাশু বৈ॥ ১১॥
অপুংস্থ্মপ্যস্য নিশ্ম্য চ স্থির্ত্র্ণ,
ততঃ কুমারীপুর মুৎসমর্জ তম্!
স শিক্ষযামাস চ গীতবাদিতং,
স্থতাং বিরাট্স্য ধনপ্রয়ঃ প্রভুং॥ ১২॥
সখীশ্চ তদ্যাং প্রিচারিকান্তথা,
প্রিয়শ্চ তা্যাণ স বভ্ব পাত্তবং॥ ১০॥

যেন হেতুনা ইদং রূপং মমজাতং তংকীর্তনং তবনিকটে ব্যর্থং শোক কর্মঞ্চেত্যর্থঃ। ১। তে সমং হদা কৃত্যা যুক্তং ন ইতি মে মমমতং । ১০। ১১। অ শুংবুং ক্লীব হুং নিশম্য জানোচা। ১২। ১৬। তথা স সত্রেণ ধনপ্পয়োবসন্
প্রিয়াণি কৃর্বন্ সহ তাভিরাত্মবান্।
তথা চ ত তত্র ন জভিরে জনা,
বহিন্দরা বাপ্যথ বাস্তরে চরাঃ । ১৪ ॥
ইতি বিরাটপর্বণি পাপ্তবপ্রবেশপর্বাণি অর্জুনপ্রবেশে
এক।দশোহধ্যায়ঃ ॥ ১১ ॥

रिवमन्भाशम छेत्राह।

অধাপরোহদৃশ্যত পাগুবং প্রভু,
র্বিরাটরাজং তরসা সমেঘিবান।
তমাপতন্তং দদৃশে পৃথগ্জনো,
বিমুক্তমন্ত্রাদিব স্থ্যমগুলম্ ॥ ১ ।
স বৈ হ্যানৈক্ষত তাংস্তত্ততঃ,
সমীক্ষমানং সদদশ মহন্তরাটু।
ততোহত্তরীস্তাননুগান্তরেশ্বঃ, *
কুতোহ্যমাযাতি নরোহ্মরপ্রভঃ ॥ ২ ॥

স্ত্রেণ কৈত্তবেন স্ত্রমাছাদনে যজ্ঞে সদাদানে চ কৈত্ত্বে ইতি বিশ্বঃ ন , জ্ঞাজেরে ন জ্ঞাত্তবন্ধঃ ॥ ১৪॥

> ইতি বিরাটপর্কাণ নৈলকগীরে ভারতভাবদীপে• একাদশোহধ্যায়ঃ a ১১ a

1 5 1 2 1

^{*} महत्रवंत दें ज अभिज्ञार, दें के भागः क भूखः ।।

আর হানীক্ষতি মামকান্দ্দ,
দ্রুবং হযজে। ভবিতা বিচক্ষণঃ
প্রবেশ্বভামের সমীপমাশু মে,
বিভাতি বীরো হি ষথামরস্তর্থা॥ ৩॥
সোহভোত্য রাজানমমিত্রহাত্রবী,
ক্রিযোহস্ত তে পার্মির ভদ্রনস্তরং!।
হ্যেষু মুক্তো নৃপ্য স্মাতঃ সদা,
তবাশ্বস্থাতো নিপুণো ভ্রামাহম্॥ ৪॥
বিরাট উবাচ।

দদামি যানানি ধন নিবেশ্নং,
মমাধ্যস্তো ভবিতু স্মইনি।
কুতোহিদি কভাদি কথং স্মাগতঃ,
প্রস্তি শিশ্পং তব দিবাতে চ যং। ৫॥
নকল উবাচ।

পঞ্চানাং পাণ্ডুপুক্রাণাং জ্যেষ্ঠে ভ্রাতা যুধিষ্ঠিরঃ।
তেনাহমশ্বেষু পুরা নিষুক্তঃ শত্রুকর্ষণ ॥ ৬ ॥
অশ্বানাং প্রকৃতি বৈদ্মি বিনযক্ষাপি সর্বাশঃ।
ছুফীলাং প্রতিপত্তিঞ্চ কুৎস্নং চৈব চিকিৎসিতম্॥ ৭ ॥
ন কাতর্ব স্থান্ম জাতু বাহনং,

ন মেহন্তি দুকা বড়বা কুতো হযাঃ। জনস্ত মামাহ স চাপি পাণ্ডবো, যুধিকিরো গ্রন্থিকমেব নামতঃ । ৮॥

॥৩॥ ৪॥৫॥७॥ প্রকৃতিং জাতিং বিনয়ং শিক্ষাং প্রতি পতিং দোষ নিরাকরণ প্রকারং চিকিৎসিতং ব্যাধ্যুপণমোপায়ং॥৭॥ কাতরং ভীক বডবা অখা অতএব অস্থিকং অখণান্তজ্ঞং॥৮॥ বিরাট উবাচ।

যদন্তি কিঞ্জিন্নম বাজিবাহনং, **७ मञ्ज गर्का जुम्भी न मना दे**व । ষে চাপি কেচিন্মম বাজিযোজকা ন্ত্রাপ্রাঃ সার্থিয় চনন্ত মে॥ ৯ " हेनः उत्वर्धः यनि देव स्ट्रावायम, প্রক্রি যতে প্রসমীক্ষিতং বস্তু। ন তেহন্তৰপং হ্যকৰ্ম বিদ্যুতে, প্রভাসি রাজেব হি সম্বতো মম ॥ ১০ ॥ যুধিষ্ঠিরস্থেব হি দর্শনেন মে, সমং তবেদং প্রিয়সত্র * দর্শনম্। কথস্ক ভূতৈয়ং স বিনাক্সতো বনে, বসভ্যানন্যো রম্তে চ পাপ্তবঃ ॥ ১১ । বৈশস্পায়ন উবাচ। তথা স গন্ধবিবরোপমো যুবা, বিরাটরাজ্ঞা মুদিতেন পুজিতঃ , न रेहन मरना १ शि विष्टः कथ्यन,

প্রিয়াভিরামং বিচরন্তমন্তরা॥ ১২ ॥

11 2 11 20 11 22 11 25 11

* প্রিয়মত্তে তাত্ত প্রিয়দর্শেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

এবং হি মংস্কোন্যবস্তু পাপ্তবা,

যথা প্রতিজ্ঞাভিরমোদদর্শনাঃ।
অজ্ঞাত্চুর্হণাৎ ব্যাচরন্ সমাহিতাঃ,
সমুদ্রমৌপতযোহতিছুঃখিতাঃ॥ ১০॥
ইতি বিরাটপর্কানি পাপ্তবপ্রবেশপর্কানি নকুলপ্রবেশে
দাদশোহধ্যায়ঃ॥ ১২॥

সমাপ্তকেদং প্রবেশপর্র।

॥ ১৩ ॥ ইতি ঐবিরাটপর্কণি নৈলকগীয়ে ভারতভাবদীপে নকুলপ্রবেশোনাম দ্বাদশোহধ্যায়ঃ॥ ১২॥



জনমেজর উবাচ ৷

এবং তে মৎস্থানগরে * বসন্তস্তত্ত্র পাপ্তবাঃ।*
অত উর্দ্ধৃ মহাবীর্যাঃ কিমকুর্বতে বৈ দ্বিজ। ১।
বৈশপায়ন উবাচ। • ,

এবং তে মৎস্থানগরে প্রক্ষাঃ কুরুনন্দনাঃ।
আরাধ্বন্থা রাজানং যদকুর্বৃত তৎ শূণু॥ ২॥
তৃণবিন্দোঃ প্রসাদাচ্চ ধর্মস্ত চ মহান্মনঃ।
অজ্ঞাতবাসমেবস্ত বিরাটনগরেহ্বসন্।। ৩॥
যুধিন্তিরঃ সভাস্তারো মৎস্থানামভবৎ প্রিয়ঃ।
তথৈব চ বিরাটস্ত সপুল্রস্ত বিশাম্পতে॥ ৪॥
স হাক্ষ্সদবজ্ঞান্ ক্রীডয়ামাস পাপ্তবঃ।
অক্ষবত্যাং যথাকাম শ্রুবন্ধানিব দিক্জান্॥ ৫॥
শ্রুজাতঞ্চ বিরাটস্ত বিজিত্য বস্থ ধর্মরাট্।
ভাত্ত্যঃ পুরুষব্যান্তো যথাইং সংপ্রযক্ত্তি॥৬॥
ভীমসেনোহপি মাংসানি ভক্ষ্যাণি বিবিধানি চ।
অতিস্টানি মৎস্তেন বিক্রানীতে যুধিন্তিরে॥৭॥,
বাসাংসি পরিজীণানি লক্ষ্যান্তঃ পুরেহর্জুনঃ।
বিক্রীণানশ্চ সর্বেভ্যঃ পাপ্তবেভ্যঃ প্রযক্ত্তি॥৮॥
॥১॥২॥০॥৪॥৫॥৬॥৭॥৮॥ .

^{*} বসন্তন্ত্রপাও বা ইত্যত্র প্রচন্ধনাঃ কুরুনন্দনা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

সহদেবোছপি গোপানা বেশমাস্থায পাওব:। দবি ক্ষীরং ঘৃতঞ্চিব'পাগুবেভ্য: প্রযক্তি ॥ ৯ ॥ নকুলোহপি ধনং লকা কুতে কর্ম্মনি বাজিনাম। সুফেতি মিন্নরপতৌ পাওবেভ্যঃ প্রয়ছতি। ১০ ॥ কৃষ্ণাপি সর্কান্ ভর্ত্ংস্তানিরীকত্তী তপদ্বিনী। যথা পুনরবিজ্ঞাতা ভগ্গা চরতি ভামিনী॥ ১১॥ प्यं मण्यानयंखरः जनारनाष्ट्रना० महात्र्याः । বির।টনগরে চেরুঃ পুনর্গর্ত্তে ধূতা ইব ॥ ১২ ॥ সাশকা ধার্ত্তরাষ্ট্রশু ভ্যাৎ পাণ্ডুস্কভান্তদা। প্রেক্ষমাণান্তদা কুফামূযুশ্ছন্না নরাধিপ ॥ ১৩ ॥ অথ মাদে চতুর্থে তু ব্রহ্মণঃ স্কুমহোৎদবঃ। আদীৎ সমূদ্ধো মংস্থেষু পুরুষাণাং স্থসন্মত: ॥ ১৪॥ তত্র মল্লা: সমাপেতুর্দিগে্ভ্যা রাজনু সহস্রশঃ। সমাজে ব্রহ্মণো রাজন্ যথা পশুপতেরিব ॥ ১৫॥ মহাকাষা মহাবীষ্যাঃ কালকঞ্জা ইবাস্থরাঃ। বীর্য্যোন্মন্তা বলোদগ্রা রাজ্ঞা সমভিপুজিতা:॥ ১৬॥ সিংহস্কলকটিগ্রীবাঃ স্ববদাতা মনস্থিনঃ। षमकूलकालकाराख त्र भार्थितमित्रिधी ॥ >१॥

॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ সম্পাদ্যভোষ্কাসারাধ্যন্তঃ গর্ভপ্নতাইব প্রচ্ছির্বেদ সেবাজ্রমেণ্ড ছংখিতা ইতার্থঃ ॥ ১২ ৭ ১০ ॥ ব্রহ্মণ উৎসবঃ শর্জি নৈবধান্যোৎপক্তৌ, সর্কৈঃ ক্রিয়তে সচ দেশবিশেষে প্রান্ধিঃ ॥ ১৪॥ অথাব্রহ্মণঃ সমাজে ব্রহ্মলোকে, কৈলাসে বা পশুপতেঃ সমাজে ইব মৎসেয়েরু সম্বাধেতুরিতিসহন্ধঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬॥ অবদাতাঃ অত্যন্ত নির্মালাঃ মনস্বিনঃ প্রতিম্নসঃ। লক্ষ্কাংপ্রাপ্তবিজ্গাঃ ॥ ১৭॥

टिकारमरको महानामी e मर्खमलान् ममाञ्चान् । আবল্গমান ওং রঙ্গে নোপতিষ্ঠতি ক'চন 🛚 ১৮ 🗈 যদা সবে বিমনস স্তে মলা হতচেতসঃ। অথ ফুদেন তং মলং যোধ্যামাস মংস্তর্ট ॥ ১৯॥ নোদ্যমানস্ততো ভীমো তুংখেচৈবাকরোক্তিম। ন হি শক্ষেতি বিরুতে প্রত্যাখ্যাতু নরাধিপ্যু॥ ২০ ততঃ স পুরুষব্যাঘ্রঃ শার্দ্দ লশিথিলক্রন্,। প্রবিবেশ মহারঙ্গং বিরাটমভিপুজয়ন॥২১॥ ববন্ধ কক্ষাং কৌন্তেযস্ততঃ সংহর্ষয়ন জনমুণ ততপ্ত রুত্রসন্ধাশং ভীমো মল্ল॰ সমাহ্বয়ং॥ ২২॥ জীমূতং নাম তৎ তত্ত্র মল্লৎ প্রখ্যাত্রিক্রমন। তারুভৌ স্থমহোৎসাহারুভৌতীব্রপরাক্রমৌ ॥ ২০ ॥ मलाविव महाकारयो वातरनो विधिश्वरनो। ততক্তৌ নরশার্দ্দূলৌ বাছ্যুদ্ধং সমীয়তুঃ॥ ২৪॥ বীরৌ পরমসৎক্ষষ্টাবন্যোন্যজয়কাজ্ফিণ্টো। আদীৎ সুভীমঃ সংপাতো বজ্রপক্ষতযোরিব ॥ ২৫ ॥ উভৌ পরমসৎ ऋको বলেনাতিবলাবুভৌ। অন্যোন্যস্তান্তরং প্রেশ্ব পরস্পরজধৈষিণৌ । ২৬॥

.॥ ১৮॥ স্বেন ভীমেন ॥ ১৯॥ ছঃখেনিব পারতক্রাৎ্ প্রাকট্যভয়াদা ছঃখং নতুভদ্পভয়াৎ বিরতে প্রকাশে,॥২০॥২১॥ কক্ষাংপরিকরং কচ্ছামিতি পাঠেপি, সত্তবার্থঃ যদা কক্ষাং রজ্জুং রজ্জাপাটনভয়ামারৈ রক্লাো বধান্ত ইতি প্রসিদ্ধেরস্থী বিদ্ধেতার্থঃ॥২২॥২০॥২৪॥২৫॥ ॥২৬॥

महरमदाइलि গোপান। विभागेश्वाय शीखवः। দ্ধি ক্ষীরং মৃতধ্যৈব'পাগুবেভ্যঃ প্রয়ক্তি। ১॥ नकुटलार्शि धनः लक्षां कृट्ड कर्म्मान वाकिनाम्। সুম্ফ-তিমান্বপতৌ পাওবেভ্যঃ প্রযক্ততি। ১০ ॥ কৃষ্ণাপি সর্কান্ ভর্তৃংস্তানিরীকন্তী তপবিনী। যথা পুনরবিজ্ঞাতা তথা চরতি ভামিনী॥ ১১॥ এবং সম্পাদযভতে তদান্যোহন্য মহাব্রথা:। বিরাটনগরে চেরুঃ পুনর্গর্ত্তে ধৃতা ইব ॥ ১২ ॥ সাশক্ষা ধার্ত্তরাষ্ট্রশু ভ্যাৎ পাণ্ডুস্থতান্তদা। প্রেক্ষমাণান্তদা কুফামূযুশ্ছনা নরাধিপ ॥ ১৩ ॥ অথ মাদে চতুর্থে তু ব্রহ্মণঃ স্কুমহোৎসবঃ। আসীৎ সমৃদ্ধো মৎস্থেষু পুরুষাণাং স্থসন্মতঃ ॥ ১৪॥ তত্র মল্লা: সমাপেতুর্দিগ্ভ্যা রাজন্ সহস্রশঃ। সমাজে ব্রহ্মণো রাজন্ যথা পশুপতেরিব ॥ ১৫॥ মহাকাষা মহাবীষ্যাঃ কালকঞ্চা ইবাস্থরাঃ। বীর্যোশ্বতা বলোদগ্রা রাজ্ঞা সম্ভিপুজিতা: ॥ ১৬॥ সিংহস্করকটিগ্রীবাঃ স্ববদাতা মনস্থিনঃ। अमकूलकाराएउ त्र शार्थितमित्रि ॥ >१ ॥

মিন ১০ ॥ ১১॥ সম্পাদর স্থোহন্য মারাধরন্তঃ গর্ভপ্নতাইব প্রচ্ছর বেন সেবাক্রমেণ্চ ছঃখিতা ইত্যর্থঃ ॥ ১২ ৭ ১০ ॥ বন্ধা উৎসবঃ শরদি নৈবধান্যোৎপক্তো, সর্কোঃ ক্রিয়তে সচ দেশবিশেষে প্রাদিদ্ধঃ ॥ ১৪ ॥ বথাবন্ধাণঃ সমাজে বন্ধানে, কৈলাসে বা পশুপতেঃ সমাজে ইব মৎসেয়ের সমাপেতুরিভিস্বদ্ধঃ ॥ ১৫ ॥ ১৬॥ স্ববদাতাঃ অভ্যন্ত নির্মালাঃ মনস্থিনঃ প্রতিম্নসঃ। লক্ষ্যাং প্রাপ্তবিজ্যাঃ ॥ ১৭॥

टिक्रायरको सङ्गिनोनी**९ मर्ख्यलान् म**र्या**इत् ।** আবল্গমান তং রক্ষে নোপতিষ্ঠতি কশ্চন। ১৮। যদা সন্ধে বিমনস স্তে মলা হতচেতসঃ। অথ ফুদেন তং মলং যোধযামাস মৎস্তর্ট ॥ ১৯॥ নোদ্যমানস্ততো ভীমো তুংখেচৈবাকরোন্মতিম। ন হি শক্ষেত্তি বিরুত্তে প্রত্যাখ্যাতৃ । নরাধিপম্ ॥ ২০॥ ততঃ স পুরুষব্যাঘ্রঃ শাদ্দি লশিথি**লশ্চ**রন্। প্রবিবেশ মহারঞ্চং বিরাট্যভিপুজয়ন ॥ ২১ ॥ ববন্ধ কক্ষাং কৌন্তেযস্ততঃ সংহর্ষয়ন জনমুণ ততন্ত রুত্রসঙ্কাশং ভীমো মল্ল সমাহ্বয়ং॥ ২২॥ জীমুতং নাম ত^ তত্র মল্ল^ প্রখ্যাত্রিক্রমন। তাবুভৌ স্থমহোৎদাহাবুভৌতীব্রপরাক্রমৌ ॥ ২৩ ॥ प्रख्यावित प्रकारियो वातर्गो विधिश्यरमो। তততো নরশার্দ লৌ বাছ্যুদ্ধং স্মীয়তুঃ॥ ২৪॥ বীরৌ পরমসৎহৃষ্টাবন্যোন্যজয়কাজ্কিণৌ। আদীৎ সুভীমঃ সৎপাতো বজ্রপর্বতেযোরিব ॥ ২৫ ॥ উভৌ পর্মসৎক্ষৌ বলেনাতিবলাবুভৌ। অন্যোন্যস্থান্তরং প্রেশ্ব পরস্পরজবৈষিণৌ । ২৬ ॥

.॥ ১৮॥ স্টেন ভীমেন ॥ ১৯॥ ছঃথেইনব পারতন্ত্রাহ্ প্রাকটাভয়াদা ছঃখং নতুভদভয়াৎ বিরতে প্রকাশে ॥২০॥২১॥ কন্দাংপরিকরং কচ্ছামিতি পাঠেপি সত্তবার্থঃ যদা কন্দাং রজ্জুং রজ্মপাটনভয়ান্তর রস্কুলো। বধান্ত ইতি প্রসিদ্ধেরস্কুলী বিদ্ধেতার্থঃ ॥২২॥২০॥২৪॥২৫॥ ॥২৬॥ উভৌ পর মসং ক্ষেটা মন্তাবিব মহাগজো।
ক্রতপ্রতিক্তিকি বিক্রিছিভিশ্চ স্থান্ধটিঃ।
সন্নিপালাবধূতৈশ্চ প্রমাথোন্ধথনৈতথা ॥ ২৭ ॥
ক্রেপালাবধূতিশ্চব বরাহোদ্ধু তনিস্থনৈঃ।
তলৈকিজনিপাতৈশ্চ প্রস্থাভিস্তথৈব চ ॥ ২৮ ॥
শ্লাকানথপাতুল্চ পাদোদ্ধুতৈশ্চ দারুণৈঃ।
জানুভিশ্চাশানির্ঘোধিঃ শিরোভিশ্চাবঘট্টনৈঃ # ॥ ২৯ ॥
তদ্যুদ্ধমভবদ্যোর্মশস্ত্র বাহুতেজ্সা।
বলপ্রাণেন শূরাণাৎ সমাজোৎসবসন্ধিধী ॥ ৩০ ॥

কৃতং কচিদেশে নিপীজনং প্রতিকৃত্বতি তদা মোচনং স্থু সঙ্গ টিঃ মুফি প্রহণন ক্রণীকৃতিঃ সকটকৈ বিভিপাকে সকবিঃ সকিলৈবি। কণিকো বাহুচরণ কবচে কঠিনে কিণে ইতি বিশ্বঃ সন্নিপাতোহ পদংঘট্টনং অবস্ত্তং তেনৈব দ্বীকরণং প্রমাথাদর উক্তা মল্লগাস্ত্রেঃ নিপাতা পেষণং ভূমোপ্রমাথ ইতিকথাতে যকুথারাক্ষমথনং তত্বমথন মুচাতে ॥ ২৭ ॥ ক্ষেপণং কথাতে যকু স্থানাৎ প্রচাবনং হচাৎ উভযো র্জু রোম্বাইক্রেরিমধ্যে নিপাতাতে মুফি বিভাচাতে তত্ত্তি মল্লবিদ্যাবিশারকৈঃ অবাজমুখং কন্ধণতং ভামারহা তথৈব যঃ ক্ষিপ্রদা শব্দঃ সভ্তেম্বরাহোদ্ধ তনিঃ শ্বনঃ তলৈ বন্ধনিপাতৈঃ বন্ধবদ্ধ তথাতৈ ক্রেপটিঃ অপুলাঃ প্রস্তার্যা স্ত্রাঃ প্রস্তার উদীরিতাঃ ॥ ২৮ ॥ ঋত্বী দৃঢাক্যা ক্ষিপ্রাশলকে সাপ্নিশীস্তা তদ্যানখপাতিঃ পাদেশদ্ধতঃ পাদপ্রমারণেনাক্ষেপিঃ জান্ত্রিঃ শিরোভিক্ত ক্তির্বঘটনে রাক্ষালনে, অন্মনির্ঘেধি বিত্যুত্র বিশেষণং ॥২৯ ॥ অশ্বংনিক্রাং যথোক্তং তত্ত্বে বাহুদ্ধং হি মল্লানাক্সের্মুভিঃ স্মৃতং মৃত্রা তদ্যা ন স্বর্গো যণো নেহাপি বিদ্যুত ইতি বলপ্রান্ম ব্রুলন শারীরবলেন প্রাণেন মান্ম বলেন ॥ ৩০ ॥

^{*} ঘউনৈরিতাত্র ঘটিতৈ বিতি পাঠঃ ক পুস্ত:ক।

অরজ্যত জনঃ স্বাঃ সোৎকুফনিনদোখিতঃ। বলিনোঃ সম্যুগে রাজন্ রত্রবাসক্ষেরির ॥ ৩১ ॥ व्यक्षंनाकर्षंगरयात्रज्ञाकर्वविकर्षरेगः । আকর্ষত্মথান্যোন্যং জানুভিশ্চাবজন্মতুঃ ॥ ৩২ ॥ ততঃ শব্দেন মহতা ভং সহতো পরস্পর্য। ব্যচোরস্কৌ দীর্ঘভুজৌ নিযুদ্ধকৃশলাবুভৌ। 🕟 বাছভিঃ সমসজ্যেতামাযদৈঃ পরিঘৈরিব ॥ 🖎 ॥ চকর্ষ দোর্ভ্যানুৎপাত্য * ভীমো মলম্মিত্রহা। বিনদন্ত মভিকোশন্ শাৰ্দিল ইব বারণম্। ৩৪॥ তমুদ্যম্য মহাবাহুর মিয়ামাস বীর্যবান্ : ততো মলাশ্চ মৎস্থাশ্চ বিস্মৃষ্ণ চঁক্রিরে পরম্। ৩৫। ভামযিত্বা শতুগুণং গতসত্ত্বমচেতনমু। প্রত্যপি শ্বন্মহাবান্তর্শল পুর্বি রুকোদরঃ। ৩৬॥ তিশান বিনিহতে † মলে জীমতে লোকবিঞাতে। বিরাটঃ প্রম্প হর্ষমগচ্ছদাক্ষাবৈঃ সহ্॥ ৩৭ ॥ স হর্যাৎ প্রদদৌ বিত্তপ বহু রাজা মহামনাঃ ! वल्लवाय महातरङ यथा देवञ्चवन्छया॥ ७৮॥

সোৎজুফননদঃ হীহীশব্দাচ্চারণেন যজ্জিত্দ্য সমুত্থাপনং তৎসহিতঃ
॥ ৩১ ॥ আকুষ্যজোডীকরণং প্রকর্ষণ মুদাহতং আকর্ষণং লালারৈব
সংমুখীকরণং স্মৃতং পুরঃ পশ্চাং পার্থয়োশ্চান্ত্যাকর্ষো জন্নণং তথাপশ্চাং
প্রপাতনং বেগাদ্বিকর্ষণ মুদাহতং ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ গতসত্বং
নফার্দ্বিং অতএব অচেতনং শব ভূতং॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ২৭ ॥ ৩৮ ॥

^{*} উৎপাতোতাত্র উৎপাটোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া মল ইতাত্র বীর ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

এবং স স্ববছূন্ মল্লান্ পুরুষা শচ মহাবলান। বিনিম্ন মংস্তরাজ্য প্রীতিমাহরতুত্তমাম্॥ ৩৯॥ যদাস্থ তুল্যঃ পুরুষো ন কশ্চিৎ # তত্রবিদ্যতে। তদা খ্যাইন্সেচ সিংইঃস্চ ত্বিরদৈশ্চাপ্যযোধ্যং ॥ ৪০॥ পুনরন্তঃপুরগতঃ স্ত্রীণাং মধ্যে রুকোদর:।। যোগ্যতে স বিরাটেন সিং হৈশ্মতৈ শহাবলৈ। । ৪১॥ বীভৎস্থরপি গীতেন স্বনৃত্যেন চ পাগুবং। বিরাট৲ তোষযামানু সর্কাশ্চান্তঃপুরে স্ত্রিয়ঃ ॥ ৪২ ॥ অশৈকিনীতৈ ৰুবলৈস্তত্ৰ তত্ৰ সমাগতৈঃ। তোষ্যামাস রাজানং নকুলো নৃপসভ্মম্॥ ৪৩॥ তকৈ প্রদেষং প্রায়ক্তৎ প্রীতো, রাজা ধনং বহু। বিনীতানুষভান দৃষ্ট্য সহদেবস্থা † বা বিভো। थनः नर्मो उद्घ विधः विज्ञा े शूक् यर्ष ७३ ॥ ६८ ॥ দৌপদী প্রেক্ষ্য তান স্বান্ ক্লিশ্বমানা আহারথান। নাতিপ্রীতমনা রাজন নিঃশ্ব।সপর্যাভবং ॥ ৪৫॥ এবং তে ন্যবসংস্তত্ত প্রচ্ছন্ন। পুরুষর্যভাঃ। কর্মাণি তম্ম কুর্মাণাঃ বিরাটনূপতেস্তদা । ৪৬॥ ইতি বিরাটপর্বাণি সময়পালনপর্বণি জীমূতবধে ज्याम् (भार्थायः ।)०।

॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪৩॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ইতি শ্রী বির টপর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে কু গ্রেয়াদশোহধ্যায়ঃ॥ ১৩॥

^{*} তত্ত্ব বিদ্যাত ইতাত্র প্রতাদৃশ্যতেতি পাঁঠঃ ক প্রস্তব্দে।

শ বা নিস্তো ইত্যত্ত্ব চাভিতঃ ইতি পাঠঃ খ পুস্তব্দে।

বেশন্দানন উবাত।

বসমানের পার্থের মংশুশু নগরে তদা।
মহারথের চ্ছনের দশ মাসাঃ সমাযযুঃ ॥ > ॥
যাজ্ঞানেনী স্কনেফান্ত শুক্রবন্তী বিশান্দাতে।
আবসং পরিচারার্হা স্কুত্রুং জ্নমেজ্য ॥ ২ ॥
তথা বসন্তী পাঞ্চালী স্কনেফারা নিবেশনে।
তাৎ দেবীং তোষমামাস তথা চান্তঃপুরে স্ক্রিয়ঃ ॥ ৩ ॥
তান্দ্র বর্ষে গতপ্রায়ে কীচকস্ত মহাবলঃ।
নেনাপতির্বিরাট্শু দদশ দ্রুপদাল্লজান্ ॥ ৪ ॥
তাং দৃষ্ট্য দেবগর্জাভাং চরস্তীৎ দেবতামিব।
কীচকঃ কাম্যামাস কাম্বাণপ্রপীডিতঃ ॥ ৫ ॥
স তু কামাগ্রিসন্তপ্তঃ স্কুদেঞাসভিগ্ন্মা হৈ।
প্রহ্মনিব সেনানীরিদ্ধ বচন্মব্রবীং ॥ ৬ ॥
নেযং পুরা জাতু ম্যেহ দৃষ্টা,

রাজ্যে বিরাটস্থ নিবেশনে শুভা। ৰূপেণ চোঝাদ্যতীব মাং ভূশণ গল্পেন জাতা মদিরেব ভামিনী॥৭॥ কা দেবৰূপা হৃদ্যঙ্গমা শুভে, আচক্ষ্ব মে কম্ম কুতোহত্তশোভঁনে।

ારુ કર્ાગાશાહાઝાના

চিত্তং হি নির্দ্মথ্য করে।তি মাং বশে, ন চান্যদক্রৌষধমন্তি ধে মত্র ॥ ৮॥ অহো ভূবেয়ে পরিচারিকা শুভা, প্রত্যপ্ররূপ। প্রতিভাতি মামিষ্য । অযুক্তৰপং হি করেতি কর্ম তে, প্রশাস্ত মান যুদ্ধ মমান্তি কিঞ্চন ॥ ১ । প্রভুতনাগাশ্বরথং সভাজনং, সমুদ্রিযুক্তং বছপান ভোজনম। মনোহর কাঞ্চনচিত্রভূষণং, গুহৎ মহচ্ছোভযতানিযং মম। :।। ততঃ স্থাদেষ্যমনুমন্ত্রা কীচক, ন্ততঃ সমভ্যেত্য নরাধিপাত্মজাম। উবাচ क्रकामिंगाञ्ज्य रखना, মুগেক্তকন্যামিব জন্মুকে। বনে ॥ ১১॥ কা ত্বং * কস্তাসি কল্যাণি কুতো বা ত্ব॰ বরাননে। প্রাপ্তা বিরাটনগরং তত্ত্বমাচক্ষ্ব শোভনে॥ ১২॥ ৰূপমগ্ৰাৎ তথা কাত্তিঃ দৌকুমাৰ্য্যমনুত্ৰমণ্। কান্ত্যা বিভাতি বক্ত্ৰং তে শশাক্ষ ইব নিৰ্দ্মনম্॥ ১৩॥ নেত্রে স্থবিপুলে স্বল্ধ পত্রপত্রনিভে শুভে। বাক্য ন্তে চারুসর্বাঙ্গি পরপুষ্টরুতোপমং । ১৪॥ **এব-क्रशां यया नाती का** हिम्ना मही छल ।

অনাদে বিধং এতাং বিনা ॥৮॥ প্রত্যগ্ররণ। দিবা রূপা॥৯॥১০॥ ১১॥১২॥১০॥পর পুটাং কোর্কিনঃ ॥১৪॥

^{*} গ্রু মিতানা প্রাকৃ কীচক উনাচ ইতি পাঠঃ ক পুত্রক।

ন দৃষ্টপূর্বা সুশোণি যাদৃশী অমনিনিতে ॥ ২৫॥ লক্ষীঃ পদালয়া কাত্মমথ ভূতিঃ স্থমধামে। ত্রীঃ শ্রীঃ কীর্ত্তিরথো কান্তি, রাসাৎ কা স্বং বরাননে ॥ ১৬॥ * অতীব ৰূপিণী কিন্তুমনঙ্গাঙ্গবিংগরিণী। অতীব ভ্রাজসে স্থক্ত প্রভেবেন্দোরমুক্তমা॥ ১৭। অপি চেক্ষণপক্ষণাং * স্মিতজ্যোৎস্নোপমং শুভম্। দিব্যাংশুরশ্মিভির্য ক্রং দিব্যকান্তিমনুত্তমম্ ॥ ১৮ ॥ নিরীক্ষা বক্তচক্রণ তে লক্ষ্যানুপময়া যুত্র। কুৎম্মে জগতি কো নেহ কামস্য বশগো ভবৈৎ। ১৯॥ श्वानकात्रायाला ज् खत्ने काद्वायाना ज्ञा স্কুজাতৌ সহিতৌ লক্ষ্যা পীনৌ রুস্তৌ নিরন্তরৌ ॥ २७ ॥ কুড্যালাম্বুরুহাকারেী তব স্থক্ত প্যোধরেী। কামপ্রতোদাবিব মাং তুদতশ্চারুহাসিনি॥ ২১॥ বলীবিভঙ্গচভুরং স্তনভারাবনামিত্য। করাগ্রাসন্মিতং মধ্যং তবেদং তনুমধ্যমে॥ ২২॥ দুক্তৈব চারু জঘনৎ সরিৎপুলিনসন্মিভম্।

॥ ১৫॥ ভূতিঃ ঈশ্বরী ঐশ্বর্গান্তি মানিনী দেবতা॥ ১৬॥ অনন্ধান্ধ রিহারিণী, স্মরদেহেন ক্রীড়ন্তী রতী রিত্যর্থ:॥ ১৭॥ ঈশ্বণপক্ষাণাং নেরপক্ষাণাং নিরপক্ষাণাং নিরপক্ষাণাং নিরপক্ষাণাং ক্রিছিলনং তদেব জ্যোৎস্বোপমং মন্স আহ্লোদকরং, লক্ষাণ মিতি পাঠে বক্র চন্দ্র বিশেষণং॥ ১৮॥ ১৯॥ স্বজ্বাতীয়তী নিরন্তরে পৃথুবাং সংশ্লিফৌ॥ ২০॥ কুড়ালেতি মুকুলীভূত পদ্মাকারো ॥ ২১॥ করাগ্রং অনুষ্ঠাদি মধ্যমান্তে। বিতন্তিঃ তেইনংমিতং কুশ্মিন্দ্রী, তার্থঃ॥ ২২॥

^{*} অতীবেভ্যন্তরতীবেভি পাঠঃ ক প্রক্তকে।

পু পক্ষাণামিত্যন্ত পক্ষাকমিভিপাঠঃ কপুস্তকে।

কামব্যাধিরসাধ্যো মা # মপ্যাক্রামতি ভামিনি । ২৩॥ कजानगि । मनत्रां मार्याभिति निर्मयः। ত্বংসক্ষমাভিসক্ষপো বিরুদ্ধো মাং দহত্যযুগ ৷ ২৪ ৷ षाध्यमानवर्षन मक्रमारश्चाधरवन ह। শ্মযন্ত্র বরারোহে জ্বলন্তং মন্ম্থানলম্ ॥ ২৫ ॥ মচ্চিত্রোঝাদনকরা মন্মথস্য 🛊 শরোক্তমাঃ। ত্ত্ৰক্ষাশানিশিতা, * স্তীব্ৰাঃ শশিনিভাননে! মহাং বিদাষ্য হৃদয়মিদং নির্দেষবেগিতা: ॥ ২৬॥ প্রবিষ্টাশ্চাসিতাপাঙ্গি প্রচণ্ডাশ্চ সুদারুণাঃ॥ অত্যুনাদসমার্ডাঃ † প্রত্যুন্দ করা মম। আত্মপ্রদানসম্ভোগান্মামুদ্ধর্তুং সমর্হসি । ২৭ ॥ চিত্রমাল্যাম্বরধরা সর্ব্বাভরণ ভূষিতা। কামৎ প্রকামৎ সেবস্ত্রং মধা সহবিলাসিনি॥ ২৮॥ নাৰ্দীহাস্থং বস্তং সুথাৰ্হা স্থুখৰ জ্জিতা। প্রাপ্লু হারু ভ্রমং সৌধাং মন্ততং ! মন্ত্রগামিনি ॥ ২৯॥ স্বাদুন্যমৃতকম্পানি পানানি বিবিধানি চ।

২০॥ অগ্নিদনো মদনাগ্নিঃ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ অত্যুক্তাদং মরণ কালীনং দারপাতং সমারভতে তে অত্যুক্তাদ সমারভাঃ বদলাভে- মরিব্যাম্যেবে- তিভাবঃ ॥ ২৭ ॥ কামংশ্বং প্রকামমতিশগ্নিতং ॥ ২৮ ॥ প্রাপ্তু লভস্ব । ২১ ॥

^{*} অপ্যক্তিমতীত্যত্ত বাধতে হতীবেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

† জন্মাল্টামীত্যত্ত জ্বালাবান দ্যেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

‡শরোন্তমা ইত্যত্ত শরোৎকরা ইতি পাঠঃ থ পুন্তকে।

* তীবাইত্যত্ত পীতা ইতি পাঠঃ কপুন্তকে।

† প্রতু, মাদ করামমেত্যত্ত সাক্ষাৎকার করামমেতি পাঠঃ কপুন্তকে

‡ মন্তেত্যত্ত গাজেতি পাঠঃ কপুন্তকে।

পিরমানা মনোজ্ঞানি রমম্যাণা যথা সুখ্য ॥ ৩ ॥
ভোগেপিচারান্ বিবিধান্ সৌভাগ্যঞ্পৌসুত্তমম্।
পানং পির মহাভাগে ভোগৈর মুপমৈ: শুটভঃ॥ ৩২॥
ইদঞ্চরপে প্রথমং তবানছে,
নিরপ্রকং কেবলমদ্য ভামিনি।
অধার্যামাণা অগিবোত্তমা শুভা,
ন শোভসে সুন্দরি শোভনা সতী॥ ৩২॥
ত্যজামি দারান্ মম যে পুরাতনা,
ভবস্ত দাস্যত্তব চারুহাসিনি।
অহপ্র তে সুন্দরি দাসবং স্থিতঃ,
সদা ভবিষ্যে বশগো বরাননে॥ ৩৩॥
ভৌপত্রাবাচ।

অপ্রার্থনীযামিই মাণ্ স্থতপুত্রাভিমন্তে।
নিহীনবর্ণাণ সৈরক্ষ্মীং বীভৎসাং কেশকারিণীমু॥ ৩৪॥
পরদারাম্মি ভদ্রং তে ন যুক্তং দ্বরি সাম্প্রভিম্ব।
দ্যিতাঃ প্রাণিনাণ দারা ধর্মাং দ্বমকুচিন্তর॥ ৩৫॥
পরদারে ন তে বুদ্ধিজাতু কার্য্য কথঞ্চন!
বিবর্জনং হ্যকার্যাণামেতৎ সৎপুরুষব্রতম্॥ ৩৬॥
মিথ্যাভিগ্নো হি নরঃ পাপাল্মা মোইমান্থিতঃ।
অযশঃ প্রাপ্নুযাদেবরেশ মহদ্বা প্রাপ্রুয়াদ্রযম্॥ ৩৭॥

বৈশন্পান্তন উবাচ।
এবমুক্তস্ত সৈরন্ধ্যা কীচকঃকামমোহিতঃ।

॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ অভিমন্যদে কাময়দে ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬॥ মিথ্যা– ভিগ্ধঃ বিতথাভিনিৰেশী মহন্তরং মুত্যুং ॥ ৩৭ ॥

জনেলপি সূত্র্কৃদিঃ প্রদারাভিমধ্ণে ॥ ৩৮ ॥ (मायान् वहून थान्हतान् गर्वात्नाकविशहिं जान्। পেনিদেশ স্তুর্ক জিজে পদীমজিতেন্দ্রিয়ঃ ॥ ৩৯ ॥ गां€रिमाव॰ वर्तारतारङ श्रेजााथा। जु॰ वर्तानरन। মা- মন্মথসমাবিউ- ত্বংক্তে চারুহাসিনি ॥ ৪০॥ প্রভ্যাখ্যায় হি মাং ভীরু বশ্রণ প্রিয়বাদিনম্॥ নুন্দ স্থমসি তীপাঞ্চি পশ্চান্তাপৎ করিয়াসি ॥ ৪১॥ অহ৲ হিস্তুক্ত রাজ্যস্য কুৎস্বস্যাস্য স্থ্যধ্যমে। প্রভুবাস্যিতা চান্দ্রি বীর্য্যে চাপ্রতিমঃ ক্ষিতৌ ॥ ৪২ ॥ পৃথিব্যাং মৎসমো নাস্তি ক্শ্চিদন্যঃ পুমানিই। ৰূপযৌৰনসৌভাগৈতে গৈশ্চানুত্তমৈ শুভৈঃ॥৪০॥ সর্বকামসমূদ্ধেষ্ ভোগেম্বরুপমেম্বিই। ভোক্ত ব্যেষু হিকল্যাণি কমাদান্যে রতা হাসি ॥ ৪৪ ॥ . মযা দত্তমিদং রাজ্যং স্থামিন্যাস্মিন্ বরাননে। ভজস্ব মাং বরারোহে ভূজ্ফু ভোগাননুত্তমান্ ॥ ৪৫॥ এবমুক্তা ভু সা সাধী কীচকেনাশুভৎ বচঃ। কীচকং প্রভ্রাবাচেদং গর্হযন্ত্যাস্য তদ্বচঃ ॥ ৪৬ 🕫

रेमब्रक्तू वाह।

মা স্তপুত্র মুহ্যস্থ মাদ্য ত্যক্ষ্যস্থ জীবিতম্। জানীাহ পঞ্চতির্ঘারৈর্নিত্য মামভিরক্ষিতাম্॥ ৪৭॥ ন চাপ্যাং স্বয়া লভ্যা গন্ধবাঃ পৃত্যো মম। তে স্থাং নিহ্ন্যুঃ * কুপিতাঃ সাধ্বল্ম মা ব্যনীনশঃ। ৪৮॥ অশক্যৰূপ্য পুৰুষেরধ্বানং গন্তমিচ্ছিসি।

^{*} কুপিত। ইতাত্ত সংক্রেছা ইতিপাঠঃ কগুস্তকে।

যথা নিশেচতনো বালঃ কুলস্থঃ কুলমুভরম্। তর্ত্ত্রিচ্ছতি মন্দাত্মা তথা ত্বং কতুমিচ্ছদিশ ৪৯॥ অन्तर्भागैः वा यमि (वार्क्त्यूट्र पट्टः, সমুদ্রপার । যদি বা প্রধাবসি। তথাপি তেভাো ন বিমোক্ষমইসি, প্রমাথিনো দেইস্কুতা হি থেচরাং।। ৫০।। ত্বং কালরাত্রীমিব কশ্চিদাভরঃ, किः মार पृष्टः व्यार्थयः प्रश्ना कीवक ॥ কিং মাতুরক্ষে শ্যিতো যথা শিশু, শ্চন্দ্রণ জিঘৃকুনিব মন্যাদে হি মায়। ৫১॥ তেষাং প্রিয়াং প্রার্থয়তো নভেভবি গত্বাদিবং বা শরণণ ভবিব্যতি। নবৰ্ত্তকে কীচক তে দুশাশুভং याट जनमः की वनमर्था ग्रह्मा॥ ० ॥ ইতি বিরাটপর্বাণি কীতকবধপর্বাণি কীচকরফাসংবাদে চতুৰ্দ্বশোহধ্যয়ঃ : ১৪॥

॥ ৪৯॥ ৫০॥ মনাদেলিপদেস শিশোশতন্ত্রবদহৎ তবহুলভাগীতিভাবঃ
॥ ৫১॥ তেবাং প্রিয়মিতি তেবাং প্রাক্রানাং গদ্ধবিশাং প্রিয়ং প্রার্থয়ত স্তেত্র সুবিগায় দিবং বা গালাবান্ধির্বুদ্ধি রিতিয়াবং বা শুভং
ছে কীচক তেত্র কামান্ধসা সাদৃশানৃষ্ঠির্বুদ্ধি রিতিয়াবং বা শুভং
স্বীয়ং অর্থরেত কামরেত শুভেচ্ছারপা ত্রনাস্তীতার্থঃ তেনচ শুভেন
পরদার নির্বান্তরপেন কামিতেন সং জীবনং ভ্রতীতি শেষঃ
জানাথা মরিষাসীতার্থঃ নমে সুবীতিপাঠে তেবাং প্রিয়াং প্রার্থরেতা
"মেমম কোপি জাতা নভবিষাতীতি দৃশার্দ্ধিস্তব নাস্তীতি সম্বন্ধঃ।
ফাভেচসংজীবন মর্থয়ন্ত মিতিপাঠেতু যাল্ফিন্তেত্র সংজীবনঞ্চ ভ্রতি
কীদৃশং সংজীবনং অর্থয়ত্বং 'বস্তুধীনং ত্র্মান্ধিত্রপাভিনিবেশিন স্তে
ভাবনং নাস্তীতার্থঃ॥ ৫২॥

হতি বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবনীপে চতুর্দশো ২ধ্যায়ঃ ॥ 38 ॥

^{*} তেগ্নিতোকঃ শ্লোক ক পুস্তকে নাস্তি।

বৈশন্পায়ন উষা।

প্রত্যাখ্যাতো রাজপুঁজ্যা স্কনেঞাং কীচকোহত্তবীং।

অমর্যাদেন কামেন ছোরেণাভিপরিপ্রতঃ ॥ ১ ॥

মুখা ধ কৈকেযি সৈর্জ্যু সমেযান্ত দ্বিধীয়তাম্।

যেনোপাযেন সৈর্জ্যু তজ্মাং গজগামিনী!

ত স্কুদেফে পরীপাস্থ প্রাণান্ মোহাং প্রহাসিষম্॥ ২ ॥

বিশক্ষারন উবাচ।

তস্য সা বছশঃ শ্রুত্বা বাচং বিলপতস্তন।
বিরাটনহিন্নী দেশী কুপাঞ্চক্রে মনস্থিনী ॥ ৩॥
স্বব্দ্রান্ত ক্রিয়ার তন্যার্থনিন্তান্ত চ।
উদ্যোগঞ্চিব ক্রেয়ারাঃ স্কুদেশ্যে স্থুতমন্ত্রনীং ॥ ৪॥
† পর্বিনি ত্বং সমুদ্দিশ্য স্থুরামল্লঞ্চ করেয়।
তক্রৈনাং প্রেষ্যিয়ামি স্থুরাহারী তবান্তিকম্॥ ৫॥
তক্র সংপ্রেষিতামেনা বিজনে নিরব্রথং।
সাস্থ্যেথা মথাকাম সাস্থামানা রমেদ্যদি॥ ৬॥

বৈশম্পারন উবাচ। এবমুক্তঃ স নিষ্কুম্য ভগিন্যা ‡ ভবনান্তদা। স্থ্রামাহারযামাস রাজার্ছাং স্থপরিষ্কৃত্যম্॥ ৭॥

॥ ১॥ সমেরাৎ মাংউপগচ্ছেৎ মাউহাদিতিচ্ছেদঃ উহাৎ বিতর্কান্তং, উপারং যুক্ত্যাপরীপ্রশ্বে নিয়োজ্যংপ্রাণান্ মাপ্রহাসিধমিতিচ॥ ২॥ ॥ ৩॥ কৃষ্ণারাঃ প্রাপ্তার্থে উল্বেগাং উলামং চাহ্লিন্ত্যেতি যোজ্যং॥ ৪॥ পর্বানি মদ্যপ্রিনাং উৎসবকালে চতুর্দশ্যাদো সমুদ্দিশা অদ্যাহং স্থাদেকার্থ মন্ত্রাদিকং ক্রেয়ামীতি কীর্ত্রিয়া॥ ৫॥ বিজনে একান্তে নিরবে গ্রেহে নিম্পাতিবন্ধে॥ ৬॥ ৭॥

 ^{*} যথা কৈকেরীতাস্য প্রাক্ কীচক উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 † পর্বনীতাস্য প্রাক্ স্লেদেঞাবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 া ভবনাদিতাত্র ববনাদিতিপাঠঃ কপুস্তকে।

* ভক্ষা শ্ব বিধাকারান্ বহুং শ্বে জাবচাং স্তদা।
করিয়ামাস কুশলৈ রন্ধ পানঞ্চ শেভিন্য ॥ ৮॥
তিম্মিন্ কতে ভদা দেবী কীচকেনোপমন্তিতা।
স্থানেফা প্রেষ্যামাস সৈরক্ষ্মীং কীচকালয়ম্॥ ৯॥

श्रुतिष्या वर्षा

উত্তিষ্ঠ গচ্চ সৈর্দ্ধি কীচক্স্য নিবেশনম্। পানমান্য কল্যাণি পিপাসা মাৎ প্রবাধতে । ১০॥ সৈর্দ্ধ্য বচ্চ।

ন গচ্ছেয্মহং তৃদ্য রাজপুত্তি নিবেশনম্।

স্থমেব রাজ্ঞি জানাসি যথা স নিরপত্রপঃ ॥ ১১॥

ন চাছ্মনবদ্যাক্ষি তবু বেশানি ভামিনি।
কামর্ত্তা ভবিষ্যামি পতীনাৎ ব্যভিচারিণী ॥ ১২॥
স্বব্ধিব দেবি জানাদি যথা স সম্বঃ কৃতঃ।
প্রবিশন্ত্যা ম্যা পূর্বেণ তব বেশানি ভামিনি॥ ১৩॥
কীচকশ্চ স্থকেশান্তে মুঢ়ে। মদনদর্পিতঃ।
সোহ্বমংস্যতি মাৎ দৃষ্ট্যান যাস্যে তত্র শোভনে॥ ১৪॥
সন্তি বহ্বান্তব প্রেষ্যা রাজপুত্তি বশানুগাঃ।

স্বন্যাৎ প্রেষ্য় ভদ্তে স হি মামব্যৎস্যতে॥ ১৫॥

নৈব ত্বাণ জাতু হিৎস্যাৎ স ইতঃ সণপ্রৈষিতা মযা। ইত্যুক্ত্বা প্রদদৌ পাত্রং স্পিধানং হিরণায়্য। ১৬ ।

॥ ৮॥ উপমক্তিতা প্রার্থিত। ॥ ৯॥ পানং মদ্যং অরামনং চেডুাপক্তমাৎ।
তিম্যের পিপাসা পাতৃমিক্ছা ॥ ১০॥ ১১॥ ১২। ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

च्टान्टकांवां ।

^{*} ভক্ষাংশ্চবিবিধাকারান্ বহুংশ্চোচ্চা বঁচাং স্তদেতাত্ত্ব আজেরিক্রঞ্ স্কুশ্থবহুংশ্চো চ্চা বচা মুগানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

শা শক্ষমানা রুদ্রতী দৈবপ শর্গমীযুষী।
প্রাভিষ্ঠত স্থর হারী কীচ্ক্ল্য নিবেশনম্॥ ১৭ ॥

কৈর্দ্ধ্য বাচ।

যথিহিমন্ত্রং পাণ্ডুভ্যো নভিজানামি কঞ্চন।
তেন সভ্যেন মাং প্রাপ্তং মা কুর্যাৎ কীচকো বশে॥ ১৮॥

কৈশল্পায়ন উবাচ।
উপাতিষ্ঠত সা সূর্যাৎ মুহুর্ত্রমবলা ততঃ।
স ত্য্যান্তরুমধ্যায়াঃ সূর্বং স্থ্যোহ্ববুদ্ধবান্॥ ১৯॥
ভান্তহিতং ততন্ত্রা। রক্ষো রক্ষার্থমাদিশং।
তক্তিনাং নাজহান্তর স্ব্যাবস্থানিন্দিতাম্॥ ২০॥
তাৎ মূলীমিব সন্ত্রন্থাং দৃদ্ধী কুষণং সমীপারাম্।
উদিতিষ্ঠানুদা স্থতো নাবৎ লব্দেব্বপার্গঃ॥ ২০॥
ইতি বিরাটপ্রবিণি কীচক্যধ্পর্বণি জৌপ্দীস্করাহ্রণে
প্রাদ্ধ্যায়ঃ॥ ১৫॥

কীচক উবাচ।
স্থাগতং তে স্থকেশান্তে স্থব্যকী রজনী মম।
স্থামিনী স্থমন্ত্র প্রাপ্তা প্রকুরুদ্ধ মম প্রিয়ম্॥ ১॥
স্থবর্ণমালাঃ কস্থূংশ্চ কুগুলে পরিহাটকে।
নানাপ্তানজে শুলে মণ্রিসুঞ্চ শোভনম্॥ ২॥

। ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

বিরক্ট পর্বান নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপো

পঞ্চদশোস্থ্যায়ঃ ॥ ১৫ ॥

॥ ১॥ পরিতে হিটকে মরোতে পরিহাটকে কুগুলে তাডকে ইতার্থ । २॥

* আহরস্কৃচ বস্ত্রাণি কৌশিকান্য জিনানি চ।

অন্তি নে শ্যনং দিব্যং ত্বদর্থমুপকল্পিত্র ।

এহি তত্র ম্যা সার্জংপিবস্থ মধুমাধ্বী । ৩॥

কৌপদ্যবাচ।

অথৈৰীদ্ৰাজপুত্ৰী নাং স্থ্যাহারীং তবান্তিকম।
পানমান্য মে ক্ষিপ্রং পিপাসা মেহতি চাত্ত্রবীৎ। ৪॥
কীচক উবাচ।

খন্যা ভদ্রে নরিষ্যন্তি রাজপুজ্যাঃ প্রতিশৃত্য । ইত্যেনাং দক্ষিণে পাণো স্থতপুজঃ প্রামৃষ্থ ॥ ৫॥ ক্রেপিছাব্চ।

ষথৈবাহং নাভিচরে কদাচিৎ,.
পতীন্ মদাদৈ মনসাপিজাতু।
তেনৈব সভোন বশীক্তুত্ ত্বং, •
দ্রফান্মি পাপ পরিক্ষ্যমাণম্॥ ৬॥
বৈশম্পায়ন উবাচ।

† স তামনুপ্রেক্ষ্য বিশালনেত্রাং,
জিঘুক্ষমাণঃ পরিভর্ৎস্যন্তীং।
জ্ঞাহ তামুন্তরবস্ত্রদেশে,
স কীচকস্তাং সহসাক্ষিপন্তীম্যাণ।

মধুমাধবীং মরুপুষ্পজাং মদিরাং ॥ ৩ ॥ হরাহারীং হ্রামাহর্কামাং পিপানামেতি মেমম অতি পিপানা ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ १ ॥

^{*} আহ্রস্তুচ বস্ত্রাণীতাত্ত আহরসৈব বস্ত্রাণীতি পাঠঃক পুস্তকে।

† সভামিতাস্য প্রাকৃ বৈশন্পায়ন উবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

প্রগৃহ্যমাণা তু মহাজবেন, মুহুর্বিনিশ্বস্য চরাজপুত্রী। ত্যা * সমাক্ষিপ্ততমুঃ স পাপঃ, , স্বপদ্ত শাখীব নিক্কন্তমূদঃ ॥ ৮ ॥ সা গৃহীতা বিধুম্বানা ভূমাবাক্ষিপ্য কীচকম। সভাং 🕆 শরণমাগচ্চন্দ্রত রাজা যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ৯ ॥ তारं कीहकः व्यद्धिवद्धी प्रतम्भारम् भवाभृष् । অথৈনাং পশ্যতো রাজ্ঞঃ পাত্যিত্বা পদাব্ধীৎ ॥ ১০ ॥ তস্যা যোহসৌ তথাকেণ রাক্ষসঃ সল্লিয়েজিতঃ। স কীচকমপোবাহ বাতবেগেন ভারত॥ ১১'॥ স প্রাত তদা ভূমো রক্ষোবলস্মাহতঃ। বিঘূর্নানো নিশেচতাশিছ্রমূল ইব ক্রমঃ ॥ ১২ ॥ তাঞ্চাদীনৌ দদৃশতুভীমদের-যুধিষ্ঠিরৌ। অমৃষ্যমানৌ কুঞাবাঃ কীচকেন ‡ পরাভব্মু ॥ ১৩ ॥ তম্য ভীমো বধং প্রেপ্ট্র কীচক্ষ্য তুরাত্মনঃ। দকৈর্দন্তাংস্কুদা রোষালিম্পিপেষ মহামনাঃ ॥ ১৪ ॥ ধূমচ্ছায়ামভজতাং নেত্রে চোচ্ছি তপক্ষণী। সম্বেদা জ্কুটী চোগ্রা ললাটে সমবর্ত্ত ॥ ১৫॥ ॥৮॥ বিধুবানাকপামান। ॥৯॥১০"॥ অপোবাহ দুরীচকার ॥ ১১ ॥ 🔐 ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ধুমজ্বায়াঃ কর্মনেত্রে কর্ত্তনী অভজতাং চ্ছায়া মিত্যেক বচনান্তঃ পাঠঃ,**স্বচ্ছঃ** ॥ ১৫ ॥

^{্ *} তরেত্যস্য প্রাক্ চিক্ষেপ তংগাত মম্ব্যমাণা প্রবেপমানাতিক্ষা-ভভাগীতিয়োকার্দ্ধং ক প্রতকে অধিকোবর্ততে।

শ শরণ মাগাচ্ছ দিত্যতা শরণমাধাবদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

‡ পরাতব মিতাতা পদাবধ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

হত্তেন মমুদে চৈব ললাটং পরবীরহা।
ভূযশ্চ অরিত্ত কুদ্ধঃ সহসোপাতৃমৈচ্চ্ত ॥ ১৬॥

* অথাবমূদ্রাদপৃষ্ঠমপুষ্ঠেন যুধিষ্ঠিরঃ।
প্রবোধনভ্যান্তীমংরাজা তং প্রত্যাবৈধ্যৎ ॥ ১৭॥
তং মন্তমিব মাতৃস্পং বীক্ষমাণং বনস্পতিম্।
স তমাবার্যামাস ভীসদেনং যুধিষ্ঠিরঃ ॥ ১৮॥
আলোক্যসি কিং রুক্ষং স্থদ দারুক্তেন বৈ ।

যদি তে দারুভিঃ ক্ত্যুত্ব বহির্ক্ ক্ষান্তিস্থাতাম্ ॥ ১৯॥
সা সভাদ্রারমাসাদ্য রুদ্ধী মৎস্যুমন্ত্রীং।
অবেক্ষমাণা স্থান্থাণী পতীংস্তান্ দীনচেত্সঃ ॥ ২০॥
আকার্মভিরক্ষন্তী প্রতিজ্ঞাধর্মস্ত্রিতা ।
দহ্যমানেব রৌদ্রেণ চক্ষা দ্রুপদাল্পজা ॥ ২২॥
দেশ্যাক্র।

যেষাং বৈরী ন স্বর্পিতি ষঠেইপি বিষয়ে বসন্। তেষাং মাং মানিনীং ভার্য্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধীৎ ॥ ২২ ॥ যে দত্যুর্ব চ যাচেযুত্র ক্ষণ্যাঃ সত্যবাদিনঃ।

তেষাং মাং মানুনীং ভার্যাং স্থতপুক্তঃ পদাবধীৎ ॥ ২৩ ॥
॥ ১৬ ॥ অন্ধৃতিং পাদাসুতিং অনুষ্ঠেন হস্তান্ধুতিন আচারা দেবং জেলং
॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ অভিরক্ষতী গৃহমানা ধর্মণংহিতা ধর্মবদ্ধা ॥ ২১ ॥

যতে বিষয়ে দেশপঞ্চক ব্যবধানে পিনস্থাপিতি তেষাং সার্মভৌম্বাং
যদা বাহোন্দ্রির প্রাহ্য পঞ্চবিষ্যাপেক্ষরা মঠে মনোমুত্ত প্রোহ্যে
স্থেমনোরখাদি রূপেপিবিষ্যেন ম্পেণিতি ভ্রাদ্ভিঃ সন্কিমৃত লোকেন
স্থাপিতীত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥

^{*} অথাব মৃদাদকুঠমকুঠেন যুধিন্তির ইত্যত্ত অথাকুঠেনাবহৃদ্মকুঠং তস্যধর্ম রাডি তিপাচঃ ক প্সতকে।

া সংহিতেত্যত্ত সংশ্রম দিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

(यवा - क्रुन्कु जिनिदर्शति क्यारच। यः व्यव्यत्त्रं निभम्। তেষাং মাং মানিনী জার্ষা শতু তপুত্রঃ পদাবধী । ২৪॥ যে চ তেজস্বিনো দান্তা বলবন্তোহভিমানিনঃ। তেষাং মাপ মানিনী ভার্য্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধীৎ । ২৫॥ সর্বলোক্মিমং হন্যুর্ধর্ম্মণাশাসিতাস্ত যে। তেষা মাং মানিনী ভার্যাং স্থতপুত্রঃ পদাবধী । ২৬॥ শর্ণং যে প্রপন্নীনাং ভবন্তি শর্ণার্থিনাম। চরন্তি লোকে প্রচ্ছন্। ক মু তেহদ্য মহারথাঃ ॥ ২৭ ॥ কথং তে স্থতপুর্জেণ বধ্যমানাং প্রিয়াৎ সতীম্। মৰ্ঘন্তি যথা ক্লীবা বলবন্তো হুমিতৌজনঃ । ২৮॥ क सु (लबाममर्थम वीर्याएखजम वर्वए । ন পরীক্ষন্তি যে ভার্যাত্র বধানানাং ছুরাত্মনা ॥ ২৯॥ মযাত শক্যং কিষ্কর্তুং বিরাতে ধর্মাদ্ধকে। যঃ পশ্যনা ে মর্ঘতি বধ্যমানামনাগ্যম্। ৩০॥ ন রাজন্নজবৎ কিঞ্চিৎ সমাচরতি কীচকে। দস্থানামিব ধর্মান্তে ন হি সৎসদি শোভতে ॥ ৩১ ॥ নাহমেতেন যুক্তং বৈ হন্তং মৎস্য তবালিকে। সভাসদশ্চ পশ্যন্ত কীচকস্য ব্যক্তিক্রমম্। ৩২॥ न की हक 🕶 धर्मा (उठ। न ह म ९ माः कंथ व्यन। সভাসদোহপ্যধর্মজ্ঞা য ইমৎ পর্যুপাসতে ॥ ৩৩ ॥ বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবন বিধৈক্তোভিং সা তদা কৃষ্ণাশ্রুলোচনা। উপালভূত রাজানং মৎস্যানাং বরবর্ণিনী॥ ৩১॥

॥२८॥२४॥ भिज्राः तक्ताः ॥२ं७॥ २०॥२४॥ २०॥७०॥७४॥ ॥७०॥७८॥

বিরাট উবাচ।

পারোক্ষং নাভিজান।মি বিগ্রাহং যুবয়ে বৃষ্ট্র হিন্। অর্থভিজ্বসবিজ্ঞায় কিং নু স্যাৎ কৌশলং মন। ৩৫ । বৈশ্পারন উলাই।

ততন্ত্র সভ্যা বিজ্ঞায় ক্ষণং ভূষে হভাপু স্বন্। সাধু সাধিতি চাপ্যাভঃ কীচকঞ্ ব্যগ ধ্যন্॥ ৩৬॥ সভ্যা উচঃ

यत्मायक्षाक्रमर्वाक्षी ভাষা। मानायत्वक्षा। भारता लाज्क जमा मानाय मानायत्वक्षा। भारता लाज्क जमा मानाय मानायत्वक्षा। भारता लाज्क जमा मानायत्वक्षा भारता व्यवस्था मानायत्वक्षा भारता व्यवस्था मानायत्वक्षा भारत्वे स्वयं । भारत्वे स्वयं ।

এবং সংপূত্রতি সাক্ষাং প্রেক্ষ্য সভাসদঃ।
মুখিটিরিন্য কোপাতুললাটে স্বেদ আগমং॥ ৩৯॥
অথাত্রবীদ্রাজপুলীং কৌরব্যাে মহিন্দি প্রিয়ান্।
গচ্ছ দৈরক্ষি মাত্রস্থাঃ স্থানেফাবা নিবেশনন্॥ ৪০॥
ভর্তারনমুক্তর্নান্তাঃ ক্রিশ্যন্তাে বীরপত্রয়ঃ।
শুক্রব্যা ক্রিশ্যমানাঃ পতিলাকং জ্বস্তাত॥ ৪১॥
মন্যে ন কালং জোধন্য পশান্তি পত্রস্তব।
যেন ত্বাং নাভিধাবন্তি গল্পবােঃ স্থাবর্চসাঃ॥ ৪২॥
অকালজ্ঞানি দৈরক্ষি শৈলুবাব বিরাদিষি।
বিশ্বং করোনি মংস্যানাং শীব্রতাং রাজসংসদি॥ ৪০॥

কৌশলং সাধ্যাধুনির্নেতিশেবঃ কিংলু কুথংলু ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥ ॥ ৩৯ ॥ শাত্রস্থাঃ অত্তমাস্থাঃ মাতিষ্ঠ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ শৈলুধীব নটাব নির্লজ্জা ॥ ৪৩ ॥

b 0

পচ্ছ দৈরন্ধি, গন্ধার্কাঃ করিষ্যন্তি তব প্রিয়ম্। ব্যপনেষ্যন্তি তে ছুঃখং যেন তে বিপ্রিয়ম কুত্রম্॥ ৪৪॥

टेमब्रङ्ग् ग्वाइ।

ইত্যুক্ত্য প্রাদ্রবিৎ কুফাস্থদেফাযা নিবেশনম্। কেশান্ মুক্ত্যু তু সুশ্রোণী সংরস্তালোহিতেক্ষণা॥ ৪৬॥ শুশুভে বদনৎ তুঁদ্যা রুদম্যাঃ স্কুচিরং তদা। মেঘলেখাবিনির্ম্মুক্তং দিবীর শশিমগুলম্॥ ৪৭॥

श्रुतम् रक्षांवर् ।

কস্তাবধীদ্বরারোহে কন্মান্দোদিনি শোভনে। কন্মানু চুঃধং তে ভদ্রে কেন তে বিপ্রিয়ং ক্লতম্ ॥ ৪৮॥

ट्योभश्चात्राह।

কীচকো মাবধীস্তত্ত স্থুরাহারীং গতাং তব'। সভাষাং পশ্যতো রাজ্ঞে: যথৈব বিজনে তথা॥ ৪৯॥ স্থদেশোগাচ।

ঘাত্যামি স্থকেশান্তে কীচকং যদি মন্যানে। যোহসৌ ত্বাং কামসন্মত্তো তুর্লভামবমন্যতে । ৫০॥

ছি:খং ছ:খিয়ভারংব্যপনেব্যন্তি জীবিতা দিতিশেষ ॥ ৪৪ ॥ য়বিনাং তিষামর্থে দর্মাবতাং তস্য তস্য সর্ক্রিয়াবতব্যাঃস্থাঃ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ । ৪৮ ॥ পাশ্যতোরাজ্ঞ ইত্যনাদরেষ্ঠী রাজানং লক্ষীক্ত্যেত্যর্থঃ ॥ ৪৯ ॥ ॥ ৫০ ॥

শ অতীব তেবাঁথ স্থানিনামর্থেই হংধর্মচারিনীতাত্ত অতীবতেষাথ স্থানিনাথ
 মনোহংধর্মচারিনী তি পাঠঃ ক প্রতকে।

জেপিছ্যবাচ।

আন্যে তং বৈ বিধিষ্ধি যেষামাগঃ ক্লোতি সং।
মন্যে চালৈয়ব স্থব্যক্ত পরলোক গমিষ্যতি ॥ ৫১॥
ইতি বিরাটপর্বাণি কীচকবধপ্রানি দ্রৌপদীপ্রিউবে
বৈষ্ড্রেশাহধ্যায়॥ ১৬॥

रिमम्भागम छैनाह।

সা হতা স্থতপুজেণ রাজপত্নী * যশবিনী।
বধং কৃষ্ণা পরীপদ্ধী সেনাবাহ্ন্য ভামিনী। ১॥
জগামাবাসমেবাথ তদা সা দ্রুপদাত্মজা।
কৃত্বা শৌচং যথান্যায়ং কৃষ্ণা বৈ তনুমধ্যমা॥ ২॥
গাত্রাণি বাসনী চৈব প্রকাল্য সলিলেন্সা!
চিন্তুযামাস রুদতী ক্রন্য ছুংখস্য নির্ণয়ম॥ ৩॥
কিষ্করোমি ক গছামি কথং কার্যাং ভবেম্ম।
ইত্যেবং চিন্তুযিত্বা সা ভীমং বৈ মনসাগমৎ॥ ৪॥
নান্যাং কর্তা ঋতে ভীমান্মমাদ্য মনসঃ প্রিয়ম্।
তত্ত উপায় রাজৌ সা বিহাম শয়ন্দ স্বক্ম্॥ ৫॥
প্রাদ্রবন্নথিকছন্তী কৃষ্ণা নাধ্বতী সতী!
ভবনং ভীমসেনস্য ক্ষিপ্রমায্তলোচনা॥ ৬॥

H CD H

ুইতি বিরাটপর্কণি ন্মৈলকগীয়ে ভ.রত ভাবদীপে ব্যাড়লোহধ্যায় ॥ ১৬।

(मन्तिक्ता (मन्तिक्ता क्रिक्ता ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥ 8. ॥ ৫ ॥ ७ ॥

* রাজপত্নীত্যত্র রাজপুত্রীতি পাঠ: 🛪 পুস্তকে।

্ দৈরস্বাবাচ।

ছু:খেন মহতা যুক্তা মানুদেন মনশ্বিনী। ভাগান্ জীবতি পাপিঠে সেনাবাছে মম দ্বিবি॥ १॥ তৎ দৰ্ম । কুতবানদ্য কথং নিদ্ৰাণ নিষেবদে।

रेवनम्यात्रम छेवाऽ।

এবমুকুৰি তাং শালাৎ প্ৰবিবেশ মন্স্নী ॥ ৮ ॥
যস্ত্ৰান্ত ভীমন্তলা শোতে মুগরাজ ইব শ্বনন ।
তস্যা ৰূপেণ সাঁশালা ভীমস্য চ মহাজ্মনঃ ॥ ৯ ॥
সং মুচ্চিত্ৰ কৌৱব্য প্ৰজ্জালাতিতেজসা।
সা বৈ মহানসংপ্ৰমূপ্য ভীমসেনং শুচিন্মিতা ॥ ১০ ॥
সংবিশ্বতেৰ মাহেরী বনে জাতা ত্রিহাবনী।
উপাতিষ্ঠত পাঞ্চালী বাসিতেৰ † বর্ষভন্ ॥ ১১ ॥

यः उदकर्म भना देखि क्रभः कृत्वन्तिम् कीविष्य । १ ॥ ४ ॥ व ॥ मश्मू क्रि-তেব বৃদ্ধিং শোভারপাং প্রাপ্তেব প্রজন্ধান অশোভত॥ ১০॥ সর্বাষেতে বেতি পাঞ্চালী দ্রৌপদী বর্ষ ছং বরগীয়ং পত্তিং শ্রেষ্ঠং ভীমদেনং উপলক্ষ্য ব্যাসতেৰ প্ৰাচ্ছ্যালীৰেন কামাজুৱেৰ উপাতিষ্ঠত সমীপে স্থিতৰতী বস্থুতো ন কামাতুরা কিন্তু দেখাতুরৈ বেডিভাবঃ তত্রদৃষ্টান্ডদমং ইবশকঃ কাকান্দিব হুভয়ত্ত সম্বাধাতে সৰ্ব্ব স্বেতেৰ মাহেয়ী বলেতি সৰ্ব্ব স্বেতাৰকী যথা কামাতুরা বর্ষভং পতি মিতি একঃ তদ্যাঃ কুমাতুরত্বে হেতুঃ वरमञ्जाद्धां करमकाद्धा एवन कम मामीरभाग नद्धांशाहरून उत्तरहरू মুচাতে তথা মাহেয়ী গৌঃদাপি বাদিতাদতী বর্ষভং দাওং বলীবর্দং **छमा। जुलिनामिङाएँ निर्मंचनः जिल्लामिङ जिन्सीहि स्नो स्नीनमाज्ञा** কামাতুরাচ ভবতি অন্যেতু প্রেতঃ সিতেরাজহংসে কৈলাণে দীপ ভূপরো বিভি কোশমুদা ছতা সর্ব্ব স্বেতা হংসীতি ব্যাচক্ষতে তত্ত্ব সর্ব্ব পদং ব্যর্থং হংসস্য লোভিত লোচনাস্য বরণহাৎ প্রতিকূলঞ্ যদ্যপি তিহায়নী তিব-ৰ্যাগো বিভেচ কোশাৰ তিছায়ণী পদেনৈৰ গোলভাতে তথাপি ভংকা-্মাতৃরত্ব জ্ঞাপনার্থ মুপক্ষীনং সদ্ধিশেষ্য সমর্পকং পদান্তর্মপেক্ষত এবেতি भ वार्थ विद्यायन वर्ष जाता वार्ववान अकाताः मर्यस्टानेन प्लार्यन खासा हेक्रा (अक्रिड्य ॥ १२ ॥

^{*} কুতবানদ্যেতাত্ত কুতবতাদ্যেতি পাঠঃ ক পুস্তকে। কুবর্ষত মিতাত্ত মহার্য মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

না লতেব মহাশালন ফুল্লং গোমতি তীর্জম্।
পরিষ্কত পাঞ্চালী মধ্যমং পাণ্ড্নন্দন্দ্ঁ॥ ১২॥
বাহুত্যাং পরিরভৈত্যন প্রবোধ্যদনিন্দিতা।
দিন্দ্র স্থাং বনে ছুর্গে মুগরাজবর্গরিব॥ ১৩॥
ভীমদেন মুগালিখা হস্তিনীব মহাগজদ্।
বীনেব শ মধুরালাপা গালারং সাধু মুর্ছতী †।
অভ্যতা্যত পাঞ্চালী ভীমদেনমনিন্দিতা॥ ১৫॥
উত্তিঠোতিঠ কিং শেবে ভীমদেন যথা মুতঃ।
নাম্ত্রস্য হি পাপীযান্ ভার্য্যা মালভ্য জীবভি॥ ১৫॥
স সন্প্রহায় শ্যনং রাজপুল্র্যা প্রবোধিত।
টুপাতিঠতমেঘাভঃ পর্যাঙ্কেন্সোপসন্প্রতে ॥ ১৬॥
অথাত্রবীদ্রাজপুল্রীং কৌরব্যো মহিষীং প্রিয়ান্।
কেন্যান্যর্থেন সংপ্রাপ্তা ত্রিতেবশ্যমান্তিকম্॥ ১৭॥
ন তে প্রকৃতিমান্ বর্ণঃ কুশা পাণ্ড্রন্ড লক্ষ্যনে।
ভাচক্ষ্ব পরিশেষেণ সর্বান্থ বিদ্যামহং যথা॥ ১৮॥

মধ্যমং পাণ্ডুনন্দনং ভীমদেনং যময়েঃ সহজাতত্বন পে কাপর্বা ভাবত্তেরি কনিষ্ঠাবের যুধিন্তিরো জ্যেষ্ঠএর মধ্যমত্বং ভীমার্জ্ক্নরোরের বিশ্রান্তং ভারাপি অত্প্রপ্রকাশং অর্জ্ক্নস্য সংগ্রতি পুংস্থা ভাবাক মধ্যমত্বং ভীম- 'দেনে এব মুখ্য মিত্যাশয়ে নৈবৈত হক্তং পরিষজ্ঞতপর্বাষ্ণনত আলি'দ্বিভ বতী ৷ ১২ ৷ ১৬ ৷ গান্ধারং অর্থিশেষং মুক্ত্ তী মুদ্ধ্র য়ন্তী ৷ ১৪ ৷ ১৫ ৷
'দাপসংগ্রহে সভূলিকে ৷ ১৬ ৷ ১৭ ৷ বিদ্যাং জীনীয়াং ৷ ১৮ ৷

^{*} মধুরালাপেতার মধুরাভাবেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† মৃক্ষু তীত্যার মৃদ্ধিতিঃ ইন্দি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ţ উপাতিষ্ঠত মেঘাভইতার উপাতিষ্ঠশ্বহারাছ ব্লিতি পাঠঃ ক
পুস্তকে।

স্থাং বা যদি বা ছ্থাং দেষ্যং বা যদি বা প্রিয়ণ।

যথাবং সর্ব্যাচক্ষ্ব শুদ্রা জ্ঞাস্যামি শ যং ক্ষমন্ ॥ ১৯॥

আহমেব, হি তে ক্লেফ বিশ্বাস্যঃ সর্বাকর্মাস্ত্র।

আহমাপংস্ক চাপি ত্রাং মোক্ষ্যামি পুনঃ পুনঃ ॥ ২০॥

শীঘ্রমুক্ত্রা যথাকামং যত্তে কার্যাং বিবক্ষিত্র ।

গচ্ছ বৈ শ্বনাইয়ব † যাবদন্যো ন বুধ্যতে ॥ ২১॥

ইতি বিরাটপ্রবিনি, কীচক্বধ্পর্বানি জৌপদীভীমসংবাদে

সপ্তাদশোহ্যায়ঃ ॥ ১৭॥

জোপুছাবাচ॥

আশোচ্যত্বং কৃতস্তম্যা যম্যা ভর্ডা যুধিষ্ঠির:।
জানন্ সর্বাণি ছুঃখানি কিং মাং ত্ব^ পরিপৃচ্ছাম ॥ ১ ॥
যক্ষা দাসীপ্রবাদেন প্রাতিধামী তদানষ্ৎ।

কু সভা পরিষদোমধ্যে তক্ষা শহতি ভারত ॥ ২ ॥

জ্ঞান্যামি উপায়ং চিম্বরিষ্যামি ক্ষমং যোগ্যং॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥
ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারতভাবদীপে
সপ্তদশোহধ্যায়ঃ॥ ১৭॥

^{ি॥} ১॥ সভাশালা তস্যাৎ পরিষৎ জনসম্বাজঃ ভস্য মধ্যে তদাদ্যুতকালে । ॥ ২॥

^{*} জাস্যামীতাত্ত ধাস্যামীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বাবদন্ম ইতাত্ত পুরানান্যে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

‡ সভাপারিষদোমধ্য ইতাত্ত সভারাং পরিষমধ্যে ইতি পাঠঃ ক
ধুস্তকে।

পার্থিবদ্য স্থতা নাম কা মু জীবতি মাদুশী। অনুভূষে দৃশং দুখ * মতান্তং দ্রৌপদীমূতে ॥ ৩॥ বনবাসগতায়াস্চ সৈন্ধবেন ছুরাত্মনা। † পরামর্য দ্বিতীয়ঞ্চ সোচ্যুৎসহতে নুকা। । ।।। মৎস্যরজ্ঞেঃ সমক্ষত্তস্য ধূর্ত্তস্য পশ্যতঃ। কীচকেন পরা মৃষ্টা কা নু জীবতি মাদৃশী। 🕻 ॥ এব বছবিথৈ ক্লেশেঃ ক্লিশ্যমানাথ ভারত। ন মান জানাসি কৌন্তেয কিং ফলং জীবিতেন মে। ৬॥ যে হয়ং রাজ্জো বিরাট্স্য কীচকো নাম ভারত। সেনানীঃ পুরুষব্যাঘ্র শ্যালঃ পর্মতুর্মতিঃ॥ १॥ म मार देमत्रिक्त त्वरमन वमग्रीर ताजरवस्मान । নিত্যমেবাহ ছুফীত্মা ভাষ্যা ভব মমেতি বৈ॥৮। (ज्याभाष्यक्रामानाश्चा वशार्द्ध मेथ्रैजूहन्। কালেনৈৰ ফলং পক্ষ> হৃদয়ং মে বিদীৰ্যাতে ॥ ৯ । ভাতরঞ্বিগইশ্ব জ্যেষ্ঠ ছুর্দ্যভদেবিনম্। বস্যান্দি কর্মণা প্রাপ্তা ছু:খমেতদনম্ভকম্ ॥ ১ ।। কোহি রাজ্যং পরিত্যজ্য সর্বাস্থ চাত্মনা সহ। প্রব্রজ্যারৈর দীব্যেত বিনা ছুদুর্গুড়েদিবিনম্ ॥ ১১ ॥ यि निष्ठमहत्यन यक्तानार मात्रवन्तनम् । সায়ং প্রাতরদেবিষ্যদপি সম্বংসরান্ বহুন্। ১২।

॥ ৩॥ দৈদ্ধবেন জয়ক্তথেন । ৪॥ ৫ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ প্রেজ্যং প্রেজনং রজ্যজ্যে ভিাবে কাপ্ত সৈয়ে প্রেজ্যায়॥ ১১॥ নিকঃ স্বর্ণ পদং। তেষাং সহজ্যে ॥ ১২॥

^{*} অত্যন্তং ক্রৌপদীয়তে ইত্যর অন্যত্ত ক্রৌপদীংপ্রত্যে ইতি পাঠঃ
ধ গশুক্তক।

[🕆] পরামর্যং দ্বিতীরঞ্চ ইত্যত্র পরামর্শে। দ্বিতীরে। বৈ ইতি পাঠঃ খ পুত্তকে

অতদর্শ সহাপ্রাক্তং জীবিতার্থেহন্যসশৃষ্কতম্।

দৃষ্ট্যা কস্য ন ছুংখাশ স্মান্ধর্গাল্থানং যুধিষ্ঠির্দ্॥ ৩১॥

উপাত্তে, স্ম সভায়াং যং কুৎস্না বীর বস্থক্ষরা।

তর্পানীনমপ্যন্যং পার্গালারত ভারতম্ ॥ ৩২॥

এবং বছবিধৈছু থৈং পীড্যমানামনাথবং।

শোকসাগরমধ্যস্থাং কিং মাং ভীম ন পশ্যসি॥ ৩০॥

ইতি বিরাটপ্রবিণি জৌপদীভীম্ম্মাদে

অ্কীদ্রোশ হ্র্যায়ঃ॥ ১৮॥

(अशिक्षानां ।

ইদন্ত ঠে মহদুংখং যথ প্রবক্ষণামি ভারত।
না মেহভাস্থা কর্ত্ব্যা ছংখাদেতদুবীমাহম্॥ ১॥
স্থানকর্মানি হীনে অমসমে ভরতর্মভ।
ক্রেবন বল্লবজাতীয়ং কস্য সোকং নবর্দ্ধয়েঃ॥ ২॥
স্থানারং বিরাটসা বল্লবং বাং বিক্লফানাঃ।
প্রেয্যত্বং সমন্ত্রপাপ্তং তত্যে ছংখতরং মু কিমু॥ ৩॥
যদা মহানসে সিদ্ধে বিরাটমুপতিঠিস।
ক্রেবানো বল্লবং স্থান্ডলা সীদ্তি মে মনঃ॥ ৪॥
যদা প্রক্ষেইং সমুট্ আন সংযোধ্যতি কুঞ্জেরঃ।
হসন্ত্যন্তর্গুরে নার্য্যো মম ভূম্বজতে মনঃ॥ ৫॥

100 100 100 1

ইতি বিবাট পর্কাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফীদশ্যেষ্যায়ঃ ॥ ১৮ ॥

॥ ३॥ दीत्न नीट्ड व्यमस्य विषय ॥ २॥ ७॥ ८॥ ८॥

मार्फ लिर्फ्याइरियः मिश्टेह्बानारत युधारम यह । কৈকেষা। প্রেক্ষমাণায়া স্তদা মে কশ্মলোভিবেং॥ ৬॥ ততউপায়কৈকেয়ীসর্বাস্তাঃ প্রত্যভারত। প্রেক্ষাঃ সম্পিতাশ্চাপি কৈকেয়ীং তাঃ ক্রিয়োহক্রবন॥ ৭॥ প্রেক্ষ্য মামনবদ্যাক্ষীং কশ্মলোপহতামিক। সেহাৎ * সমাসজাদ্ধািৎ সুদমেষা শুচিমাতা।। ৮॥ (याधामानः महावीर्यामिमः ममसूर्भावि । কল্যাণৰূপা সৈরস্থী বল্লবশ্চাতিস্থন্দরঃ ॥ ১ ॥ স্ত্রীণাঞ্চ চিত্তং চুজেরং যুক্তরূপৌ চ মে মতৌ। দৈরস্বী প্রিয়ম্মানাং নিত্যং করুণবাদিনী। > ।। অন্মিন্জকুলে চেমৌ তুল্যকলিনিবা সিনৌ ॥ ইতি ক্রবাণা বাক্যানি সা মাণ নিতামতজ্বং ॥ ১১॥ কুৰন্তীং মাঞ্চ সংগ্ৰেক্ষ্য সমশঙ্কত মাণ ব্যায়। ত্ৰ্যাং তথা ক্ৰবন্ত্যান্ত জুঃখং মাণ মহদাবিশং ॥ ১২ ॥ স্বয্যেবং নিরমং প্রাপ্তে ভীমে ভীমপর।ক্রমে। শোকে যৌধিষ্ঠিরে মগ্না নাহং জীবিভুমুৎসহে॥ ১৩॥ यः मामवान मञ्चा । भ मर्सा । रेम्डक तर्था २ क तर । সোহযং রাজ্যে বিরাটিশ্য কন্যানাং নর্ত্তকো যুবা । ১৪ ॥ যোহতর্পরদমেযাক্সা থাওবে জাতবেদসম। সোহস্কঃপুরগতঃ পার্থঃ কুপেহয়িরিব দেশ্রতঃ। ১৫॥ ॥ ७॥ १॥ ৮॥ ৯॥ প্রিয় সংবাসাৎ প্রেয় স্বাস্থা ভীম্সেন্সর সংবাসঃ সহবাসঃ 'সম্বন্ধস্তমাং ত্মিন্ হস্তা দিভিঃ সহ গেধ্যমানে সতি কফণ বাদিনী দীনবাদিনী ভবতি ॥ ১০ ॥ সংবাদ মেবাছ ক্সন্মিরিতি ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ নিরয়ং प्रदेश **।** २०॥ २८॥ २०॥

^{*} সম্পাদ্য বিদিত্যক্র সম্পাদজ, বানো ইতি পঠিঃ ক পুস্তকে।

যশাদ্যমমিতা। শংকর পুরুষর্ষভাৎ। স লোকপরিভৃতেন বেশেনাতে ধনপ্রাং ৷ ১৬ া যদ্য জ্যাক্ষেপক**ঠিনৌ বাহু পরিঘদন্নিভৌ।** স সভাপরিপূর্ভাাং শেচিত্রাত্তে ধনপ্রয়ঃ ॥ ১৭.॥ যদা জ্যাতলনির্ঘোখ সমকম্পন্ত শত্রবঃ। স্ত্রিয়ো গীতস্বনং তদ্য মুদিতাঃ পর্য পোদতে। ১৮ 🛭 কিরীটং স্থ্যসঙ্কাশং যতা মূর্নন্শোভত। বেণীবিক্লতকেশাস্তঃ সোহ্যমদ্য ধনপ্রয়ঃ ॥ ১৯ ॥ ত ং বেণীক্বত কেশাস্তং ভীমধন্ব।নমৰ্জ্জুনমু। কন্যাপরিবৃতং দৃষ্ট্য ভীম সীদতি মে মন:॥ ২০॥ যশিল্পানি দিব্যানি সমস্তানি মহাতান। আধারঃ সর্ববিদ্যানাং সধারয়তি কুগুলে॥ ২১॥ * স্প্রফার্ডানি তেজ্মাপ্রতিমানিবৈ। সমরে নাভ্যবর্ত্তন্ত বেলামিব মহার্ণবঃ ॥ ২২ । সোহ্য^ রাজ্যে বিরাট্স্য কন্যানাং নর্ত্তকো যুবা। আন্তে বেশপরিজ্ঞ: কন্যানাৎ পরিচারক: ॥ ২০॥ যন্য স্ম রথঘে। ষেণ্ সমকম্পত মেদিনী। সপ্রবিত্বনা ভীম সহ স্থাবরজঙ্গনা॥ ২৪॥ যশ্মন জাতে মহাভাগে কুন্ত্যাঃ শোকো বানশাত। স শোচ্যতি মামদ্য ভীমসেন তবারুকঃ॥ ২৫॥ ভূষিতং তথলক্ষারৈঃ কুগুলৈঃ পরিহাটকৈঃ। কল্পাণিনমা্যান্ত দৃষ্ট্। দীদতি মে মনঃ॥ ২৬॥ লোকে পরিভূতেন নিন্দিতেন ॥ ১৬ ॥ শংখপরিপূর্ণভাগে বাত্তাাং ॥ ১१॥ ১৯॥ ১৯॥ २०॥ २১॥ व्यक्तिः जाकतिः जुः य मिन त्नाः यत्मा. ত্রাপি পচন্তি অপ্রতি ম্নাতিকেন্টে । ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ # स्প্রক:মতাত্র যদে। তিপা ঠঃ ক ১ ভকে।

যদ্য নাস্তি দমো বীর্য্যে কশ্চিতুর্ব্যান ধনুর্দ্ধর:। ্সোখন্য কন্যাপরিরতো গায়লান্তে ধন্প্রয়ং ॥ ২৭ ॥ ধর্মে শৌর্যোচ সভোচ জীবলোকসা সন্মত্য। স্ত্রীবেশবিক্বত পার্থ দৃষ্ট্র সীদতি মে মন: ॥ ২৮॥ যদা হ্যোনং পরিবৃতং কন্যাভিদ্দেবরূপিণস্। প্রভিন্নমিব মাতঙ্গং পরিকীর্ণং করেণুভিঃ ॥ ২৯॥ মৎন্যমর্থপতিং পার্থং বিরাট সমুপস্থিতম্ 🕇 পশ্যামি ভূৰ্য্যমধ্যস্থং দিশো নশ্যন্তি মে তদা॥ ৩০॥ নুনমার্যা নজানাতিকুক্ত্ং প্রাপ্তং ধনপ্রয়ম্ ব অজাতশতুং কৌরব্যং মগ্নং ছুদু গৃতদেবিনম্॥ ৩১ ॥ তথাদৃষ্ট্যা য়বীর ংগণ সহদেবন গবাণ পতিং। * গোষুগোবেশম।যান্তং পাণুভূতামি ভারত। ৩২ **।** गहरमवमा बृङानि हिनुबन्धी श्रूनः श्रुः। ন নিজ্ঞামধিপজ্ঞামি ভীমদেন কুতো রতিম্।। ৩০॥ ন বিন্দামি মহাবাহো সহদেবস্য তুষ্কৃত্য ! যন্মিনেবং বিধপ্তঃখপ প্রাপ্সাথ সভ্যবিক্রমঃ॥ ৩३॥ দূযামি ভরতশ্রেষ্ঠ দৃষ্ট্র তে ভাতরং প্রিয়ম্। त्शासू त्रात्वमका भर मर्माना जिन्दि निर्वा ७०॥ गः तकः तक्रानिषाः (नानानानाः भूरतान्यम् । বিরাটমভিনন্দস্তমথ মে ভব্তি জ্বর:॥ ৩৬॥

॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ দিশোনশান্তি, শোকেন আদ্ধামারাতীওঁর্থঃ ॥ ৩০ ॥
• আর্থা শ্ব্রাঃ ॥ ৩১ ॥ গোবেশং মহোক সদৃশং ॥ ৩২ ॥ ৩০ ॥ ৩৪ ॥ দ্য়ামি
খেদং প্রাথ্যেমি ॥ ৩৫ ॥ রক্ত নেপথ্যং রক্তং গৈরিকা দি ধাতুম্বং ৄর্নেপথ্য
মলং কারোসায়তং ॥ ৩৬ ॥

^{*} গোযু গোবেশমিতাত গোপালবেশ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

সহদেবংগ্রহ মে বীরং নিত্যমার্য্যা প্রশ^সতি। মহাভিজনসম্পন্নঃ শীলবান বুত্তবানিতি॥ ৩৭ ॥ ত্রীনিষেবো মধুরবাগ্ধার্মিকশ্চ প্রিয়শ্চ মে। স তেহুর্ণ্যেষ্ব বোচব্যো যাজ্ঞসেনি ক্ষপাস্থপি ॥ ৩৮ ॥ সুক্মার্শ্চ শূর্শ্চ রাজানগ্রাপানুত্রত:। জ্যেষ্ঠাপচাযিনং বীরং স্বয়ৎ পাঞ্চালি ভোজয়েঃ॥ ৩১॥ ইত্যুবাচ হি মান কুন্তী রুদতী পুত্রগুদ্ধিনী। প্রব্রজন্তং মহারণ্যং তৎ পরিষ্বজ্য তিষ্ঠতী ॥ ৪০ ॥ তং मुखे। वाष्ट्रकः तासु वर्मम्बर्भागयम् । সহদেবং যুধান শ্রেষ্ঠন কিন্নু জীবামি পাণ্ডব ॥ ৪১ ॥ যক্তিভিনিত্যসম্পন্নো ৰূপেণাস্ত্রেণ মেধয়। সোহশ্বস্থো বিরাটস্য পশ্য কালস্য পর্যায্য ॥ ৪২ ॥ অভাকীর্যান্ত বৃন্ধানি দাসগ্রন্তিযুদীক্ষ্য তম্। বিনযন্ত জবেনাখান মহারাজন্য পশ্যতঃ ॥ ৪৩॥ অপশ্যমেনং শ্রীমন্তং মৎস্যুৎ ভাজিফুমুন্তমম্। বিরাটমুপতিষ্ঠত্ত দর্শযন্তঞ্চ বাজিনঃ ॥ ৪৪ ॥ কিন্ন মান মন্যদে পার্থ স্থথিতেতি পরন্তপ। এবং তুঃখশতাবিষ্টা যুধিষ্ঠিরনিমিত্ততঃ ॥ ৪৫॥ অতঃ প্রতিবিশিষ্টানি তুঃখান্যন্যানি ভারত। বৰ্ত্তন্তে ময়ি কৌন্তেয বক্ষ্যামি শুণু তান্যপি॥ ৪৬॥

্॥ ৩৭॥ ৩৮॥ জেষ্ঠাপচায়িনৎ জেষ্ঠ, পূজকং ॥ ৩৯॥ ৪০॥ বৎস চর্মনি-ক্ষপায়াংশেতে ইতি তং বংসচ্মক্ষপাশয়ং ॥ ৪১॥ ৪২॥ অভ্যকীর্যান্ত্র্যাশীর্যান্ত বৃন্দানি শত্রুণা মিতি শেষঃ দামগ্রন্থিং গ্রন্থিকং ॥ ৪৩॥ এনং নকুলং ব্যজিনোহখান্ দর্শয়ন্তং বিরাটং বিরাটায়॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ৪৬॥ যুধ্যমণে বুজংখানি বিবিধান্তত।
শোন্যতি শারীর পমে কিন্তুংখনতঃ প্রমা ॥ ৪ । ॥
ইতি বিরাটপর্কাণি কীচকবধপর্কাণি দৌপদীভীনদ্যাদে ।

একোনবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯ ॥

ক্রেপিছাবাত।

মহং সৈরন্ধি বেশেন চরন্থী রাজবেশানি।
শৌচদামি * সুদেষ্টাষা অক্ষর্ত্ব্য কার্ণাং॥ ১॥
বিক্রিরাৎ পশা মে তীব্রাং রাজপুজ্যাঃ পরন্তপ।
† আত্ম কালমুদীক্ষন্তি সর্বেছঃখং কিলন্তেবং॥ ২॥
অনিত্যা কিলমত্যানামর্থসিদ্ধির্জারাষ্টো।
ইতি কৃত্বা প্রতীক্ষামি ভত্ গামুদরং পুনঃ॥ ৩॥
‡ মক্রবং পরিবর্ত্তন্তে, হার্থান্চ ব্যুশনানি চ।
ইতিকৃত্বাপ্রতীক্ষামিভত গামুদরংপুনঃ॥ ৪॥

ধ্রিমানের জীবৎস্ক ॥ ৪৭ ॥

ইতি বিরাট পর্কানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে

একোনবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ১৯ ॥

সৈরস্ক্রাবেষেণ সৈরস্ক্রীবেদেশ শেচিদা মুজ্জলাদি শৌচদাধন প্রদা

^{*} শৌচদান্মীতাত্ত বশগান্দী তিপাঠঃ ক পুস্তকে।

^{&#}x27; শু আত্মকাল মুদিক্ষন্তি সর্ক্ষে হু:এং কেলান্তব দিতাত্ত আদেকাল মু**দ্দি- °** ক্ষন্তী সর্কাং হুখং কিলান্তব দিতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

^{়া} চক্রবৎ পরিবর্ত্তন্ত ইত্যত্ত চক্রবৎ কিলমর্ত্যানা ীমতি পাঠঃ ক পুতকে।

য এব হে বুর্তবিতি পুরুষদা জয়াবহং।
পরাজয়ে চ হেবুং দ ইতি চ প্রতিপালয়ে।
কিং মাং ন প্রতিজানীয়ে ভীমদেন মৃতামিব॥৫ ॥
দর্ষা ঘাঁচন্তি পুরুষা হলা বিধান্তি চাপরে।
পাতিযিত্বা চ পাত্যয়ে পরৈরিতি চ মেশ্রুতবি ॥ ৬॥
ন দৈবস্যাতিভারোহস্তি নচৈবাস্যাতিবর্ত্তনম্।
ইতি চাপ্যাগমং ভূষো দৈবদ্য প্রতিপালয়ে॥৭॥
স্থিতং পুরুং জলং যুত্র পুনস্তত্রৈব গচ্ছতি *।
ইতি পর্যাযমিচ্ছতী প্রতীক্ষে উদয়ং † পুনঃ॥৮॥
দৈবেন কিল যদ্যার্থঃ স্থনীভোহপি বিপদ্যতে।
দৈবেদগাপালমে যত্নস্তেন কার্যো বিজানতা॥৯॥

পুৰুষদা ছর্ষ্যোধনাদেঃ যা ক,লঃ দএব কলি এব প্রতি পালয়ে কলি মিতি শেষঃ ॥ ৫ ॥ কাল এব দর্মাং বিপরীতং করোতীতাছে দহেতি যেম্বাং দাতার স্ত এব কালেন দরিদ্রাঃ নস্তো যাচকা ভবন্তীতার্থাঃ তথাজনান্ হরা পরৈরপি বধান্তি বধান্তে পাত্যিতা জন্যান্ তএবানাঃ পান্তাত ইতি ॥ ৬॥ , জাতভারো ছুম্বরং দৈবদ্য কিমপি নাস্তি ॥ জদ্যদৈবদা জাতবর্তনং অতিক্রমণঞ্চ নাস্তি কেন চিংকৃত মিতি শেষঃ দৈবদ্য প্রাধান্য প্রতিপাদক মানামং প্রতিপালয়ে মানায়ে দৈবাধীনাম্মীতিমন্তা ন শোচামীতার্থঃ ॥ ৭ ॥ ছিতমিতি যথারিক্রং দরঃ পুনঃ কালেন পূর্যাত এবং জহমপি পুনঃ ক্রিয়ং প্রাধান্যবৈতি নিশ্বয়েন পর্যায়াই কাল বৈপরীতাং ইন্দন্তী ॥ ৮ ॥ যদ্য প্রনার্থাদৈবেন বিপদ্যতে নশ্যতি তেন দৈবদ্যাব জাগমে জাত্ত্লো, যত্নং কার্যাঃ ক্রমণ্ড প্রক্রপ হোমাদিনা জাহর্ত্র্য ইত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥

্রপাচ্ছতীতাত্র তিষ্ঠতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে। ক প্রতীকে উদয় মিতাত্র প্রতীকা মাদয়মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে। যতু মে কথিত ন্যান্য বচনন্য প্রয়োজনম্।
পূচ্চ মাং ছং থিতান্ত জ্বনপৃষ্টা বা ব্রবীমিতে। ১০॥
মহিনী পাণ্ডুপুজানাং ছহিতা দ্রুপদন্য চ।
ইমামবস্থাং সংপ্রাপ্তা কা মদন্যা জিজীবিষে॥ ১১॥
কুরন্ পরিভবেৎ দর্বান্ পাঞ্চালানপি ভারত।
পাণ্ডবেষা শ্চ সংপ্রাপ্তো মম ক্লেশা ছরিন্দম॥ ১২।
ভাতৃভিঃ শ্বস্তুরিঃ পুলুর্কিছভিঃ পরিবারিতা।
এবং সমুদিতা নারী কা জন্যা ছংথিতা ভ্বেৎ॥ ১০॥
নূনং হি বাল্যা ধাতুর্ম্মা বৈ বিপ্রিয়ং কৃতন্।
যান্ত প্রাদ্দ্রীতং প্রাপ্তামি ওর্ত্বভ ॥ ১৪॥
বর্ণাবকাশমপি মে পশ্ব পাশ্তর তাদৃশ্য।
যাদৃশো মেন ত্রাসীৎ ছংথে পরমকে তদা॥ ১৫॥
জ্মের ভীম জানাগি যুন্মে পার্থস্থা পুরা।
সাহং দাসীজ্যাপরা ন সান্তিমবশা লভে॥ ১৬॥

॥ ১০॥ ১১॥ কুর্রনিতি মম মং সম্বন্ধী মরিমিত্তকঃ কচপ্রাহাদিঃ অরং ক্লেণঃ পাঞ্বান্ পাঞ্জঃ স্থান্ প্রান্ সুম্মান্ প্রাপ্তঃ সন্ কুরুন্ ভীম্মাদীন্ পাঞ্চালান্ ফ্রপনাদীংশ্চ পরিভবেং নাশ্রেদিভার্পঃ
॥ ১২ ॥ সমুদিতা সমাগুদরবতাপি এবং কানা ছঃখিতা ভবেরকাপি আমতামাপদোন দৃষ্টাএব মমতু দৃষ্টাইতি মহদাশ্র্যা মিতি ভাবঃ॥ ১৩॥ বালরা নতুপ্রে, তয়া তং বালের কুড মপরাধং নশারামি যায় প্রসাদাদিদং ' ছুর্নিতং ছুরবস্থাং প্রাপ্তামি॥ ১৪॥ বর্ণাবিকাশো দীপ্তি সংক্রোচঃ বন্যার কিল্ল গারণ মৃক্তাৎ আভ্রাদিব্যার বস্তু, সংযুক্তং পারভন্তাভ মতি ছুংখদ মিতি ভাবঃ ভত্তবনে ইদানীং যথাদীপ্তি সংকোলোক্তি ন তথা বনে আদী দিত থাঃ॥ ১৫॥ অবশা প্র্যিনা॥ ১৬॥

ন। দৈবিকমিদং মন্যে যত্র পার্থে। ধনপ্রয়ঃ। ভীমধ্যা মহাবাছরাত্তে শান্ত ইব্নেলঃ ॥ ১৭ ॥ ष्णमक्या (दिक्टिश शार्थ आ निनाः देव शिवर्देतः । বিনিপাতামমং মন্যে যুখাকমবিচিন্তিতম্॥ ১৮॥ यमा। यय स्थार शका। युर्यायसम्बद्धाः मन।। সা প্রেকে সুখ্মন্যেবামবর।গা৲ বরা সতী॥ ১৯॥ পশ্য পাগুৰ মেহৰম্খা যথা ন। হামি বৈ তথা। যুগ্নাস্কৃথি যমাতে যুপাল্য কলেস্য পর্যায় ॥ ২०॥ যগ্যাঃ সাগরপর্যান্তা পুথিবী বশবর্ত্তিনী। আদীৎ সাদ্য সুদেঞ্যা ভীতাহং বশবর্তিনী ॥ ২১॥ যান্যাঃ পুরঃমরা হ্যামন্ পৃষ্ঠত শানুষাযিনঃ। সাহ্মদ্য স্থাদেকারাঃ পুরঃ পশ্চাচ্চ গামিনী ॥ ২২ ॥ इन्छ प्रथः कोट्य भगागरी निर्वाध एए। ষা ন জাতৃসমুং পিংষে গাতোদ্বর্তনমাত্মনঃ। অন্যত্র কুন্তা। ভদ্র- তে সা পিনম্বাদ্য চন্দন্ম। ২৩॥ পশা কৌত্তেষ মে পাণী যৌ নৈবাৎ ভূছিতং পুরা। ইতাসা দর্শযামাস কিণবন্তৌ করাবুভৌ ॥ ২৪ ॥ বিভেমি কুন্ত্যা যা নাহং যুগ্মাকং বা কদাচন। সাদ্যাপ্রতো বিরাটস্য ভীতা তিষ্ঠামি কিন্ধরা । ২৫ ॥ ¹ কিং নু বক্ষ্যতি সম্রাট্ মাং বর্ণকঃ স্থক্তো ন বা। নান্যপিউ (ই মৎসাস্য চন্দ্রণ কিল্রোচতে ॥ ২৬ ॥

প্রাদৈবিকং ন কিন্তু দৈবিকমেব ॥ ১৭ ॥ বিনিপাতং পরাভবং ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ পুরাকিণবন্তো নৈবাভূতাং কিন্তিদানীমেব জাতা বিভার্থ: ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ বর্ণকো বিলেপনং বর্ণকালারণে জ্রীভূচন্দ্রের বিলেপনে ইতি মেদিনী বর্ণকোজ্রী বিলেপন মিতামরঃ ॥ ২৬ ॥

বৈশল্পায়ন উবাচ

সা কীর্ত্যানী জুংখানি ভীমদেনস্য ভামিনী।
ক্রুরোদ শনকৈঃ ক্ষণ ভীমদেনমুদীক তী॥ ২৭॥
সাবাস্পকলবা বাচা নিশ্বসন্তী পুনঃ খুনঃ।
ভাদয়ং ভীমদেনস্য ঘট্টযন্তীদমত্রবীৎ ॥ ২৮॥

* নাল্পং ক্বত্ ম্যা ভীম দেবনোং † বিপ্রিয়ণ পুরা॥
অভাগ্যা যকু জীবামি কর্ত্ব্য সতি পাপ্তব॥ ২৯॥
বৈশল্পায়ন উবাচ

ততন্তন্যাঃ করো স্থক্ষো কিণবন্তো রুকোদরঃ।
মুখমানীয় বৈ পজ্ঞা রুরোদ পরবীরহা॥ ৩০॥
তৌ গৃহীত্বা চ কৌত্তেয়ো বাস্পামুৎস্ক্য বীর্যাবান।
ততঃ পরমত্ব থার্ভ ইদ্প বচনমন্ত্রনীৎ॥ ৬১॥
ইতি বিরাটপর্কাণি কীচকবধপ্রকাণি জৌপদীভীমসম্বাদে
বিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২০॥

ভীম উবাচ I

ধিগস্ত মে বাছবলং গাণ্ডীবং ফাল্গেনস্য চ। যতে রক্তৌ পুরা ভূত্বা পাণী ক্নতাকিণাবিমৌ ॥ ১॥

॥২৭॥ বাষ্পকলরা বাষ্পেণ প্রকাদরা মঞ্জুলরা বা ঘ্টরন্তী কম্পারন্তীব ॥২৮॥
কর্তব্যে মর্তব্যে কু হিংসারা মিতাস্য রূপং ॥২৯॥৩০॥৩১॥
ইতি বিরাট পর্বাণ নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে
বিংশোধ্যারঃ॥২০॥

112 1

শলামিতাসা প্রাক্রোপছা বাচেতি পাঠঃ ক প্রতকে।
 প্রিপ্রেমিতা ত কিল্বিব্মিত পাঠঃ ক প্রতকে।

সভায় স্ত বিভাটিশ্য ক্রোমি কদনং মহৎ। তত্রমে কারণং ভাতি কৌতেয়ে যং প্রভীক্ষতে। ২। অথবা কীচকস্যাছে পোথ্যামি পদা শিরঃ। ঐশ্বর্যামদমন্ত্রণা জীড়ারিব মহাদিপঃ॥ ৩॥ অপশ্যুৎ যাং যদা ক্লুফেকীচকেন পদাহতান্। ত দৈব হং চিকীর্ধামি মৎস্যানাপ কদনং মহং॥ ৪॥ তত্র মাণ ধর্মারাজস্ত কটাক্ষেণ ন্যবার্ষণ। তদহং তস্য বিজ্ঞায় স্থিত এবাস্মি ভাবিনি॥ ৫॥ যচ্চ রাফী 🔍 প্রচাবনং কুর্ণামবধশ্চ যঃ। स्रुर्याधनमा कर्नमा भकुरनः दुनौवलमा ह ॥ ७ ॥ ছঃশাস্থ্য পাপ্সা যুৱ্ধা ন হাত্ শিরঃ। তমে দহতি গাতাণি হৃদি শলামিকার্পিত্য। মা ধর্মাং জহি সুশ্রোণি ক্রোধং জহি মহামতে॥ १ । ইমঞ্চ মুপালন্তং ছতো রাজা যুধিষ্ঠিরঃ। শুপুষাদ্দদি কল্যাণি * ভূন^ জহ্যাৎ স জীবিতম ॥ ৮॥ ধনঞ্জয়ো বা স্প্রোণি যমৌ বা তনুমধ্যমে। লোকান্তরগতেমেয়ু নাহং শক্যামি জীবিতুন ॥ ৯ ॥ পুরা স্থকন্যা † মার্য্যাতী ভার্মবং চ্যবনং বনে। বল্মীকভূতং শাম্যন্ত্রস্থাদাত ভাবিনী ॥ ১০॥

সভারা মিতি,কারণং প্রাকটাং মাভুদিতি হেতুঃ প্রতীক্ষতে তদেব স্কৃষ্যন্ মামবেক্ষতে অন্যথা তদানীমেৰ কদনং ক্ষরোমি কৃতংস্যা দিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥ প্রেথগামি চূর্ণাকরোমি॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ নাহ্যতং ছিত্বা নানীতং ॥ ৭ ॥ । ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ অযুপদাত অনুষ্কুবক্ষী॥ ১০ ॥

^{*} বুন্মিতাত কং স্মাতিপাঠঃ খ পুতকে ।

† ব্যুত্ত ভাষ্যতেতি পাঠঃ খ পুতকে।

নারায়নী চেন্দ্রদেনা রূপেন যদি তে প্রতা।
পতিমন্ত্রন্ধু দিং পুরা বর্ষসহব্দেশ ॥ ১১ ॥
দুহিতা জনকস্যাপি বৈদেহী যদি তে প্রতা।
পতিমন্তর্গ সীতা মহারণ্যনিবাসিন্দ্ ॥ ১২ ॥
রক্ষমো নিগ্রহ্ণ প্রাপা রামস্য মহিবী প্রিয়া।
ক্রিশ্যমানাপি স্থশ্রোণী রামমেবান্নপদ্যত ॥ ১৩ ॥
লোপামুদ্রা তথা ভীক্ষ বয়োরূপসমন্ত্রা।
ভাগস্ত্যমন্ত্রাদ্ধিত্বা কামান স্ক্রান্যান্ত্রান্ ৯ ১৪ ॥
দ্যামংসেনস্কৃতং বীরং সত্যবন্তমনিন্দিতা।
তথা ক্রমি কামানি স্বর্গিং মন্ত্রিনা ॥ ১৫ ॥
যথৈতাঃ কীর্ত্তিতা নার্য্যো রূপ্রতাঃ পতিব্রতাঃ।
তথা ক্রমিপ কল্যানি সর্কিঃ সমুদ্রতা গুণের ॥ ১৬ ॥
মাদীর্ঘং ক্রম কালং ক্রণ * মাস্যর্ক্ত্রণ সন্মিত্র্য।
পূর্বে ত্রেয়েদ্রশে বর্ষে রাজ্ঞো ক্রিয়েসি॥ ১৭ ॥
স্থান ত্রেয়াদ্রের্গ রাজ্ঞী ভবিষ্যাসি॥ ১৭ ॥
স্থান ত্রিয়াদ্রের্গ রাজ্ঞী ভবিষ্যাসি॥ ১৭ ॥
স্থান ত্রিয়াদ্রের্গ রাজ্ঞী ভবিষ্যাসি॥ ১৭ ॥

আর্তিয়তন্ত্রা ভীম ক্তং বাস্প্রিমেক্ষণম্।
অপার্যন্ত্রা জুংখানি ন রাজানমুপালভে ॥ ১৮ ॥
কিমুক্তেন ব্যতীতেন ভীমসেন মহাবল।
প্রভ্যুপস্থিতকালস্য কার্য্যস্যানন্তরো ভব ॥ ১৯ ॥
মমেহ ভীম কৈকেয়া ৰূপাভিভবশন্তরা।
নিত্যমুদ্ধিজতে রাজা কথং নেধাদিমানিতি ॥ ২০ ॥ ১

[॥] ১১॥ ১২॥ ১৩ ॥ ১৫॥ ১৬ ॥ মাদীর্যং অনীর্যং অপামিতার্থঃ
স্থাস্থাতি সমাসঃ ক্ষম ক্ষমত্ব মাদার্শ্ধতি সালিং মাদামিতার্থঃ॥ ১৭॥ ।
॥ ১৮॥ অন্তরঃ আ্দারঃ দল্লোভব, ইতি বাবং ॥ ১৯॥ কৈকেয়ী
স্থানেলাং ন গাছেং॥ ২০॥

^{*} মাসমৰ্ক্তসন্ত্ৰত মিতাত্ৰ মাস মধ্যৰ্ক্ষসন্ত্ৰত মিতি পাচঃ ক পুস্তকে।

তস্যা বিদিয়া তং ভাবং স্বয়ং চানৃতদর্শনঃ। कीहरका इस अपूर्य जा , जना आर्थिए हि माम् ॥ २ > ॥ তমহং কুপিতা ভীম পুনঃ কোপন নিষ্ম্য চ! অব্রুবর্ণ কামসমূচমাত্মানং রক্ষ কীচক ॥ ২২ ॥ গন্ধার্বাণামহ তার্যা পঞ্চানা মহিষী প্রিয়া। তে ত্রাং নিহ্মুঃ কুপিতাঃ শূরাঃ সাহ্সকারিণঃ * ॥ ২৩ ॥ এবসুক্তংস দুর্ফীত্মা কীচকঃ প্রভাবাচ হ। নাহং বিভেমি দৈর্ক্ষা গল্পবাণাং শুচিন্মিতে ॥ ২৪॥ শতং শতসহস্রাণি গন্ধর্বাণামহং রণে। সমাগতং হনিষ্যামি স্বং ভীক্ল কুরুমে ক্ষণম্ ॥ ২৫ ॥ ইত্যুক্তে চাক্রবং 🕆 স্থতৎ কামাতুরমহং পুন:। ন ত্বং প্রতিবলস্তেষাং গন্ধবাণাং যশস্থিনাম্॥ ২৬॥ ধর্মে;স্থিতা সিম সতত৲ কুলশীলসমস্থিতা া, নেচ্ছামি কঞ্চিদ্বধান্তং তেন জীবসি কীচক ॥ ২৭॥ এবমুক্তঃ স তুউাত্মা প্রাহ্মৎ স্থনবন্তদা ! অথ মান তত্ত্র কৈকেয়ী প্রৈষয়ৎ প্রণয়েন তু॥ ২৮॥ তেনৈব চোদিত। 🖠 পূর্বাং ভ্রাতৃপ্রিয় চিকীর্যয়া। স্থরামানয় * দৈরন্ধি কীচকস্য নিবেদনাৎ॥২৯॥ তং ভাবং রাজাহস্যাং কীচক স্কভায়াং শ্রিক্তঃ স্যাদিত্যেবং রূপমভি প্রার্থ ॥२১ ॥२२ ॥२० ॥२৪॥ ক্ষাণ্ড স্বীক্রিং ॥२৫ ॥२७॥ বগান্তং ' वधामानः॥ २९॥ २৮॥ २०॥

^{*} সাহসকারিণ ইত্যত্ত সাহসকারিণ মিতিপাঠঃ ক পুস্তকে।

• † স্তমিত্যত্ত মূলমিতিপাঠঃ খপুস্তকে।

[‡] গেদিতেতাত্ত দেশিতেতিপাঠঃ খ পুস্তকে।

^{*} দৈরদ্ধীত্যত্র কল্যাণীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্তপুত্ৰস্ত তাং দৃষ্টা মহৎ সান্ত্ৰস্বৰ্ত্যং। সাত্ত্বে প্রতিহতে কুদ্ধঃ পরামশমনাভব্ত ॥ ৩०॥ বিদিত্বা ভদ্য সঙ্কপেং কীচকদ্য ছুরাত্মনঃ ৷ তথাহং রাজশরণ্ জবেনৈব প্রধার্বিতা। ৩১। সন্দর্শনে জুমাপ রাজ্ঞ স্তপুত্রঃ পরামূশৎ। পাত্যিকা সতুষ্টাত্মা পদাহং তেন তাডিতা॥ ৩১॥ প্রেক্ষতে আ বিরাটস্ত কক্ষণ্ড বহুবো জনাঃ। র্থিনঃ পীঠমর্দ্ধান্ত হস্ত্যারোহান্ত নৈগমাঃ॥ ৩০॥ উপালকো ময়া রাজা কম্বন্দঃপি পুনঃ পুনঃ i ততো ন বারিতো রাজ্ঞান তস্মাবিনয়ঃ ক্লত ॥ ৩৪ ॥ (याश्य त्रार्ट्या विद्वारिया की हरका नाम मात्रियः। ত্যক্তধর্মা নুশংসক্ষ নরস্ত্রীসন্মতঃ প্রিয়॥ ৩৫॥ শূরোহভিমানী পাপাত্ম! সর্বার্থেষ্ট চ মুগ্ধবান। দারামধী মহাভাগ লভতেহথানু বহুনপি। ৩৬। হরেদপি চ বিস্তানি পরেষাং ক্রোশতামপি! ন তিষ্ঠতি স্ম সম্মার্গেন চ ধর্মাৎ * বুভূষতি ॥ ৩৭॥ অবর্ত্তরৎ কৃতবান সাত্তং প্রিয়বাদং ॥ ৩০ ॥ রাজশরণং রাজাধিটিতৎ স্থানং ॥৩১॥ সন্দর্শনে প্রতাক্ষং ॥৩২॥ পীচমর্দাঃ রাজপ্রিয়াঃ পীচমর্দ্ধেতি। धूरकेमा। बार्या । व्याया । व्य নৈগমঃস্যাত্রপনিষদ্বানিজোর্নাগরেপিচেতি মেদিনী ॥৩৩॥তত্র কীচকস্যাঃ বিনয়ঃ ন কৃতঃ ন নাশিতঃ ॥ ৩৪ ॥ সার্থি যুদ্ধে সহায়ঃ নরস্করাজঃ ক্রিয়ঃ স্থানেকারাশ্য সংমতঃ সম্বন্ধিবাৎ । ৩৫॥ তর্হিকথং ভয়োর্বিপ্রিয়ং ভন্নধেন 'কর্ত্তব্য মিত্যাশক্ষ্যাই শূর ইতি মুশ্ধবান মৌচ্যং গতবান দারমণী তবৈব

শিক্ষতি॥ ৩৭॥

স্ত্রিরং মাং স্পৃষ্টবান্ ॥ ৩৬ ॥ তিষ্তে , ছিরো ভবতি রুভূমতি প্রাপ্ত

^{*} রূভূষতীত্যত্র চিকীর্ষতীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পাপারা পাপভাবশ্চ কামবান্বশারুগঃ। অবিনীতশ্চ ছুফীরে। প্রসাখ্যাতঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ৩৮ ॥ पर्मात पर्मात इन्याखिया अध्यक्ष कीविज्य। তদ্ধর্মে মতুমানানা মহান্ধর্মো নশিষ্যতি ॥ ৩৯॥ সময়^ রক্ষমাণানাং ভাষা। বোন ভবিষাতি। ভার্যাবাং রক্ষ্যাণাবাৎ প্রজা ভবতি রক্ষিতা ॥ ৪০ ॥ প্রজায়ান রক্ষামাণায়ান আত্মা ভবতি রক্ষিতঃ। আবা হি জায়তে ত্যাং তে জায়াং বিছুক্ ধাং ॥ ৪১॥ ভর্ত্তা তু ভাষ্যযাত্মক্যঃ কথং জারান্মাদরে। বদতাৎ বৰ্ণধৰ্ম ভ বাহ্মণান্মিতি প্ৰতঃ 🕆 ৪২॥ कि खिरा जा पर्या नानाः मत् निवई वार। পশ্যতো ধর্মরাজস্য কীচকো মাৎ পদাবধীং॥ ৪৩॥ তব চৈব সমক্ষে বৈ ভীমদেন মহাবল। স্বযা হ্যহ্ পরিত্রাতা তত্মাদেবার।জ্জটাস্করাৎ ॥ ১৪ ॥ জযদ্ৰথং তথৈৰ স্বমজৈৰীৰ্ভাত্তিঃ সহ। জহীমমপি পাপিষ্ঠং যোহয় মামবমন্তে ॥ ৪৫॥ কীচকো রাজবালভ্যাচ্ছোক্রন্মম ভারত। তমেবণ কামনমাত্তণ ভিন্ধি কুন্তুমিবাশ্মনি॥ ৪৬॥

॥ ৩৮ ॥ দশনে দশনে প্রতি দশনং সএবং রাজবল্লভঃ কামাত্রাচ যদি মাং হন্যা তাড়ারং ভাডনভয়াদ্রা হহং যদি জীবিতং জহ্যাং তত্তর্হি ধর্মে যতমানানাং ভবতাং ধর্মে। ন শিষাতি শৌর্যং রার্যং স্যাদিতার্যঃ ॥ ৩৯ ॥ 'এতদেবাহ ধময় মিতি সময়ং ময়্যাদাং এয়োদশ বর্ষরপাং ভার্য্যাপোষণীয়া ন ভবিষাতি ॥ ৪১ ॥ জায়াৎ আবিভ্রেৎ বদতাং কথয়তাং রাক্ষণানাং মুখার বর্ণ ধর্মক গ্রুতঃ ॥ ৪২ ॥ ৪০ ॥ ৪৪ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥

যো নিমিন্তমনর্থনাং বহুনাং মম ভারত।
তপ্তেক্জীবন্তমাদিতাঃ প্রাতিরভুদিষ্যিতি ॥ ৪৭ ॥
বিষমালোভা পাস্যামি মা কীচকবশং গমন্!
শ্রেষা হি মরণং মহুং ভীমসেন তবাপ্রতঃ ॥ ৪৮ ॥
বিশ্লায়ন উপাত।
ইত্যুক্তা প্রাক্ষদৎ কৃষ্ণা ভীমস্যোরঃ সমাজ্রিতা।
ভীমশ্চ তাং পরিষ্কার মহুং সাস্ত্রুণ প্রযুক্তা চ ॥ ৪৯ ॥
আখাস্যিত্বা বহুশো ভূশমার্ভাণ স্থুমধ্যমান্!
হেতৃতত্ত্বার্থসন্ যুক্তৈর্কিটোভি ক্রপদাত্মাকুলম্।
বিচকন্মনসাগজ্ঞ স্ক্রনী প্রিসন্লিহন্।
উবাচ চৈনাং জুংখার্ভাং ভীমঃ ক্রোধবশংগতঃ ॥ ৫১ ॥
ইতি বিরাচপ্র্যানি কীচকবধ্যুর্ধার ॥ ২১ ॥

ভীমদেন উপাচ তথা ভদ্রে করিষাামি যথা স্বং ভীকু ভাষদে। অন্য তং স্থদযিয়ামি কীচকণ সহবান্ধবমু ॥ ১॥

অভুদেরিবাতি অভুদেষাতি ॥ ৪৭ ॥ কীচকবশং মাগমং ন গচ্ছেরং ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ হেতুভি মুক্তিভিঃ ভব্বার্থি র্থার্থ ভূতিশ্চার্থিঃ সংযুক্তা- । নিতিঃ ॥ ৫০ ॥ অগেচ্ছং স্মৃত্বান্ স্কিনী গল্লো রভান্তরে প্রিস্থান্হন্ জিহ্বয়া প্রামুশন্॥ ৫১ ॥

> ইতি বিশ্বাট পৰ্কানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভাৰত ভাবদী প্ৰ একবিংগোহধ্যায়ঃ ॥ ২১ ॥

অস্যাঃ প্রদোধে শর্কার্য্যাঃ কুরুত্বানেন সঞ্চন্। ছুঃখং শোকঞ্লিধুর যাজ্ঞসেনি শুচিস্মিতে॥ ২॥ যৈষা ন্র্তুনশালেহ মৎস্যরাজেন কারিত।। দিবার্ত্র কন্যা নৃত্যন্তি রাত্রৌ যান্তি যথাগৃহম্ ॥ ०॥ তত্রান্তি শয়নং দিবাং দুঢ়াঙ্গং স্কুপ্রতিষ্ঠিতম্'। তত্রাস্থ দশ্যিষ্যামি পূর্বব্রেতান্ পিতামহান্। ৪॥ যঁথাচ ত্বাং ন পশ্যেয়ঃ কুর্ব্বাণান্তেন সন্থিদ্য । কুৰ্য্যান্তথা ত্ব~ কল্যাণি মথা সন্নিহিতো ভবেৎ॥ ৫ বৈশস্থায়ন উবাচ। অথা তৌ কথ্যিত্ব। তুব।স্পাযুৎস্ঞ্য চুঃখিডৌ ॥ রাত্রিশ্বেং তমত্যুত্রণ ধার্যামাসতু হৃদি। ৬॥ ত্স্যাং রাজ্যাং ব্যতীতায়াং প্রাতরুপায় কীচকঃ। গত্ব। রাজকুলাবৈধ জৌপদীমিদমত্রবীং॥ ।॥ সভায়াৎ পশ্যতো রাজ্ঞঃ পাত্যিত্বা পদাহহন্য। ন চৈবালভদেত্রাণমভিপনা বলীযদা। ৮॥ প্রবাদেনেহ .মৎস্যানাপ রাজা নামায্যুচ্যতে। অহমের হি মৎস্যানাৎ রাজা বৈ বাহিনীপতিঃ॥ ৯॥ মাং স্থুখং প্রতিপদাস্ব দাসো ভীক্ল ভবামি তে। অহায তব সুশ্রোণি শতং নিষ্কান্দাম্যহ্য ॥ ১০ ॥ দাসীশতঞ্চ তে দদ্যাং দাসানামপি চাপরম্। রথং চাশ্তরীযুক্তমস্ত নৌ ভ্রীক সঙ্গমঃ ॥ ১১ ॥

প্রদোষে রজনী মুখে সংগতং সংভাষণং নির্ধ্য অপ্রকাশ্য ॥২॥৩॥
দূঢাক কান্ত র্ফলক্ষয়ং ॥৪॥৫॥৬॥৭॥ অহনং হতবান্ ॥৮॥৯॥
॥১০॥ নৌতাবয়েঃ ॥১১॥

জে পিছাবাচ।
এবং মে সমযন্ত্রনা প্রতিপান্তর কীচ্ক।
ন ত্বাং সথা বা ভ্রাতা বা জানীয়াৎ সঙ্গতং মযা॥ ১২॥
শ অববোধাদ্ধি ভীতান্মি গন্ধর্কাণা যশন্ত্রনাম্।
এবং মে প্রতিধানীহি ততোহহং বশ্যা তব॥ ১৩॥

কীচক উবাচ। এবনেতৎ করিষ্যামি যথা সুশ্রোণি ভাষদো। একো ভাষে গুমিষ্যামি শুনুমোকস্থৎ তব ॥ ১

একো ভদে গমিষ্যামি শূন্যমাবস্থৎ ত্ব ॥ ১৪॥ সমাগ্যার্থং রড্রোরু ত্বা মদনমোহিতঃ । ল ব্বা ত্বং † নাবভোৎস্যক্তি গন্ধাব্যাঃ সূর্য্যক্ষ্যঃ ॥ ১৫॥

দ্রেপুত্রবাচ।

যদেতন্ত্রনাগারং সংসারাজেন কারিতম্।
দিবাত্রকন্যা নৃত্যন্তি রাত্রৌ যাক্তি যথাপৃহম্॥ ১৬॥
তমিত্রে তত্র গচ্ছেখা গন্ধবিধ্যন্তি ন সংশ্যঃ॥ ১৭॥
বিশাশাযন উবাচ।

তমর্থং প্রতিজনপদ্যাঃ ক্ষাযাঃ কীচকেন হ।
দিবসার্দ্ধি সমভবন মাসেনৈব সমং নূপ ॥ ১৮ ॥
‡ কীচকোহথ গৃহং গত্বা ভূশং হর্ষসাম্বিতঃ।
দৈরস্ক্রীক্পিণ মুঢ়ো মৃত্যুণ তং নাববুদ্ধবান ॥ ১৯ ॥

সময়ং সংকেতং প্রতিপদাস্থীকৃক্॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৯ ॥ ১৭ ॥ দিবসার্দ্ধং অহোরাতার্দ্ধং দিনং 'এক মাপি মাদেন সমং ওৎ ক্তাদভূৎ । ১৮ ॥ ১৯ ॥

* অববোধা দ্বিভীতান্দীতাত্ত্ব অন্প্রবাদান্ত্রীতান্দীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ক ন্যবভোগন ভীতাত্ত্ব নৈবপলোয়ুরিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কীসকো ২থগৃহংবারা ইত্যাস্য প্রাকৃ ততঃ সাভীম্যেন্স্য তম্ব্রং প্রত্য বেদম্দিতি পাঠঃ ক পুস্তকে অধিকো মুর্ততে। शका खत्र गाला यु ता निकः म विष्मय उः । অলঞ্জে তদাত্বানং সভুৱঃ কামমোহিতঃ । ২০॥ खमा जर क्रांचः कर्म कार्ता मीर्च हेरा **बर**्। অনুচিন্তযতশ্চাপি তামেবাযতলোচনাম্॥ ২১॥ আসীদভাধিকা চাপি ত্রীঃ প্রিয়ং প্রায়ুক্ষতঃ। নির্ব্বাণকালে দীপদ্য বন্তীমিব দিধক্ষতঃ॥ ২২ ॥ क्रुडमः প্রভাষস্থদায় कीहतः कामरमाहिडः। নাজানাদিবদ্ যায়ং•চিত্যানঃ স্মাগ্ম্য ু ২৩ ৮ ততস্তু দ্রৌপদী গন্ধ তদা ভীমং মহানসে। উপাতিষ্ঠত কল্যাণী কৌরব্যুৎ পতিমন্তিকং ॥ ২৪॥ তমুবাচ স্থাকেশান্তা কীচকদ্য মর্যা কুতং। 🌞 সঙ্কেতো নর্ত্তনাগ রে যথাবোচঃ পরস্তপ ॥ ২৫॥ শূন্যং সন্ত্রাগার্মাগ্মিঘাতি কীচকঃ ! . একো নিশি সহাবাহো কীচকং তং নিস্থদ্য ॥ ২৬ ॥ তং স্থতপুত্র ক্রিন্তেষ কীচকং মদদর্পিত্য। গত্বা তন্নর্তনাগারং নিজ্জীবং কুরু পাণ্ডব॥২৭॥ দর্পাচ্চ স্থতপুত্রোহনৌ গলকানব্যন্তে। ত্ত ত্বং প্রহরতাং শ্রেষ্ঠ হ্রদা লাগ মিবোদ্ধর 🕇 ॥ ২৮ ॥ অক্ত দু:খ।ভিভূতাবা মমমার্জ স্ব পাণ্ডব। আত্মনশৈচৰ ভদ্ৰুণ তে কুরু মানং কুল্ম্য চ॥ ২৯॥

়া ২০॥২১॥ ২২ ॥ কৃতসংপ্রত্যয়ঃ কৃতবিশ্বাসঃ নাজানাৎ ন জ্ঞাতবান্ গাঁহত ॥২৪॥২৫॥২৬॥২৭॥ ফুলাৎ ধমুন। ফুলাৎ নাগং কালিয়ং কৃষ্ণে যথা উদ্ভবান্ তথক্ষ মেনমিছ লোকাকুরে পাত্যেতি ভাবঃ॥২৮॥২৯॥

^{*} সক্ষেত ইত্যত্ত সন্ধম ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে। ব্ৰুদাৱাগা মিবোদ্ধরেতাত কন্দং নাগাই বোদ্ধরেত পাঠঃ ক পুস্তকে।

ভীম উবাচ ৷

স্বাগতন্তে বরারোহে যন্নাং বেদযদে প্রিয়ন।
ন হান্যং কিঞ্চিদিচ্ছামি সহায়ণ বরবর্ণনি ॥ ৩০ ॥
যা মে প্রীতিস্থাখ্যাতা কীচকস্য সমাগমে।
হত্বা হিডিয়ং সা প্রীতিস্থামাসীদ্ববর্ণনি ॥ ৩১ ॥
সতাং জাত ংশ্চ ধর্মঞ্চ পুরস্কৃতা ত্রবীমি তে।
কীচকং নিহনিষ্যামি রুতং দেবপতির্যথা ॥ ৩২ ॥
ত> গহ্বরে প্রকাশে বা পোথ্যিষ্যামি কীচকম্ ।
স্বাথ চেদপি যোৎস্যন্তি হিংসে মংস্যানপিশ্রেবন্ ॥ ৩০ ॥
ততো তুর্যোধনং হত্বা প্রতিপৎস্যে বস্তন্ধরন্ ।
কামং মংস্যমুপাস্তাশ হি কুন্তীপুজ্যে যুধিন্তিরং ॥ ৩৪ ॥
ক্রোপহান্যং ।

যথা ন সংভাজেধান্ত ৭ সভাং বৈ মৎকৃতে বিভো। নিগুত্ত হুং তথা বীর কীচকং তং নিস্তুদয় ॥ ৩৫ । ভীম উবাচ।

এবমেতৎ করিষ্যামি য থা ত্বং ভীক্স ভাষতে।
ভাদ্যতং স্থানিষ্যামি কীচক শহরাক্সবম্ ॥ ৩৬ ॥
ভাদ্যমানস্তম্যাদ্য তমস্থিন্যামনিন্দিতে।
নাগো বিল্লমিবাক্রম্য পোথ্যিষ্যাম্যহণ শিরঃ।
তলভ্যামিচ্ছতস্তম্য কীচক্স্য ভুরাত্মনঃ॥ ৩৭ ॥

বৈশন্দায়ন উব্যাহ

ভীমোহথ প্রথমং গড়া রাত্রী চ্ছন উপাবিশং। মূগং হরিরিবাদৃশ্যঃ প্রত্যকাশকত কীচক্ষ্॥ ৩৮ ।

॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ তদ্য তেন। দুশাম্নঃ নাগো ছন্তী অলভ্যাং ছং ॥ ৩৭ ॥ ৩৮ ॥

কীচকশ্চাপ্যলক্ষ্ত্য যথাকামমুপাগমৎ । তা ে বেলাং নর্তুনাগারং, পাঞ্চালীসঙ্গমাশ্যা। ৩৯। মন্যানঃ,স সক্ষেত্যাগারং প্রাবিশক্তভং। প্রবিশ্য' চ স তদ্বেশ্ম তমসা সংরতং মহৎ ॥ ৪০ ॥ পূর্বাগতং গতস্তত ভীমমপ্রতিমৌজশন্। একাস্তাবস্থিত টেনমাসসাদ স্বত্ন্যতিঃ ॥ ৪১ ॥ শ্বানং শ্বনে তত্ত্র * মৃত্যুং স্থতঃ পরাম্বং। † জाज्जनामान (काद्भन कृष्णधर्मन्द्रका रू॥ ४२॥ উপস্পাম্য চৈবৈনং কীচকঃ কামমোহিত:। হর্ষোনাথিতচিত্তাত্বা স্বাধানোইভাভাষত। ৪০॥ প্ৰাপিতং তে ম্যা বিস্তং বছৰপ্ৰনন্তকম্। যৎক্রতং ধনরত্নাত্যে দাসীশতপরিচ্ছদম্॥ ৪৪॥ ৰূপল।বণ্যযুক্তাভিৰ্য বতীভিরণক্ষ তম্। গৃহণ চান্তঃপুরণ সুক্র ক্রীডারভিবিরাজিত্য। তৎ সর্কাণ সমুদ্দিশ্য সহসা সমুপাগতঃ॥ ६৫॥ অক্সাঝাং প্রশৎসন্তি সদা গৃহগতাঃ ব্রিয়ং। স্বাসা দর্শনীয়ক নান্যোহস্তি ত্বাদৃশঃ পুমান্॥ ৪৬॥

॥ ৩৯॥ ৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪০॥ গংক্তং যদজিত ধনাদি তংসর্কং তে তুঁভাং প্রাপিতং দত্ত মিতি সম্বন্ধ: ॥ ৪৪॥ অতঃপরং বাং সনুদিশ্যাহং অতাগতোমি ॥ ৪৫॥ প্রশংসভি ব্যাহং কৃত ইতি হেতোরিচাভি প্রায়ঃ ॥ ৪৬॥

^{*} মৃত্যাং হুও: পরাম্যদিতাত হৃতপুত্র: পরাম্য দিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

া জাত্বলামান মিত্যালা প্রাক্ পতকঃ পাবকং দীপ্তং সিংহং ছুত্র পশুব্যোতি পাঠ: ক পুস্তকে।

ভীম উবাচ।

দিক্যা তাং দর্শনীযোষ্টা দিক্ষ্যাত্মানং প্রশাস্ত্র । ঈদৃশস্ত তাথা স্পর্না: পৃক্তপুর্বো ন-ক্রিচিৎ ॥ ৪৭ ॥ স্পর্নাং বেৎসি বিদগ্ধস্তৃং কামংর্ম বিচক্ষণঃ। স্ত্রীণাৎ প্রীতিকরো নান্যস্ত্রসমঃ পুরুষ্ঠিত্ব ॥ ৪৮ ॥ বিশাস্থারন উবাচ।

ইত্যুক্তা তং মহাব ছভীমো ভীমপরাক্রমঃ। সহসোৎপত্য কৌন্তেষঃ প্রহম্যেদমুবাচ হু ৷ ৪৯ ॥ ৷ অন্য ড্বাং ভগিনী পাপ্তক্ষ্মান্থ ম্যা ভুবি। দ্রক্ষাতেহদ্রিপ্রতীকাশ্র সিংহেনের মহারিপম্। ৫০॥ নিরাবাধা ত্রি হতে দৈরক্ষী বিচরিষ্যতি। স্থামেব চরিষ্যন্তি দৈরকারাঃ পত্যংসদা ॥ ৫১ ॥ ততো জগ্ৰাচ কেশেষু মাল্যবৎস্ক সহাবলঃ । স কেশেষু পরামূটো বলেন বলিনাম্বরঃ॥ ৫২ ॥ আক্ষিপ্য কেশান্ বেগেন বাহেব। গ্ৰাছ পা ওবম্। বাছযুদ্ধণ তথোৱাদীৎ ক্রুদ্ধধোর্মর/দশহযোগে ৫০ 🛊 वगरस वामिलारहरलाक्वलवामाङसादिव। কীচকানাম্ভ মুখ্যস্য নরাণামুক্তমস্য চ ॥৫৪॥ বালিস্থ জীবযোর্জালোঃ পুরেব কপিসিংহযো:। व्यत्तानामां जिन्दरको श्रवन्त्रवा वित्ता । देव ॥ * ততঃ স^প্রেক্ষ্য মুদিতৌ পৃঞ্চশীর্ষাবিবোরগৌ। নখদ প্রাভিরন্যোন্যং জন্ম হুঃ ক্রোধমূর্চ্চিতৌ ॥ ৫৬ ॥

। ৪৭ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ ৫২ ॥ ৫৬ ॥ বিক্রিডারেডেডা ইন্ডিনী নিমিত্তং ॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ ৫৬ ॥

^{*} ততঃ সংপ্রেক:মুদিতাবিত্যর ততঃ সনুদ,মঃ ভুজাবিতি পাঠঃ খ প্রস্তুকে।

বেগেনাভিছতে। ভীমঃ कीहरकन वलीयमा । স্থিরপ্রতিজঃ স রণে পুদার চলিতঃ পদম ॥ ৫: ॥ जावत्ताता नगाल्लिया अक्षरहो পর न्ना त्रा উভাবিপি প্রকাশেতে প্রবৃদ্ধৌ রুষভাবিব ॥ ৫৮ ॥ তযোরাদীৎ সুতুমুল: সম্প্রহার: সুদারুণ: i নখদপ্রায়ুধবতোক্রাছ্রযোরিব দুগুযো:। ৫৯ । অভিপত্যাথ বাছভাংে প্রত্যুদ্দমধিতः। মাতক ইব মাতকণ্ প্রভিন্করটামুখ্য ॥ ৬০ । স চাপ্যেনং তলা ভীমঃ প্রতিজ্ঞাহ বীর্যবান। তমাক্ষিপৎ কীচকোহথ বলেন বলিনায়র ।। ৬১॥ তযোতু জবিনিষ্পেশাত্বভাষার্বলিনোগুদা। শব্দঃ সমভবলেবারো বেণ্ডেফাটগনো মুরি॥ ৬২॥ অথৈনমাকিপা বলাকা, श्रमध्या ब्रकानदः। ধূন্যামাস বেগেন বাযুশ্চপ্ত ইব ক্রমম্ । ৬১ া म डोरमन পরाমৃख्या हुर्यता विना तत्। প্রাম্পন্দত যথা প্রাণং বিচকর্ষ চ পা গুবম । ৬৪ । क्षेत्रा शिल उरेक्षव (का याक्र लाभार क्रिका)। কীচকো বলবানু ভীমং জানুভ্যামাজিপন্তবি॥১৫॥ পাতিতো ভূবি ভীমস্ত কীচকেন বলীয়সা। উৎপপাতাথ বেগেন দুর্গাণিরিবাস্তকঃ॥ ৬৬॥ স্পৰ্জ্যা চ বলোমভৌ তাবুভৌ স্তপাপ্তবৌন निभौ एथ পर्याक र्षे छ। विलित्नो निष्क्रत ऋ लि॥ ७।॥

॥ ৫৭ ॥ ৫৮ ॥ ৫৯॥ করটামুখং গ্রস্থলস্থং মদনির্গম স্থানং করটো গজগতেদা দিতি মেদিনী ॥ ৬০॥ ৬১॥ ৬২॥॥ ৬৩॥ ৬৪॥ আকলিতং আক্রান্থ ফ্রতপদং চলিত স্থানং বর্ধাদ্যা তথাস্থিতং ॥ ৬৫॥ ৬৬॥ ৬৭॥

ততস্তত্ত্বনভোষ্ঠং প্রাকম্পত মুক্তর্ম ছ। বলবচ্চাপি দংকুদ্ধাবন্যোগ্যং প্রতিগর্জ্জতঃ। ৬৮॥ তলাভাং স তু ভীমেন বক্ষসাভিহতে। বলী। বীচকো রোষসন্তপ্তঃ পদান চলিতঃ পদম্। ৬৯ ॥ মুহ্বন্ত স তে বেগ্ন সহিত্বা ভূবি ছুঃসহম্। বলাদহীয়ত তদা সুতো ভীমবলাদিতঃ ৷ ৭০ ৷ ज्रहीयगानर विकास जीमतमतना महावलः। वक्कमानीय (वर्धन ममरेक्ननः विरह्णमम्॥ ५५॥ (कृषिविक्त) विनिश्वमा श्रूनरेकन श्रूरकामतः। জগ্রাহ জয়তাং শ্রেষ্ঠঃ কেশেম্বের তদ। ভূশম্॥ ৭২॥ গৃহীত্বা কীচকং ভামো বিররাজ মহাবলঃ। শাদিলঃ পিশিতাক।জ্জী সূচী ব্রব মহামুগম্॥৭৩॥ তত এনং পরিশান্তমুপ্লভা রুকেদিরঃ। যেতি যু: মান বাছভাাং পশুং রশন্যা যথা ॥ ৭৪ ॥ नम्बद्धः महानामः ভिन्न छितीममञ्जनम् । ভামিষামান স্চির্শ বিক্ষারস্থতেত্**নম্। ৭৫**॥ প্রাপৃহ্য তরসা দেছি। শ ক্তিং ত্যা রুকোদরং। অপাড্যত কুঞ্ব,তনা কোপোপশান্তযে। ৭৬।

। ৬৮ । ৬৯ । সহিত্ব সোচ্বাবলাদহীরত বলহীনোতৃং । ৭০ ।বক্ষসি আনীর আনতং ভূমং ক্রা ভন্নাভিনা তল্ভিরঃ সংযোজ্যেতার্থঃ ॥ ৭১॥ ॥ ৭২॥ গৃহীতা চেভি পাঠে ইবার্থে চ ॥ ৭৬॥ যোক্তারামাস বংদ্ধ রশনর। রম্বা ॥ ৭৪॥ ৭৫॥ দোর্ভ্যাং পাণিত্যাং ॥ ৭৬॥

তাগাভং ভগ্নস্বাঙ্গং ব্যাৰিন্ধনয়নান্তর্দ্। व्याक्रमा ह क्षिप्तरम ज्ञासूना कीहकाधमम्। অপীড়মত বাহ্চভ্যাং পশুসারমুমার্যং॥ १२॥ उर विधीप छ माछा य की हकर शालू नम्मनः। ভূতলে ভাষেয়ামান বাক্যকেদমুবাচ হ। ৭৮। व्यमग्रहमनुर्ग जुश खानुर्डायगथश्वित्य । শাস্তিং লক্ষামি প্রমাং হত্বা দৈর্ক্সিক্তক্ম্ ॥ ৭৯ ॥ ইত্যেব কুক্ত পুরুষঃ, প্রবীর স্তং কীচকং ক্রোধসরাগনেতঃ। অব্রস্তবন্ত্র ভরণ হৈ ক্রন্তমুদ্র ভিনেত্র ব্রস্তমুদ্রসর্জন ৮০। নিম্পেষ্য পাণিনা পাণিং সন্দক্ষীষ্ঠপুটংবলী। सभावनेत्र ह मःकुरका वरतन यतिनाम्बतः॥ ४०॥ তস্য পাণীচ পালেচ শিরে প্রাবাঞ্চ সর্বনশঃ। কায়েপ্রবেশয়ামাস পশোরিব পিনাক ধুকু ॥ ৮২ ॥ তং সন্মাথ সমকাঙ্গং মাং সপিত্তা পানং কুত্র। * কুঞায়া দর্শ্যমাস ভীমসেনে! মহাবলঃ ॥৮৩॥ উবাচ চ মহাতেজা দ্রৌ পদীং † পাণ্ডুনন্দনঃ। পটেশানমেহি পাঞ্চালি কামুকোহ্য[্]যথারুতঃ ॥ ৮४ ॥

ব্যাবিদ্ধে অতিপীডনাৎ অধঃ ক্ষিপ্তে নয়নে নয়ন গোলকৈ অম্বরং বস্ত্রঞ্চ যস্য নয়নাকাশোনা পশুমারং পশুং মার্রিছে বেলি যজ্ঞিয় পশুবদিত, বৃঃ

॥ ৭৭ ॥ ৭৮ ॥ সৈর্দ্ধি কটকং ক্রুম্বরং সমাস নিমিত্তং ॥ ৭৯ ॥ ৮০ ॥ ৮১ ॥

ভস্যপাদে চিতি কায়ে দেহ মধ্যভাগে তত্ত্তির্গম মার্গেণ বাসানাতঃ

প্রেবেশ্য যো অবৈ রেগার স্থানাতি নোমং নির্বত্তী মহাবা তং দধ্যতাতি

ক্ষতে মার্হ্টা নিধনি মেতদেব ক্ষেত্রং রেবান্ধনবান্ নিধনিং নিক্ষা

স্থাপনং ॥ ৮২ ॥ কৃঞ্যাঃ ক্রেপি দা ॥ ৮০ ॥ ৮৪ ॥

^{*} কৃষ্ণার। ইতাত কৃষ্ণাটে, ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে। † পাণ্ডুনন্দন ইতাত ধোৰিতাৎ বরাষ্থিতি পাঠঃ খ গুয়েতক।

এবনুক্তা মহারাজ ভীমো ভীমপরাক্রমঃ। পাদেন পীড্যামাস তদ্য কাষ্ত্র জুরাজ্মনঃ । ৮৫ । ডতোহগ্নিং তত্র প্রস্থাল্য দর্শযিত্বা চ কীচকম। পাঞ্চালীং স তদা বীর ইদে বচনমত্রবীং ॥ ৮৬॥ आर्थरित स्रक्रमीएउ (य जार भीनक्ष्राविजाम। এবং তে ভীকুবধান্তে কীচকঃ শেভেতে যথা॥ ৮৭॥ তৎ রুত্বা তুষ্করং কর্ম্ম রুষ্ণায়াঃ প্রিয়মুত্তমম্। তথা স কীচক । হয়া গ্রা রোষদ্য বৈ শ্মন্। ৮৮। व्यात्र उपितीः कृष्णः विश्वतायां ग्रहानम् । কীচকংঘাত য়িত্বাষ্ট্র দ্রৌপদী যে।্বিতাম্বরা। প্রহৃষ্টা গতদন্তাপা সভাপালগরুবাচ হ॥৮৯॥ কীচকোহয় হতঃ শেতে গন্ধ কৈঃ পতিভিন্ম। প্রস্ত্রীকামসম্মন্তঃ সমাগচ্চত পশাত ॥ ১০॥ তচ্ছ বা ভাষিতং তদা। নর্তনগোরর্কিণঃ। সহসৈব সমাজগা রাদায়োকা: সহস্রশ: ॥ ৯১॥ ততো গত্বাৰ্থ তদ্বেশ্ম কীচকং বিনিপাতিত। গতাস্ত্রং দদশুভূমৌ রুণিরেণ সমুক্ষিত । ১২॥ পাণিপাদবিহীনন্ত দুষ্টা চ ব্যথিতাভবন্। নিরীক্ষন্তি ততঃ সর্বে পর্গ বিশ্বযুষ্ণাগতাঃ॥ ৯৩॥

॥ ৮৫ ॥ ৮৬ ॥ স্থকেশাতে স্থা কৈটিলোন বিরাজমানাঃ কেশান্তা • যদাাঃ শোভত ইত্যুপহাদঃ এবমেব গ্লান্তর্ক্তীনার্ত্তিবাদীতি ভাবঃ ॥৮৭॥ রোষদ্য শমং অতং কল্সা জাতহাৎ ॥৮৮॥ ৮৯॥ ৯০॥ ৯১॥ ॥৯২॥ ৯০॥ অমান্ত্রষ^ ক্লত^ কর্ম্ম তেং দৃষ্ট্রা বিনিপাতিত্তন্। ক্লাস্য গ্রীবা ক চরণৌ ক্লুপাণী ক্ল শিরস্তদা। ইতি স্ম ৬ং পরীক্ষন্তে গল্পর্বেণ হতং তদা। ৯৪,॥ ইতি বিরাটপর্বনি কীচকবধে দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২২॥

তিশিল্য কালে সমাগ্রম সর্বেত ত্রাসা বান্ধবাঃ।
ক্রুত্বঃ কীচকং দৃষ্ট্য পরিবার্যা সমন্ততঃ॥ ১॥
সব্বে সং ক্ষাইরোমাণঃ সন্তত্তাঃ প্রেক্ষা কীচকন্
তথা সন্তিরসর্বাঞ্জন কুর্মাং স্লাইবোদ্ধ্য তর্না ২॥
পোথিতং ভীমসেনেন তমিন্দ্রেশেব দানবন্।
সং ক্ষার্যিভূমিছন্তো বহির্নেভূম প্রচক্রমাঃ॥ ৩॥
দদ্শুন্তে তদা ক্ষাং স্তপুর্বাঃ সমাগতাঃ।
তাদ্রাদনবদ্যাঙ্গীং স্তর্মালিঙ্গা তিষ্ঠতীন্॥ ৪॥
সমবেতেযু * স্তেষু তামুচুক্লপকীচকাঃ।
হন্যতাং শীঘ্রমণতী বংক্তে কীচকো হতঃ॥ ৫॥
অথ বা নেহ হস্তব্যা দহ্যতাং কামিনা পহ।
মৃতস্যাপি প্রিরম্কুন্তে কীচকোহ্সাঃ ক্ষেত্ব হতঃ।
সহানেনাদ্য দহ্যেম তদমুজ্ঞাতুমর্হিস॥ ৭॥

1 86 1

ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকঠীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ২২ ॥

131210181010191

🛎 হুতেষিতাত্র সংঝ দিতি পাচঃ গ্র প্রতে ।

পরাক্রমন্ত স্তানাং মন্ত্রা রাজান্ত্রমোদত।

সৈরক্রাঃ স্তপুজেণ সহ দাহং বিশালপতে॥ ৮॥
তাং সমাসাদ্য বিজ্ঞতাং কৃষ্ণাং কমল-লোচনার্য।
মোমুহামানাং তে তত্র জগৃহঃ কীচকা ভূশম্॥ ১॥
তত্তপ্ত তাং সমারোপ্য নিবধ্য চ স্থমধ্যমান।
জগারুদ্যম্য তে সর্বে শ্রাশানাভিমুখান্তদা॥ >०॥
ক্রিয়মাণা তু সা রাজন্ স্তপুজেরনিন্দিতা।
প্রাক্রোশরাথনিচ্ছন্তী কৃষ্ণানাথবতী সতী॥ >>॥
ক্রেশিলাবাচ।

জয়ো জয়তো বিজয়ো জয়ৎসেনো জয়ন্তলঃ । তি মে বাচং বিজানস্ত সূতপুত্রা নয়তি মান্ ॥ ১২ ॥ । বেষাং জ্যাতলানর্যোধো বিক্লুজ্জতমিবাশনেঃ । ব্যক্ষাত মহাযুদ্ধে ভীমঘোষস্তর্ফিনান্ । ১০ ॥ রথঘোষশ্চ বলবান্ গস্ত্রাকাণাং যশিবিনান্ । ১৪ ॥ বেশ্পায়ন উবাচ।

তন্যান্তাঃ ক্লপণা বাচঃ ক্ষ্ণাযাঃ পরিদেবিতাঃ। শ্রুত্বা চৈবাপতন্তীমঃ শ্যনাদ্বিচার্থন্য ১৫॥ ভীম উবাচ।

ষ্মহং শূণোমি তে বাচং স্ববা দৈরস্থি, ভাষিতাম্। তন্মান্তে স্তপুজেভ্যোন ভয়ং ভীক্ন বিদ্যাতে। ১৬॥ বৈশশ্যায়ন উবাচা

ইত্যুক্তবা স মহাবাহ্নবিজ্ঞ (এ'জিঘাংস্যা। ততঃ সব্যাযতং কৃত্বা বেশং বিপরিবর্ত্য চ ॥ ১৭ ॥ ° ॥৮॥৯॥১০॥১১॥১২॥১৩॥১৪॥১৫॥১৬॥ব্যায়তং ব্যাপারং যত্রং কৃত্বা বেশঞ্চ বিপরিবর্ত্য গন্ধর্ক বেশ সদৃশং কৃত্ব।॥১৭॥

অন্বাত্যবন্ধন্য নিৰ্দ্ধগাম বহিস্তদা। ন ভীমদেনঃ প্রাকারমারুহ্য ভর্মা # দ্রুত্যু ॥ ১৮॥ শ্মশানাভিমুখঃ প্রায়াৎ যত্র তে কীচকা গতাঃ। স লক্ষ্যিত্বা প্রাকারণ নিংস্তা চ পুরোত্তনাৎ। জবেন পতিতো ভীমঃ স্কানামগ্রতন্তদা॥ ১৯॥ চিতাসমীপে গল স তত্রাপশ্যদ্দনস্পতিমৃ। ত!লমাত্রং মহাকক্ষপমূর্ক,শুদ্ধং বিশাম্পতে॥ ২ । ॥ ত্র নাগ্রত্পক্রম্য বাছ্ড্যাং পরিরভাচ। ककार्यादवालयार्याम मनवार्यः शतस्त्रशः॥२)॥ স ত^ রুক্ষং দশব্যাম^ সক্ষর্বিটপং বলী দ প্রগুহ্যাল্যদ্রবৎ স্থৃতান্ দগুপানিরিবান্তকঃ ॥ ২২ ॥ উরুবেগেন তস্যাথ ন্যগ্রোধাশ্বর্থাকং শুকাঃ। ভূমৌ নিপতিতা রুক্ষাঃ সং**যুশস্তত শেরতে ॥ ২৩॥** ত । गिःश्मित म कुष्क पृष्टी। शक्तविभाग उम्। বিত্রেস্থঃ সর্ব্বশঃ স্থতা বিষাদভ্যকম্পিতাঃ ॥ ২৪॥ গন্ধৰ্বো † বলবানেতি কুদ্ধ উদাম্য পাদপণ্। সৈরস্থী মুচ্যতাং শীঘ্রং যতো নো ভ্যমাগ্রম্ ॥ ২৫ ॥

অভ্যব ক্ষন্য নিপতা ক্রমং আক্ষা ততশ্চ ক্রোপদী নয়ন প্রদেশৎ
দৃষ্টে,তার্থঃ ॥ ১৮॥ ১৯॥ মূর্ধ্নিজ্ফ মিতি শোষণোলা, খবেন অতিপ্রকৃত্বং
! স্চাতে॥ ২০॥ পরিরভা উপক্রমা উৎপাটনার্থং যত্নং ক্রা উৎপাটভঞ্চ ।
তংক্ষক্রে আরোপয়া মাস ব্যামং প্রুসারিত যোর্বান্থোরন্তরং॥ ২১॥ ২২॥
॥ ২৩॥ ২৪॥ ২৫॥

^{*} জতমিতাত জমমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ণ গন্ধকো বলবানেতীতাসা প্রাকৃ তমন্তক মিবায়ান্তং গন্ধকং প্রেক্ষ্য তেতদা দিধক্ষন্ত শুদাজ্যেষ্ঠং ভাতরং ত্রাপকীচকাঃ প্রস্পারমধোচুন্তে বিবাদ ভয়কম্পিতাঃ ইত্যেকশ্লোকঃ ক পুশুক্ত ।

তে তু দৃষ্টা তদাবিদ্ধ ভীমসেনেন পাদপন্।
বিমৃচ্য দৌপদীং তত্ৰ প্ৰাদ্ৰনগৰং প্ৰতি ॥২৬॥
দ্ৰতন্তাংস্ত সংপ্ৰেক্ষ্য স বজু দানবানিব।
শত্ৰ পঞ্চাধিকং ভীমঃ প্ৰাহিণোক্ষমসাদনন্॥২৭॥
বক্ষেণ তেন রাজেন্দ্ৰ প্ৰভঞ্জনস্থতো বলী।
তত্ত আশ্বাস্থাং ক্ষা প্ৰবিমৃচ্য বিশাম্পতে ॥২৮॥
উবাচ চ মহাবাছঃ পাঞ্চালীং * পান্তুনন্দনঃ।
ভক্তপূৰ্ণমুখী দীনাং ছৰ্দ্ধাইং স বকোদরঃ॥২৯॥
এবং তে ভীক্ষ বধান্তে যে ত্বাং ক্লিশ্যন্ত্যানাগ্ৰম্ব।
প্ৰহি ত্বা নগৰং ক্লেম্বে ন ত্বাং ক্লিশ্যন্তানাগ্ৰম্ব।
প্ৰহি ত্বা নগৰং ক্লেম্বে ন ত্বাং বিদ্যাতে তব ॥ ৩০॥
তান্যনাহ্বাক্ষিয়ামি বিরাটন্য মহানস্থ ॥ ৩১॥
বিশ্লোধন উবাচ।

পঞ্চাধিকং শতং তত্ত্ব নিহতং তেন ভারত।
মহাবনমিব চ্ছিন্নং শিশ্যে বিগলিতদ্রুমন্॥ ৩২ ॥
এবং তে নিহতা রাজন্ শতং পঞ্চ চ কীচকাঃ।
স চ সেনাপতিঃ পূর্বামত্যেতং স্কুত্বট্শতন্॥ ৩০ ॥
তদ্দ্ কী মহদাশ্চর্যাং নরা নার্যাশ্চ সংগতাঃ।
বিস্মান্থ প্রমং গত্ত্বা নোচুঃ কিঞ্চন ভারত ॥ ৩৪ ॥
ইতি বিরাটপর্বানি কীচকব্য পর্বানি
ত্রেরাবিংশতিত্বমাহধ্যায়ঃ॥ ২৩ ॥

॥২৬॥২৭॥ প্রবিষ্ট্য মোচরিত্বা আ ২৮॥২৯॥ ৩০॥ অন্যেন মার্নের্ণ ॥৩১॥ শিব্যে শরিতং॥৩২॥ ষট্শতং রুডধিকং শতং॥৩৩॥ ৩৪॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে । তুয়োবিংশোহধ্যারঃ শা ২৩॥

^{*} পাণ্ডুনন্দন ইত্যত্ৰ তত্ৰফোপদী মিতি পাঠঃ ধ পুস্তকে

देवनन्यायन डेवाह। তে দৃষ্টা নিহতান সূতান রাজ্ঞে গত্বা ন্যবেদ্যন্ 🖟 গন্ধবৈনিহত। রাজন্ স্তপুত্রা মহাবলাঃ॥ ১॥ যথা বজ্ঞেণ বৈ দীর্ণ- পর্বব্রত্য্য মহচ্ছির:। বিনিকীর্ণা: প্রদুশ্যন্তে তথা স্থতা মহীতলে॥ ২॥ সৈরক্ষী চ বিমুক্তাদৌ পুনরাযাতি তে গৃহ্_য়। ধিবং সংশ্বিত∿ রাজন্ নগরং তে ভবিষাতি ॥ ৩ ॥ যথা ৰূপা হি দৈর্ক্ষী গন্ধবাশ্চ মহাবলাः। পুংসামিষ্ট विषया रेमथुनाय न जः नयः ॥ ८॥ যথা দৈরস্থীদোষেণ ন তে রাজিরদং পুরুর। বিনাশমেতি বৈ ক্ষিপ্র**্তথা**নীতির্বিধিয়তা ন্॥ ৫॥ তেষাপ তথ্বনং শ্রুষা বিরাটো বাহিনীপতিঃ। অব্রবীৎ ক্রিযতামেষাং স্থতানা । চরমক্রিয়া ॥ ৬ ॥ এক স্মিনেব তে সর্বের স্কুস্মিদ্ধে ছতাশনে। महासार की हकाः भीखर ब्रेट्यर्गरेशम्ब गर्वनः॥ १॥ स्रु (स्वाका क्षेत्रका क्षेत्रका कार्या कार् দৈরস্থামাগতা অবা মথৈব বচনাদিদ্য । ৮। গচ্ছ দৈরক্ষি ভদ্রং তে যথাকামং বরাননে। বিভেতি রাজা স্থশ্রোণি গন্ধর্বেভ্যঃ পরাভবাৎ ॥ ৯ । ন ভাষুৎসহতে বক্তা প্ৰয়ং গন্ধৰ্ববক্ষিতা । ব্ৰেষাস্থানে কিয়াং বক্তমতস্থাং প্ৰব্ৰতী মাহ্য ॥ ১০ বৈশাস্থায়ন উবাচ।

অথ মুক্তা ভবাৎ কৃষ্ণা স্থতপুত্রানির দাঁচ।

মোক্ষিতা ভীমদেনৈন জগাম নগর প্রতি॥ ১১॥

ত্রাদিতের মৃগী বালা শার্দ্দুলেন মনস্বিনী।
গারাণি বাদনী চৈব প্রকাল্য সলিলেন সা॥ ২২॥
তাং দৃষ্ট্যা পুরুষা রাজন্ প্রাদ্রবন্ধ দিশো দৃশ।
গন্ধরিণাং ভবত্রস্তাঃ কেচিন্দু ক্টা নামীল্যন্॥ ১৩॥
তত্রো মহানসন্ধারি ভীমদেনমবস্থিত্য।
দদর্শ রাজন্ পাঞ্চালী যথা মন্তঃ মহান্বিপন্॥ ১৪॥
তং বিস্মবন্ধী শনকৈঃ সপজ্ঞাভিরিদ্যব্রবীৎ।
গন্ধর্ম রাজায় নমো যেনান্মি পরিশ্লিক্ষতা॥ ১৫॥

যে পুরা বিচরন্তী, হ পুরুষা বশবর্তিনঃ। ত্যান্তে বচনং গ্রুৱা অনুণা বিহরন্ত্যতঃ॥ ১৬॥

ন হিহা মিতি হিহাং হাতুং যোগাণং ক্তাতে তবৈকেন্কে নাইন ইতি হন্ জহাতে শেততি হিহং অংকায়া মিপি জ্বান্দেই পিলোভি ক্ষেত্তাদি বং হাং সৈরস্কুীং হিহাং তাক্তৃং যোগামিপি অহং রাজা গাছেতি বক্তৃং নাংসহে জিয়াসু স্নেকায়া শুব তাং পুতি এত্বকুং অদোধ ইতি রাজুং বাকান্ত্বাদঃ যন্মাদেবং রাজা মাং আজ্বাপিতবান্ তন্মাদেত, দেবং হাং প্রতি প্রবীমাহ মিতি স্নেক্ষা বচনং ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১০॥ ১৯॥ ১৫॥ প্রকা যদাঃ বশবন্তিন আজ্বাকারিণঃ ইহ বিরাট প্রে পুরা বর্ষমাত্তং বহরতি তে তদাঃ বচনং গার্কা রাজায়, নম ইতাদি ক্রপণ অ্যাহতঃ পরং অনুনান্তদাজা সম্পাদনেন অজ্বাত্বাদ সমাপ্তা বা কৃত কৃত্যঃ সন্তো বিহরত্ব ॥ ১৬॥

ভীম উবাচ।

रिनम्भाष्ट्रम छेल्ह।

ততঃ না নর্ত্রাগারে ধনপ্রথমপশ্যত।
রাজ্ঞঃ কন্যা বিরাটন্য ন্ত্রানং মহাজুজন্॥ ২৭॥
তত্তা নর্ত্রাগারাদ্বিদ্ধি ম্য সহার্জ্নাঃ।
কন্যা দদৃশুরাযান্তীং রুঞ্ং ক্লিফান্যাগস্থ । ১৮॥
কন্যা উচ্ঃ।

দিন্ট্যা সৈরন্ধি মুক্তাসি দিন্ট্যাসি পুনরাগতা। দিন্ট্যা বিনিহ্তাঃ স্কৃতা যে রাশ ক্লিশ্যন্ত্যনাগসন্॥ ১৯॥
রহন্দোশ্চ।

কথং সৈরক্ষি মুক্তাসি কথং পাপাশ্চ তে হতাঃ। ইচ্ছান্দি বৈ তব শ্রোতুং সর্বায়েতদ্বথাতথন্॥ ২০॥

रमदक्षादाङ।

রুছ্নলে কিন্তু তব সৈরজান কার্য্যনা বৈ।

যা দং বসসি কল্যানি সদা কন্যাপুরে স্থাব ॥ ২১॥
ন ছি তুঃখমবাপ্রোষি সৈরজাী যতুপাশুতে।
তেন মাণ তুঃকিতামেবং পুচ্চুদে প্রহ্যান্নব॥ ২২॥
ন্বহন্নাব্যা

রহন্নলাপি কল্যানি ছুংখমাপ্লোতানুত্তমন্।
তিহাঁনেব্যানিগতা বালে ন চৈনামবর্ধ্যমে ॥ ২০ ॥
ত্বা সহোবিতা চান্মি ত্বঞ্চ সহৈন্ধিং সহোবিতা।
ক্লিশান্ত্যাপ ত্বি স্বজ্ঞানি কোহত ছুংখপ ন চিন্তমেৎ ॥ ২৪ ॥
ন তুঁকিনচিদত্যত্তপ ক্সাচিদ্দ্ৰহ ক্চিং।
বৈদিতুং শক্যতে ভড়ে যেন মাণ নাবসুধ্যমে ॥ ২৫ ॥

। ২৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ 'প্রছম র বেতি পূর্বাৎ সংস্কারাৎ পৃংলিদ প্রয়োগঃ প্রছমন্ত্রী বেতার্থঃ ১২২॥ তীর্যাক্নীঃং ব্লীবহং তম্মরা যোনিঃ

শ্রীরং তত্ত্বতা ॥২৩ ॥ ২৪ ॥২৫ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। .
ততঃ সকৈব কন্যাভিডোঁ পিদী রাজবেশ্ম তং।
প্রবিবেশ সুদেঞ্যায়ঃ সমীপমুপগান্নী ॥ ২৬॥
তামব্রীদ্রাজপত্নী বিরাটবচনাদিদম্।
দৈরন্ধ্যি গম্যতাং শীঘ্র মত্র কাম্যসে গতিম্ ॥ ২৭॥
রাজা বিভেতি ভদ্রতে গন্ধর্মেভ্যঃ পরাভ্বাং।
ত্বাংশি তরুনী সুক্র কপেনাপ্রতিমা ভূবি।
পুংসামিউশ্চ বিষ্যো গন্ধ্যিশ্চাতিকোপনাঃ ॥ ২৮॥

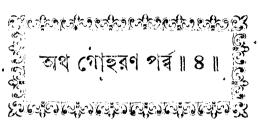
रिमद्रक्षु त्वाह।

ত্ররোদশাহমাত্রং মে রাজা ক্ষামাতু ভামিনি। কুতকুত্যা ভবিষাতি গল্পকাস্তে ন সংশয়ং॥ ২৯॥ ততো মামুপনেষ্যান্তি করিষ্যান্তি চ তে প্রিয়ান্। ধ্রুষঞ্চ শ্রেষ্যা রাজা•যোক্ষ্যতে সহ বাল্পবৈঃ॥ ৩০॥

ইতি বিরাটপর্কানি কীচকবধপর্কানি কীচকদাহে চতুর্বিংশতি
তমেহিধ্যায়ঃ॥২৪॥

সমাপ্তঞ্চ কীচকবধপর্ব।

॥২৬॥২৭॥ তে ত্বং সম্বন্ধিভাঃ গন্ধকেভাঃ॥২৮॥২৯॥৩०॥ ইতি বিরাট পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে• চতুর্বিংশোহধায়েঃ ॥২৪॥



বৈশস্পায়ন উবাচ গ

কীচনসা তু ঘাতেন সামুজস্য বিশাস্পতে।
আত্যাহিতং চিন্তবিদ্ধা ব্যুম্বন্ত পূথগ্জনাঃ॥১॥
তামিন্ পূরে জনপদে সং জলপোহ ভূচ্চ সর্বালঃ।
শোগ্যাদি বল্লভো রাজ্যে মুহাসজুশ্চ কীচকঃ॥২॥
শালাকীং প্রহন্তা চ নৃগাং দারাম্যা চ ছুর্মাভিঃ।
না হতঃ খলু পাপালা গলাকৈছি কিপুরুষঃ॥৩॥
ইত্যুজপোলারাজ পরানীকলিনাশনন।
দেশে দেশে মনুষাঃ আ কীচকং ছুপ্পুর্বিণ্॥৪॥
আ্থা বৈ ধার্তরাপ্তেশ প্রমুক্তা যে বহিশ্চরাঃ।
মুগ্যিরা বহুন্ গ্রামান্ রাষ্ট্রাণি নগরাণি চ॥৫॥
সংবিধায় যথাদিকং যথাদেশপ্রদর্শনন্।
কুতকুত্যা নাবর্তন্ত শিচ্বা নাগপুরং প্রতি॥৬॥
ভক্র দৃষ্ট্যা তু রাজানং কৌরবং প্রতরাষ্ট্রজন্য।
দ্যোণকর্ণক্রপৈঃ সার্দ্ধান্তীয়েণ চ মহাজুনা॥৭॥

অত্যাহিতং মহাতীতিঃ কমাজীকানপুঞ্চি চেতামরঃ ॥১॥২॥৩॥৪॥ ॥৫॥কৃত কৃত্যাঃ কীচক বধজানোত্ত্রিব পাওবান্ং বাসং ব্যাসন ধিতিরাফ্রীঃ অহুমানতো জ্ঞানতীত্যাশয়ঃ ॥৬॥৭॥

🕆 চরানাগ প্রায় প্র ভীত্যত্র তেচরা নগরং প্রভীতি পাচঃ খ প্রস্তাক।

^{*} जानी ६ थ इन्छ। ६ नृशी प्रजात जामी ६ थ इन्छ। टेमना ना पि जि शोहः ४ शृष्टकः।

সঙ্গতং ভ্রাতৃভিশ্চ পি ত্রিগর্ভিশ্চ মহারথৈঃ।
ছুর্য্যোধন শভামধ্যে আসীন্মিদ্মক্বন্ ॥ ৮ ॥
চরা উচঃ।

ক্লতোহক্ষাভিঃ পরো যতু স্তেষামন্বর্ধণে সদা। পাণ্ডবানাং মনুষ্যেক্ত তিমামহতি কাননে॥৯॥ নির্দ্ধনে মুগসঙ্কীর্ণে নানাদ্রুমলতারতে। লতাপ্রতানবন্ধলে নানাগুলাসমারতে॥ ১০॥ • ন চ বিদ্যোগতা যেন পার্থাঃ স্কুদুচবিক্রমাঃ। মার্সমাণাঃ পদন্যাস্ তেষু তেষু তথা তথা ॥ >> ॥ গিরিকুটেষু * ছুর্রেষু নানা জনপদেষু চ। জনাকীর্ণেষু দেশেষু † কটকেষু পরেষু চ ॥ ১২ । নরেক্র বহুশোহরিষ্টা নৈব বিল্লন্ড পাওবান্। অত্যন্তভারং নফীত্তে ভদ্রং ভুভান নর্বভ। ১৩॥ रज्ञात्यवामाना देव विवाध त्रथ्म खम ॥ ন হি বিছো গতিং তেষা বাসং হি নরসভ্তম। ১৪। ক্ঞিৎ কলে মনুষোক্র স্তান্মনুগা বয়ন। মুগরিস্বা মথান্যায় প্রিদিতার্থাঃ স্ম তন্ত ভঃ ॥ ১৫॥ প্রাপ্তা দ্বারবতীং স্থতা বিনা পার্টের্য: পরন্তপ। ‡ নতত্র পাণ্ডবা রাজন্ ক্লফা বাপি পতিব্রতা ॥ ১৬ ॥

॰॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১० ॥ যেন মার্গেণ ॥ ১১ ॥ গৈরিকটের গিরিশিখরেয় ॥ ১২ ॥ • ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ স্তানাং পাঞ্বীয়ানা শিক্রসেনাদীনাং ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥

প্রেয় ইতাত তুদের ইতি পাচঃ থ পুস্তকে।

† কটকের্পরের্চ ইতাত থকটের প্রের্চ ইতি পাচঃ থ প্রস্তকে।

‡ নতত্ত পাওবা রাজন্ কৃষ্ণাবাপি পাতিরতৈ তাত্ত নতত্ত কৃষ্ণা রাজেন্দ্র পাওবাশ্চ মহারতাঃ ইতি পাচঃ থ পুস্তকে। সর্বাধা বিপ্রনান্টান্তে নমন্তে ভরতর্বভ ।
নহি বিজ্ঞা গতিং তেবাং বাসং বাপি মহাত্মনাম্। ১৭।
পাপ্তবানাং প্রবিত্তিপ বিজ্ঞা কর্মাপি বা ক্রতম্।
স নঃ শাধি মনুবোক্ত ভাত উর্দ্ধং বিশাম্পতে। ১৮॥
অবেষণে পাপ্তবানাং ভূয়ঃ কিং করবামহে।
ইমাঞ্চ নপ্রিয়ান বীর বাচন ভদ্রবতীন স্থান ৷ ১৯॥
বেন ত্রিগর্তা নিহতা বলেন মহতা নূপ।
স্থতেন রাজ্যে মংসাস্য কীচকেন ও পুনংপুনং॥২০॥
স হতঃ পতিতঃ শৈতে গন্ধাকৈবিনিশ ভারত।
অদৃশানানোত্রতীত্মা সহজ্ঞাত্তিরচ্যুত বি বি ১॥
প্রিয়ানেত্রপুল্লত্য শত্নাঞ্চ পারাভবন্।
কৃতক্ত্যান্চ কৌরব্য বিধৎস্থ শদনন্তরম্॥২২॥
ইতি বিরাটপ্রবিণি গোহরণপ্রাণি চারপ্রত্যাগমনে।
পঞ্চবিন্দাতিতমোহধ্যায়ঃ ॥২৫॥

বৈশস্থায়ন উবাচ। ততো তুর্যোধনো রাজা শ্রুত্বা তেবাং বচস্তদা। চিরমন্তর্মনা ভূত্বা প্রাকৃত্বাচ সভাসদঃ॥১॥

॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥
ইতি বিরুটে পর্ব্ধনি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে
পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২৫॥

11 2 11

^{*} পুনঃ পুনঃ ইত্যত্ত বলীযদা ইতিপাঠঃ খ পুস্তকে।
ক অচ্যুতে তাত্ৰ সোদারৈ বিভি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্তু:খা খলু কার্যাণাং গতির্বিজ্ঞাতুমন্ততঃ (তত্মাৎ সর্বেনিরীক্ষং ক মু তে পাওবা গতাঃ। ২ ॥ অপ্পাৰশিষ্টং কালস্য গতং ভূষিষ্ঠমন্ততঃ। তেষাসজ্ঞতিচর্য্যাণামন্মিন্ বর্ষে ক্রয়েদেশে ॥ ৩॥ 🐡 অস্য বর্ষস্য শেষপ্রেদ্বাতীযুরিহ পাওবাং। নির্ভ্রসম্যান্তে হি স্তাত্রতপরায়ণাঃ॥ ৪॥ করন্ত ইব নাগেন্দ্রাঃ দর্বের আশীবিষোপমাঃ। তুঃখা ভবেষুঃ সংরক্ষাঃ কৌরবান প্রতি তে ধ্রুবন্ । ৫॥ * অৰ্মাকৃ কলেস্য বিজ্ঞাতাঃ কুক্ষৰপধরাস্থি 🙌 । প্রবিশেযুর্জ্জিতকোধাস্তাবদেব পুনর্ব্বনম্। ৬। তন্মাৎ ক্ষিপ্রং বুভূষধং † প্রতিকর্ত্তব্যমস্যয়ৎ। রাজা । নির্দি মব্যগ্রং নিস্দপত্র স্থিরং ভবেং ॥ १॥ অথাত্রবীপ্ততঃ কর্ণ: ক্লিপ্রং গছন্ত ভারত। অন্যে ধূর্ত্তানরা দক্ষা নিভূতাঃ সাধুকারিণঃ ॥ ৮॥ চরন্ত দেশান্ সমীতাঃ স্ফীতান্ জনপদাকুলান্ (তত্র গোষ্ঠীযু রম্যাস্থ সিদ্ধপ্রব্রজিতেযু চ ॥ ৯॥

॥ २॥ ०॥ ৪॥ ছঃখরিতারঃ সংরদ্ধাঃ কুপিতাঃ ॥ ৫ ॥ বথাতে পুন-র্বনং প্রবিশেষুস্তথা বুভূবদ্ধং তান্ প্রাপ্তঃ ইক্ততেতার্থঃ তংফলঞাহ অত্যন্ত মিতা। দিনা ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ জনপদ। কুলান্ জন বাপ্তান্ ভবেজ্জন । পদে। জানপদোপি জনদেশয়ে বিভি মেদিনী গোতীর বিদং সভাস্থ সিদ্ধানাং প্রবিজ্ঞ গমনং যেযুভেছু মুনীনামাশ্রমেয়ু ॥ ১ ॥

^{*} অর্থাক্ কালদ্য বিজ্ঞাতা ইত্যত্র সর্প্রেকালদ্যবেক্তার ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] প্রতি কর্ত্তব্য মদ্য যদিতাত্র মথাতে ২তান্ত মব্যর মিতি পাঠিঃ ধ্র প্রস্তকে।

পরিচারেষু তীর্থেষু,বিবিধেম্বাকরেষু চ। বিজ্ঞাতব্যা মনুধ্যৈতৈ তেক্যা সুবিনীত্যা॥ ১০ । বিবিধৈন্তং পরিঃ সমাক্ তজ্জৈরিপুন সংর্তৈঃ। অন্বেফব্যাঃ স্থুনিপুণেঃ পাগুবাশ্ছন্নবাসিনঃ॥ ১১॥ नमीकु छिषु जी दर्श था रमयु नगद्रषु ह ! আশ্রমেষু চ রম্যেষু পর্বতেষু গুহাস্থ চ।। ১২।। র্তথাগ্রজানন্তরজঃ পাপভাব। নুরাগবান্। জ্যেষ্ঠং ছুঃশাননন্তক ভাতা ভাতরমত্রবীং ॥ ১০ ॥ বেষু নঃ প্রত্যবেষী রাজন্ চারেষু মনু জাবিপ ৷ তে যান্ত দত্তদেয়া বৈ ভূষস্তান্ পরিমার্গিভূম্॥ ১৪॥ এতচ্চ কর্ণো যথ প্রাহ্ব সর্বমীক্ষামহে বয় । যথোদ্দিষ্ট > চরাঃ সর্বের মুগরস্ক ততন্ততঃ ॥ ১৫॥ এতে চান্যে চ ভূষা েসে। দেশাদেশং যুথাবিধি। ন তু তেষাৎ গতিকাসঃ প্রবৃত্তিশ্চোপলভাতে ॥ ১৬॥ শৃতান্তে পারং বোর্মিমতো গতাঃ। বাল্যৈকাপি মহারণ্যে ভক্ষিতাঃ শূরমানিনঃ 1 ১৭॥

পরিত আগতা চরন্তোরু তে পরিধারঃ রাজপ্রাণি তেয়ু তর্কয়া কাজ্ফরা ় তর্কঃ কাজ্ফা বিতর্কোছে ইতি মেদিনী॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ অগ্রজানন্তরজঃ ছিতীয়ো জাতা॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ উর্মিষতঃ দিদ্ধোঃ॥ ১৭॥

^{*} অত্যাহিতং বা **গ**ূঢ়ান্তে ইত্যত্র অত্যতং বা নিগূচান্তে ইতি পাঠঃ খ পুত্তকে।

অথবা বিষয়ং প্রাপ্য বিনষ্টাঃ শাশ্বতীঃ স্মাঃ।
তথ্যানান্দ্রব্যপ্রং কুত্বা ত্বশ কুরুনন্দ্র,।
কুরু কার্য্যশ মহোৎ সাহ্শ মন্যদে মন্ত্রাধিপ ॥ ১৮ ॥ .
ইতি বিরাটপর্বিণি গোহরণপর্বাণি কণ্ডুঃশাসন্বাক্যে

বড় বিশ্বতিত্যোহ্ধ্যায়ঃ ॥ ২৬ ॥

বৈশ্লাবন উল্লে।

অথাত্রবীঅহাবীর্য্যে জেণিস্তত্ত্বার্থিনির্মিন্
ন তাদৃশাবিনশান্তি নাপি বাত্তি পরাভবদ ॥ ।
শ্রাশ্চ ক্রতবিদ্যাশ্চ বুদ্ধিমন্তো জিতেভিন্নাঃ।
ধর্মজ্ঞাশ্চ ক্রতজ্ঞাশ্চ ধর্মারজ্ঞানু ব্রতাঃ। ২
নীতিধর্মার্থিতজ্ঞাশ্চ ধর্মারজ্ঞানু ব্রতাঃ। ২
নীতিধর্মার্থিতজ্ঞাশ্চ পিতৃষ্চ সমাহিতাঃ।
ধর্ম্যে স্থিতং সত্যপ্রতিশ জ্যেষ্ঠং ক্রেষ্ঠালুযাবিনাঃ। ও॥
অনুব্রতা মহাআনং ভাতর্শ ভাতরো নূপ।
অলাতশ্রুং ধামতশ সর্বভাত্নক্রতস্ব ॥ ও॥
তেবাশ তথাবিধেয়ানাশ নিভ্তানাং মহাআনাম্।
কিমর্থং নীতিমান্ পার্থঃ শ্রেয়ো নৈষ্যাশ করিষ্যতি॥ ৫॥
তথাক্রেরাং প্রতীক্ষত্তে কাল্যোদ্য্যাগ্রম্য ॥ ৬॥
ন হি তে নাশমুচ্ছের্মিতি পশ্যাম্যহং ধ্র্যা॥ ৬॥

11 72 11

ইতি বিয়াট পৰ্বাণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভাৱত ভাবদীপে বড়ুবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ২ ৬॥

। ১॥ ২॥ ৩॥ ৪ বিধেয়ানাং কিল্পানাং নিভ্তানাং অত্যন্তা বহিতানাং ॥ ৫॥ ৩॥

সাম্প্রতিঞ্চর যথ কার্যাং ভচ্চ ক্ষিপ্রমকালিকর।
ক্রিয়তাং সাধু সঞ্চিন্তা,বাসকৈষাং প্রচিন্তাতাম্॥ ৭॥
যথাবং পাণ্ডুপুল্রাণাশ স্কার্থের প্রতাত্মনাম্।
ছুজ্জে যাং খলু শ্রান্তে স্বপাপান্তপসার্তাং ॥ ৮॥
বুদ্মিনান্ গুণবান্ পার্থং সভ্যবান্নীতিমান্ গুচি।
তেজোরাশিরসংখ্যেযো গৃহ্দীযাদিপি চক্ষা ॥ ৯॥
বিজ্ঞায় জিয়ভাশ তত্মাদ্রেশ্য মৃগ্যামতে।
ভাক্ষেণিশ্যারণৈ শ্রিক্রেয়ানের ভান্ধিদো জনাং ॥ ১০॥
ইতি বির্টিপর্কাণি গোহরণপ্রকাণি ফোণবাক্যে
সপ্রবিশ্শতিভ্যোহধ্যায়ং॥ ২৭॥

বৈশল্পানন উবাচ।
ততঃ সাস্তনবো ভীলো ভারতানাং পিতামহঃ।
ফ্রুতবান্ দেশকালজ্জস্তত্ত্বজ্ঞাসর্বধর্মাবিং ॥ ২॥
আচার্যাবাক্যোপরমে তদ্বাক্যমভিসন্দ্ধং।
হিতার্থি স উবাচেমাণ ভারতীং ভারতান্ প্রতি । ২॥

অকালিকং বিলম্বাসহং ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ গৃত্নীয়াদপি চ ক্ষা প্রত্যক্ষ দৃষ্টোপি মোহয়ে দেবেতার্থঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

ইতি বিরাট পর্বাণ নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে ' সপ্তবিংশোহধ্যায়ঃ॥২৭॥

॥ ১। অভিসংদধৎ তদাক্যাত্ গুণমেব বদন্ ভারতীং ভরত বংশীয়
পাশুব বিষয়ালিবং বাচং ভারতান্ কৌরবান্ উবাচেতি সম্বন্ধঃ ॥ ২ ॥

^{*} চারূণৈ বিভাত্ত চারকৈ বিভিপাঠঃ থ গুন্তকে।

যুধিষ্ঠিরে সমাসক্তাং ধর্মজ্ঞে ধর্মসং বুতান্।। অসৎস্থ ছল ভাং নিত্যুৎ সতাঞ্চাভিমত্যুৎ সদা ॥ ৩॥ ভীম: সমবদত্তত গির্প সাধুভির্চিচ্তাম। যথৈষ ত্রাহ্মাঃ প্রাহ দ্রোগ: সর্বার্থতজ্ববিং ॥ ৪ ॥ मर्तलकाशम्लीकाः माध्यक्रमम्बिकाः । শ্রুত্রতোপপন্নাশ্চ নানাশ্রুতিসমন্ত্রিতাঃ। ৫॥ রন্ধানুশাসনে † লগ্নঃ সভ্যব্রভপরায়ণাঃ ৷ मगयः मगयकारः भानगरः एकित्रहाः ॥ ७॥ ফত্রধর্মপরা নিত্যং কেশবানুগতাঃ সদা। ^{*} ध्यवीतश्रुक्षाट्य देव महाज्ञादना,महावलाः। नावमीनिज्य≨स्तिः উष्दृष्टः भठाः धूत्रम्॥ १ ॥ ধর্মতে শৈহব গুপ্তাজে স্ববীর্যোণ্ড পাওবা:। ন-নাশমধিগচ্ছেযুৱিতি মে ধীয়তে মতিং॥ ৮॥ তত্র বৃদ্ধি । প্রাণ্টের পাণ্ডবানু প্রতি ভারত। ন তু নাতিঃ স্থনীত ন্য শকাতেহমেষিতুং পরৈঃ॥ ১॥ যতু সকামিহামাভিস্তান্ বৈ সঞ্চিন্তা পাওবান্। বুদ্ধা প্রযুক্ত ন দ্রোহাৎ প্রবক্ষ্যানি নিবেধে তথ। ১০ ।

॥ ৩॥ সমং বদৎ সমং পক্ষপতি শুনাং বদৎ বদন সমভাবজার: ॥ ৪॥
ভাচ ৬ং শাস্ত্রং নানাজাতিরনেকা আখ্যারিকা ॥ ৫॥ ৬॥ মহাস্থান উদার
চিত্তাঃ সাহ বুরং ধর্মং ॥ ৭॥ ৮॥ পরে: আনী,ত পরে: শ্রেঘেবিসুদী
আস্পান্তং ॥ ৯॥ যতু প্রযুক্তং প্রোগঃ শক্যং জ্ঞানুং ধ্যানা তাদব
বন্ধামি নতু ভবতাং দ্যোহাং ॥ ১০॥

* সক্ষণকাণ শম্পানাঃ ইতাদ্য প্ৰাকৃত্যাকা মতিনকামি ন্মেপ্ত ত বিচরি ।

় ক্ষাইত হজাইতি পাঠ ধ পুস্তকে। বু প্রনেষ্ট্রন্তাত্ত প্রক্রেমীতি পাঠঃ ধ পুস্তকে। ন বিষণ মাদৃশৈর্নাতিক্তন্য বাচ্যা কথকন।
সা বিষণ সাধু বক্তব্যা ন ব্রনীতিঃ কদাচন॥ ১১॥
বৃদ্ধান্ত্রনাত তিওঁতা সত্যশীলিনা।
অবশ্যং হিহধীরেশ সতাশমধ্যে বিবক্তরা। ১২॥
যথার্থমিহ বক্তব্যশ সর্বাথা ধর্মালিক্ষয়।
তত্র, নাহং তথা মন্যে যথার্যমিতরো জনং। ১৩।
নিবাসং ধর্মাজদ্য বর্ম হাস্মিংক্রযোদশে।
তত্র তাত ন তেষাশ হি রাজ্ঞাং ভাষামসাক্ষেত্রম্ ॥ ১৪॥
পুরে জনপদে বাপি যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরঃ।
দানশীলো বদানাশ্য নিভ্তো ত্রীনিষেবকঃ।
জনো জনপদে ভাব্যো যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরঃ॥ ১৫॥
প্রিয়াদী সদাদান্ত্রো ভব্যঃ সত্য পরো জনঃ।
হুষ্টঃ পুষ্টঃ শুচিদক্ষো যত্র রাজা যুষিষ্ঠিরং॥ ১৬॥
নাস্থাকো ন চাপীষুর্নাভিমান ন মৎসরী।
ভবিষ্যতি জনস্তর স্বশ স্থং ধর্মামনুব্রতঃ॥ ১৭॥

নাম্বিত তদ্য ছৰ্জনদা বাদৃশদ্যেতি গ্ৰাড়ি দক্ষিঃ দাছু ছু শন্দেহির্থে দাহিবতঃ নীতি রিঃং দাধুনাচ্যাদাধুষের বক্তব্যাহতোহদাধৌ মন্ধিনি হৈধাবক্ত ব্যেতার্থঃ অতীতিস্ত কথকন দাধুষ দাধুর বা ন বক্ত ব্যেতার্থঃ

১১ ॥ তিষ্ঠতা বক্তব্য মিতি সম্বন্ধঃ ॥ ১২ ॥ তক্ত বক্তব্যে দক্তি যথা ইত রৈজনঃ পাণ্ডবানাং নিবাসং লোক দাধারণং মন্যতে তথাহং ন মন্যে ইতি যোজনা ॥ ১৩ ॥ অসাধারণা মেবাহ ত্রেতি তত্র প্রাদেশ অসাম্প্রতং ঘ্রুলার্থং ॥ ১৪ ॥ বদানাঃ প্রিরবাদী বদানোঃ দানশীলেচ চাক্ত বাদিনী হাচাব দিতি মেদিনী নিভ্তঃ নিয়তেন্দ্রিয়ঃ ভাবাঃ অবশাস্তারী ঔ কাবশাসক ইতি বং ॥ ১৫ ॥ ভবোগ ভবিতা॥ ১৬ ॥ অভ্যকঃ পরশুরে দোষারোপকঃ ইতি বং পরের কর্ম্বং সাহিল্পঃ অভিমানী আক্সাংভাবিতঃ মংসরী পরজোহ কর্তা তত্ত্ব মন্ত্রী সুধিক্তির ইতান্ত ক্ষাতে ॥ ১৭ ॥

अकारपायां क ज्यारिकः भूगी छ जा खरेब व ह ! क डवण्ड ভविषाञ्चि ভূষাংসো ভূরিদক্ষিণাঃ । ১৮ । সদা চ তত্ৰ পাৰ্জ ন্যঃ সম্যুথ্যী নদংশ্যঃ। সম্পন্নস্যা চ মহী নিরাভক্ষা ভবিষাতি॥ ১৯॥ * कलविंख ह धांना।नि तमविद्य कलानि ह। গস্ববন্তি চ মাল্যানি শুভশন্ধ। চ ভারতী ॥ ২০। বাযুশ্চ সুখসংস্পর্শো নিম্প্রতীপঞ্চ দর্শনম্। ভষং নাভ্যাবিশেক্তত যত রাজা যুধিষ্ঠিরঃ 🛭 ২১ 🛭 গবিশ্চ বছলাক্তত্র ন কুশা নচ চুর্বলাং। প্যাংসি দ্ধিসূপীংষি রস্বস্তি ছিতানি চা ২২ য গুণবস্থি চ পেয়ানি ভোজ্যানি রসবন্তি চ। তত্র দেশে ভবিষান্তি যত্র রাজা যুধিষ্ঠির: ॥ ২৩॥ तमाः स्थान शकाम्ह भकामानि खनाबिकाः। দৃশ্যানি চ প্রসন্নানি যত্র রাজা যুধিষ্ঠির: ॥ ২৬ ॥ ধর্মাশ্চ তত্র সর্কৈস্ক সেবিভাশ্চ বিজ্ঞাতিভিঃ। देश्वरिक्षं रेनम्क मर्युक्ता अस्मिन् वर्ष ब्रायानस्य ॥ २१ ॥ দেশে তিমান ভবিষান্তি তাত পাণ্ডবস-যুতে। সংগ্রীতিমান জনস্তত সম্ভুষ্টঃ শুচিরব্যথঃ॥ ২৬॥ দেবতাতিথি পূজাসু সর্বভাবারুরাগবান্। ইউদানো মহোৎসাহঃ শশুদ্রপরাষণঃ ॥ ২৭ ॥

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ দর্শনং ধর্ম ব্রহ্ম স্বরূপা বেক্ষনং নিজ্পু তীপং পাষ্ণ মার্গ বর্জিতং ॥ ২১ ॥ ২০ ॥ দৃশ্যনি রূপাণি ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ সর্বে ভাবেন স্বাজনাহত্রাগবান্ ॥ १৭ ॥

^{*} ফলবদীতাত্র গুণবন্তী তি পাঠ: এ পুস্তকে।

ভবিষাতি জনস্তত্ত্ব যত্ত্ব হাজা যুধিষ্ঠির:॥২৮॥
ভাক্তবাকান্তস্তাত শুভকল্যাণমঙ্গল:।
শুভার্থেপ্য শুভমতির্যত্ত রাজা যুধিষ্ঠির:॥২৯॥
ভবিষাতি জনস্তত্ত্ব নিতাঞ্চেইপ্রিয়ত্ত্বতঃ।
ধর্মাত্মা শক্ততে জ্ঞাতুং নাপি তাত দ্বিজাতিভিঃ॥ ৩০॥
কিং পুনং প্রাকৃতৈস্তাত পার্থো বিজ্ঞায়তে ক্রচিং।
ধর্মান্নতাং প্রতিদান্দ পরা শান্তিপ্রবা ক্রমা॥ ৩১॥
জৌঃ শ্রীঃ কীর্ত্তিঃ গরং তেজ আনুশংস্যমথার্জবম।
তম্মান্তত্ব নিবাসন্ত ছরং যজেন ধীনতঃ।
গতিঞ্চণারমাং তত্ত্ব নোৎসহে ধক্তমন্যথা॥ ৩২॥
এবমেত্ত্ব্সঞ্চিন্ত্য যথ ক্তে মন্যুদে হিতম্।
তথ ক্রিপ্র ক্রের যুদ্দোবং শুদ্দধ্সি মে॥ ৩৩॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপ্রবাণি চারপ্রত্যাচারে
ভীম্বাক্য অন্টাবিংশতিত্বমাহধ্যায়ঃ॥ ২৮॥

শশুভাৎ অশুভং তাক্তা ॥২৮॥ ইন্টং যাগাদি প্রিরং পরস্থদঞ্চ ব্রতং পাদনীয়ং যাগা এব স্কৃত্যা স্ত্রের্ছ মপ্যাই ধর্মাজ্বেতি ॥ ৩০॥ ৩১॥ তথ্য দিতি ধীমতঃ পাশুবদ্য বাদং চ্ছরং তত্ত্ব বিদ্ধীতি শেষং পরমাং গতিং গামনঞ্চ তত্ত্বে স্বকীয়ং কুরু এতচ্চাহং অন্যথা বিপরীতং বচোবক্তৃং নোৎসহে বৃদ্ধাৎ পাশুবেষু দেষস্য ধর্ম এপড়াচ্চেতি ভাবঃ ॥ ৩২॥ ৩৩॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবনীপে

व्यक्तिरिंग्निश्वायः ॥ २৮॥

^{*} নিত্যেতাত্ত্ৰ ইফেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

रेगम्लाशन छेगाहा ততঃ শারন্বতো বাক্যমিত্যুবাচ ক্লপস্তদা। যুক্তং প্রাপ্তঞ্চ রুদ্ধেন পাগুবান্ প্রতিভাষিত্য ॥ ১ । . ধর্মার্থসহিতং শ্লুক্ষং তত্ত্বত্ত সংহত্তক্ষ্। ভত্ৰানুৰপংভীয়ে। মমাপ্যত্ৰ গিরং শৃণু ॥২॥ তেষ। ক্ষৈব গভিন্তীর্থৈন্দাসকৈষাং প্রচিন্ত্যভাম। নীতিৰ্বিধীয় ভাঞাপি সাম্প্ৰতং যা হিতা ভবেৎ॥ ৩॥ নাবজ্ঞেয়ে রিপুস্তাত প্রাক্তাহপি বুভূষতা। কিং পুনঃ পাগুৰাস্তাত সকাজকুশলা রণে। ৪॥ তন্মাৎ সত্ৰং প্ৰবিষ্টেষু পা গুবেষু, মহাত্মস্থ। পুতভাবেষু ছল্লেষু কালে চোদধ্যগতে ॥ ৫ ॥ শ্বরাষ্ট্রে পররাষ্ট্রে চ জ্ঞাতব্যং বলমাতানঃ। উन्यः পाञ्जूलानाः आश्वनातन नै मः नयः ॥ ७ ॥ নির্ভসময়ঃ পার্থাঃ মহাত্মানো মহাবলাঃ। মহোৎসাহা ভবিষ্যন্তি পাওবা হ্যমিতৌজসঃ॥ १॥ তত্মাদ্বলঞ্চ কোষশ্চ নীতিশ্চাপি বিধীয়তাম। यथां कांत्नामरव প्रारक्ष ममाकृ है छः मन्मधां मरह ॥ ৮ ॥

যুক্তং যুক্তিমৎ প্রাপ্তং প্রাপ্তকালং ॥১॥ তত্ত্তম্চ সহ্তেকং যুক্তা।
ভাসহীনং ॥২॥ তীর্থা: চারঃ॥৩॥৪॥সত্তং কৈত্তবং বেশান্তর রূপং
স্ক্রেরু গুপ্তেরু উদয়ং উলামনং প্রতিজ্ঞাতেকালে উৎক্রান্তেইরু মিত্তরাষ্ট্রের চার্কিরা কালেশ্যাবশিকে সতীত্যর্থ: ॥৫॥ পররাক্টেরু মিত্তরাষ্ট্রের চার্কারকাং সৈনাং সামর্থাঞ্চ যক্তর্জাতবাং ॥৬॥१॥ নীতি উক্তবৈত্তন দান চার প্রক্রাদিকা তথা বিধায়তাং হথা যেন প্রকারেশ তৈঃ সহ সংদ্যামহে সরাদি সন্ধানং কুর্মহে যন্ত্রা বল কোশয়োরম্পত্তং স্বাস্থা পরসার্বিত্তং নীতির্বথা প্রতিজ্ঞাং সামরূপা বিধায়তাং হথা তৈঃ সহ সংদ্যামহ স্থাহ কুর্মহে ইতি কালেদ্যে হুত্যুদ্য রূপে যুদ্ধে প্রতিপ্ত সতি তেথাং বিধায়ত ইতি পাঠে তেথাং কাল্ডঃ উদয়ে প্রাপ্তে সতি যথা সম্যান্ত্রির জারতে তথা নীতি বিধীয়তাং ॥৮॥

তাত বুধ্যামি তৎ মুর্বং বুধ্যস্থ বলমান্ত্রনঃ।
নিয়তং সর্বমিতেমু বলবংশ্ব বলেমু চ ॥ ৯ ॥
উচ্চাবচং বলং জ্ঞান্ত্রা মধ্যস্থপাপি ভারত।
প্রাক্তিম প্রাক্তিপ সন্দ্র্যামস্তথা পরেঃ ॥ ১ > ॥
সামা ভেদেন দণ্ডেন দানেন বলিকর্মা।
ন্যায়েনাক্রম্য চ পরান্ বলাচ্চান্ত্রম্য ছর্বলোন্ ॥ ১ > ॥
দাস্ত্র্যিন্ত্রা তু'মিক্রানি বলক্ষাভাষাতাং স্থাম্।
সক্রেয়াক্রমানি বলক্ষাভাষাতাং স্থাম্।
সক্রেয়াক্রমানি বলিভির্রিভিঃ প্রত্যুপস্থিতঃ।
তাংগুদ্দ চাপি বলিভির্রিভিঃ প্রত্যুপস্থিতঃ।
তাংগুদ্দ চাপি বলিভির্রিভিঃ প্রত্যুপস্থিতঃ।
তাংগুদ্দ পাপ্তবৈর্দ্ধাপি হীনেঃশ্ব বলবাহনৈঃ॥ ১০ ॥
এবং লর্বং বিনিশ্চিত্য ব্যবসামান স্বর্ধ্মতঃ।
যথাকালং মনুষ্যাক্র চিরং স্থামবাপ্যাসি॥ ১৪ ॥
ইতি বিরাট পর্কনি গোহরণ পর্কনি চারপ্রত্যাচারে
কুপবাক্যে একোন্তিংশোহ্ধ্যায়ঃ॥ ২৯ ॥

নিয়ত মচঞ্চলং নিয়মেন বুদ্ধান্ত ॥ ১॥ ব্যেশকল মাহ উচ্চেতি উচ্চাদি ভেদেন ত্রিবিধমপি প্রছন্তং বা জাতব্যং উচ্চং দমং বা অবলং অপ্রহন্ত গ্রুং প্রছন্তবলৈঃ শক্রভিঃ সহ সং দধাম সন্ধিং করণম বিপর তিঞ্চেপি সংদধাম শরানিতি শেবঃ সন্ধনীয় মিতি পাঠেপি ওদেবার্থ দ্বাং জ্রেং আতোধাওো রিভা লোপঃ অনীর প্রভাৱে পরে ভবতি সন্ধানীয় মিতিতু যুক্তঃ পাঠঃ ॥ ১০॥ সামো সামভেদৌ অপরসা ধিক্যে দানং অস্যা ধিক্যে দ্তঃ যুদ্ধে নিপাতনং বা বলি কর্ম বা করাদানাখ্যং ইতি বল জ্ঞান কলং ॥ ১১॥ বলং অসৈনাং স্থাং যথাসাত্রখা আভাষাতাং প্রীতি বাদেন ভক্ত বেতন মানদা নেন দংমন্ত্রণীয় মিতার্থঃ সিদ্ধিং জয়ং॥ ১২॥ অন্যোগ ক্রতিংপাণ্ডবৈশ্বাপি সহ বোৎসাদে, কীনৃশোঃ অবলাদিনা ছ'নেঃ॥ ১০॥ ব্যবসায়ং অকর্ত্ব্যং॥ ১৪॥ ইতি বিরাট পর্মনি নৈ নক্ষিয়ে ভারত ভাবদীপে প্রকান ত্রিংশাছধারঃ॥ ২১॥

বৈশস্পায়ন উবাচ। অথ রাজা ত্রিগর্তানাৎ সুশর্মা রথম্থপ:। প্রাপ্তকালমিদ বাক্যমুবাচ ছরিতো ব্লী॥ > ॥ অসক্ষরিকৃতঃ পূর্বাং মৎস্তাশাল্বেষকৈঃ প্রভো স্থতেন চৈব মৎস্থা কীচকেন পুনঃ পুন॥ २॥ বাধিতো বন্ধুভি: সার্দ্ধং বলাগ্বলবতাং বিভৌ। স কর্ণমভাদীক্ষ্যাথ চুর্য্যোধনমভাষ্ত ॥ ৩॥ অসক্লন্থভারজ্ঞা মে রাষ্ট্রং বাধিতমোজনা। প্রণেতা কীচকশ্চান্ত বলবানভবৎ পুরা॥ 8॥ ক্রুরোহমর্ষী স্বত্নফাত্মা ভূবি বিখ্যাত বিক্রমঃ। নিহতঃ স তু গন্ধবিং পাপকর্মা'নুশংসবান্॥ ৫॥ তিমাপন্ত নিহতে রাজা হীনদর্পো নিরাভাষঃ। ভবিষ্যতি নিরুৎদাহে। বিরাট ইতি সৈ মতিঃ ॥ ৬ ॥ তত্র যাত্রা মম মতা যদি তে রোচতেইনঘ! কৌরবণোঞ্চ সর্ক্ষেষ্ণ কর্ণস্থ চ মহাত্মনঃ ॥ ৭ ॥ এতৎ প্রাপ্তমহং মন্যে কার্যামাত্যযিকং হি নং। রাষ্ট্র তথ্যাভিষাখ্যামো বছধানা সমাকুলমু ॥ ৮ ॥ আদদামোহস্থা রভানি বিবিধানি বস্থানি চ। প্রামানাষ্ট্রাণি বা তম্ভ হরিষ্যামো বিভাগশং ॥ ৯॥ ণ অথ বা গে। সহস্রাণি শুভানি চ বহুনি চ। বিবিধানি হরিষামেঃ প্রতিপী্ডা পুর্ব বলাও । ১০ ।

॥ ১ ॥ বাক্যমুবাচেতাত হেজুমাহ অসক্দিতি নিক্তাঃ বঞ্চিতাব্রিগর্তাঃ ইতি শেষঃ প্রভা হেজনটমজয়ঃ ॥ ২ ॥ বাধিতঃ স্থান্ধা বলবতাং কের-যানাথ বিভে স্থামিনী ভীষে স্থীপে সতি কর্ম্বাঞ্চিনীক্ষা ভ্রোধনং অভাষত ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৩ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১ ॥

কৌরবৈঃ সহ # সক্ষমা ত্রিগত্তিশ্চ বিশাম্পতে। গাস্তভাপ্রহরামোহদা সহ মর্কৈ: সুসঙ্গভাঃ 🕇 ॥ ১১ ॥ া সন্ধিশ বা তেন ক্লমা তু নি প্লীমেহিন্স পৌরুষ্য। इञ्चा वाख्य हमूर क्रथ्यार वर्गामवानयामरह ॥ १२ ॥ खः वर्षा नागिकः क्रवा स्थः वरुषा मरह वर्गा। ভবতাং বলরুদ্ধিশচ ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ১৩ ॥ ভচ্ছত্বা বচনং ভষ্ট কর্ণো রাজ,নমন্ত্রবীৎ। স্থকং সুশর্মণা বাক্যং প্রাপ্তকালং হিতঞ্জ নঃ॥ :৪॥ তশা ে কি প্র- বিনির্বামে যোজযিতা বর্ষধিনীয়। विভक्त हार्यानीकानि यथा या मनारमध्यम ॥ ১৫॥ প্রজ্ঞাবান্ কুরুরুদ্ধে ২ যং সর্কেষা শনঃ পিতা ম 🕫 । আচাৰ্যাশ্চ যথা জোণঃ কুপঃ শারমভন্তথা। মন্যন্তে তে ষ্থা সর্কে তথা যাত্রা বিধীয়তাম্॥ ১৬॥ সম্মন্ত্র্য চাশু গচ্ছামঃ সাধনার্থং মহীপতেঃ!। কিঞ্চ নঃ পান্তবৈঃ কার্য্য হীনার্থবলপৌরুধৈঃ ॥ ১৭ ॥ অ । যুহ বা প্রনষ্টান্তে প্রাপ্তা বাপি যমক্ষয় । यात्मा ताजनसूषिया विवाह विषयः अवयम्। আদাফামো হি গান্তকা বিবিধানি ধনানি চা ১৮৮

॥ ১১ ॥ নিশ্রামঃ নিগ্রীমঃ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ বিনিধামঃ নিগক্ষামঃ ॥ ২৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

^{, *} সপ্ত্যোতাত্ত্ত স্মৃত্তি পাঠঃ থ পুস্তকে।

† স্মঙ্গতা ইতাত্ত স্মৃত্তি পাঠঃ থ পুস্তকে।

‡ সন্ধিং নাতেন কুতাতু ইতাত্ত সংবিভাগেন কুগাতু ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

* বিষয় মিতাত্ত নগার মিতে পাঠঃ থ পুস্তকে।

বৈশপ্যায়ন উবাচ।

ততো দুর্য্যোধনো রাজা বাক্যমাদায তক্ত তথ।
বৈকর্ত্রনন্ত কর্ণক ক্ষিপ্রমাজ্ঞাপনথ স্বুন্। ১৯॥
শাসনে নিত্যসন্যুক্তং দুংশাসনমনন্তরন্।
সহ ইক্ষেচ সংমন্ত্র্য ক্ষিপ্রং ঘোজয় বাহিনীম্॥ ২০॥
যথোদেশপ গচ্চামং সহিতান্তর কৌরবৈং।
স্থার্মা তু যথোদিকং দেশং হাতু মহারথং।
ত্রিগর্তেঃ সহিতো রাজা সমগ্রবলবাহনঃ॥ ২১॥
প্রোণের হি স্কুমংবীতো মৎক্তক্ত বিষয়ং প্রতি।
ক্ষেন্যতো বয়ং তত্র যাক্তামো দির্মান্তরে।
বিষয়ং মৎক্তরাজক্ত স্কুম্মৃত্ত স্কুমংহতাঃ॥ ২২॥
তে যান্ত সহিতা ক্তর বিরাট নগর্ব প্রতি।
ক্রিপ্রং গোপাল মানাদ্য গুক্তর বিপুলং বনন্॥ ২৩॥
গবাং শতসহস্রাণি প্রীনতি গুণবন্তি চ।
ব্যম্পানুগৃহ্ণীমো ছিবা রুত্রা ব্রথিনীম॥ ২৪॥

देशमणपुराम डेवाइ।

তে স্ম গত্বা যথোদিকীং দিশং বহের্সাহীপতে।
সন্ধার্থিনঃ সর্কের সপদাতা বল্নোৎ কটাঃ ॥ ২৫॥
• প্রতিবৈরং চিকীর্যন্তোগোযু গৃদ্ধামহাবলাঃ।
আদদে গাঃ সুশ্রমা তুরুজগুক্ত সপ্তমীয়॥ ২৬॥

॥ २৯॥ ২০॥ যথেতিদশং যথা নির্দ্ধিতাং দক্ষিণাগুররাং বা দিশং হথ।
যোগ্যং বন বিভাগিং বা উদ্দিশোতার্থঃ॥ ২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ গৃজ্ঞে
লুক্কাঃ॥ ২ ৬॥

অপর্ণ দিবসা সর্ব্ধে রাজন্ সম্ভ্য কৌরবাঃ । অফান্যাপ তে ন্যগৃহৃত্ব গোকুলানি সহস্রশঃ ॥ ২৭॥ ইন্তি বিরাটপর্বিণি গোহরণপ্রবৃণি দক্ষিণ গোগ্রহে সুশর্মাদিয়ানে ত্রিংশন্তমোহ্ধাায়ঃ॥ ৩০॥

रेनमञ्जारम छेदाह।

তহস্থে মহারাজ তত্রৈবামিততেজসাম্।
ছল্লিক্স প্রবিষ্টানাং পাগুবানাং মহাল্পনাম্॥ ১॥
ব্যতাতঃ সময়ং সমাক্ বসতাং বৈ পুরোজমে।
কুর্কাতাং তমা কর্মানি বিরুটিদামহাপতেঃ॥ ২॥
কীচকে তু হতে রাজা বিরাটঃ পরবীরহা।
পরাৎ মন্তাবনাঞ্চকে কুন্তা, পুলে যুগিন্তিরে॥ ৩॥
ততপ্রযোদশসাত্তে তম্য বর্ষমাভারত।
স্থার্থনা স্থাতত্তে দোধনং তর্মা বহু॥ ৪॥
ততো জবেন মহতা গোপঃ পুরম্থাব্রজং।
অপশানাং সারাজান ১৯ সিংহাসনগতং প্রভুম্॥ ৫॥

না গুরুত্ত কলিয়ামান্তঃ। ২৭ ।

ইতি বিরুটি প্রবিণি নৈলুকগীয়ে ভারত ভাবদীপে তিংশোধ্যয়ঃ॥ ৩০॥

চ্ছেদ্মলিদেন ব্রাক্ষণাদি কপটি বেশেন প্রবিফ্যাণাং ॥ ১॥ ব্যতীতোহতি ক্রান্তঃ সময়ঃ সম্বংসরঃ ॥ ২ ॥ সম্ভার্তনাং কীচকবং অয়ম্পি মুম জয়কর্তা ভবিষাতীতোরং রূপাঃ ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

^{*} সিহাসনগতঃ প্রভূমিতার রধাৎ প্রক্ষন্যকুওলীতি পাটঃ খ পুস্তকে।

শ্রৈঃ পরিবৃতং যোধিঃ কুগুলাঞ্চদধারিভিঃ।

সদ্ধিক মন্ত্রিভিঃ সার্দ্ধং পাপ্তবৈশ্ব নর্বর্ধভাঃ॥ ৬॥
ত শভারা শহারাজমাসীনং রাষ্ট্রবর্দ্ধনন্।

সোহত্রবিত্বপদ শ্রমা বিরাটং প্রণতস্তনা॥ ৭॥
তানা মুধি বিনিজ্জিতা পরিভূষ স্বাক্ষবানা।
গ্রাশ শতসহস্রাণি ত্রিগর্ভাঃ কাল্মন্তি তে॥ ৮॥
তান্ পরীপ্সম্ব রাজেন্দ্র মা নেশুঃ পশবস্তব।
তচ্ছু বা নুপতিঃ সেনাং মৎস্যানাশ সমর্যোজ্মং॥ ৯॥
রথনাগাশ্বকলিলাং পত্তিধ্বসমাকুলাম্।
রাজানো রাজপুত্রাশ্ব তনুত্রাপ্রথ ভেজিরে॥ ১০॥
ভানুমন্তি বিচিত্রাণি শূর্মেব্যানি ভাগশঃ।
স্বজ্ঞানগর্ভন্ত করচঃ তপ্তকাঞ্চন্ত্র্যং।
বিরাট্যা প্রিয়ো ভ্রাতা শতানীকোহভাহার্যং।
স্ব্রিপারশবং বর্দ্ম কল্যাণপটল্য দৃত্র্॥ ১২॥

॥ ৬॥ १॥ ৮॥ মা নেশ্র নাশং অদর্শনং দূরে ইত্ থাবং মাগচ্ছেরঃ ॥ ৯॥ তলুত্রানি কবচানি ॥ ১০॥ ভালুমন্তি দীপামানানি বজারদং অশনিলোহং বছা বজ্রবদচ্ছেদা মভেদাঞ্চযশ্মিন্তাযায়ংপোলাদহতি সংজ্ঞিতং তদজারদং উলয়ো গর্ভেত্তি কবচং তেন সহিতং সবজ্ঞারদ গর্ভং পাচান্তরে সংনাহার দজ্জী ভাবারদগর্ভংদকণ্টকং গর্ভেজ্বনেই উকে কুন্দো সন্ধোপন সক্টকেইতি নানার্থঃ বজ্ঞং সাদ্ধীরকে প্রাবৃত্তি ॥ ১১॥ অভাহাররং ববন্ধ পারদবং পরান্ হ্লোতি পীডরতি হ্বতি ক্ষিপতিবা পরদবং খদোরপ্রথিতি জিতঃ পারদবং শস্ত্রং মর্বর্জি পারদ্ধং সর্কাশস্ত্র সহমিতার্থঃ কল্যান পটলং হ্বর্ণ প্রাঞ্চাদিতং কল্যান মক্ষ্যে বর্ণে ইতি বিশ্বঃ॥ ১২॥

শতানীকাদবরজো মদিরাকোইভাহারয় । শতসূৰ্য্যৎ শতাবৰ্ত্তং শতবিন্দ্যশতাক্ষিমৎ॥ ১৩॥ অভেদ্যক পেং মংস্যানাং রাজা ক্রচমাছর্থ। উৎসেধে যদ্য পদ্মানি শত্ত সৌগন্ধিকানি চ॥ ১৪॥ স্থবর্ণপৃষ্ঠং স্থ্যাবিং স্থ্যাদজোহভাহারষং । দৃঢমায়সগৰ্ভন্ত খেত ৭ বৰ্ষা শতাক্ষিমৎ ॥ ১৫॥ বিরাটদ্য স্থানে। জ্যোষ্ঠো বীরঃ শঙ্খোহভাহারয়ং। শতশশ্চ তন্ত্রাণি যথাস্বতে মহারথাঃ॥ ১৬॥ বোৎসামানা অনহাত দেবৰূপাঃ প্রহারিণঃ। সূপক্ষের শুভেরু মহৎস্কু চ মহারথাঃ॥ ১৭॥ शृथक् काञ्चनमञ्जाहान् (यष्ट्रश्वीन् (याक्रयन्। स्याहरू अठीकारम तरथ मिर्ट्या वित्रग्रहा ॥ २৮॥ মহানুভাবো মৎসাস্য ধ্বজ উচ্ছিপ্ৰিয়ে তদা। অথান্যান্ বিবিধাকারান্ ধজান্ হেমপরিষ্কৃতান্॥ ১৯॥ যথাস্ত্র ক্রিয়াঃ শূরা রথেমু সময়োজ্যন্। তথ মৎস্যোহব্ৰথীদ্ৰাজা শতানীকৎ জঘন্যজম্॥ ২০॥ कऋरलवरभाषाना मामछाङ्गि वीर्यावान्। যুধ্যেযুরিতি মে বুদির্বর্ততে নাত্র সংশযঃ॥ ২১॥

আবর্ততে পুনঃপুন মুন্মতি বিলস্তীতি নোগাৎ চন্দ্রঃ পদাং বা বিল্য়ঃ
কুল্চক্রং অক্ষিনেত্রাকারং চক্রং॥ ১৩॥
উৎসেধে উদ্ধানে সংপূর্ণে বিস্তারে কল্লার জাতীয়ানি শতংপদানি পদ্মানিবিক্টানি এবং বিশালমিতার্থঃ ॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥ অভ্যানদান্তেতি পাঠে
'সন্ধিরার্থঃ। স্পন্ধরের শোভন রথাদের ॥ ১৭॥ ১৮॥ উদ্ভিজ্ঞিরে
উদ্ভিত্তভূৎ ॥ ১৯॥ ২০॥ গোলালস্ততিপালাঝাঃ দামগ্রন্থিপালঃ॥
॥ ২১॥

এতেঘাসগি দীয়ন্তাং রখা মজপতাকিনঃ। ক্ৰচানি বিচিত্ৰাণি মৃদুনি চ দুঢ়ানি চ ॥ ২২ । প্রতিমুঞ্জ গাতেষু দায়তামাযুধানি চ। বীরাঙ্গরপাঃ পুরুষাঃ নাগরাজকর্বেপিনাঃ । ২৩॥ নেমে জাতু ন ফুধ্যেযুরিতি মে ধীয়তে মৃতি:। এতচ্ছ ত্বা তু নুপতের্বাব🏞 ত্বরিতমানসঃ। শতানীকস্ত পার্থেভ্যো রথানজেন্ সমাদিশং । ২৪॥ সহদেবার ভীমার রাজ্তেহ্থ । কুলার চ। তে প্রস্কান্ততঃ স্থতা রাজভক্তিপুরস্কৃতাঃ ∤২ঃ॥ निर्क्तिका नत्राप्तर्यन तथान् भीष्ययरयाजयन ! সন্তর্মন বিচিত্রাণি দুঢ়ানি চ মুদুনি চ ॥ ২৩॥ বির টঃ প্রাদিশদ্যানি তেবামক্লিফকর্ম্যান্। তান্যামূচ্য শরীরেষু দংশিতাত্তে প্ররন্তপাঃ॥ ২৭॥ রথানু হথৈঃ সুসম্পান্নীনাস্থায় চ নরোন্তমাঃ। নির্যুন্ধ দিতাঃ পার্থাঃ শত্র সংঘাবমন্দিনঃ॥ ২৮॥ তর্ম্বিনশ্চন্নৰপাঃ সর্বে যুদ্ধবিশাবদাঃ। র্থান্ হেমপরিচ্চলানাস্থায় চ মহার্থাঃ ॥ ২৯॥ বিরা**টমন্বযুঃ** পার্থাঃ সহিতাঃ কুরুপুঙ্গবাধন চত্বারো ভাতরঃ শূরাঃ পাপ্তবাঃ সত্যবিক্রমাঃ॥ ৩ ॥ ভীমাশ্চ মন্ত্রমাতঙ্গাঃ প্রভিন্ন করটামুখাঃ। करु हेर की मृठाः अपन्छाः विश्वायनाः ॥ ७১॥ •

॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ৯৮ ২৯ ॥ ৩০ ॥ প্রতির করটামুখাঃ. ।
কাকেভগতো করটো ইতামরঃ ॥ ৩১ ॥

^{*} ক্ষরস্তাইবজীমূতা ইত্যত্ত ক্ষরস্তাকে। নাগেল্লা ইতি পাঠ থা পুস্তকে।

স্থানতা সুন্ধকুশলৈঃ শিক্ষিতেইন্তিসাদিভিঃ।
রাজানমন্ত্যুঃ পশ্চাং চলন্ত ইব পর্বকাঃ ॥৩২॥
বিশারদানাৎ মুখ্যানাৎ হুকীনাঞ্চানুয়াযিনান্।
অকৌ রথসহস্রাণি দশানাগশতানি চ॥ ৩৩॥
যক্তিশাস্থাসহস্রাণি মৎস্যানামভিনির্যু।
তদনীকং বিরাট্যা শুশুভে ভরত্তি॥ ৩৪॥
দেংপ্রিয়ান্ত তদা রাজনিরীক্ষন্তং গ্রাং পদন্॥
তদলাগ্রাৎ তদা রাজনিরীক্ষন্তং গ্রাং পদন্॥
তদলাগ্রাৎ বিরাট্যা সংপ্রস্থিতমশোভত।
দৃতাযুধজনাকীর্দ্ধ গ্রাশ্বরথসস্কুলন্॥ ৩৫॥
ইতি বিরাটপর্বণি গোহরণপ্রাণি দক্ষিণগোগ্রহে বিরাট্যা
বলোদ্যোগে একজিংশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩১॥

বৈশণ্যান উবাচ।
নির্যায় নগরাচ্চুরা বুটোনীকাঃ প্রহারিবাঃ।
বিগার্ডানস্প্ হশান্ত স্যাঃ স্থায়ে পরিবাতে সতি॥ ১॥
তে বিগার্ডাশ্চ মহস্যাশ্চ সংরক্ষা যুদ্ধচুর্মানাঃ।
অন্যোহন্যমভিগর্জ্জন্তো গোষু গুদ্ধা মহাবলাঃ॥ ২॥
॥ ৩২॥ ৩৩॥ ৩৪॥ নিরীক্ষতং নিরীক্ষমানং প্রংলিদমার্বং॥ ৩৫॥
ইতি বিরাট পর্কান নৈলক্তীরে ভারত ভাবদীপে
একবিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩১॥

় নিষ্টায় নির্মতা অস্পৃশন্ প্রাপ্তবতঃ পরিণতে পঞ্ধাবিভক্ত স্যাত্র-ক্তুর্থভাগং প্রাপ্তে ॥১॥২॥

^{*} হঠানাঞ্যায়িন। মিত্যত্ত হঠানাঞ্চাক্জীবিনামিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

ভীমাশ্চ মন্তমাতঙ্গাতোমরাঙ্কাশচোদিরা^{১%}। আমণীয়েঃ সমাৰতাঃ কুশলৈইন্তিস দিভিঃ॥ ৩ । তেষাপ সমাগমো ঘোরস্তমুলো লোমহর্ষণঃ। प्रठाः शहस्त्रादः क्रांकन यमवाके विवर्षानः॥ ४॥ দেবাস্তরসমো রাজনাগীং স্থানাইবলম্ভ। পদাতিরথনাগেল হ্যারে হিলেমবান । ৫ ॥ অন্যেহন্যভাগেততাং নিম্বায়িতরেতরম্। উদ্ভিষ্ঠদ্ৰজো ভৌন্স ন প্ৰাক্তায়ত কিঞ্চন॥ ৬॥ প্রিণশ্চাপতন্ ভূমৌ গৈন্যেন রজ্মা রতাঃ গ ইবুভিব্যতি স্পতিরাদিত্যেহ্যর্গীয়ত। ৭। খদ্যেতৈরিব সংযুক্তমন্তরীক্ষণ বারাজত। রুকাপ্টানি চাপানি বাতিষক্তানি ধবিনাম্॥ ৮॥ পত্তাং লোকবীরাণাপ স্বাদ্ফিশ্মস্তাম্। রথা রথৈঃ সমাজগা । পাদাতৈ । সদ, তথা । ১ ॥ मार्मिङः मानिनदेश्वय भदेखरेश्वय मञ्जाकाः। অসিভিঃ পট্টিশেঃ প্রাসেঃ শক্তিভিস্তোমরৈরপি॥ ১०॥ সংরক্ষাঃ সমরে রাজান্নজন্মুরিতরেতরম্। निज्ञन्तः समरहरूरमाना</br>
भृताः शिविष्याईयः ॥ ১১ ॥ ন শেকুরভিসংরক্কাঃ শূরান্ কর্ত্ত্পরাজাখান্। ক্তেত্তেরোষ্ঠং স্থনদ কুত্তকেশমলস্কৃত্য ॥ ১২ ॥

গ্রামনী হৈঃ র্জিকীলৈঃ গ্রামনী বৃধিতে পুংসি ত্রিবৃধিকে গিংপ পিচেতি-নানার্থঃ ॥ ৩॥ সমাধ্যমঃ সংগ্রামঃ ॥ ৪॥ অবলম্বতি অবরোহতি ॥ ৫॥ ॥ ॥ ৬॥ মৈনোন সেনোপেন ॥ ৭॥ বাতিবিকানি হন্তাং হস্তাভুরং ধাতানি ॥ ॥ ৮॥ অস্যতাং ক্লিপতাং ॥ ৯॥ ১০॥ ১০॥ ১৮॥

^{*} গোদিতা গুডাজ নোদি তাই তিপাচঃ খ পুস্তকে।

অদুশাত শিরশিছ্রং রজোধস্থং স্কু ওলন্। অদৃশ্যন্ত চ গাতাণি শুরৈশিছলানি ভাগশঃ ॥ ১৩ ॥ শালকল্লনিক।শানি ক্লিয়াণাং মহামুখে। न। গভোগনিকালৈশচ বাছভিশ্চন্দ্ৰে! क्रिटेडः ॥ ১৪॥ আঁস্টীর্না বন্ধুধা ভাতি শিরোভিশ্চ সকুগুলৈঃ। র্থিনাং র্থিভিশ্চাত সংপ্রহারে ভার্বর্ত । ১৫ ॥ र्मापिकः मापिनावर्गात त्रमा जीता त्र त्रमार्किकः। উপাশামাত্রজো ভৌমণ ক্রবিরেণ প্রসর্পতা॥ ১৬॥ कभावः छाविभाग्यातः निर्माशाम्यवर्षे ।। উপাবিশন্ গরুত্বান্তঃ শরৈগাচং প্রবেজিতাঃ। অভুরীকে গভিবেষ, দর্শনঞ্প্যক্রয়ত । ১৭ ॥ তে মৃতঃ সমরেহন্যোন্য শূরাঃ পরিষণাহরঃ। ন শেকুরভিসংরক্তঃ শূরান্কর্তুং পর। খ্রা খান্॥ ১৮॥ শতানীকঃ শতং হত্তা বিশালাক্ষণভঃশত্য। প্রবিফৌ মহতী । সেনাং ত্রিগর্ভানাং অহারথৌ । ১৯ । **७**। প্রবিষ্টো মহাদেনাং বলবন্তো মনস্থিনৌ। আচ্ছেতা পৰাহুসংরক্ষো কেশাকেশি নথানথি॥২০॥

॥ ১০ ॥ নাগভোগ নিকবিশঃ সপ্দেহেপ্টিমঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ কশালং মৃদ্ধা আবিশংশ্রানিতিশেষঃ যেষাং গ্রুতাং পক্ষিণাং অভরীক্ষে গতির্দনকতেপি শরেঃ প্রেনজিতাঃ উদ্বেগং প্রাপিতাঃ সতঃ,
উপাবিশন্ ধ্জাপ্রাদো বান পটলেন, তেখাংগতি র্দর্শনঞ্চ নাক্ষাং
॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ তিগতানাং সেনাং প্রিকীবিভাষয়ঃ ॥ ১৯ ॥ প্রবিশান তামা
• দ্ধিতাং মোহিত বভৌ কেশাকেশি কেশেষু কেশেষু গৃষ্টীয়া প্রবৃত্তং যুদ্ধং
কেশা কেশি প্রবং রথারথি পাঠানুরে নথা নথি নথৈশ্য নথৈশ্য প্রত্যা রথাংশ্য
যুদ্ধং প্রত্তঃ নথানথি কেশেষু গৃষ্টীয়া যোধান্রবেষু গৃষ্টীয়া রথাংশ্য
প্রক্রিপত ইতিভাবঃ ॥ ২০ ॥

লক্ষযিত্বা ত্রিগর্ভানান তৌ প্রবিষ্টো রথব্রজম। জগাতুঃ * স্থাদভূচ মদিরাক্ষশ্চ পৃষ্ঠতঃ ॥ ২১ ॥ বিরাটস্তত্র সংগ্রামে হত্বা পঞ্শতানুথান্ ! হ্যানাঞ্চ শতান্যকৌ হত্বা পঞ্চ মহার্থান ॥ ২২ ॥ চরন স বিবিধাঝার্গান্থেন রথস্তুমঃ। ত্রিগর্নাং স্কুশর্মাণুমাচ্চু**ক্রির্যং** রণে । ২**০** ॥ তৌ ব্যঝহরতাং তত্র মহাআনৌ মহাবলী। অন্যোন্যমভিগর্জন্তে গোষ্ঠে গোর্ঘভাবিব॥ ২৪॥ ততো রাজা ত্রিগর্ভানাং স্কুশর্মা যুদ্ধতুর্মদঃ ! মৎস্যুৎ সমীযান্তাজানং † হৈরথৎ যুদ্ধমাহ্বযন্॥ ২৫॥ ততো রথাভ্যাপ রথিনৌ ব্যতীষত্রমর্ষিণৌ। শরানু বাস্জভাং শীঘ্রত তোষধারা ঘনাবিব ॥ ২৬ n जानामाक्षापि मः त्राको विष्ठत जुन्न मर्गा। ক্লতাস্ত্রো নিশিতৈকাণৈরসিশক্তিগদাভূতো ॥ ২৭॥ ততে। রাজা স্থশর্মাণ্ শবিব্যাধ দশভিঃ শব্রৈঃ। পঞ্জিঃ পঞ্জিশ্চাস্য বিব্যাধ চতুরো হ্যান্॥ ২৮॥ ত থৈব মৎস্যরাজানৎ স্থশর্মা যুদ্ধতুর্মদঃ। 🛨 পঞ্চাশতা শিতৈব্যাগৈবিব্যাগ পরমাস্ত্রবিৎ ॥ ২৯ ॥

স্থাদন্ত সভানীকঃ ॥२১॥ २२ ॥ २०॥ ভেবিরাট স্পর্যাণো ॥२৪॥ ॥२৫॥२७॥२५॥२৮॥२৯॥

^{*} জন্মতুরিতাত্র অত্যত ইকি পাঠঃ খ পুস্তকে।

† দৈরখং যুদ্ধমাধ্বর নিক্রাত্ত দৈরখেন নর্মাত ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

‡ পঞ্চাশতাশিতৈকানিবিতাত্র পঞ্চাশক্তিঃ শিতৈকানে রিতি পাঠঃ
খ পস্তকে।

ততঃ সৈন্যং মহারাজ মংস্যরাজস্কশর্মণোঃ। নাভ্যজানন্তদান্যোন্যং সৈন্যেন রজসার্তম্ ॥ ৩০॥ ইতি বিরাটপ্রাণি গোগ্রহণপ্রাণি দক্ষিণ গোগ্রহে স্ক্শর্ম-বিরাট্যুদ্ধে দাত্রিংশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩২॥

বৈশাপান্তন উবীত।
তমসাভিপ্ততে লোকে রজ্যা চৈব ভারত।
অতিঠন বৈ মুহু রুজু বুড়ানীকাঃ প্রহারিনঃ॥১॥
ততোহক্ষকারং প্রপুদন্দতিষ্ঠত চন্দ্রনাঃ।
কুর্বানো বিমলাপ রাত্রিং নন্দযন্ ক্ষত্রিয়ান্ যুবি॥২॥
ততঃ প্রকাশমাসাদ্য পুন্যু ক্ষিমবর্ত্ত।
যোরকাপং ততন্ত ক্মিনাবৈক্ষন্ত পরস্পারম্॥৩॥
ততঃ স্থান্যা ত্রৈগর্তঃ সহ ভাত্রা যবীয়সা।
অভ্যক্তবন্ধ্যারাজং রথবাতেন সর্বশংশী ৪॥
ততো রথাভ্যাং প্রকাশ্য ভাতেরৌ ক্ষাত্রেয়াবিটা।
গদাপানী স্কাপরকৌ সমভ্যক্ততাং রথান্॥৫॥

ততঃ সৈন্য মিতি শ্লেকঃ প্রাচীন পুস্তকে সন্থা প্রতিত ততঃ সেন্ত সমাহত্য মৎস্থাজ স্থামনী ন জাতিতাং তদানোন্য সৈন্যেন ৰজগা বৃত্তী বিতি তত্ত স্থামণা বিভিত্তস্বসমার্থ সেনা সেনাস্থান্ শ্রান্ সমাহত্য স্নোধন্য সংঘটং কার্যিয়া সৈন্যেন সেনোপেন। ৩০॥

> ক্লতি বিরাট পর্কাণি ন্বৈনকগারে ভারত ভাবদীপো দাবিংশোহধারিঃ॥৩২॥

তমসা নৈশেনান্ধকারের মূহুর্ত্থ আচন্দ্রোকালং নতুর্ঘাদ্রমাত্রং কৃষ্ণপক্ষ্য সপ্তমী মিতি সপ্তম্যাৎ গোতাহণস্যোক্তরাং ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ ৪॥ প্রস্থান্য অবক্ষ্য ॥ ৫॥

তথৈব তেষান্ত বলানি তানি কুদ্ধান্যথান্যোন্যমভিদ্ৰবন্তি। গদাসিথকৈশ্চ পরশ্ববৈশ্চ প্রাসেশ্চ তীক্ষাগ্রস্থপীতধারে:॥ ৬॥ বলন্ত মংস্যন্ত বলেন রাজা সর্বাং ত্রিগর্ভাধিপতিঃ স্কুশুর্মী। প্রমথ্য জিল্পা চ প্রমন্থ মৎস্তং বিরাটমোজস্থিনমভ্যধাবং ॥ १। তৌ নিহত্য পুথগ'ধুর্ঘ্যাবুভৌ চ পাফি সার্থী। বির্থণ মৎস্যরাজানং জীব্ঞাহমগ্রুতাম ॥ ৮॥ ভমুম্মথ্য স্থশর্মা তু যুবতীমিব কামুকঃ। गान्तनः ऋः * ममारताश श्रयस्यो मीखवारनः ॥ २॥ তি স্মন গৃহীতে বিরুথে বিরুটে বলবন্তরৈ । • প্রাদ্রবন্ত ভয়ানাংস্থান্ত্রিগর্টেরদিতা ভূশন্॥ ১০॥ তেযু সপত্রাস্তমানেযু কৃতীপুজো যুধিষ্ঠিরঃ। অভ্যভাষ্মহাবাহুং ভামদেনমরিনদম্য ॥ >> ॥ মংখ্রাজঃ পরামুটব্রৈগর্ভেন স্কর্মণা। তং নোচয় মহাবাহোঁ ন গচ্ছেদ্বিতা প বশম ॥ ২২ ॥ উষিতাঃ শ্ব স্থুখং সর্বে সর্বকামৈঃ প্রপূজিতাঃ। ভীনদেন ত্রা কার্য্যা তম্ম বাসম্ম নিষ্কৃতিঃ ॥ ১৩॥ ভীম উবাচ I

অহমেনং পরিত্রাফো শাসন্তিক পার্থিব।
পশ্য মে স্থমহৎ কর্ম যুধ্যতঃ সহ শক্রভিঃ॥ ১৪॥
প্রাহ্বলমাশ্রেত্য তিঠ স্বং ভাতৃভিঃ সহ।

একান্তমাশ্রেতো রাজন পশ্য মেঞ্চ্য পরাক্রময়। ১৫॥ তীক্ষানি অপ্রাণি স্থপীতাঃ স্তর্গং পীতাঃ শোবিতাঃ ক্লণীতাঃ অনায়া-দেন শীঘং পরশরীর প্রবেশক্ষমাঃ ধারীক বেবাং তে তীক্ষাগ্র স্থপীত

ধারান্তঃ তীক্ষায়দ পাতেতি পাঠেপিপাতু শব্দদ্যাক্ত এবার্থঃ॥ ৬॥ বন্ধজিল্বা চেতি সময়ঃ॥ ৭॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥

^{*} সমারোহ্যতাত্র সমারোপ্যেতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

স্থককোহর মহারকো গদারপ ইব স্থিত:।
ভাহমেনমপারুজ্য জাব্য়িষ্যামি শাত্রবান্॥ ১৬॥
रিবশস্থায়ন উবাচ।

তং মন্ত্রমির মাতঞ্চ বীক্ষমাণং বনম্পতিম।

অব্রবীন্ত্রাতরং বীর পর্মোরাজাে যুথিন্তিরঃ॥ ১৭ ।
ভীম মা সাহস কার্যীন্তিঠন্থেষ বনস্পতিঃ।

মা ত্রা ব্রক্ষেণ কর্মাণি কুর্বাণমতিমানুষমু॥ ১৮॥
জনাঃ সমববুধােরন্ ভীমােহয়মিতি ভারত।
অন্যদেবাযুধং নির্দ্ধিৎ প্রতিপদ্যন্থ মানুষম্॥ ১৯॥
চাপং বা যদি বা শক্তি নিক্তিংশংবা পরশ্বধম্।
যদেব মানুষং ভীম ভবেদনৈারলক্ষিত্ম্॥ ২০॥
তদেবায়ুধমাদায় মাক্ষরাশু মহীপতিম্।
যমৌ চ চক্রকৌ তে ভরিতারৌ মহাবলৌ॥ ২১॥
সহিতাঃ সমরে তত্র মৎস্যরাজং পরীপ্রতা।
বশম্পায়ন উবাচ।

এবনুক্তস্তবেগেন ভীমদেন মহাবল: ॥ ২২ ॥
গৃহীত্বা তু ধনুঃ শ্রেষ্ঠ^ জবেন স্থমহাজবঃ।
ব্যমুঞ্চ্ছর বর্ষাণি সতোয় ইবতোয়দঃ ॥ ২৩ ॥
ত^ ভীমো ভীম কর্মাণং স্থশর্মাণ মথাদ্রবং।
বিরাটং সম বীক্ষ্যেনং তিষ্ঠতিষ্ঠেতি চাবদং॥ ২৪ ॥

অপাকজ্য উৎপাট্য ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ২৩॥ বিরাটং সমবীক্ষানং হেসম হেসাধো ইতি বিরাটং বীক্ষা বাচাদৃশাচ সংভাব্য এনং স্থামাণং তিষ্ঠতিঠেতি চাবদ দিতি সম্বন্ধঃ সর্বসাধু সমানেষু সমংস্যাদভিধেয়ব দিতি মেদিনী ॥ ২৪॥

স্থশর্মা চিত্তরামাদ কালান্তক যমোপমং। তিষ্ঠতিষ্ঠেতি ভাষত্তং পৃষ্ঠতে। রথ পুঞ্কবঃ। পশ্যতাং স্থমহৎ কর্ম মহদ্যুদ্ধ মুপস্থিতং ॥ ২৫ ॥ পরারত্তো ধনুর্গৃহ স্কর্শর্ম। ভ্রাতৃভিঃ সহ। নিমেষান্তর মাত্রেণ ভীমদেনেন তেরথাঃ॥ ২৬॥ রথানাঞ্চ গজানাঞ্চ বাজিনাঞ্চ সমাদিনাং। সহস্রশত সংঘাতাঃ শূরানামুগ্রব্দ্বিনাং ॥ ২৭ 🕯। পাতিতা ভীম দেনেন বিরাট্যা সমীপতঃ। পত্তয়ো নিহতাত্তেষাং গদা পৃষ্ঠমহাত্মনা ॥ ২৮॥ তদ্টা তাদৃশ্ বুদ্ধং স্থশ্ম। যুদ্ধ দুর্ম্মদঃ। চিত্রামাস মনসা কিং শেষ %। হি বলস্মে। অপরো দুশতে গৈন্যে পুরামগ্রো মহাবলে ॥ ২৯ ॥ আকর্ণ পূর্ণেন তদা ধনুষা প্রত্যদৃশ্যত। সুশর্মা সায়কাং স্তীক্ষান্ ক্ষিপতেচ পুনঃপুনঃ ॥ ৩০ ॥ 🌣 তাভঃ সমস্তান্তে সর্বেব তুরগানভ্যচোদয়ন্। দিব্যমন্ত্র^ বিকুর্বাণান্ত্রিগর্তান্ প্রত্যমর্ধণাঃ॥ ৩১॥

রথ পুজরঃ তিষ্ঠতিষ্ঠেতি ভাষমাণঃ মহৎ কর্মানোনা মুদ্ধং পশাতাং কর্মবা তিহারে তঙ্ অবং মাং মহং কর্ম কুর্মাণং পশাতু অহুষ্টেনং দ্রক্ষো ইতার্থঃ ॥২৫ ॥ রথাঃ সংগতা ইতি শেষঃ ॥২৬ ॥২৭ ॥২৮ ॥ চিন্তয়ামান সেতি অশর্মা রক্ষা সৈন্যমা কিং শেষং কুর্গেস্তং বধং চিন্তয়ামান শেষঃ । সংকর্মণে বধে ইতি মেদিনী তত্ত্ব হিষম্মাণ মেমম অপরো ভাতা মহাবলে সৈনো পুরাম্মো দৃশাতে ভাতুঃ সঙ্গ দৃষ্ট্বা সৈন্যনাশং চিন্তয়া মাসেতার্থঃ ॥২৯ ॥ ধন্ত্বা শোভ্মান ইতি শেষঃ ॥৩০ ॥ তে সর্কে মংসাঃ ।

^{*} ততইত্যস্য প্রাক্ বৈশস্পায়ন উবাচ ইত্যাদি আকর্ণ পূর্ণেন তদেতান্ত সাজাফলোকঃ ক পুস্তকে নান্তি।

তালিরভরথ:ন্ দৃষ্ট্রা পাওবান্ সা মহাচমূং। বৈরাটা পরমক্রুদ্ধে যুযুধে পরমাদ্ভত্য ॥ ৩২ । गर्य ् नावशीखंब कू छी शूर्त्वः यू विक्रितः। ভীনঃ সপ্ত নহজ্রণি যমলোকমদর্শয়ং॥ ৩০॥ নকুলশ্চাপি সপ্তৈব শতানি প্রাহিণােচ্ছরৈঃ'। শতানি জীণি শূরাণাৎ সহদেবঃ প্রতাপবান্॥ ৩৪॥ র্থিষ্ঠির সমাদিকৌ নিজন্মে পুরুষর্যভঃ। ভতোহ্ভাপতদভুৱেঃ স্থশর্মা ব্যুদ্যতাযুধঃ॥ ৩৫॥ হিত্ব। তাং মহডী (সনাং ত্রিগর্ভানাং মহারথঃ। ততো যুধিষ্ঠিরো রাজা ত্তরমাণো মহাবলঃ॥ ৩৬ : অভিপতা সুশর্মাণং শরৈরভাাহনদ্ভ শন্। স্থশর্মাপি স্থসৎরক্ষন্তুরসাণো যুধিন্ঠিরম্।। ৩৭।। অবিধ্যন্নবভিক্ষালৈ শ্চতুর্ভিশ্বচতুরে: হয়ান্। ততো রাজনাশুকারী কুন্তিপুলো রুকোদরঃ॥ ৩৮॥ সমাসাদা স্থশর্মানুমস্থানস্য ব্যাপোথ্যং। পৃষ্ঠগোপাংশ্চ তম্ভাথ হ্বা প্রমসায়কৈঃ॥ ৩৯ ॥ অথাম্ম সার্রথিং কুন্ধো রথোপস্থাদপাতয়ৎ। চক্রবক্ষক শূরো বৈ মদিরাক্ষোহতিবিক্সতঃ॥ ৪০॥ সমায়াদিরথ দৃষ্ট্ব। ত্রিগর্ভং প্রাহরন্তদা। ততো বিরাটঃ প্রস্কন্য রথাদ্থ স্থশর্মণঃ ॥ ৪১॥ গদামস্য,পরামূষ্য তমেবাভ্রেবছলী। म চচার গদাপানির্কৃদ্ধোহপি তরুনো যথা॥ ৪২॥

। ৩২ ॥৩৩ ॥৩৪॥ অজুন্তো সুধিঠিরঃ বাক্য শেষাৎ ॥৩৫॥ ৩৬॥ ॥৩৭॥৩৮॥৩৯ ॥৪১॥৪১ ॥৪২॥ পলাযনানং তৈগর্তং দৃষ্টা ভীনোহ ভাভাষত।
রাজপুল নিবর্ত্তমন তে যুক্তং পলাযন্য ॥ ৪০ ॥
অনেন বীর্যোণ কথা গান্ত্বং প্রার্থকৈ বলাং ।
কথপানুচরাং স্তাক্ত্বা শক্রমধ্যে বিধীদাঁস ॥ ৪৪ ॥
ইত্যুক্তঃ স তু পার্থেন স্কল্মা রথম্থপঃ।
তিষ্ঠতিষ্ঠতি ভীনং স সহসাভাদ্রবদ্ধনী ॥ ৪৫ ॥
ভীমস্ত ভীমসঙ্কাশো রথাং প্রকল্য পাপ্তরঃ।
প্রাদ্রবৃত্ত্বার্থানে জীবিতেপ্যুং স্কল্মণঃ ॥ ৪৬ ॥
তা ভীমসেনো বাবস্তমভাগ্যবত বীর্যাবান্।
তা ভীমসেনো বাবস্তমভাগ্যবত বীর্যাবান্।
তা ভীমসেনো বাবস্তমভাগ্যবত বীর্যাবান্।
তা ভীমসেনো বাবস্তমভাগ্যবত বীর্যাবান্।
তা ভিক্রতা স্কল্মাণং কেশপন্যে পরাম্যা ॥ ৪৭ ॥
আভিক্রতা স্কল্মাণং কেশপন্যে পরাম্যাহ।
সমুদামা চ রোযান্ত্রা নিপ্রিপ্র মহাবান্তঃ প্রাহ্রাদ্বাপ্রিয়তঃ।
তক্ত জানুং দদৌ ভামৌ জন্নে চৈনমরত্নিনা।
সামোহমগমদ্রাজা প্রহারবর্ণীডিতঃ ॥ ১৯ ॥
বাহমগমদ্রাজা প্রহারবর্ণীডিতঃ ॥ ১৯ ॥

ত্তিগর্তং তিগ্রতাধিপতিং ॥ ৪০॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ভীম সদ্ধাণঃ ভীমোপমঃ
রামরাবন্যার দিং রামরাবন্য়ে রিবেতি বদত্পম ইতার্পঃ ॥ ৪৬॥ ৪৭॥
কেশ পক্ষে কেশকলাপে পাশঃ পক্ষণ হস্তক কলপার্থাঃ কচাৎ পর ইতি
পক্ষে মাদার্নকে ইতুপিক্রমা কেশাদেঃ পরতার্ক ইতি মেদিনী॥ ৪৮॥
তাথেক্তং নীতি শাস্তে বাম পানি কঢ়োৎ পীডা॥ ১॥ ভূমৌ নিপেবণ্
বলাৎ ॥ ২॥ মূর্দ্ধিপাদ প্রহরণং॥ ০॥ জাত্নেদের মর্দ্ধনং॥ ৪॥ মালুরাক্রাং ॥ ২॥ মূর্দ্ধিপাদ প্রহরণং॥ ০॥ জাত্নেদের মর্দ্ধনং॥ ৪॥ মালুরাক্রাং ম্বা মুক্তা কপোলে দৃত তাডনং॥ ৫॥ কফোর্শি পাতেশিক্রং॥ ৬॥
স্বর্ধতন্তল তাডনং॥ ৭॥ তালেন যুদ্ধে ক্রমণং॥ ৮॥ মারণং স্কৃত মৃত্যা।
চতুর্ভিঃ ক্ষত্রিয়ং হন্যাৎ পঞ্চাভঃ ক্ষত্রিয়াধমং বড্ভিরেশ্য মন্তাভিন্ত
শ্রহং সন্ধর মন্তাভি রিতি। এতেবাং মর্যে, তং কেশগ্রহাদিভিঃ পঞ্চাভঃ
মারহাহসা ক্ষত্রিয়াধমনং দ্বিতং॥ ৪৯॥

তিমান গুহীতে বিরথে তিগর্ভ।নাং মহারথে । অভজ্যত বল্প সর্বাং ট্রেগর্ভং ভদ্ত্যাতুরম্। ৫০॥ নিবর্ত্তা, গাস্ততঃ স্বাঃ পাণ্ডুপুজা মহারথাঃ 🗀 অবজিত্য স্থশর্মাণং ধনঞ্চাদায সর্বশঃ॥ ৫১ ॥ স্বাহুবলদম্পন্না হ্রীনিষেবা যতন্ততাঃ। বিরাট্য মহাত্মানঃ পরিক্লেশবিনাশনাঃ n ৫২ n স্থিতাঃ সমক্ষ্ণ তে সর্কে তুথ ভীমোহভাভাষত॥ ৫০॥ . নায^ পাপসমাচারে। মন্তো-জীবিভূম≨তি। কিল্ল শক্যং ময়া কর্ত্তং যদ্রাজা সততং ঘূণী ।। ৫৪॥ গলে গৃহীত্বা রাজানমানীয় বিবশং বশম্। তত এনং বিচে**উন্তং বন্ধা পার্মো রু**কোদরঃ।। ৫৫।। র্থমারোপ্যামাস বিসংজ্ঞং পাংশুগুলিত্য ৷ অভ্যেত্য রণমধ্যস্থমভ্যগচ্ছদ্যুধিষ্ঠিরম্। ৫৬॥ দর্শযামাস ভীমস্ত তামবস্থাং স্থশর্মাঃ। প্ৰোবাচ পুৰুষব্যান্ত্ৰা ভীমমাহৰশোভিনম্। ৫৭। তং রাজা প্রাহসক্ষ্টা মুচাতা > বৈ নরাধমঃ। এবমুক্তোংব্রবীন্তীমঃ স্থশর্মান্থ মহাবল্প॥ ৫৮॥ ভীম উবাচ। জীবিতুং চেচ্ছেসে মূঢ় হেতুৎ মে গদতঃ শূণু ৷ দাসোহস্মীতি ত্বযা বাচ্যং সৎসহস্ক চ সভাস্ক চ ॥ ৫৯॥ এবং তে, জীবিতং দদ্যামেষ্ যুদ্ধজিতা বিধিং।

॥ ৫०॥ ৫১॥ ৫২॥ ৫৩॥ য়ুণীদরা ह्यः॥ ৫৪॥ বিবশং অচিত্তং বশং প্রাধীনং॥ ৫৫॥ ৫১॥ ৫৭॥ ৫৮॥ ৫১॥ ৬০॥

তমুবাচ ততো জ্যেষ্ঠো ভ্রাতা মর্প্রণযং বচঃ ॥ ৬०॥

র্থিতির উবাগ।

* মুপ্টেম মধমাচারং প্রমানং যদি তে ব্যম্।
দাসভাবং গতো হোষ বিরাটস্থা মহীপতেঃ।
অদাসো গচ্ছ মুক্তোহসি মৈবং কার্ষীঃ কদাচন ॥ ৬১ ॥

ইতি বিরাট পর্বানি গোগ্রহণ পর্বানি দক্ষিণ গোগ্রহে স্কশর্মা
নিগ্রহে ত্রাস্ত্রিংশস্ত্রমোহ্ধায়ঃ॥ ৩০॥

--

বৈশস্পারন উবাচ।

এবমুক্তেতু সত্রীতঃ স্থান্দ্রাসীদধােমুখঃ।
স মুক্তোহভাত্য রাজানমভিবাদ্য প্রতস্থিবান্॥ ১॥
প্রমুচ্য তং স্থার্দ্রাণং পাণ্ডবান্তে হতদ্বিধঃ।
স্থান্ত্রলসম্পন্না ক্রীনিষেবা যতন্ত্রতাঃ।
সংগ্রামশিরসাে মধ্যে তাং রাত্রিং স্থানাহ্বসন্॥ ২॥
ততো বিরাটঃ কৌন্তেরানতিমানুষ্বিক্রমান্।
অর্চ্যামাস বিত্তেন মানেন চ মহার্থান্॥ ৩॥

বিরাট উবাচ ৷

যথৈব মম রজানি যুগাকং তানি বৈ তথা। কার্যাং কুরুত সর্কে বৈ যথাকামং যথাস্থখ্য ॥ ৪ ॥ '॥ ৬১॥

> ইতি নিরা**ট পর্ব্ধনি দ্বৈলকণ্ডী**রে ভারত ভাবদী**েশ** ভয়ব্রিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৩॥

11 8 11 0 11 8 11

* মুঞ্চেত্যস্য প্রাক্ যুগিষ্ঠির উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

দদাস্ত্রস্থাং কন্যা বস্থানি বিবিধানি চ। মনসশ্চাপ্যভিপ্রেতং খৃদ্ধং শক্রনিবর্হণাং॥ ৫॥ মুশ্বাকেশ বিক্রমাদদ্য মুক্তোহ্ত্ং স্বস্তিমানিহ। তক্ষান্তবতো সংস্থানামীশ্বরাং সর্বা এব হি,॥ ৬॥

বৈশপ্যায়ন উধার।

তাঁপেতি বাদিনং মৎস্তাং কোরবেরাঃ পৃথক পৃথক।
উচুং প্রাঞ্জন্মঃ সর্বে যুবিচিরো পুরোগমাঃ॥ ৭॥
প্রতিনন্দাম তে বিক্যাং সর্বে এব বিশাস্পতে।
এতেনৈব প্রতীতাঃ স্ম যত্ত্বং মুক্তোহদ্য শক্রতিঃ॥ ৮॥
প্রথাব্রবীং প্রীতমনা মংস্তরাজ্যে। যুবিচিরম্।
পুনরেব মহাবাছ্বিরাটো রাজসন্তমঃ॥ ৯॥
এহি স্বামভিষেক্যামি মংস্তরাজোহস্ত নো ভবান্॥ :०॥
মনসন্দাপাভিপ্রেত শ্বতে শক্রবির্ণ।
তত্তেহ্হ শংপ্রদাস্যামি সর্বমর্হতি নো ভবান্॥ >>॥
রন্ধানি গাঃ স্থবর্ণক মনিমুক্তমথাপি চ।
বৈষ্যাত্রপদ্যবিপ্রেক্ত সর্বেথিব নমোহস্ত তে॥ >২॥
স্বংক্তে হুদ্য পশ্যামি রাজ্যমাল্যানমেব চ।
মতশ্চ জাতঃ সংরুদ্ধো ন চ শক্রবেশক্রতঃ॥ >০॥
ততো যুবিচিরো মৎসা প্রবেবাভাভাবত।
প্রতিনন্দামি তে বাকাং মনোজ্যং মৎস্য ভাষ্যে॥ ১৪॥

়া ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ প্রতীতাঃ হাকাঃ । ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ নঃ আমা এ সম্বাদ্ধি সর্কার্থ ভবান্ গৃহীতু মহিতি ॥ ১১ ॥ ১২ হতে। নিগৃহীতঃ জাতসংরক্তো জাত ভয়োপি বদলান্ত শত্রুবশঙ্গতোপি ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

^{*} যতে শক্ত নিবৰ্গণে ডাক্ত যথেষ্টং ভূবিছ্ল'ভ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

আনৃশৎস্যপরো নিত্যং স্কুস্থী সততং ভব।
গচ্নস্ত দৃতাস্থ্রিতং নগরং তব পার্থিব॥ ১৫॥
স্থান্ধা প্রিমাখ্যাতুং ঘোষযক্ত চ কে জযম।
ততন্ত্রনাম্বাংস্যা দূতানাজা সম্যাদশ্য ॥ ১৬॥
আচক্ষধ্য পুরং গত্বা সংগ্রামে বিজ্ঞাং মম।
কুমার্য্যঃ সমলঙ্ক তা প্র্যাগচ্চন্ত মে পুরাৎ॥ ১৭॥
বাদিকাণি চ স্বাণি গণিকাশ্য স্বলঙ্ক তাঃ।
এতাঞ্চাজ্ঞাং তত গ্রুত্রা রাজ্ঞা সংস্যোন চোদিতাঃ।
তামাজ্ঞাং শিরসা কৃত্বা প্রস্তি। কৃত্যমানসাঃ॥ ১৮॥
তে গত্বা শ কেবলাং রাত্রিমথ স্থর্য্যাদ্যং প্রতি।
বিরাট্য্য পুরাভ্যাসে দূতা জ্যমন্যায়ন্য ॥ ১৯॥
ইতি বিরাট্র্পবিণি গোহরণপর্বিণি দক্ষিণ গোগ্রহে বিরাট্র্ জ্যুঘাষে চভুপ্রিং শন্তমোহ্যায়ঃ॥ ১৪॥

देवमञ्जाशाम छेराह।

যাতে ত্রিগর্ভান্থান্ পরীপাতি। তুর্য্যোধনঃ সহামাত্যো বিরাট্যুপ্যাদ্ধ্॥ ১॥

1 56 11 76 11 74 11 76 11 76 11

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতুব্রিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৪॥

পরীপ্সতিলিপ্সতি যতঃ অথ অতঃ বিরাটং বিরাট দেশং উপযাং', উপায়াং ॥ ১॥

^{*} কেবলামিত্যত্ত তত্ত্তামিতি পাঠঃ খ-্য পুস্তকয়ে েঃ

ভীয়ো দ্রোণশ্চ কর্ণশ্চ ক্লপশ্চ পরমান্ত্রবিৎ। জৌ-িশ্চ সৌবল**ৈচ**'ব তথা ছুঃশাসনঃপ্রভো॥ ২॥ বিবিপশতিবিকিকর্ণশ টিত্রসেনশ্চ বীর্য্যবান। তুমুথোঁ হু তুঃসহকৈব যে চান্যেহশি মহারথাঃ। ৩॥ এতে মৎস্যানুপাগম্য বিরাটস্য মহীপতেঃ। ঘোষান বিজাব্য তর্মা গোধন জহুরঞ্মা॥ ৪॥ যটিং প্রবাং মহস্রানি কুরবঃ কালযন্তি তে। মহতা রথ্বংশেনু পরিবার্য্য সমন্ততঃ॥ ৫॥ গোপালানান্ত † হোষিমা হন্যতাং তৈর্মহারথৈঃ। আরাবঃ স্থমহানাদীৎ সং প্রহারে ভরক্করে ॥ ৬ । ় গৰাধাক্ষন্ত সংত্রস্তো রথমাস্থ্যে সত্রঃ। জগাম নগরাথৈব পরিক্রোশ-স্তদার্ভবৎ ॥ ৭ ॥ স্প্রবিশা পুর্ব রাজ্ঞা নূপ্রেশ্মাভ্যযান্ততঃ। অবতীর্য্য রথাভূর্ণমাখ্যাভুৎ প্রবিবেশ হ। ৮॥ **मृक्ये । ভূমিঞ্চলাম পুত্রং মৎ**मामा মানিনম্। তিশৈ তৎ দৰ্বমাচফ রাপ্রদ্য পশুকর্ষণ্ম ॥ ৯॥ ষ্ঠিং গ্রাং সহস্রাণি কুর্ধঃ কাল্যন্তি তে। তিছিজেতুং সমুত্তিষ্ঠ গোধনং রাষ্ট্রবর্দ্ধন ॥ ১০॥

্র ২॥ ৩॥ ৪॥ কালরন্তি নয়তি রথবংশেন রথসমূহেন ॥ ৫॥ যোবস্থানাং পাবাং গোপালানাঞ্ছন্যতাং ছুন্যমানানামার্বিঃ শব্দো মহানভূং ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ভূমিং জ্য় মিজুয়ত্তরসৈত্ব নামান্তরং॥ ১॥ ১০॥

^{` *} হঃসহ ইত্যত্ত হু\$াল ইতি পাঠ থ পুস্তকে।
া ঘোষসোত্যত্ত সর্বেধা মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
াু গবাধাক্ষ ইত্যত্ত গোপাধাক্ষ ইতি পাঠ থঘ পুস্তকয়োঃ।

রাজপুত্র হিত প্রেপ্স: ক্ষিপ্রং নির্যাহি বৈ স্বয়। ত্বাং হি মৎস্যো মহীপালঃ শূন্যপালমিহাকরোও॥ ১১॥ ত্বথা পরিষদে। মধ্যে শ্লাঘতে স নরাধিপঃ। পুত্রো মমামুরপশ্চ শূরশ্চেতি কুলোছিইঃ॥ ১২॥ ইম্বস্ত্রে নিপুণো বোধঃ সদা বীরশ্চ মে স্কুতঃ। তদ্য তৎ সত্যমেবাস্ত মনুষ্যেন্দ্রস্য ভাষিতম্ । ১৩। অবিভ্র কুরন জিলা পশুন পশুমতাম্ব । নির্দিইবামনীকানি ভীমেন শরতেজসা n >৪॥ ধন্তুক্ত্রটভরুক্সপুজ্যেঃ শরেঃ সন্নতপর্কভিঃ।• ্দ্বিষতাং ভিন্ধ্যেনীকানি গজানামিব যুথপঃ॥ ১৫॥ পাশোপধানাং জ্যাতন্ত্রীং চাপ্দর্ভাং মহাস্থনায়। শরবর্ণাপ ধনুকাণিং শত্রুমধ্যে প্রবাদয়॥ ১৬॥ শ্বেতা রজতসঙ্কাশা রুথে যুজ্যন্ত 🧊 হয়াঃ। ধ্বজঞ্চ সিংহংসৌবর্ণ কুছ ুযন্ত তব প্রভো।। ১৭।। রুকাপুখাঃ প্রসন্নাত্রা মুক্তা হস্তবতা ব্রয়া। ছাদ্যন্ত শরাঃ সূর্যাৎ * রাজ্ঞামাযুর্নিরোধিনঃ॥ ১৮॥

শূন্যপালং রাজ্যেই স্থিপানে পালকং ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ যুথপে গল্দ হস্তী ॥ ১৫ ॥ পাশোপধানা মিতি পাশো মার্কা প্রান্ত্রর গতৌ তাবেব উপধানে বীণায়াং তন্ত্রী সন্ধানার্থং কীল বিশেষো যস্যাং সাপাশো-পধানা তাং জ্যাং তন্ত্রীং মোর্কোবতন্ত্রী কৃষ্ণিয়স তন্ত্রো যস্যাং তাং চাপো ধন্ত্রকীঃ সৈব অলাবু সহিতো দত্তো যস্যাস্তাং মহাস্থনা মিত্যু ভয়- । তি তুলাং শর্মান্তাং হিঃদরন্ত শুএববর্ণাঃ শন্ধ বই সামান্যাং স্কুল্পানিয়ো যস্যাং ধন্তঃ শব্দোত্রসজ্য চাপবাচী ক্রামেব বীণাং শ্রুণাং মধ্যে প্রবাদয় ॥ ১৬ ॥ যুজ্যন্ত যুজ্যন্তাং সিংহং সিংহাকুরিং সেবির্গ ॥ ১৭ ॥ হন্তবতা দৃত । হত্তেন প্রশংসায়াং মতুপ্ ॥ ১৮ ॥

^{*} রাজ্ঞামায়ুর্নিরোধিন ইত্যত্ত রাজ্ঞাৎ মার্গ নিরোধকা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

রণে জিন্ত্ব। কুরন্ সর্কান্ বজ্ঞপাণিরিবাস্থরান্।

যশো মহদবাপা ত্বং প্রবিশেদং পূরং পুনং ॥ ১৯ ॥

ত্বং হি রাষ্ট্রস্য পরমা গতির্দ্রংস্পতেঃ স্কুতঃ।

যথা হি পাণ্ডুপুজ্ঞানামর্জুনো জমতাং বরঃ ॥ ২০ ॥

ভ এবং গতিন্তবং মহস্যানাং সদা বিষয়বাসিনাম্।

গতিমন্তো † ভবস্তুদ্য সর্কো বিষয়বাসিনাং ॥ ২১ ॥

বিশন্দ্রায়ন উব্চে।

ত্রীমধ্য উক্তন্তেনাসৌ তত্বাক্যমভয়স্করম্।

ভাতঃপুরে শ্লাম্মান ইদং বচনমন্ত্রবীহ ॥ ২২ ॥

ইতি বিরাটপর্কাণ গোহরণপর্কাণ উত্তর গোগ্রহে গোপবাক্যে

পঞ্জিংশস্তমোহধ্যান্তঃ ॥ ৩৫ ॥

ভুত্তর উবাচ।

আদ্যাহমনুগচ্ছে য়ং দৃচধন্বাগবাং পদম্।
যদি মে সার্থিং কশ্চিদ্ভবেদশ্বেষু কোবিদঃ ॥ ১॥
তন্ত্রং নাবগচ্ছামি যো মে যন্তা ভবেলরঃ।
পশ্য স্বং সার্থিং ক্ষিপ্রং মম ‡ যুদ্ধ প্রান্ততঃ॥ ২॥

11 29 11 50 11 52 11 65 11

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকৃতীয়ে ভারত ভারদীপে পঞ্চতিংশোহধ্যায়:॥ ৩৫॥

11 2 11 2 11

* এবং গতিন্ত্রং মৎস্যানাং সদাবিষয় বাসিনা মিতাত্র এবমেব গতি হুনং ভবান বিষয় বাসিনা ছিতি পাঠঃ থ পুস্তকে। † ভবত্দ্যেতাত্র বয়ন্ত্দ্যেতি পাঠঃ থ পুস্তকে। ‡ যুদ্ধ মিতাত্র যুক্ত মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে। অফাবিংশতিরাত্রং বা নান্ত বা মান্মন্ত তং!

মন্তদাসীল্ল দ্বুদ্ধং তত্র মে সার্থিইতঃ॥ ৩॥

স লভেরং যদি জ্নাং ইয়য়ানবিদং মর্দ্।

জ্রাবানদা যাজাহং সমুচ্ছি তমহাধ্রম্ ॥ ৪॥

বিগাহা তং পরানীকং গজবাজিরথাকুলম্।

শক্তপ্রতাপনিবীর্যান্ কুরুন্ জিত্বানয়ে পশুন্॥ ৫॥

ছর্মোধন শান্তনবং কর্ন বৈকর্তনং ক্রপম্।

ডোগঞ্চ সহ পুত্রেণ মহেম্বাসান্ সমাগতান্॥ ৬॥

বিত্রাস্থিলা সংগ্রামে দানবানিব বজ্রভং।

অনেনৈব মুহুর্তেন পুনঃ প্রভ্যানমে পশুন্॥ ৭॥

শ্নামাসাদ্য কুরবং প্রযান্ত্যাদ্যি গোধনম্।

কিলু শক্য ম্যা কর্জুন যদহং তত্র নাভবম্॥ ৮॥

পুণ্যায়ুরদ্য মে বীর্যাণ কুরবস্তে সমাগতাং।

কিলু, পার্থেই জ্লুনঃ সাক্ষাদ্য়সন্মান্ প্রবাধ্রে॥ ৯॥

ক্রনা তদর্জুনোবাকাশ রাজ্ঞ পুত্রক্ত ভাষতঃ।
অতীত সময়েকালে প্রিরাশ ভার্যামনিন্দিতাং॥ ২০॥
দ্রুপদত্য স্থতাং তথা পাঞ্চালীশ পাবকাত্মজাং।
সভ্যাপ্তব গুণোপেতাং ভর্তুঃ প্রির হৈতেরতাং॥ ১১॥
উবাচরহানপ্রতিঃ কৃষ্ণাশ সক্ষার্থকোবিদঃ।
উত্তরং ত্রহি কল্যাণি ক্রিপ্রথ মন্ত্রনাদিদশ॥ ১২॥
অয়শ বৈ পাপ্তবক্তা সীৎ সার্থি। সংমতোদৃতঃ।

মহাযুদ্ধেষু সংসিদ্ধঃ সতেযন্তা ভবিষ্যতি ॥ ১৩ ॥

रेवमञ्जासम छेवाइ।

ছয়বান বিদ্থ অস্থগতিকতং ॥৪॥৫॥৬॥৭॥ ৮॥৯॥১०॥১১॥১২॥ ॥১৩॥ • বৈশস্থায়ন উবাচ।

তথ্য তদ্বচন প্রীয়ু ভ্ষেতঃ সা পুনংপুনঃ।
নামর্থক পাঞ্চালী বীভ্রেসাঃ পরিকীর্ত্তনম্ ॥ ১৪ ॥
তাবৈনমুপ্সক্রম্য স্ত্রীমধ্যাৎ সা যশস্থিনী।
ব্রীডমানের শনকৈরিদং বচনমন্ত্রীৎ ॥ ১৫ ॥
ব্যোহ্নৌ রহুদারণাভো যুবা স্ক্রপ্রিষদর্শনঃ।
বৃহন্নলেতি বিখ্যাতঃ পার্থস্থাসীৎ স সার্থিঃ ॥ ১৬ ॥
ধনুষ্যনবরশ্বাসীক্তন্ম শিষ্যো মহাত্মনঃ।
দৃষ্টপুর্বো ময়া বীরশ্বর্দ্ধা পাপ্তরান্ প্রতি ॥ ১৭ ॥
যদা তৎ পাবকো দাবসদৃহৎ খাপ্তরং মহ্ৎ।
অর্জুন্স্ তদা তেন সংগ্রীতী হ্যোভ্রমাঃ ॥ ১৮ ॥
তেন সার্থিনা পার্থঃ সর্ব্ব ভূতানি স্বাশঃ ।
অজ্যৎ খাপ্তবপ্রস্থে ন হি যন্তান্তি ভাদুশঃ ॥ ১৯ ॥
ভব্বর উরাচ।

গৈরন্ধ্রি জানাদি তথা যুবান ,
নপুং দকো নৈব ভবেদ্যথা দৌ।
জহং নশকোমি বৃহন্নলা শুভে,
বক্তুং স্বয় যক্ষ্ঠ্যান্নমৈতি বৈ ॥ ২০॥
ক্রেপিছাবাচ।

† যেয়াং কুমারী স্থশ্রোণী ভাগিনী তে যবীয়দী। তন্তাঃ দ বীর বচনং করিক্ষতি ন সপ্শয়ঃ॥২১॥ ॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥১৮॥১৯॥২০॥২১॥

^{*} বৈশাপায়ন উবাচ ইতাসা প্রাকৃ বৈশাপায়ন উবাচ জ্ঞাহাতদর্জুনোবাকা মিত্যাদি চতুঃশ্লোকঃ ক পুস্তকে নান্তি।

[়] প্রেয়ং কুমারীত্যস্য প্রাক্ উত্তর উবাচ ইত্যাদি ক্রোপত্নবাচ ইত্যন্তঃ শ্লোকঃ ক প্রস্তকে নাস্তি।

যদি তে সারথিং স স্থাৎ কুরন্ স্বান্ন স্ংশ্যঃ।
জিত্বা গাশ্চ সমাদায় প্রব্যাগমনং ভবেৎ ॥ ২২ ॥
এবসুক্তঃ স সৈরিক্স্যা ভগিনীং প্রত্যভাষত।
গচ্ছ অমনবদ্যাক্তি তামান্য বহন্নলাগ্ ॥ ২৩ ॥
সা ভাত্রা প্রেবিতা শীঘ্রমগচ্চ্যর্তনাগৃহম্।
যত্রান্তে স মহাবাহুশ্চন্নঃ সত্রেন পাপ্তবং ॥ ২১ ॥
ইতি বিরাটপর্যান গোহরন পর্বান উত্তরগোগ্রহে বৃহন্ন শ্রান্থ্যকথনে ঘট্তি-শ্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৩৬ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।
সা প্রাক্তবং কাঞ্চনমাল্যধারিণী,
জ্যেষ্ঠেন ভ্রাত্রা প্রহিতা যশস্থিনী।
স্কৃদ্ধিণা বেদিবিলগ্নমধ্যা,
সা গল্পব্রাভনিভা শিখপ্তিনী। ১॥

॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ নর্ভনা গৃহং নাাস অস্থে সুজিনাতাৎ স্টোলতং স্থেনজ্মন ॥ ২৪ ॥

> ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ২ট ভিংশোহধ্যায়ঃ॥ ৩৬¶

মাল্যং মালামাল্যং কুস্থম তংশ্রজে, রিতি মেদিনী স্থদক্ষিণ ভাতৃচ্ছকান্থ বর্ত্তিনা দক্ষিণা দক্ষিণােদ্যুত সরলচ্ছক বর্তি পিতি মেদিনী বেদিবং
বিলম্প্রঃ কুণােমধ্যাে যদ্যাঃ সা পদ্ম পত্রাভিনবাশিখতিনীতি প্রাচীন
পাঠঃ পদ্ম পত্রাভ নিভা পদ্ম পত্রেষ্থ মাভাতীতি পদ্ম পত্রাভা লক্ষীঃ বদং নিভাদীতি র্যাঃ সা যেতু পদ্ম পত্রাভং মরকতং ত্রিভাং শামাা
মিতি ব্যাচধ্যঃ তেবাং কন্কোজ্বল ও চ মিতি বাক্য শেষেণ বিরোধ স্পঞ্চঃ
শিখতিনী ময়ুর পিচ্ছা লঙ্কারবতী ॥ ১॥

তন্ত্ৰীশুভাঙ্গী মণিচিত্ৰমেখলা. মৎস্যস্য রাজ্ঞা ছুট্রতা শ্রেষারতা। তন্ত্রিগারমরালপক্ষা.. শতহ্রদা মেঘমিবার্গপদ্যত ॥ ২ n সা হস্তিহস্তোপমসংহতোক, রনিন্দিতা চারুদতী স্থমধ্যমা। আসাদ্য তং বৈ বরমাল্যধারিণী, পার্থং শুভা নাগরধূরিব দিপম্॥ ৩॥ সা রত্নভূতা মনসং ভিযোরতা, স্থতা বিরাট্য্য যথেক্সলক্ষ্মীঃ। সুদর্শনীয়া প্রমুখে যশস্থিনী, ' প্রীত্যাব্রবীদর্জ্জুনমাযতেক্ষণা ॥ ৪॥ সুশোভনোক্ত কনকোজ্বর্গবুচং, পার্থঃ কুমারী∾ স তদাভাভাষত । কিমাগমঃ কাঞ্চনমাল্যধারিণি, মুগা কিং ত্বং ত্বরিতেব ভাবিনি। किए प्रथ॰ यूना दि न अमन माठक उद्धः सम मोखसङ्गत ॥ ७॥ বৈশম্পায়ন উবাচ। म जार मुखी विभागाकीर ताजभूजीर मधीर मधा।

স তাং দৃষ্ট্ব। বিশালাকীং রাজপুত্রীং স্থা। •
প্রহুসন্নত্রবীদাজন কিমাগমনসিভ্যুত ॥ ৬॥

আরাল পক্ষা বক্তাকি পক্ষা শত হ্রদ। বিহার । ২ ॥ ৩ ॥ প্রমুখে আরে ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ কিং কিমর্থং আগ্রামনং ॥ ৬ ॥

তম ব্রবাদাজপুল্রী সমুপেত্য নর্মভম্। व्यन्यः ভावग्रज्ञी मा मथीमधा हेनः वहः ॥ १ ॥ গাবো রাষ্ট্রম্য কুরুভিঃ কাল্যন্তে নো ইছন্নলে। তান্ বিজেতুং মম ভ্রাতা প্রযাস্যতি ধরুদ্ধর: ॥ ৮॥ * নচিরঞ হতস্তদ্য সংগ্রামে রথসার্থিঃ। তেন নান্তি সমঃ স্থতো যোহ্স্য সার্থ্যমাচরেৎ ॥ ৯॥ তশ্মৈ প্রযতমানায় সার্থ্যর্থ বুহন্নলে। আচচক্ষে হয়জ্ঞানে দৈরক্ষ্রী কৌশলং তব॥ ১১॥ অর্জুনস্য কিলাদীস্তু ৭ সারথিদিরিতঃ পুরী।. च्याक्रयः महास्मन पृथिवी । পा खवर्षकः ॥ ১১ ॥ না সার্থাং কুরু ভাতুর্ম্ম সাধু রুইন্নলে। দুরাদ্ধ রতরং মাবো ব্রিয়ন্তে কুরুভিধি নং । ১২। অথৈতদ্বচনং মেহদ্য নিযুক্তা ন কুরিষ্যদি। প্রব্যাত্রচ্যমানা ত্ব^ পরিতাক্ষ্যামি জীবিতমু॥ ১৩॥ এবমুক্তন্ত স্থশ্রোণ্যা তয়া সখ্যা † পুনঃপুনঃ। জগাম রাজপুত্রস্য সকাশমমিতৌজসঃ ॥ ১৪॥ ত^ সা ব্রজন্তং ত্রিতং প্রভিন্নমিব কুঞ্জরম্। অনুগচ্ছিশাল।ক্ষী ‡ গজং গজবধূরিব ৫ ১৫॥ দুরাদেব তু তাং প্রেক্ষ্য রাজপুত্রোহভ্যভাষত। ত্বয়া সার্থিনা পার্থঃ খাপ্তবেহ্বিমতপ্রং॥ ১৬॥

প্রান্থ বিনয়ং ভাবয়ন্তী দর্শয়ন্তি॥ १॥ ৮॥ ১॥ ১০॥ ১১॥ যাবৎ গাবে। দূরতরং ক্রিয়ন্তে ততঃ প্রাণেষ সাইধ্যং কুক ॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥ ১৬॥

^{*} নচিরমিত্যত্ত নাচির মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কু পুন পুনরিত্যত্ত পরন্তপ ইন্তি পাঠঃ খপুস্তকে।

[‡] গজমিতাত শিশু মিতি পাঠঃ শ্বপ্তকে।

পৃথিবীমজযৎ ক্লংসাণ কৃতীপুজো ধনপ্লয়:।

কৈন্দ্ৰী ত্বাং সমাচটে সা হি জানাতি পাণ্ডবান্॥ ১৭॥
সংযক্ত মামকানশ্বাংস্তথৈব ত্বং বৃহন্নলে।
কুরুভির্যোৎস্যমানস্য গোধনানি পানীপ্রতঃ ॥ ১৮॥
অর্জুনস্য কিলাসীস্তৃং সার্থিদিয়িতঃ পুরা ।
ত্বাজয়ৎ সহাযেন পৃথিবীৎ পাণ্ডবর্ষভঃ॥ ১৯॥
এবসুক্রা প্রভুগোত রাজপুলুৎ বৃহন্নলা।
কা শক্তির্মা সার্থাং কর্তুং সংগ্রাম মুদ্ধনি॥ ২০॥
গীতং বা যদি বা নৃত্যং বাদিকং বা পৃথক্বিধম্।
তৎকরিষ্যামি ভদ্রন্তে সার্থাং তু কুতো শমরি॥ ২১॥
উত্তর টুবাচ।

† গায়নো নর্ত্তনো বাপি বাদনো বা পুনর্ভব। ক্ষিপ্রং মে রথমাস্থায় নিগৃক্টীম্ব হযোত্তমান্॥ ২২॥ বৈশম্পায়ন উবাচ।

স তত্র নর্দ্মগংযুক্তমকরোৎ পার্প্তবো বছ।
উত্তরাযাঃ প্রমুখতঃ সর্বাং জানন্দ্রিক্দমঃ॥২০॥
উর্দ্ধন্দ্রংক্ষিপ্য কবচ∾ শরীরে প্রত্যমুঞ্চত।
কুমার্যাস্তত্র তং দৃষ্ট্বা প্রাহসন্ পৃথুলোচনাঃ॥২৪॥
স তু দৃষ্ট্বা ‡ পিনহাস্ত∿ স্বযমেবোত্তরস্তদা।
কবচেন মহাহে্ণ সমনহাধৃহন্নলাম্॥২৫॥

11 29 11 25 11 25 11 25 11 25 11 26 11 26 11

^{*} ময়ীত্যত্ত মমেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] গায়নো নর্তনো বাপি বাদনো বা পুনর্ভবেত্যত্র রহরলে গায়নোবা নর্তনোবা পুনর্ভবেতি পাঠঃ খ প্রস্তিকে।

[🗜] পিনছন্তমিত্যত্র বিমুখন্তমিতি পাঠঃ থ পুন্তকে।

বভার কবচং চাগ্রাৎ স্থমপ্যৎশুসংপ্রভ্য়।
ধজং সিংহৎ সমুচ্ছিতা সার্থাং সমকপ্রথ ॥ ২৬ ॥
ধলুং বি চ মহার্থি বাণাংশ্চ রুচিরার্ন্ বহুন্।
আদায প্রযথৌ বীরঃ স রহন্নসার্থিঃ ॥ ২৭ ॥
অথোন্তরা চ কন্যাশ্চ সথ্যসাক্রবংস্তদা।
রহন্নলে আন্যেথা বাসাংসি রুচিরাণি চ ॥ ২৮ ॥
পাঞ্চালিকার্থং চিত্রাণি স্থানাণি চ মৃদূনি চ। '
বিজিত্য সংগ্রামগতান ভীয়াটোণমুখান কুরন্॥ ২৯ ॥
এবং তা ক্রবতীঃ কন্যাঃ সহিতাঃ পাণ্ডুনন্দন।।
প্রত্যবাচ হসন্ পার্থো মেঘতুন্তুভিনিস্থনঃ ॥ ৩০ ॥
রহন্নলো্বাচ।

যত্ন্যন্তরোহ্যং সপ্রামে বিজেষাতি মহারথান। তদাহরিষ্যে বাসাপ্সি দিব্যানি রুক্তিরাণি চ॥ ৩১॥ বিশক্ষায়ন উবাচ।

এবমুক্ত্বা তু বীভৎস্কস্ততঃ প্রাচোদযদ্ধবান্। কুৰনভিমুখঃ শূরো নানাধ্বজপতাকিনঃ॥ ৩২॥ তমুক্তরং বীক্ষা রথে।ত্তমে স্থিতং,

র্হন্নলাবাঃ সহিতং মহাভূজম্। স্ত্রিযশ্চ কন্যাশ্চ দ্বিজাশ্চ স্তব্রতাঃ, প্রদক্ষিণঞ্চকুরখোচুরঙ্গনাঃ॥ ৩৩॥

॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ পাঞ্চালিকার্থং পাঞ্চালিকা পুত্তিকাদা। দ্বস্ত্র দন্তা দিতি ক্তিতামরঃ ॥ ২৯ ॥ ৩০ ॥ ৩১ ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ যনজ্নস্যৰ্যভভুলাগামিনঃ,
পুরাভবৎ থাগুবদাহমক্ষম।
কুৰন্ সমাসাদ্য র্নে বৃহন্নলে,
সহোজ্বেনাস্ত ভদদা মক্ষলম্ ॥ ৩৪ ॥
ইতি বিরাটপর্মনি গোহরণপর্মনি উত্তর্গোগ্রহে
উত্তরনির্যানে সপ্ততিশ্ভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৭ ॥

বেশপায়ন উবাচ।
স রাজধান্যা নির্যাঘ বৈরাটিরকুতোভয়ঃ।
প্রযাহীতাক্রবীৎ স্থত শ্বত তে কুরবো গতাঃ॥ ১॥
সমরেতান কুরন্ সর্বান্ বিদ্বিগীঘূন্ বিজিতা বৈ।
গান্তেধাং ক্ষিপ্রমাদায় পুনরেষ্যাম্যহ পুরম্॥ ২॥
ততন্তা শেচাদ্যামাস সদক্ষান পাতুনন্দনঃ।
তে হ্যা নরসি হেন নোদিতা বাত্র হ্যান ।
আলিখন্ত ইবাকাশমূহঃ কাঞ্চনমালিনঃ॥ ৩॥
নাতিদূরমথো গত্বা মৎস্যপুত্রধনপ্রথা।
অবেক্ষতামমিত্রশ্বৌ কুরনাং বলনাং বলম্॥ ৪॥
শ্বাশানমভিতো গত্বা আসসাদ কুরনথ।
উ তৎসমীপে স্বৈক্ষেতাং বূঢ়ানীকঞ্চ সর্বশঃ॥ ৫॥
১০৪॥

ে ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে সপ্ততিংশেহধায়ঃ॥ ৩৭॥

महेि ॥ ১॥ २॥ ०॥ ८॥ ৫॥

^{*} তৎসমীপে ও বৈক্ষেতা মিতাত্র তাংশমীমধ্বীক্ষেতামিতি পাঠঃ খুপুস্তকে।

তদনীক মহতেষা শ বিতত শাগরস্বনয়।
সর্পমাণমিবাকাশে বনং বছলপাদপম্ ॥ ৬॥
দদৃশে পার্থিবো রেণুজ্জনিতস্তেন সর্পতা।
দৃষ্টিপ্রাণাশো ভূতানাং দিবস্পৃক্ কুরুসন্তম ॥ ৭॥
তদনীকং মহদ্দ্ গাঁ গজাশ্বরথসঙ্কুলম্।
কর্ণ তুর্যোধনক পৈগু প্রং শান্তনবেন চ ॥ ৮॥
দোণেন চ সপুজেণ মহেছাসেন ধীমতা।
হৃষ্টরোমা ভ্যোদিয়ঃ পার্থং বৈরাটিরব্রবীং ॥ ৯॥
উত্তর উবাচ।

নোৎসহে কুরুভির্যোদ্ধ্ রোমহর্ষণ পশ্য মে।
বহুপ্রবীরমত্যপ্রং দেবৈরপি ছুরাসদম্॥ ১০॥
প্রভিযোদ্ধ্ ন শক্ষামি কুরুসৈন্যমনন্তকমু।
নাশংসে ভারতী সেনা প্রবেষ্ট্র ভীমকামুকাম্॥ ১১॥
রথনাগাম্বকলিলাং পত্তিশ্বজ্পমাকুলাম্।
দৃষ্টে ব হি † পুরোযাতাং মনঃ প্রব্যুথতীব মে॥ ১২॥
যত্র জোলন্চ ভীশ্বন্দ রূপঃ কর্ণো বিবিংশতিঃ।
অশ্ব্যামা বিকর্ণ সোমদন্তক বাহ্লিকঃ॥ ১৩॥
দুর্যোধনন্তথা বীরো রাজা চ রথিনাম্বরঃ।
দুর্তিমন্তে! মহেম্বাসাঃ সর্বের যুদ্ধবিশারদাঃ॥ ১৪॥

অতি বেগেন আকাশে ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ হাফ রোমা রোমা ঞিতঃ ॥ ৯॥ নোৎসহে ইতাত্ত হেছুমাহ বহ্নিতি ॥ ১০॥ ১১॥ কলিলাং গহণাং ॥ ১২॥ ॥ ১৩॥ ১৪॥

^{*} বিভতং সাগরস্থন মিত্যত্ত বিবক্তো সাগরোপম মিতি পাঠঃ ধ পুস্তকে

[🕆] পুরোযাতামিতাত্র পরা নাজে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

দুকৈ, ব হি কুরনেতান্ ব্যুচানীকান্ প্রহারিণঃ। ক্ষিতানি চ রোমাণ্ কশালঞাগত মন॥ ১৫॥ বৈশলায়ন উবাচ।

অবিজাতো বিজাতস্য মৌর্যাৎ ধূর্ত্তিস্য পশ্যুতঃ।
পরিদেবরতে মন্দঃ সকাশে সব্যুসাচিনঃ ॥ ১৬ ॥

দ্বিগুর্ত্তান্মে পিতা যাতঃ শূন্যেহস্মিন্ সনিধার মাস্।
সর্বাং সেনামুপাদার ন মে সন্তীহ সৈনিকাঃ ॥ ১৭ ॥
সোহহমেকে। বহুন্ বালঃ কৃতান্ত্রানকৃতপ্রমঃ।
প্রতিযোদ্ধ্র ন শক্ষ্যামি নিবর্ত্তস্ব বৃহন্তা ॥ ১৮ ॥

ব্ৰহনলো বাচ।

ভয়েন দীনকপোহ সি দ্বিষতাং হর্ষবর্দ্ধনঃ।
ন চ তাবং কৃতং কৃঞ্চিং পরেঃ কর্ম্ম রণাজিরে॥ ১৯॥
স্বযমেব চ মানাথ বহ মাং কৌরবান্ প্রতি।
সোহহং স্থামদ্য † নেষ্যামি যতৈতে বহুলস্বজাঃ॥ ২০॥
মধ্যমানিষগৃদ্ধানা কুক্রণামাততাযিনাম্।
নেষ্যামি স্থাং মহাবাহো পৃথিব্যানপি যুব্যতাম্॥ ২১॥

কশলং নৃদ্ধি ॥ ১৫ ॥ অবিজাতঃ জাতং সামান্যং বিগতং যন্মাৎ সবি-জাতোহ সাধারণঃ তদন্যো হবিজাতঃ সাধারণঃ প্রাকৃতঃ প্রাচান্ত সরকারঃ পাচঃ তদাবিয়াতো প্রফঃ প্রফে প্রফু বিয়াতন্চেতামরঃ অবিয়াতো প্রগল্ভঃ ধূর্ত্তস্য চ্ছদ্মশ্রেশ ধারিণঃ ॥ ১৬ ॥ ১৫ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ আমিষং মাংসং তত্র যথা গৃধুাঃ পতন্তি ততুল্যানাং পৃথিব্যাং নিমিত ভূতারাং এতে-নাপ্রভাবি সংগ্রামে স্থিবাং নেদ্বামীত্বাক্তং ॥ ২১ ॥

^{*} ত্রিগর্ভা নিত্যস্য প্রাক্ উত্তর উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ক অন্যেত্যত্ত তত্ত্তি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তথা স্ত্রীষু প্রতিশ্রুতা পৌরুষ পুরুষেষু চ।
কথমানোহ ভিনির্মুখ কিমর্থং ন যুযুৎ দুসে ॥ ২২ ॥
ন চেদ্বিজ্ঞিতা গাস্তাস্ত্রং পূহান বৈ প্রতিষাম্বাসি।
প্রহ্মিষ্যন্তি বীরাস্ত্রাং নরা নার্যান্ত সঙ্গভাঃ ॥ ২৩ ॥
অহমপ্যক্র সৈরস্বায় থ্যাতা সার্থ্যকর্মনি।
ন চ শক্ষ্যাম্যনির্জিত্য গাঃ প্রযাতুং পুরং প্রতি॥ ২৪ ॥
স্তোত্রেণ চৈব সৈরস্ক্যান্তব বাক্যেন তেন চ।
কথন যুধ্যেষ্মহং কুরন্ সর্কান্ স্থিরো ভব ॥ ২৫ ॥

উত্তর উবাচ (

কামণ হরস্ত মৎস্থানাং ভূষাংসঃ কুরবোধনম।
প্রহসন্ত চনাণ নার্যোনরা বাঁপি রুছরলে॥ ২৬॥
সংগ্রামে র হি মে কার্যাং গাবো গচ্ছস্ত বাঁপি মে।
শ্নাং মে নগরং চাপু পিভুশ্তিব বিভেম্যহ্য॥ ২৭॥

বৈশস্পায়ন উবচ।

ইত্যুক্তাপ্রাদ্রবন্ধীতো রথাৎ প্রক্ষান্য কুগুলী।।
 ত্যক্ত্বা দর্পঞ্চ মানঞ্চ বিষ্কৃত্য সশর্ব ধরুঃ॥ ২৮॥

রহরলোবাট।

নৈষ † পূর্বিঃ স্মৃতো ধর্মঃ ক্ষত্রিয়ন্ত্র পলায়নম্। . শ্রেয়ন্তে মরণং যুদ্ধে ন ভীতন্ত প্রায়নম্॥ ২৯॥

অভি নির্ধাতি নির্বাচন মুমুৎকরে বিলুং নেক্সি ॥ ২২ ॥ ২৬ ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

^{*} ইত্যক্ত্ব ইত্যস্য প্রাক্ নিবর্তয় রথং ন্দূর্ণং ছদয়ং মে বিদীর্যাতে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ণ পূর্বেরিভাত্ত শুরৈরিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

. दिनन्त्रात्रं केवा ।

এবগুক্তা তু কৌত্তেষঃ ধেনাহবপ্লত্য রথোভামাৎ। তমস্বধাৰদ্বাবস্তং রাজপুলাং ধনপ্রয়া ॥ ৩০॥ দীর্ঘাৎ বেণী বিধুম্বানঃ সাধু রক্তে চ বাসসী ! বিধৃয় বেণীং ধাবস্তমজানস্তোইৰ্জ্জুন্ তদা 🛭 ৩১ 🗈 সৈনিকাঃ প্রাহ্মন কেচিত্তথারপমবেক্ষ্য তম। ত্মশীঘ্রমভিধাবন্ত সংপ্রেক্ষ্য কুরবোধ্রুবন্ । ৩২॥ ক এষ বেশপ্রচ্ছনে। ভস্মনেব হুতাশনঃ। কিঞ্চিদস্য যথা পুৎসঃ কিঞ্চিদস্য যথা স্ত্রিয়া:ৰা ৩৩॥ সাৰপ্যমৰ্জ্জনস্যের ক্লীবৰূপৎ বিভৰ্ত্তি চ। তদেবৈতচ্ছিরো গ্রীবং তৌ বাছু পরিঘোপমৌ। **उद्याम विकास्य नायम (ना। ४नश्रमाय ॥ ७३ ॥** जगरतिष्व (परविद्या मानूरियम् वनक्षसः। একঃ কোহস্মানুপাযাযাদন্যো লোকে ধনঞ্জাৎ। ৩৫। একঃ পুত্রে। বিরাট্ন্য শূন্যে সলিছিতঃ পুরে। স এব কিল নির্যাতো বালভাবার পৌরুষাৎ॥ ৩৬॥ সত্তেণ ভূনং ছন্নং হি চরন্তে পার্থমর্জুনম। উত্তরঃ সার্থিং কৃত্বা নির্যাতো নগরাছহিঃ॥ ৩৭॥ म ता मन्तामरह मृष्ट्री बीठ वर्ष शनायर । তং ভূনমেষ ধাবস্ত^ জিমৃক্তি ধনপ্লয়ঃ 👉 ॥

रेव**मन्नाशन छे**राह।

ইতি মা কুরবঃ সর্বে বিমূশন্তঃ পৃথক্ পৃথক্। নচ বাবসিতুং কিঞ্ছিত্তরং শঙ্গুবান্ত তে। এই।

1 40 1 90 1 90 11 90 11 90 11 90 11 90 11 90 11

ছনং তথা তু সত্তেণ পা গুবং প্রেক্ষ্য ভারত।
উত্তরস্ত প্রধাবস্তমনুদ্রত্য ধনপ্রয়:।
গত্বা শতপদং তূর্ণ কেশপক্ষে পরাম্বং ॥ ৪০ ॥
সোহজ্বনন পরাম্ক: পর্যাদের্যদার্ত্তং।
বছলং রূপণঞ্চৈব বিরাট্যা স্বতস্তা॥ ৪১॥

উত্তর উবচে ৷

শৃণুরান্ত । হি কল্যাণি বৃহন্নলে স্থমধ্যমে।
নিবর্ত্তর রথং শীদ্রং জীবন ভজাণি পশ্যতি॥ ৪২॥
শাতকুন্ত্রস্য শুদ্ধস্য শতনিষ্কং দদামি তে।
মণীনফৌ চ বৈদ্র্যান্ হেমবদ্ধান্তাল্ ৪০॥
হেমদপ্তপ্রতিচ্ছন রথং যুক্তপ্রতিঃ।
মন্তাশ্চ দশ মাতক্ষান্ মুঞ্চ মাং ত্বং বৃহন্নলে॥ ৪৪॥

্বৈশৃম্পায়ন উবাচ।

এবসাদীনি বাক্যানি বিলপান্তম্ন চেতসম্।
প্রহ্মবাতো রথস্যান্তিক্মানমং॥ ৪৫॥
অবৈনমন্তবীৎ পার্থে ভ্রার্ডং নক্ত চেত্রম্।
যদি নোৎস্হসে মোজং * কুক্লভিঃ শক্ত কর্ব।
এহি মে ত্বং হয়ান্ যক্ত যুধামানস্য শক্তভিঃ॥ ৪৬॥
প্রযাহেত দেখানীক মদান্তবলর কি তঃ।
অপ্রধ্যাতমং ঘোর ২৩৩ং বীরের্মহার থৈঃ॥ ৪৭॥
মা ভৈত্বং রাজপুল্রাগ্র্য ক্ষলিয়োহসি পরন্তপ।
কথং পুরুষশার্দ্ধি শক্তমধ্যে বিঘীদ্ধি॥ ৪৮॥
৪০॥ ৪১॥ ৪২॥ ৪০॥ ৪৪॥ ৪৫॥ ৪৬॥ ৪৬॥ ৪৬॥

* কুক্ডিরিতার শত্রুভিরিতি পাঠঃ খ প্রেকে 🛊

আহন বৈ কুরুভির্যোৎস্যে বিজেষানি চ তে পশুন্।
প্রবিশ্যভদ্রথানীকমঞ্জুষ্যং ছুরাসদম্ ॥ ৪৯॥
যন্তা ভব নরশ্রেষ্ঠ যোৎস্যেহ হং কুরুভিঃ সহ।
এবং ক্রবানো বৈরাটিং বীভৎসুরপরাজিতঃ।
সমাশ্বাস্য মুহুর্ভন্তমুন্তর শ প্রভাপদ্যত ॥ ৫০॥
তত এনং বিচেইতমকামন ভয়পীডিতম্।
রখমারোপরামাস পার্থঃ প্রহরতাম্বরঃ॥ ৫১॥
ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণপর্বানি উত্তর গোগ্রহে উত্তরাশ্বাসনে অই ত্রিংশ্রুমোহ্ব্যায়ঃ॥ ০৮॥

বৈশস্থায়ন উবাচ।

তং দৃষ্ণী ক্লীববেশেন রথস্থ নরপুক্সবম্।
শনীমভিমুখং যান্তং রথমারোপ্য চোভরম্॥ ১॥
ভীমদ্রোণমুখান্তর † কুরুণাং রথসন্তমাং।
বিত্রন্তমনসং সর্কের ধনপ্তর্মকৃতিন্তিয়াৎ॥ ২ ॥
ভানবেক্ষ্য হতোৎসাহান্ত্রপোভানপি চাচুতান্।
গুরুং শস্তভ্তা শত্রে ভারবাজোহভ্যভাবত॥ ৩॥

11 83 11 00 11 68 11

ইতি বিরাট পশান নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে অফটারংশোধধ্যায় ॥ ৩৮ ॥

ভিমিভি ॥ ১॥ ২॥ ৩॥

* প্রতাপদ্যতে তাত্র ভরতর্যভেতি পাঠঃ ধ য প্রস্তরোঃ। কু কুরণাং রথসন্তমা ইডাত্র কুরবো রথিসত্তমা ইতি পাঠঃ ধ পুস্তকে। চণ্ডাশ্চ বাতাঃ সংবান্তি জক্ষাঃ শর্করবর্ষিণঃ। ভস্মবর্ণ প্রকাশেন তমসা সংর্তন্নভঃ ॥ ৪ ॥ बक्कवर्गाण्ड जलमा मृगारस्ट स्ट उपर्णनाः নিঃসরস্থি চ কোষেন্তাঃ শস্ত্রাণি বিবিধানি চ॥ ৫॥ শিবাস্চ বিনদরোতা দীপ্তায়াং দিশি দাঞ্চণাঃ। হয়াশ্চ,শ্রুণি মুগুতি ধুজাঃ কম্পন্ত্যকম্পিতাঃ॥ ৬॥ ঈদৃশানাপি ৰূপাণি দৃশ্যন্তে স্ববহুন্যপি। যন্তা ভবন্তন্তিষ্ঠন্ত সাধুসং সমুপ্তিত্য ॥ ৭ ॥ রক্ষধ্যপি ঢাত্মান । বৃহেধ বাহিনীমপি। বৈশসঞ্চ প্রতীক্ষধ্বং রক্ষধঞাপি গোধনমু ॥ ৮ ॥ এষ বীরো মহেছাসঃ সর্বশস্ত্রভূতাম্বরঃ। আগতঃ ক্লীববেশেন পার্থো নাস্ত্যত্ত সংশয়॥ ১॥ नमीक लाक्ष्म वनाति (कजूर्नशास्त्रशानाम नशातिस्त्रः। এবোঞ্চনা বেশধরঃ কিরীটা জিত্বাবর্ত নেষ্যতিচাদ্যগাবঃ । ১০। म अब शार्था विकालः मवामानी शतस्त्रभः। নাযুদ্ধেন নিবর্ত্তে সর্কৈরপি স্করাস্করৈঃ॥ ১১॥ ক্লিশিতশ্চ বনে শূরো বাদবেন চ শিক্ষিতঃ। অমর্থবশমাপলো বাদবপ্রতিমো যুধি। নেহাস্য প্রতিযোদ্ধারমহং পশ্যামি কৌরবাঃ । >২ ।

ু৪॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ বৈশসং বৈরং মুদ্ধেকদনং বা॥ ৮॥ ৯॥ নদীজেতি । হেনদীজ গালের হে ভীম্ম লক্ষেশসা রাবণুস্তা বনং তস্যারি নাশকো হত্তমান্ সঃকেতুর জোযস্য সং লক্ষেশ বনানিকেতুং নগো রক্ষণ্ড লাক্ষের রক্ষ নামা নামেতি বিতর্কে নিশ্চিতং বা অর্জুন ইত্যুর্থং শৈল রক্ষো নগাবগাবিত্যমরঃ ; নগারিরিক্রস্তস্যত্ত্বং এবং অজনাবেশধরং কিরীটা এতরামা রংজিত্বা বং যুম্মাকংগাঃ ধেনুং নেষাতি তংহ্যোধনংক্ষাব পালয়ঃ॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥

^{*} সএষ পার্থো বিক্রান্ত ইতাস্য প্রাক্ নদীজেত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

মহাদেবোহপি পার্থেন ক্রমতে মুধি তোবিতঃ। কিরাতবেশপ্রচ্ছনে। গিরৌ হিমবতি প্রভুঃ॥১৩॥

কণ উবাচ।

সদা ভবান কাল্গুনস্য গুণৈরস্মান্ বিকপদে। ন চার্জুনঃ কলাপূর্ণো মম ছুর্যোধনস্য বা । ১৪ ।

इर्द्याधन छेवाह।

যদ্যেষ পার্থে। রাধেয় ক্তুকার্যাং ভবেরুম।
জ্ঞাতাঃ পুনশ্চরিষ্যন্তি দ্বাদশান্দান বিশাম্পতে ॥ ১৫॥
অথৈব কন্চিদেবান্যঃ ক্লীববেশেন মানবঃ।
শরৈরেনণ স্থানিশিতৈঃ পাত্রিষ্যামি ভূতলে॥ ১৬॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

তিমান ক্রবতি তথাক্যং ধার্ত্তরাষ্ট্রে পরন্তপ।
ভীমো দোণ: ক্রপো দৌণি: পৌরুষং তদপূজয়ন্॥ ১৭॥
ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তর পোত্রহে অর্জ্জন
প্রাণ-সায়া মেকোন চত্তারিংশত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৩৯॥

रिकाम्भाशन छेवाँछ।

তাং শমীমূপসঙ্গমা পার্থো বৈরাটিযত্তবীৎ। স্থকুমারং সমাজ্ঞায় সংগ্রামে নাতিকোবিদম্॥ ১॥

। ১৯ । কলাবোড়লোছংশঃ পূর্ণঃ ক্বংমা । ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥
ইতি বিরাট পর্কাশ নৈলকগীয়ে ভারত ভারদীপে

একোনচন্তারিংলোহধ্যায়ঃ ॥ ৩৯ ॥

তামিতি৷ ১ ৷

गर्भाषिको भया किथः धनुष्यावहरतालत । নেমানি হি ত্বদীয়ানি সোত্ৎ শক্ষান্তি মে বলম্। ভারঞাপি গুরুং বোঢুং কুঞ্জরাশ্বান্ প্রমাদিতুং ॥ ২ ॥ মম বা ব ছবিকেপং শত্র নিহ বিজেষাতঃ। তত্মান্ত্রিঞ্যারোহ শমীমেতাং প্রলাশিনীম্।। ৩ ॥ অস্তাৎ হি পাণ্ডপুত্রাণাৎ ধনুৎ যি নিহিতান্তাত। यूर्विष्ठित्रक जीमक वीज्रामार्यम्याख्या ॥ ८ ॥ ধজাঃ শরাশ্চ শূরাণাং দিব্যানি কবচানি চ। অত্র চৈব মহাবীর্যাং ধনুং পার্থক্ত গান্তিবঁম্ ।। ৫॥ একং শতসহত্রেণ সন্মিতং রাষ্ট্রবর্দ্ধনম্। ব্যায়াম সহমত্যর্থং ভূণরাজসমঃ মহৎ॥ ৬॥ সর্কাযুধমহামাত্র শক্রসম্বাধকারকম্। স্থবর্ণবিক্ষত দিব্যং শ্লক্ষমাযতমব্রগম্ । १॥ অলং ভারং গুরুং বোচ । দারুণং চারুদর্শনম্ । তাদৃশান্যেৰ সৰ্বাণি বলৰম্ভি দৃঢ়ানি চ। যুধিষ্ঠিরস্থ ভীমস্থ যমযোশ্চ তথোত্তর ॥ ৮ ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তরগোগ্রাহে অর্জুনা-স্ত্রকথনে চত্তারিংশস্তমে। হথ্যায়ঃ ॥ ৪০॥

ক্ষাবছর অবতারয় ॥২ ॥ বাছবিক্ষেপংশোচুং নশক্ষান্তী-তি সম্বন্ধঃ॥ । ভূমিঞ্জাহেউত্তর পলাশিনীং বহুপত্রবজীং॥ ৩॥৪॥৫॥ ত্রারাজন্তাল ন্তংনমং॥৬॥মহামাত্রং অতি প্রমাণং॥৭॥৮॥

> ইতি বিরাট পর্কান নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চত্বাবিংশোহধ্যায় ॥ ৪০॥

উত্তর উন্গ্রাচ !

অন্মিন রক্ষে কিলোদ্ধং শরীরমিতি নং শ্রুতম্।
তদহং রাজপুত্রঃ সন্ শ্রুশেষং পাণিনা কথম্। ১॥
নৈব্যিধক মথা যুক্তমালকাং ক্ষত্রযোদিনা।
মহত রাজপুত্রেণ মন্ত্রতবিদা সদা॥ ২॥
শ্রুটবন্তং শরীরং মাং শ্ববাহমিবাশুচিম্।
ব্রথমব্যবহার্যাং বৈ কুর্বীথাস্ত্রং রহন্তে॥ ৩॥

বুহন্ন(লাগ্চ।

ব্যবহার্যাশ্চ রাজের্ক্স শুচিশ্চৈব ভবিষ্যসি। ধনুশ্ব্যতানি মা ভৈস্তুশ শ্রীরং নাত্র বিদ্যতে ॥৪॥ দাযাদং মহস্তরাজস্ত কুলে জাতশ মনস্থিনম। কথং ত্বাশ নিন্দিতং কর্মা কার্যেয়শ নূপাত্মজ ॥৫॥

रिवमस्थातंन छैलाह।

এবমুক্তঃ দ পার্থেন রথাৎ প্রক্ষন্য কুগুলী।
আরুরোহ শানীরক্ষং বৈরাটিরবশস্তদা॥ ৬॥
তদস্থশাসচ্চক্রমে। রথে তিন্ঠন্ ধনপ্রয়ঃ।
অবরোপয রক্ষাগ্রাজনুংযোতানি মা চিরম্॥ ৭॥
পরিবেন্টনমেতেষাং ক্ষিপ্রং চৈব ব্যপানুদ।
গোহপহৃত্য মহার্থানি ধনুং যি পৃথুবক্ষদাম্।
পরিবেন্টন প্রাণি বিনুচ্য সমুপানষ্থ ॥ ৮॥
ততঃ সরহনানোষাং পরিমুদ্য সমন্ততঃ।
অপশ্রদায়ি গ্রব্ তর চতুর্ভিরপর্টাঃ সহ ॥ ৯॥

অশিরিতি॥ ১॥ আলর १ শুস্ট १॥ २॥ ৩॥ ৪॥ দারাদং পুত্রং॥ ৫॥ ॥ ৬॥ ৭॥ অপহতা রক্ষাদধ আনীর ॥ ৮॥ সং নহনানিধন্ত্রাং বন্ধনানি

তেষা বিমুচ্য মানানা ধরুষামর্কবর্চ দামু।
বিনিশ্চের: প্রভা * বিদ্যা প্রহাণামুদয়ে থিব ॥ ২০॥
স তেবাং রূপ মালোক্য ভোগিনাথিব জুন্তভাম।
ক্রেটরোমা ভযোদ্বিমঃ ক্ষণেন সমপদ্যত॥ ১১॥
সংস্পৃত্য তানি চাপানি ভারুমন্তি বৃহন্তি চ।
বৈরাটিরক্জনং রাজনিদং বচনমন্ত্রী ॥ ১২॥

ইতি বিরাটপর্কাণি গোহরণপর্কাণি উত্তরগোর্তাহে অত্রা-রোপণে একচন্থারিংশত্তমোহধারঃ॥ ৪১॥

উত্তর উষাদে।

বিন্দবো জাতৰূপক্ত শতং যশ্মিরগাতিতাঃ । সহস্রকোটি সৌবর্ণাঃ কব্যৈতদ্বনুরুত্তমন্ ॥ ১ ॥ বারণা যত্র সৌবর্ণাই পুষ্ঠে ভাসন্তি দংশিতাঃ । সুপার্খং সুগ্রহঞ্চৈব কব্যৈতদ্বনুরুত্তমন্ ॥ ২ ॥

11 50 11 50 11 50 11

ইতি বিরাট শর্কণি নৈলক্ গীয়ে ভারত ভারদীপে একচনারিংশোহধায়ঃ ॥ ৪১॥

ক্ষা জাতরপ্যা জাতকীর্ত্তে রূপং স্বভাবে দৌন্দর্ব্য নালোক পশু রন্দরোঃ প্রস্থা রুর্ত্তে নাটকাদাবাকার শ্লোকয়োরপীতি মেদিনী বিন্দবঃ দু সৌবর্ণা ইতি সম্বন্ধঃ সহস্রে সহস্যুত্তাে বলবতাে দীপ্তিমতে নি বা কোটা প্রান্তে যস্য তৎসহস্র কোটি সহোবলে জ্যোতিবি চৈতি মেদিনা সহস্ শব্দমন্ত্রিয়ারপ্রতায়ঃ ॥ ১ ॥ দংশিতাঃ ভাসমানঃ স্থ গ্রহং গৃহতেশিরিতি প্রহোমধ্যং ॥ ২ ॥

^{*} বিদ্যেতাত দিব্যেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তপনীয়স্ত শুদ্ধস্থ * বফির্যস্থে দ্রণাপকাঃ।
পৃষ্ঠে বিভক্তাঃ শোভতে কসৈতদ্বমুক্তমন্॥ ৩॥
স্থাা যত্র চ সৌবর্ণাস্ত্রযো ভাসন্তি দ^শিতাঃ।
তেজ্ঞসা প্রজ্বন্তা হি কসৈতদ্বমুক্তমন্॥ ৪॥
শলভা যত্র সৌবর্ণাস্তপনীযবিচিত্রিতাঃ।
স্থবর্ণমণিচিত্রপ্র কসৈতদ্বমুক্তমন্॥ ৫॥
ইমে চ কস্থানারাচাঃ সাহস্র লোমবাহিনঃ।
সমস্তাৎ কলধোতাগ্রা উপাসঙ্গে হিরণায়ে॥ ৬॥
বিপাঠাঃ পৃথবং কস্য গার্দ্ধপ্রাঃ শিলাশিতাঃ।
হারিদ্রবর্ণাঃ † শতশঃ পীতাঃ সর্বারসাঃ শরাঃ॥ ৭॥
কন্তায়নসিতাবাপঃ পঞ্জার্দ্ধল লক্ষ্ণঃ।
বরাহকর্ব্যামিশ্রান্ শরান্ ধার্যতে দশ॥ ৮॥

তপনীয়য়া ছবর্ণমা ইন্দ্রগোপকাঃ কীট রিশেষাঃ রক্ত পীতভাষ্বরর্ণাঃ
॥ ৩ ॥ ৪ ॥ সৌবর্ণাঃ শলভাঃ ছবর্ণঃ রুষ্ণাগকবর্ণং দ্রব্যং মীনা ইতি
দংজ্ঞিতং তয়য়াঃ তেয়ুছ নীলবর্ণেয়ু তপনীয়াখ্য ব্র্পর্ভি ভূষণানি শোভত্তে
ছ্বর্ণাচ রুষ্ণাগক মখান্তরে ইতি বিশ্বঃ ছ্বর্ণমণয়ঃ ব্র্পরিক্ষরঃ শোভন বর্গ মনেথাচিত্রহাদ্বা হ্বর্ণমনিচিত্রহং ॥ ৫ ॥ সাহস্রাঃসহজ্রশঃ সংখ্যা তাঃ লোমবাহিনঃ পত্রবতঃ লোমছেদিন ইতানো উপাসঙ্গে নিবন্ধে ॥ ৬ ॥ বিপাচাঃ স্থূলদণ্ডঃ স্যা দিতি কপ্পক্রঃ গার্পত্র
শৃধু পত্র বাহিনঃ শিলাশিতাঃ শিলায়াং তীক্ষীয়তাঃ পীতাঃ কর্মারেণ
তেরান জলং পায়িতাঃ স্ব্রিয়েশীঃ কেবলং লোহময়াঃ কার্চদণ্ড রহিতা
ইত্যর্থঃ॥ ৭ ॥ বরাহকর্গাকারেঃ শলৈঃ ব্যামিশ্রান্ যুক্তান্ ধারয়তে শরান্
চিত্ররূপানে বেতিভাবঃ ॥ ৮ ॥

^{*} ষ্টি রিত্যত্র পৃষ্ঠে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
† শতশ ইত্যত্ত স্কুম্পা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কন্তেমে পৃথবো দীর্ঘান্টক্রবিষ্ণার্দ্ধনাঃ।
শতানি সপ্ত তিষ্ঠন্তি নারাচ। রুধিরাশনাঃ॥ ৯॥
কদ্যেমে শুকপজাতৈঃ পৃথৈর কৈঃ সুধাসসঃ।
উত্তরৈরায়লৈঃ পীতেঃ (গ্রুমপুর্ট্ডিঃ শিলাশিতৈঃ॥ ১০॥
শুরুজারসহো দিবাঃ শাত্রবানাং ভরস্করঃ।
কস্যায়ং শায়কো দীর্ঘঃ শিলাপৃষ্ঠঃ শিলামুখঃ॥ ১১॥
বৈয়াঘ্রকোষে নিহিতো হেমচিত্রৎ সরুর্দ্মহান্।
সুফলন্টিত্রকোশন্ট কিন্ধিনীশায়কো মহান্॥ ১২॥
কন্তা হেমৎসরুর্দ্দিবাঃ খড়গঃ পরমনির্দ্মলাঃ।
কন্যায়ং বিপুলঃ খড়গো গব্যে কোশে সমর্পিতঃ॥ ১৩॥
হেমৎসরুর্নাপ্তরো নৈবধ্যে ভারসাধনঃ।
কন্য পাঞ্চনখে কোশে শায়কো হেমবিগ্রহঃ॥ ১৪॥
প্রমাণকপদপ্ররঃ পীত আকাশস্ত্রিভঃ।
কন্য হেমময়ে কোশে স্কৃত্তে পাবকপ্রতে॥ ১৫॥

চন্দ্র বিদ্বাদ্ধ বদ্দনিং যেষাং অর্দ্ধনির ইত্যথিঃ ॥ ৯ ॥ পূর্বির কপরিছৈ রহিঃ উপলক্ষিতাঃ স্থাসসঃ স্থাংখা বাণাএন উত্তরৈ রপ্রভাগৈঃ ছেম পৃংখৈ স্বর্ণধারা চিত্রিতৈঃ ॥ ১০ ॥ শিলী ভেকীপৃষ্ঠে চিত্ররূপেণ যস্ত্রপরিচরার্থং শিলীমুখো ভেক্যা মুখ মিব মুখং যস্য সায়কঃ খড়াঃ শরে খড়ােচ সায়ক ইত্যমরঃ ॥ ১১ ॥ বৈরাজ কোশে ব্যাজ্রচর্ম কোশে ৎসকঃ 'খড়াাদি মুফ্টো প্যাদিত্যমরঃ স্থাকলঃ শোভান ভল্লিকঃ ফলং শালাপ্রে বুফি লাভয়াে রিতি বিশ্বঃ কিন্ধিনী যুক্তঃ সায়কঃ ॥ ১২ ॥ গবে গোচর্মজে কুর্মে ইতিবিশ্বঃ ছেম বিপ্রাহ স্থাপে নালং কৃত্দেহঃ ॥ ১৪ ॥ আকাশসন্ত্রিভঃ কৃষ্কভাশ্বরঃ ॥ ১৫ ॥

নিপ্রিন্থাইরং গুরুং পীতঃ নায়কং পরনিপ্রবিঃ।
কদ্যায় মনিতঃ খড়েগা হেমবিন্তুভিরারতঃ॥ ১৬॥
আশীবিষ সমস্পর্শঃ পর্কায় প্রভেদনঃ॥
গুরুভার সহোদিবাঃ সপত্মানাক ভয়প্রদঃ॥ ১৭॥
* নির্দিশ্ব যথাতত্ত্বক মরা পৃষ্টা রহমলে।
বিশ্বয়ো মে পরো জাতো দৃষ্ট্যা সর্বমিদং মহৎ॥ ১৮॥.

* ইতি বিরাট পর্বানি গোহরণপর্বানি উত্তর বাক্যং শাম
দ্বিচন্থারিংশত্তমোহ্যায়ঃ॥ ৪২॥

द्रश्वादाचा ।

যনাং পূর্ব্বিহাপৃচ্ছ: শক্র 1 দেনাপহারিণম।
গাপ্তীবমেতৎ পার্থক্য লোকেবু বিদিত বন্ধঃ ॥ ১॥
সর্বাম্ধমহামাতং শাতকুস্তুপরিষ্কৃত্য।
এতত্তদর্জ্বনন্তাসীদাপ্তীবং পরমাষুধ্য ॥ ২॥
যতচ্চতসহত্তেণ সন্মিতং রাষ্ট্রবর্দ্ধন্য।
যেন দেবান্দ্রব্যাংশ্চ পার্থো বিজয়তে মুধে॥ ৩॥

নিস্তিংশঃ তিংশতো ২ঙ্গুলিভোগ নির্গতঃ তিংশদঙ্গুলাধিকঃ সায়কঃ খড়া। পরেষাংশক্তো নির্গতো ত্রণো যদ্য পরানভিভূতঃ শিক্য ইতি পাঠে পুক্ষদ্বেয়নোহু মানা সাধীতি প্রসিদ্ধা তদ্বোগ্যঃ॥ ১৬॥ ১৭॥ ১৮॥

> ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে দ্বিচ্বারিৎশোহধ্যায়ঃ॥ ৪২

অপহরতীতাপ হারী কালঃ শেভামিরিতাপ হারিণং পামাদি তামত্ত্র-্থীলোন প্রত্যয়ঃ কালরপীতার্থঃ ॥১॥২॥ ধন্ত্যাং শতসহপ্রেণ লক্ষেণ দংমিতং॥৩॥

^{*} নির্দিশ যথাতত্মিতাসভথাক্ ক্সায়মসিতঃ খড়গ ইতি সার্টেকি লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

ণ দেনাপহারিণ মিতাত্র দেন।নিবর্ছণমিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

চিত্রমুক্তাবটের্ব্বাটনঃ শ্লক্ষমায়তমন্ত্রনম্।
কেন্দানবগন্ধবৈঃ পূজিতং শাশ্বতীঃ স্মাঃ॥৪॥
এতদ্বিসহস্ত্র ব্রহ্মা পূর্ব্বমধারয়ং।।
ততোহনন্তরমেবাথ প্রজাপতিরধারয়ং॥৫॥
আনি পঞ্চশতকৈ শক্রোহশীতিঞ্চ পঞ্চ বৈ।
সোমঃ পঞ্চশতং রাজা তথৈব ব্রুনঃ শতম।
পার্থঃ পঞ্চ চ ব্যিঞ্চ বর্বানি শ্বেতবাহনঃ॥৬॥•

॥৪ ৫॥ ত্রীনি বর্ষানি পঞ্চশ্তং বর্ষানি প্রজাপতি রধারয় দিতি সম্বন্ধঃ অত্তরজাদীনা হর্ষাণি দেব মানে নৈব জ্ঞানা যোক্ষমাকং সেরঃ সম্বংসরঃ স তেবামেকং দিন মিতি শাস্ত্র প্রসিদ্ধং পার্থঃ পঞ্চ চ ষ্ঠিঞে ত্যত্রতু বর্ধ শব্দো রৃষ্টিপরঃ তথার্চ সম্বংসরে বর্ষদ্বয়ংজীয়তে তথাছি একেন বর্ষেণ তৃপ্তঃ শর্কি ব্রীষ্থার্ত্ত্বণ করেত্তি অপরেণ তৃপ্তাে বদত্তে যবাগ্রায়নং প্রকৃত্য আশ্বলায়নঃ অন্ত সুদাহরতি অপিহি দেবা আত্-স্ত্রোপুনং বর্ষসা প্রারণেন হি যজত ইতি তথান্যত্রাপি তদেব প্রকৃত্য শ্রুতং ব্রীহিভিরিষ্ট্র ব্রীহিভিরের যজেতা থ যবেভো যবৈরের যজেত ব্রীহিভ্য ইতি এবঞ্চিকশ্মিন সম্বৎসরে কর্কায়নাদ্যেকং বর্ষমপরৎ মকরায় নাদীতি দেবর্কে ততশ্চ সার্দ্ধ দ্বাতিংশতাসম্বংসরিঃ পঞ্চরষ্টিবর্বাণি ভরস্তীতি যুক্তযুক্তং পার্থঃ পঞ্চযক্তিঞ্চ বর্ষাণি এত দ্বন্ত্র্ধারেতি অন্যেতু অতীত মনাগতঞ্জ কালং একীকৃত্য পঞ্চয়ক্তি সম্বংসরং ধরুদ্ধারণং বর্ণয়ন্তি বর্ষোছ ন্ত্রী ভারতা ছেত্র জমুদ্দীপান র্ফিমিতি মেদিনী র্ফিবর্ষমিত্যমরশ্চ তত্ত্ব প্রাচাৎ মতে২গারয়দিতি ভূত কালাত্মপর্শক্তিঃ বক্তঃ কদাচিদায়ু জ্ঞান • কম্পানে পি প্রতি পাতুঃ পারোক্ষ্যেণ র্জুনবরো বিদোহ প্রতি পাত্তিকেতি বিচারনীয়ং অস্মাকভু গাণ্ডীব লাভানস্তরং, গতেয়ু দার্দ্ধদিতিংশরর্ধেয়ু <u>ब्रिकाम नवर्षान वनवारम ब्राज्य कार्य मर्थ भाग्रुषातांत्र ध्विकिमार्ज्यमाः</u> জৌপদী ধর্মরাজকো: সহাসন কালে ২ ভূপ্রবেশ নিমিতে দাদশ বর্গাণ ইতি পঞ্চ বিংশতির্গতানি অন্যান্যপি দিখিজয় রাজ্ত্য় রাজ্যকরণাদি কালে প্রাণেব সার্দ্ধি সপ্ত বর্ষাণি গতানীতি সমুনেরং॥৬॥

মহাবীর্যাং মহদ্বিসমেতদ্ধসুরমুক্তমম্। 🕸 এতৎপার্থমনু প্রাপ্তং বরুণাচারুদর্শনম্॥ । ।। পূজিত^ স্থরমতের্যমু মিভর্ত্তি পরম^ বপুঃ। স্পাশ্বং ভীমদেনস্থ জাতৰপগ্ৰহং ধনু:। যেন পার্থোহজমৎ ক্লৎসাং দিশন প্রাচীং পরন্তপ:॥ ৮ । ইন্দ্রগোপকচিত্রঞ্চ যদেতচারুবিগ্রহম। রাজে। যুধিছিরলৈতেছৈরাটে ধনুরুত্তমম্। ১॥ স্থ্যা যাস্ত্ৰ-স্ত সৌবৰ্ণা প্ৰভাসন্তে প্ৰভাসিনঃ। তেজসা প্রজ্বারো বৈ নকুলক্ষৈত্দাযুধম্॥ ১০ । শলভা যত্র সৌবর্ণাস্তপনিয়বিচিত্রিতাঃ। এতনাদ্ধীস্কতভাপি সহদেবত কার্মিকর ॥ ১১॥ যে ত্রিমে কুরশঙ্কাশাঃ সহস্র লোমবাহিনঃ। এতেহর্জ্জুনস্থ বৈরাটে শরাঃ সর্পবিষোপমাঃ॥ ১২॥ এতে জ্বন্তঃ সংগ্রামে তেজদা শীঘ্রগামিনঃ। ভবন্তি বীরস্থাক্ষ্যা বাহতঃ সমরে রিপূন্॥ ১৩॥ य एटम शृथरवा मोर्चाम्हत्य विश्वार्क्ष मर्भनाः। এতে ভীমস্থ নিশিতা রিপুক্ষয়করাঃ শরাঃ॥ ১৪॥ হারিদ্রবর্ণা যে চৈতে হেমপুস্থাঃ † শরাঃ শিতাঃ। নকুলন্ত কলাপোহয়^ পঞ্চশাৰ্দ্ ললক্ষণঃ॥ ১৫॥

ী ৭ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥ সহজাঃ ১তজ্বিনোদৃঢ়াঃ সহজ্শঃ সংমিতাবা ॥ ১২ ॥ ৰুছেতঃ কিপতঃ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥

^{*} এতং পার্থমন্ত্রাপ্তমিতাশ এতচ মান্ত্রং প্রাপ্ত মিতি পাঠ: ক পুস্তকে।

[†] শরা: শিতা ইতাত্র শিলা শিতা ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

বেনাসৌ ব্যঙ্গয়ৎ ক্লংস্লাং প্রতীচীং দিশমাহবে। কলাপো ছেষ ভষ্ঠানীনাদ্রীপুক্তস্থ ধীমুভঃ॥ ১৬॥ যে ত্বিমে ভাক্ষরাকারাঃ সর্বপারশব্যং শ্রাঃ। এতে চিত্র ক্রিয়োপেতাঃ সহদেবস্থা ধীমতঃ॥ ১৭॥ যে ত্রিমে নিশিতাঃ পীতাঃ পৃথবো দীর্ঘবাসসঃ। হেমশৃঙ্গা স্থাপ্রাণে। রাজ্ঞ এতে মহাশরাঃ ॥ ১৮॥ यस्य भाषात्का नीर्यः निलीपृष्ठेः निलीपृथः। অর্জুন স্থৈব সংগ্রামে গুরু লারসংখা দৃঢ়ং॥ ১৯॥ देवब्राष्ट्रकायः स्वत्रहान् जीयत्मनस्य भावनः । • গুরুভারসহো দিব্যঃ শাত্রবাণাণ ভয়ক্করঃ॥ ২০॥ † অব্রণশ্চিত্রকোষশ্চ হেমৎসরুরুত্তমঃ। নিস্ত্রিংশঃ কৌরবলৈয়য ধর্মরাজন্ম ধীমতঃ ॥২১॥ যন্ত্র,পাঞ্চনখে কোষে ! নিহিতশ্বিতাধনে। নকুলসৈয়ে নিস্ত্রিংশো গুরুভারসহো দুচঃ॥ ২২॥ যন্ত্ৰুয়ং বিপুলঃ থড়েগা গব্যে কোশ সমৰ্পিতঃ। সহদেবস্থা বিদ্ধোন সর্বান্তারসহং দুরুম্। ২৩॥ ইতি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণি উত্তর গোগ্রহে আযুধবর্ণন নাম ত্রিচত্বারি শক্তমৌহধ্যায়ः ॥ ৪৩॥

[॥] ১৬॥ সর্বাপারসবাঃ সর্বাঞ্চ পারং পার সমূহং স্থাতে হিংসন্তি তে সর্বাপারসবাঃ সর্বাশক্ত সমূহনাশকরাঃ॥ ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ চিত্র যোধনে বিশ্চিত্র যুদ্ধ নিমিত্তং নিহিঙঃ পালিতঃ॥ ২২॥ ২৬॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈল কুণ্ডীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিচড়ারিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৩ ॥

^{*} শৃদ্ধা ইতাত্র পুংখা ইতি পাচঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

† অত্রণ ইত্যত্ত স্কুদল ইতি পাচঃ খ ঘ পুস্তকয়োঃ।

‡ নিহিতশ্চিত্রয়োধন ইত্যত্ত্ব নিহিত্যশিত্রসেবনে ইতি পাচঃ ক পুস্তকে।

উত্তর ঊণাচ।

স্বৰ্ণিক্তানীমান্যাযুধানি মহাজ্যনাম।
ক্চিরাণি প্রকাশস্তে পার্ধানামাশুকারিণাগ্ । ১ ॥
ক মু স্থিদজ্বন: পার্থ: কৌরব্যা বা যুধিন্তির: ।
নকুলঃ সহদেবো বা ভীমসেনক পাওবং ॥ ২ ॥
সুর্দি এব মহাজ্যানঃ সর্বেহ্মিত্রবিনাশনাঃ ।
রাজ্যমকৈঃ পরাকীয়্য ন ক্রান্তে কথঞ্চন ॥ ৩ ॥
টোপদী ক্রাথ পাঞ্চলৌ স্ত্রীরত্রমিতি বিশ্রুতা।
জিতানকৈস্তদা কুঞা তানেবান্ত্রমদ্বন্য ॥ ৪ ॥

अर्ज्जुन हेवाह।

অহমন্মাৰ্জ্জুনঃ পাৰ্থঃ সভাস্তারো যুধিষ্ঠিরঃ। বল্লবো ভীমদেনস্ত পিতুস্তে রসপাচকঃ॥৫॥ অশ্বক্ষোহথ নকুলঃ সহদেবস্ত গোকুলে। দৈরন্ধ্বী দ্রৌপদীং বিদ্ধি যৎক্তে কীচকা হতাঃ॥৬॥

উত্তর উব্যচ।

দশ নামানি পার্থস্য ধানি পূর্বাং প্রুক্তানি মে। প্রব্যান্তানি যদি মে শ্রদ্ধ্যাং সর্বমেব তে॥ १॥

অজ্জুন উবাচ।

হস্ত তেহহং সমাচক্ষে দশ নামানি যানি মে। বৈরাটে শূণুভানিভ্যং যানি পূর্বাৎ শ্রুতানিভে a ৮ ॥

স্বর্ণেতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ পরাকীর্যা অপাস্যা ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥

একপ্রিমানসো ভূত্বা শৃণু সর্বাং সমাহিতঃ।
 অর্জুনঃ কাল্কনো জিফুঃ কিরীটা শ্বেতরাহনঃ।
 বীভৎস্ক্রিজন কুফঃ স্ব্যুসাচী ধনপ্রাঃ॥৯॥

উত্তর উব†চ।

কেনাসি বিজয়ে নাম কেনাসি শ্বেত্বাহন:।
কিনীটা নাম কেনাসি সব্যসাচি কথং ভবান্ ॥ ১০॥
অর্জুনঃ কাল্কুনো জিষ্ণুঃ কুষ্ণো বীভৎস্থুরেব চ।
ধনপ্তয়শ্চ কেনাসি প্রক্রাহি মম তত্ত্বতঃ॥ ১১॥
শ্রুতা মে তস্য বীরস্য কেবলা নামহেত্বঃ।
তৎ সর্বাহ যদি মে ব্রয়াঃ প্রদিশ্বাহ্ন সর্বামেব তে॥ ১২॥

অজ্ব ন উবাচ।

সকান্ জনপদান্ জিখা † বিত্তমাশ্রেতা কেবলম্।
মধ্যে ধনস্য তিষ্ঠামি তেনাহুন্মাং ধনপ্তায়ম্ ॥ ১৩ ॥
অভিপ্রয়ামি সংগ্রামে যদহং যুদ্ধদুর্মদান্।
নাজিত্বা বিনিবর্তামি তেন মাং বিজয়ং বিচঃ ॥ ১৪ ॥
শ্বেতাঃ কাঞ্চনসন্নাহা রথে যুজ্যন্তি মে হয়াঃ।
সংগ্রামে যুধ্যমানস্য তেনাহং শ্বেতবাহনঃ॥ ১৫॥

নররপদ্য মম মহাবিষ্ণোর্নামানি দঙ্কটে অর্থামানানি বিজয়াবহানীতাভি-প্রেত্যাহ একাথ্রেতি ॥ ৯॥ ১০॥ ২১॥ ১২॥ ১৩॥ ১৪॥ ১৫॥

^{*} একাগ্রমানসোভূত্বেতাস্য প্রাক্ বৈরাট্টে শৃণুতানিতামিতার্দ্ধং ক পুস্তকে নাস্তি।

[†] বিত্তমাঞ্জিত্যেতাত বিত্ত মাদায়েতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

উত্তরভাঞ্চ পূর্ববিদ্যাং কল্পনীভ্যামহপদিবা।

চাতো হিমবতঃ পৃষ্ঠেতেন মাং কাল্পনং বিছুঃ ॥ ১৬॥
পূরা শক্রেণ মে দন্ত^ খুধাতো দানবর্ধটৈঃ।
কিরীটং মূর্দ্ধি সূর্যাভিং ভেনাছর্মাং কিরীটিনম্॥ ১৭॥
ন কুর্যাৎ কর্ম বীভৎসং যুধ্যমানঃ কথঞ্চন।
ভেন দেবমনুষ্যেষু বীভৎসুরিতি বিশ্রুতঃ॥ ১৮॥
উতৌ মে দক্ষিণৌ পাণী গাণ্ডীবস্থা বিকর্ষণে।
তেন দেবমনুষে যু মুব্যুমাচীতি মাং বিছুঃ॥ ১৯॥
পৃথিব্যাঞ্চতুরন্তারাং বণো মে ছুর্লভঃ সমঃ।
করোমি কর্ম শুক্লঞ্জ তেন মামর্জ্রনং বিছুঃ॥ ২০॥
অহং দুরাপো ছুর্নমে। দমনঃপাকশাসনিঃ।
তেন দেবমনুষ্যেয় জিফুর্নামান্মি বিশ্রুতঃ॥ ২১॥
কুষ্ণ ইত্যেব দশমং নাম চক্রে পিতা মনু।
কুষ্ণাবদাত্ত সদা প্রিয়ম্বালক্ষ্য বৈ॥ ২২॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ভতঃ পার্থ~ স বৈরাটিরভ্যবাদযদন্তিকাৎ। অহং ভূমিঞ্লো নামু নামাহমপি চোত্তরঃ॥ ২৩॥

নক্ষত্রাভ্যাং তারাভ্যাং তত্ত্তিতে চল্লে ইত্যর্থঃ উত্তরভ্যাঞ্চ পূর্ব্বভ্যামিতি পাঠে নক্ষত্র সন্ধো ইত্যর্থঃ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ বীভৎস্থ্রিতি ভদি কল্যাণে স্থে চেতাসা স নিরুপং ॥ ১৮ ॥ বিকর্ষণে শভেনি ইভি শেষঃ সব্যেন বামেনার্পি হত্তেন সচিতুং জ্যাকর্ষণাদি ক্রিয়ার্যাং সম্বদ্ধুং শীলমস্যোভি সব্যসাচীত্যর্থঃ । ৪৯ ॥ অর্জুন ইভি শুজ গভিস্থানার্জনোপার্জনেম্বিভাতঃ উনন্ প্রভাষে ভবতি বর্গেদীপ্রিঃ সমঃ শুজুঃ দাপ্তিমহাৎ সমহাৎ শুদ্ধকর্ম করহাচ্ছার্জুন ইত্যর্থঃ ॥ ২০ ॥ জিফুর্জায়শীলঃ ॥ ২১ ॥ কৃষ্ণাবদাত্যা কৃষ্ণভাষর বর্ণসাক্র্যতি চিত্ত মিতি মনোহরহাদ্বাকৃষ্ণ ইত্যাহ প্রিয়হাদিতি ॥ ২২ ॥ ২০ ॥

দিন্টা ত্বাং পার্থ গশ্যামি স্থাগতং তে ধনঞ্জয়।
লোহিতাক্ষ মহাবাহো নাগরাজকরোপ্য ॥ ২৪॥
অদজানন্নবোচং ত্বাং ক্ষন্তমইনি তন্মসু।
যতস্ত্রা কুতং পূর্বাং বিচিত্র কর্ম ত্ষ্ণরম্।
অতো ভয়ং ব্যক্তাতং মে প্রীতিশ্চ পরমা ত্বয়ি॥ ২৫॥
ইতি বিরাট পর্বাণি গোহরণপর্বাণ উত্তর গোগ্রহে অজ্জুনপরিচয়ে চতুশ্ব্যারিংশভ্রমোহ্থায়ঃ॥ ১৪॥

উত্তর উবাচ।

আস্থায় ^এ বিপুলং ধীর র**থং সা**রুথিনা ময়া। কতমণ যাক্সদেহনীকমুক্তো যাক্সাম্যহং **ওয়া॥ ১**॥

অৰ্জুন উবাচ।

প্রীতোহিন্দা পুরুষব্রাদ্র ন ভয়ং বিদ্যুতে তব।
সক্ষাংস্তদামি তে শকুন্ রণে রণবিশারদ॥২॥
স্বস্থো ভব মহাবাহো পশ্য মাশ শক্রভিঃ সহ।
যুধ্যমানং বিমর্কেহিন্দান কুকাণং ভৈরবং মহৎ॥ ৩॥

নাগারাজ ঐরাবতঃ তদ্যোব করোপামাহস্তয়োঃ সাঁদৃশ্যং যদ্য হস্তি হস্তো-পম করেত্যর্থঃ ॥ ২৪ ॥ কর্ম দিয়জরাদি ॥ ২৫ ॥

> ইতি বিরাট পর্শ্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে চতুশ্চকারিং শ্বোধগায়ঃ॥ ৪৪॥

আস্থায়েতি॥ ১॥ মৃদামি দুরী করোমি॥ ২॥ ভৈরবং ভয়ানকং মহৎকর্ম কুর্বাণ:॥ ৩॥

^{*} বিপুলমিত্যত্ত কচিরমিতি পাঠঃ খ ঘ পুত্তকয়ে।ঃ।

এতান্ সক্রিপাসঙ্গান্ * ক্রিপ্রমাহর মে রথে। এতমাহর নিস্তিংশং জাতরূপপরিষ্কৃতন্॥ ৪॥ ধ্রশাগারন উবাচ।

অর্জুনস্য বচঃ শ্রুত্বা স্বরাবানুত্তরস্তদ। । অর্জুনস্ঠাযুধান গৃহ শীঘ্রেণাবতরত্ততঃ ॥ ৫ ॥

অৰ্জ্জন উবাচ।

অহং বৈ কুরুভির্য্যোৎস্থাম্যবজেষ্যমি তে পশূন্। ৬॥ সঙ্কপোপক্ষবিক্ষেপ্প•বাহ্নপাকারতোরণম্। ত্রিদপ্তভূণসম্বাধমনেকধ্রসঙ্কুলম্। ৭॥

উপাস্দান্ তৃণীরান্ ॥ ৪ ॥ গৃষ্ণ গৃহীত্ব। শীত্রেণ বেগেন ততঃ
শমীতোহবাতরং ইতরেষা মাঞ্ধানি তত্র নিধায়েতি শেষঃ ॥ ৫ ॥
অবজেষামি হেলয়াজেবাামি ॥ ৬ ॥ তত্ত্তয়ং তাজে তাছি সংকশেতি
ত্রিভিঃ ইদংময়া গুপুং রক্ষিতং রথোপন্থং রখোপরি ভাগ স্তেত্র নগরং
নগর বক্ষকং ভবিষাতি তত্র রখাদের নগরাদ সম্পত্তিমাহ সঙ্কপা পক্ষ
বিক্ষেপ মিতি সঙ্কপাঃ সমাক্ কপ্সনং চক্রাক্ষপ্প কুবর মুগাদীনামদানাং দার্চেনি সমর্থনং তদেব পক্ষয়োঃ বীথীনাং পার্ময়োঃ বিক্ষেপাে
বিস্তারো যদ্মিন্ বাহুএব স্বীয়ো বাত্তুল্যভাদান্ত্রবা এববা প্রাকারঃ পুরপরিধি ভিত্তিস্থান্থ স্তোরণং প্রভাবং যদ্মিন্ রথিসার খোরপি রথাদ্দর
বিবক্ষয়া এত হুক্তং ত্রিণগুঃ ঈষা তত্ত্তয় পার্মদাকণী চেতিমিলিতা ত্রিদণ্ড
উচাতে সচ তৃণাে নিষক্ষতভাভাং সম্বাধ্ সঙ্কিং ত্রপা্রেশং পক্ষে ত্রিদণ্ড
উচাতে সচ তৃণাে নিষক্ষতভাভাং সম্বাধ্ সঙ্কিং ত্রপা্রেশং পক্ষে ত্রিদণ্ড
ভূণােপ লক্ষিতানি আযুধানি তৈঃ সম্বাধং অনেক ধর্জ সঙ্কুলং বন্ত ধ্রনা
ন্যাপ্তং অনেকেন অননেন ধ্রেশবানরেণ সংকুলং ভয়য়রং একে মুখাান্যকেবলা ইতিনানার্থঃ ॥ ৭ ॥

^{*} ক্লিপ্রমাহরেতাত ক্লিপ্রং ব্রাহীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

জ্যাক্ষেপণ্ ক্রোধক্তং নেমীনিনদতুন্তুভিঃ। নগরং তে ময়া গুগুং রথোপস্থ ভবিষ্যতি॥৮॥ অধিষ্ঠিতো ময়। সংখ্যে রথো গাণ্ডীসুনম্বনা। অজয়ঃ শক্রসৈন্যানাং বৈরাটে ব্যেতু তে ভয়ম্॥৯॥

উত্তর উবচে।

বিভেমি নাইমেতেবাং জানামি ত্বাং স্থিরং যুধি।
কেশবেনাপি সংগ্রামে সাক্ষাদিক্রেণ বা সমম্॥ ১০।
ইনস্ত চিন্তয়ন্নেবা পরিমুহামি কেবলম্।
কিশ্চয়ঞ্চাপি গচ্চামি চুর্ম্মেধা ন কথঞ্চন ॥ ১১॥
এবং যুক্তাঙ্গৰূপন্ত লক্ষণৈক্রচিত্ত্বা চ।
কেন কর্ম্মবিপাকেন ক্লীবত্বমিদ্যাগত্ম্ ॥ ১২॥
মন্যে ত্বাং ক্লীব্বেশেন চরন্তং শ্লপানিনম্।
গল্পুরোজপ্রতিমং দেবা বাপি শতক্ত্র্ম্॥ ১৩॥

ত্মাৰ্জ্জন উবাচ।

ভাতুর্নিযোগাৎ জোষ্ঠস্থা সম্বংসর্মিদ্দ ব্রতম্।
চরামি ব্রহ্মচর্য্যুদ্দ বৈ সত্যমেত্র বীমি তে॥ ১৪॥
নাস্মি ক্লীবো মহাবাহো পরবান্ ধর্ম্মসংযুতঃ।
সমাপ্তব্রতমুত্তীর্ণি বিদ্ধি মাণ স্থং নূপাক্ষাল । ১৫॥

জ্যাধন্ত মৌঝাঁ সৈব ক্ষেপণানি গোলাগনানি নালিকাখ্যানি যামিন্ ক্রোধন পরজিঘাংসা হেতুনা চিত্ত বৃত্তি বিশেষেণ নিমিত্ত ভূতেন কৃতং পরিক্তং দ্বমাপা ॥ ৮ ৷ ফলিতমাছ্ অধিষ্ঠিত,ইতি ॥ ৯ ॥ কেশবেন ইন্দ্রেণ বাসদং সার্ভ্জং সংগ্রামে বাং স্থিবং জানামা ॥ ১০ ॥
॥ ১১ ॥ যুক্তাজরূপস্য রুক্তানি সমীতীনানি অন্ধানি যুদ্ধাসানি গাস্ত্রান্ত নৈ-প্ণাদীনি রূপং আকৃতিশ্চ যস্য লক্ষণৈঃ পঞ্চরক্তহাদিভিঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥
॥ ১৪ ॥ পর্বান্ নাথবান্ উত্তীর্ণ আপন্তাইতি শেষঃ॥ ১৫॥

উত্তর উবাচ।

প্রমোংকুপ্রহো মেহ্দ্য যং প্রতর্কোন মে রুথা। নহীদৃশাঃ ক্লীবৰূপা ভবদ্ধি তু নৱোত্তম ॥ ১৬ । সহায়বানস্মিরণে যুধ্যেয়মমবৈরপি। সাধ্বশং সংপ্রনন্ত্ মে কিং করোমি ব্রবীহি'মে ॥ ১৭ ॥ অহং তে সংগ্রহীষ্যানি হয়ানু শত্রুরথারুজান্। ণিক্ষিতো হৃশ্মি সারথ্যে তীর্থতঃ পুরুষর্যভ ॥ ১৮॥ দারুকো বাস্থদেবস্ত যথা শক্রস্ত মাতলিঃ। তথা মাং বিদ্ধি সারীথ্যে শিক্ষিত্র নরপুঙ্গব। ১৯॥ যস্ত যাতে ন পশুত্তি ভূমৌ ক্ষিপ্তং পদ্শ পদ্ম । দক্ষিণা থা ধুর যুক্তঃ স্থগ্রীবসদৃশো হয়ঃ ॥ ২০॥ যোহয়ং ধুরং ধুর্য্যবরো বামাং বহতি শোভনঃ। তং মন্যে (মঘপুষ্পশ্च জহেন সদৃশং হয়ম্॥ २১॥ যোহয়ং কাঞ্চনসন্নাঃ পাঞ্চি বহতে শোভনঃ। भगः रिमवामा मरनाश्रर जरवन बलवळतम् ॥ २२ ॥ যোহযং বহতি মে পাঞ্চিং দক্ষিণামঞ্চিতোদ্যতঃ। বলাহকাদপি মতঃ স জবে বীর্য্যবন্তরঃ॥ ২৩ n चारमवासः तर्था वाढ्ः मः आरम् इंडि धन्निम् । স্বঞ্সেং রথমাস্থায় যোজুমর্হো মতো মম॥২৪॥

॥ ১৬ ॥ ১৭॥ শক্ররণাকজান্ শক্ররথ ভঞ্জকান্ মূলবিভুজাদিরাৎকঃ তীর্থতো গুৰুতঃ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ যাতে গ্নানে পদং-পদং সর্বাদিপ পদিং ভূমে ক্ষিপ্তং ্তত উদ্পৃহীতং বা ন পশ্যন্তি বেগৰুল্বাং স্থানীব মেঘ প্রুপ্তা শৈব্য বলাহক। ভগবতো ক্লাইভংসামামেষাং বাহানামুক্তং ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ পাঞ্চিং প্রঃ স্থিত্যোরশ্বরো পৃষ্ঠ ভাগং পাশ্চাতাং যুগ মিতি যাবং পাঞ্চিং স্যাত্মদ ক্রিরাং ক্রিরাং দ্রোঃ সৈন্য পৃঠে ইতিমেদিনী ॥ ২২ ॥ ২০ ॥ ২৪ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ। ততো নিমুচ্য বাছভ্যাৎ বল্যানি স রীর্য্যবান্। চিত্রে * তুন্তুভিসনাদে প্রত্যমুগজ্ঞে শুভে । ২৫॥ কুষণানু ভঙ্গিমতঃ কেশান্ শ্বেতেন্যেকা্থ্য বাসসা। অথানৌ প্রাপ্তমুথো ভূত্বা শুচিঃ প্রয়তমানসং। অভিদধ্যে মহাবাহুঃ সর্বাস্ত্রাণি রথোন্ত্রে॥ ২৬ ॥ উচুশ্চ পার্থ~ সব্বাণি প্রাঞ্জলীনি নুপাত্মজম্। ইমে স্ম প্রমোদার কিন্ধরাঃ পাওুনন্দন ॥ २०॥ প্রনিপতা চ তান্ পার্থঃ সমালভা চ পানি না। স্কাণি মানসানীই ভবতেতাভাভাষত ॥ ২৮॥ প্রতিগৃহ ততোইস্তানি প্রহৃষ্টবদনোইভবৎ। অধিজ্যং তরসা রুত্বা গাণ্ডীবপ ব্যাক্ষিপদ্ধন্তঃ॥ ২৯॥ তস্য ব্যাক্ষিপ্যমাণস্য ধনুষোহভূমহাস্থনঃ। যথা শৈলস্য মহতঃ শৈলেনৈবাৰজন্মতঃ ॥ ৩০॥ সনিৰ্যতোভৰ † দুভিদ্বিকু বায়ুধ্বৰৌভূশন্। পপাত মহতী চোল্কা দিশো ন প্রচকাশিরে। ভাত্রজন ! খন তদানীৎ প্রকম্পিতনহাদ্রমম্। ৩১॥

পর্যা মুঞ্জ জদান্ততে ইতি পাঠেতু কুগুলে ইতিশেবঃ ॥ ২৫॥ ভঙ্গিমতঃ
কৌটিল্যবতঃ অভিদধ্যে স্ত্তান্ ॥ ২৬ ॥ ২৭॥ মানদানি প্রয়েজন
কালে স্তি গোচরানি॥ ২৮ ॥ প্রতিপৃথ অনুকূলানি কুরাব্যাক্ষিপংটনং
কারিতবান্॥ ২০॥ অবজন্নতঃ অবহন্যমানদা অভিনিন্নত ইতি পাঠান্তরং
॥ ৩০॥ ভূভিৎ ভূবিদারকঃ প্রচকারিরে প্রকাশ ত্যাহ ভূবন্ ভারে। ইতশ্চন
নিতাঃ হজাব্যান্ এতেন পর সৈন্য বাহেরু শক্ষান্তা সাত্রং পথ গামিবং
ব্যাজ্যতে প্রকাশিত মহা জম মিতানেন ভূমিকম্পো ব্যাজ্যতে॥ ৩১॥

কুন্থভিদন্ধনে ইতাত্র কাঞ্চন সন্নাহেইতি পাঠ খ পুস্তকে।
 কুন্ডিদিত্যর ভূমিরিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 কুম্বিতিত বিদ্যামিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

তং শব্দং কুরবোহজানন্ বিস্ফেট্নশনেরিব। যদর্জ্জুনো ধনুঃ শ্রেষ্ঠং বাস্কৃত্যামাজিপদ্রথে॥ ৩২॥

উত্তর উল্বচ।

একসুং পাত্তবশ্রেষ্ঠ হুনেতামহারথান।
কৃথ জিষায়ি সংগ্রামে দর্বশস্ত্রপ্রপারগান। ৩৩॥
অসহায়েইদি কৌন্তের সসহায়াশ্চ কৌরবঃ।
অত এব মহাবাহো ভীতন্তিঠামি তেইপ্রতঃ। ৩৪॥
ॐ উবাচ পার্থো মাতৈষীঃ প্রহ্ন্য স্থানবন্তা। ৩৫॥
য়্বধ্যমানস্য মে বীর গন্ধার্থিং স্থাহাবলৈং।
সহায়ো ঘোষ্যাত্রায়াশ কন্তদাসীৎ স্থা মম। ৩৬॥
তথা প্রতিভ্রে তামান দেবদানব্যক্ষলে।
থাত্তবে যুধ্যমানস্য † কন্তদাগাৎ সহায়তাম্। ৩৭॥
নিবাতকবলৈং সার্দ্ধশ পৌলোমেশ্চ মহাবলৈং।
মুধ্যতো দেবরাজার্থে কং সহায়ন্তদাভবৎ। ৩৮॥
স্থায়েরে তু পাঞ্চাল্যা রাজভিং সহ সংযুগে।
মুধ্যতো বছভিন্তাত্রকং সহায়ন্তদাভবৎ। ৩৯॥
উপজীব্য গুরুং দ্রোণং শত্রুণ বৈপ্রবণং যমম্।
বরুণং পাবক্রৈণ্ড কুপংক্রঞং চ মাধ্যম্য। ৪০॥

11 02 11 00 11 08 11 04 11 09 11 09 11 09 11 09 11 09 11

^{*} উবাচ পার্থ ইতাস্যপ্রাক্ বিশস্পায়ন উবাচ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

কিন্তদাগাৎ সহয়তা মিতাত্ত কন্তদাদীৎ সধা মমেতি পাঠঃ ধ
পুস্তকে।

পিনাকপানিনিঞ্চিব কথমেতার যোধয়ে। রথং বাহয় মে শীদ্র^ ব্যেতু তে মানসো জ্বঃ॥ ৪১॥ ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণপর্বানুত্তর গোগ্রহে উত্তরার্জ্জুন যো বাক্যং নাম পঞ্চ চত্তারিংশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৫॥

देवनन्भावन छेवा ।

উত্তর্ন সার্থিন কৃত্বা শনীং কৃত্বা প্রদক্ষিণম্।
আয়ুধন সর্বাদায় প্রযোগিপাপুনন্দনঃ॥ ১॥
ধুজং সিংহং রথাক্তমাদপনীয় মহারথঃ।
প্রাণিধায় শনীমূলে প্রায়াত্ত্তর সার্থিঃ॥ ২॥
দৈবীং মায়াংরথেযুক্তাং বিহিতান বিশ্বকর্মা।
কাঞ্চনং সিংহলাঙ্গুলন ধুজং বানরলক্ষণম্॥ ৩॥
মনসা চিন্তামাস প্রমাদন পাবকর্ম্য চ।
স তু তচ্চিন্তিতং জ্ঞাত্বা ধুজে ভূতান্যচোদয়ং॥ ৪॥

1 85 1

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ চত্যারিং শোহধা\য়ঃ ॥ ৪৫ ॥

• উত্তরমিতি ॥ ১ ॥ সিংহং সিহাকারং ॥ ২ ॥ দৈবীং মারা মিত্যদূত্বং ধ্জানাদ শিতিৎ মারামার ইবধজো মুদ্তেইতার্থঃ বিশ্বকর্মণা এলাণা ভোম-নেন বা কাঞ্চনং কাঞ্চনবর্গং সিংহং ছিল্লং লাসূলং যান্য প্রক্র বিক্লেপণে কান্ত্র বিশ্বকর্মান প্রক্রিক বিদ্বাহ বিশ্বকর্মান বিশ্বর বিশ্বর

সপতাক বিচিত্র কিং সোপাসক * হিরণারম্। খাৎ পপাত রথে তুর্ণ দিব্যক্ষণং মনোরম্ম। । । রথ তুর্ণ দিব্যক্ষণং মনোরম্ম। । । রথ তুর্ণ দিব্যক্ষণং প্রাকরে । । রথমাস্থার বীভৎস্থং কৌন্তেরঃ শ্বেতবাহনঃ॥ ৬॥ বদ্ধনোধাস্থলিত্রাণঃ প্রসূহীত শরাসনঃ। ততঃ প্রারাত্মদিটিং সক্ষিপ্রব্যক্তনঃ॥ ৭॥ খানবন্ত মহাশস্থাং বলবানরি মর্দ্দনঃ। প্রাধমন্তলমাস্থার দ্বিতাং লোমহর্ষণ্য॥ ৮॥ ততন্তে জবনা ধুর্যা জানুভ্যামগ্রমন্থীম্। উত্তরশ্চাপি সংক্রন্তো রথোপস্থ উপাবিশৎ॥ ৯॥ সংস্থাপ্য চাশ্বান্ কৌন্তেরঃ সমুদ্যম্য চ্রশ্মিভিঃ। উত্তরঞ্চ পরিশ্বজ্য প্রত্যাশ্যমন্তর্জুনঃ॥ ১০॥

অজ্জুন উবাচ। '

মা ভৈস্ত্ৰং রাজপুত্রাগ্রা ক্ষত্রিষোহিদি পরন্তপ !
কথং পুরুষশার্দ্দূল শত্রুমধ্যে বিষীদিসি ॥ ১১ ॥
গ্রুত্তাম্মে শত্থাশকাশ্চ ভৈরীশকাশ্চ পুন্ধলাঃ ।
কুঞ্জরাণাঞ্চ নদতাং বুটোনীকেষু তিঠতাম্ ॥ ১২ ॥
স ত্বং কথমিহানেন শত্থাশক্ষেন ভীষিতঃ ।
বিষয়ন্ত্রা বিগ্রন্থঃ প্রাক্তা ব্যা ॥ ১৩ ॥

়। ৫ ॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ তেজ্বনাঃ প্রসিদ্ধাঃ বেগবন্তেহি মিদত্ত রথস্থা। ৯॥ সংস্থাপ্য যথাবৎক্রা॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ ১৩॥

^{*} হিরণারমিতাত্র মহাবল মিতি পাঠঃ খ প্রেকে।

উত্তর উবাচ।

শ্রুত্তা মে শত্মশক্ষণত ভেরীশক্ষণত পুন্ধলা।
কুঞ্জরাণাঞ্চ নদতাং ব্যুটানীকেষু তিষ্কৃতাম্॥ ১৪॥
নৈবস্থিক শত্মশক্ষঃ পুরা জাতু ময়া শ্রুতঃ।
ধুজদ্য চাস্য রূপধ মে দৃষ্ঠপূর্বেশ নহীদৃশন্॥ ১৫॥
ধরুষশ্রেচব নির্ঘোষ্ট শ্রুত্রপ্রি। ন মে কুচিৎ।
অস্য শপ্রস্য শক্ষেন ধরুষো নিস্থনেন চ॥ ১৬॥
অমারুষাণাশ শক্ষেন ভূতানাশ ধুজবাসিনাম্।
রথস্য চ নিনাদেন মনো মুক্তাতি মে ভূশ্য ॥,১৭॥
ব্যাকুলাশ্ট দিশ্য সর্ব্বা হৃদয়শ ব্যথতীব মে।
ধুজেন পিহিতাঃ সর্ব্বা দিশো ন শ্রুতিভান্তি মে॥ ১৮॥
গাণ্ডীবস্য চ শক্ষেন কণৌ মে ব্রিরীক্ষতৌ।
সমুন্ত্রিং প্রয়াতস্ত পার্থো বৈরাটিমন্ত্রীৎ॥ ১৯॥
ত্যজ্জুন উবাচ।

একান্তং রথমাস্থার পর্ট্তাং স্বমবপীডারন্। দৃঢ়ঞ্চ রশ্মীন্ সংযচ্ছ শহুং ধ্যাস্যাম্যহং পুনঃ॥ ২০॥ বৈশশ্যায়ন উগাচ।

ততঃ শঙ্খমূপাধ্যাসীদ্ধারয়ন্নিব পর্ববিতাক।
† গুহা গিরীণাঞ্চ তদা দিশঃ সর্ববাস্তবৈব চ।
উত্তরক্ষাপি সম্লীনো রথোপস্থ উপাবিশ্ব ॥ ২১ ॥

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ একাতঃ অদৃঢ়ং সপ্তমান্ত পাঠস্থ লেখক প্রমাদঃ রথং সুদৃঢ়ং অবলম্ব্যের্গঃ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥

^{*} অর্জন উবাচ ইতাস্যপ্রাক্ সমুসূর্ত্ত মিতার্দ্ধ শ্লোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

কৃ গুহাগিরী নামিতাস্য প্রাক্ দ্বিষতাং হুঃশ জননং স্কুদাহর্বর্দ্ধনমিতি
পাঠঃ ক পুস্তকে।

তদ্য শশ্বদ্য শব্দেন রথনেমিশ্বনেন চ। গাণ্ডীবদ্য চ শব্দেন পূথিবী দমকম্পত ॥ ২২॥ তং * সমাশ্বাদ্যামাদ প্রেরেব ধনঞ্জয়ঃ॥ ২৩॥ ব্যোগ উবাচ।

যথা রথস্য নির্ঘোযো যথা মেঘউদীর্ঘতে। প্রকম্পতে যথা ভূমিরৈ ষেহ্ন্যঃ স্বাসাচিনঃ ॥ ২৪ ॥ শস্ত্রাণিন প্রকাশন্তে ন প্রহুষ্কাতি বাজিনঃ। অগ্নশ্চ ন ভাদত্তে দুমিদ্ধান্তন শেভেনম্॥ ২৫॥ প্রত্যাদিতাঞ্চ নঃ সর্বের মূগা ঘোরপ্রবাদিনঃ । ধজেয়ু চ নিলীয়ন্তে বায়সান্তল শোভনম্॥ ২৬॥ শকুনাশ্চাপসব্যা নো বেদয়ন্তি মহন্তয়ম্॥ ২৭॥ গোমাযুরেষ সেনায়াং রুদন্মধ্যেন ধাবতি। অনাহতক নিষ্কারো মহদেশয়তে ভয়ম্।। ২৮॥ ভবতাং রোমকূপাণি প্রহৃষ্টান্যুপলক্ষয়। ধ্রুবং বিনাশো যুদ্ধেন ক্ষজিয়াণাং প্রদুশ্যতে ॥ ২৯॥ জ্যোতী প্ৰ ন প্ৰকাশন্তে দাৰুণা মৃগপক্ষিণঃ। উৎপাতা বিবিধা ঘোরা দৃশ্যন্তে ক্ষত্রনাশনাঃ॥ ৩०॥ বিশেষত ইহাস্মাকং নিমিস্তানি বিনাশনে। উল্কাভিশ্চ প্রদীপ্তাভিশ্বধ্যন্তে পৃতনাতব। ্বাহনান্যপ্রহৃষ্টানি রুদন্তীব বিশাম্পতে॥ ৩১॥

্বং । ২০ । ২৪ । ২৫ ২৬ । ২৭ । অনাহতঃ অক্ষতঃ ধবিতি । ২৮ । ২৯ । ভোতীংষি স্থ্য চকু বৃঙ্মনাংসি । ৩০ । ৩১ ।

^{*} তমিতাদাপ্রাক্ উত্তরন্ত রথে দৃষ্ট্ব। শগ্র শব্দেন মোহিত মিতি পাঠঃ কথাস্তকে!

উপাসতে চ সৈন্যানি গৃধাস্তব সমন্ততঃ।
তপ্যসে বাহিনীং দৃষ্ট্যা পার্থবানপ্রপীডিতাম্।
পরাভূতা চ বং গেনা ন কশ্চিদেবাদ্ধ নিচ্ছতি॥ ৩২॥
বিবর্ণমুখভূয়িষ্ঠাঃ সর্বে যোধা বিচেতসং।
গাঃ প্রসংস্থাপ্য তিষ্ঠামো ব্যুঢানীকাঃ প্রহারিনঃ॥ ৩৩॥
ইতি বিরাটপর্বনি গোহরনপর্বনি উৎপাতিকোনাম ষ্ট্
চত্যারিংশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৬॥

বৈশম্পায়নউবাচ।

অথ তুর্যোধনো রাজা সমরে ভীন্নমন্ত্রীৎ।
দোণঞ্চ রথশার্দ্দুলং কুপঞ্চ স্থর্মহাবলম্॥ ১॥
উক্তোহয়মর্থ আচার্যো ময়া কর্নেন চাসকুৎ।
পুনরের চ বক্ষ্যামি ন.চ তুপ্যামি উং ক্রবন্॥ ২॥
পরাজিতৈর্নিবস্তব্যং তৈশ্চ দাদশ বৎসরান্।
বনে জনপদেহজ্ঞাতৈরেক হিস পানো হিনঃ॥ ৩॥
তেষা ন ভাবনির্কৃত্তং বর্ত্তে চ ত্রোদশম্।
অজ্ঞাতবাসো বীভৎস্করথাসাভি স্মাগত্ঃ॥ ৪॥

॥ ७२॥ ७७ ॥

হতি বিরাটপর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে ষট্-চন্ধারিংশোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৬ ॥

অথেতি ॥ ১ ॥ আচার্ষেণ ক্রোণং ক্রপঞ্চ প্রতীতিময়া ২য়ুমুর্য উক্তঃ পাচান্তরে ২য় মাচার্য্যো ২ন্মিন্নর্থে বিষয়ে ময়াকর্নেন চোক্ত ইতি যোজনা ॥ ২॥ ৩॥ ৪॥

অনিরত্তে তু নির্বাদে বীভং স্থর্যদি চাগতঃ।
পুনদ্ব দিশ বর্ষানি বনৈ বংসান্তি পাওবাং ॥ ৫॥
লোভাদ্বা তে ন জানীয়ুল্মান্ বা মোহ আবিশং।
হানাভিরিক্তমেতেষাং ভীলো বেদিতুমইতি ॥ ৬॥
অর্থানাস্ত পুনদ্বৈধি নিত্য তবতি সংসায়া।
আন্থা চিন্তিতো হুর্থং পুনর্ভবতি সোহন্যথা॥ ৭॥
তেত্তরং মণ্র্যমাণানাং মংস্যাসেনাং যুযুৎসতাম্।
যদি বীভংসুরাযাতস্তদা ক্স্যাপরাধ্মাং ॥ ৮॥
ত্রিগর্ভানাং বয়ং হেঁতোর্মান্ম্যান্ যোদ্ধ্ মিহাগতাঃ।
মংস্যানাং বিপ্রকারা তেওঁ বহুনস্মানকীর্ত্রন্॥ ৯॥

॥ ৫॥ হীনেতি নজাতমধিকং বাহজাত বাসকালং জাতু মইতি॥ ৬॥
তত্র উনপক্ষেইন্টমেবসিদ্ধং অধিক পক্ষেপি দোষমাহ অর্থানা মিতি
দৈধে দিপ্রকারত্ব সংশ্রোভবঙি অর্থানাং প্রয়োজনানাং জয়ে ভাবঃ
যদি তে নিস্তীর্ণ প্রতিজ্ঞা স্তর্হি ভেষাং স্বাংশলাভার্থং মাং উপগতানাং
মংপ্রসাদন্ত স্তংপ্রাপ্তির রপ্রাপ্তিরে তি দেধে সংভবতি সংশ্রা ক্রান্তানা
মকস্মাৎ যুদ্ধার্থ মাগমনং দোষ এবেতি পূর্ববৈরেণ সত্যাপি সংশরে
হস্মজিঘাং সয়া আগতানাং পরাজ্রে পি সংভাব্যত ইত্যাহান্যথেতি
অন্যাব্যন যুধ্যতঃ পরাজ্যোপি অধিকৈবন্দির স্ত্রীতভাবঃ॥ ৭॥ উত্তরং
গোগ্রহং মার্গমাণানামিদ্রতামস্থাকং অনাদরেষ্ঠী অস্থান্ অনাদৃত্যে
ভার্থঃ বালিস্প্রীবয়োয়ু দ্বে প্রবিশন্ রামইবার্ক্তনাপি কুরুমংস্য সন্নিপাতে
প্রবিশন্ধরাধীস্যাদিত।র্থঃ॥ ৮॥ নম্ব তর্হি মৎস্য ত্রিগর্ভ বিমর্দ্ধে কুরুভির
পিকিমর্থং গন্তব্যমিত্যাশঙ্কাহে ত্রিগর্জানামিত্যাদিনা তে তব সমক্ষ মিতি
েশবঃ॥ ৯॥

^{*} উত্তরমিত্যস্য প্রাক্ স্বার্থেসর্কে বিমুখন্তি বেহপি ধর্মবিদোজনা ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

তেয়ান ভরাভিভূতানাং তদক্ষাভিঃ প্রতিশ্রুত্য।
প্রথমং তৈথ্য হীতব্যং মৎস্যানাং গোলন মহং।
সপ্তম্যামপরাহে বৈ তথা নত্তঃ সমাহিত্য । ১০॥
অক্টম্যাং পুনরক্ষাভিরাদিত্যস্যোদয়ং প্রতি।
ইমা গাবো প্রহীতব্যা গতে মৎস্যে গবাং পদম্ ॥ ১১॥
তে বা গাশ্চানয়িষ্যান্ত যদি বা স্থাঃ পরাজিতাঃ।
অক্ষান্ বা হাপ্সক্ষায় কুর্ট্রেছিস্টোন সক্তম্ ॥ ২২॥
অথ বা তানপাহায় মৎস্যে জনপদেঃ সহ্।
সর্ব্যা সেন্যা সার্দ্ধান সংহতো ভীমরূপরা।
আয়াতঃ কেবলাং রাজিন্সান্ মোজুমিহাগতঃ ॥ ১৩॥
তেষামের মহাবীর্ঘাং কশ্চিদেয় পুরংসরঃ।
অক্ষান্ জেতুমিহাযাতো মৎস্যো বাপি ব্রং ভবেৎ ॥ ১৪॥
যদ্যেষ রাজা মৎস্যানান যদি বীকৎস্কুরাগতঃ।
স্বৈর্ঘাদ্ব্যম্মাভিরিতি নঃ সময়ঃ কুতঃ ॥ ১৫॥

তেবাং ত্রিগর্তানামর্থেতং মংগৈতি নহানুদ্ধং প্রতিশ্রুতং ॥ ১০॥ ন কেবলং
মিত্র পক্ষপাত মাত্র মন্মাক মন্তি অপিতু আর্থোপান্তীতাাছ অফম্যা মিতি
তথাচ আর্থং যুধ্যতাং নান্মাক মপরাধোন্তি মংস্যা গরাং ত্রিগর্তিষ্ঠতানাং পদং মার্গং গতে সতি অন্মাভিরিমাগাবো গৃহীতবাং ॥ ১১॥
তে ত্রিগর্তাঃ উপসন্ধার বঞ্চরিয়া মংস্যান সং গতং আহং কুর্নঃ সর্বাথা
পক্ষত্রেপি অন্মাভিরিদানীং হোদ্ধিব্যমেবেতার্থঃ॥ ১২॥ তান্ ত্রিগর্তান্
অপাহার গোভিঃ সহ উপেক্ষা কেবলং রাত্রিং রাত্রো অগৃহং আয়াত্র ইদানীং প্রাত রক্ষান্ যোদ্ধাত ইতি সম্বন্ধ ॥ ১০॥ পক্ষান্তর মাহ
তেব্যমিতি॥ ১৪॥ কলিত মাহ স্ক্রিরিতি স্ব্রের্মাভি রেকীভূর যে
আগতান্তঃ সহ যোদ্ধ্যমেবেতার্থ॥ ১৫॥

অথ কন্মাৎ স্থিতা স্থেতে রথে পুরুবসন্তথা: ।
ভীয়ো দ্রোণঃ রূপশৈবে বিকর্নো দ্রৌণিরের চ ॥ ১৬ ॥
সভ্রান্তমনসং সর্বের কালে ছন্মিন্ মহারথা: ।
নান্তর মুদ্ধাচ্ছে যোহস্তি তথাত্বা প্রনিধীয়তাম্ ॥ ১৭ ॥
আঁচ্ছিন্নে গোধনেহস্মাকমপি দেবেন বজ্রিনা ।
যমেন বাপি সম্প্রামে কো হাস্তিনপুর্ম ব্রজেৎ ॥ ১৮ ॥
শরৈরেভিঃ প্রান্তানাং ভগ্নানাং গহনে বনে ।
কো হি জীবেৎ পদ্তিনাম ভ্রোনাং গহনে বনে ।
ছর্মোধন বচঃ শ্রুত্বারাধেয়স্ত্রবীঘ্রচঃ ।
* আচার্যাং পৃষ্ঠতঃ রুত্বা তথা নীতির্বিধীয়তাম্ ॥ ২০ ॥
জানাতি হি মতং তেষামতস্রাস্থতীহ নঃ ।
জর্জুনে চাস্য সংপ্রীতিমধিকামুপলক্ষয়ে ॥ ২১ ॥

॥ ১৬ ॥ আছাচিত্তং প্রণিধীয়তাং সাবধানং ক্রিয়তাং ॥ ১৭ ॥ লব্ধদা গোধনদা নাশে অন্যাভিঃ স্বপুরং ন প্রবেষ্ট্রামিতি প্রতি জানীতে আছিল্ল ইতি পদাত্যস্ত্রন্মিন্ যুদ্ধেনং ক্ষান্তৈয় বাসাস্থু কদাচি জ্ঞীবিষ্যান্ত্র পীতাহশবৈরতি প্রাচাং ব্যাখ্যাবক্তরপকর্ষপ্রচিকা বস্তুত্তু আছিল্লে ২পক্তে গোধনে নিমিত্তে দেবেনবাদংহদ প্রামে উপস্থিতে সতি অন্যাকং ভীল্বাদীনাং মধ্যেই ইতি প্রসিদ্ধঃ কোন্তি যো ন পুরং ব্রজেৎ অপিত্র প্রত্যেকং সর্বৈত্রবন্ধং গ্লেরং গান্তুং দেবানপি ক্রেতুং গান্চাচ্ছেত্ত্থং সমর্পাঃ ম ইত্যর্থঃ ॥ ১৮ ॥ শরৈরিতি এভিরিতি স্বকীয় শর প্রদর্শনং ॥ ১৯ ॥ আচার্যাং রুণান্তীতং পৃষ্ঠতঃ ক্রেছা সেনা মুখাদপদার্য্য অন্মিন্ ভীতে সর্ব্বেশি ভীতাঃ স্থারিতি, ভাবঃ ॥ ২০ ॥ তেফাং পাণ্ডবানাং মতং সংমতং স্বাত্রেজাে বধকরণং জানাতীতি ॥ ২১ ॥

আচার্যামতাসা প্রাক্ তুর্বোধনেতার্দ্ধানঃ ক পুত্তকে নাস্তি।

তথা হি দৃষ্ট্বা বাভংসুমুপায়ান্ত প্রশংস্তি।
যথা সেনা ন ভজ্যেত তথা নীতির্কিধীয়তাম্। ২২ ॥
হেবিতং স্পশ্নানে জোণে সর্বাং বিঘট্টিতম্।
অদেশিকা মহারণাে গ্রীয়ে শক্রবশ্প গতা।
যথা ন বিভ্রমেৎ সেনা তথা নীতির্বিধীয়তাম। ২০॥
ইফাহি পাণ্ডবানিতা মাচার্যাসা বিশেষতঃ।
আসেয়ন পরার্থাশ্চ কথ্যতে স্বস্থাং তথা ॥ ২৪।
* অশ্বানাং হেবিতং প্রজ্বা কং প্রশাপনা পরাে ভবেৎ।
সাাে বাপি বহুতাে বা সদা হেবিতি বাজনিঃ ॥ ২৫॥
সদা চ বায়বাে বান্তি নিত্যং বর্ষতি বাসবঃ।
ভনবিজ্বাশ্চ নির্ঘেষ্ট কথ্যা স্থাশস্তে।
কিমত্র কার্যাং পার্থস্থা কথ্যা স্থাশস্তে।
আন্ত্র কামাং দ্বেঘানা রােষালাস্যান্ত কেবলাং॥ ২৭॥

॥ ২২ ॥ দ্রোণে ভীতে সতি সর্বং বিঘটিতং বিচলিতং হবেৎ সামর্থা মিতি
শেবঃ প্রীম্মে মর্মকালে বসন্তে ইত্যর্থঃ হতঃ বন্ধানানন্তরং যুদ্ধারন্তনা
শর্দি দৃষ্টবাৎ অদেশিকাঃ অদেশাৎ চুত্যেঃ ব্যুহভঙ্গোমাভূদিতার্থঃ ॥ ২৩ ॥
ইক্টাহীতি পাশুবাঃ অপরার্থাঃ নান্তি পরার্থো ফ্লেমাং তেহপরার্থাঃ আগর
পরাঃ আসমন্ দ্রোণং বংসমীপে স্থাপিতবতঃ পরকীয়ো মমিতার্থঃ তত্ত্ব
হেতু মাহ স্বয়ং দ্রোণেন তথাকথাতে বন্ধা পাশুবীয়বং স্বদ্য প্রকাশতে
তথেতার্থঃ ॥ ২৪ ॥ এতদেব বির্ণোতি অস্থানামিতাদিনা ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥
পার্থদ্যার্জ্নদাণ গ্লামন্ হত্ত কিং,কার্যাং কিম্বং বাদোনেন প্রশাদতে
তত্ত্বহেতুঃ অন্যত্ত পার্থ প্রের্দি কামাদন্তি, লামাং অস্থাস্থবা দ্বেমাং জিঘাং
সাতঃ রোবাত্তমূলাদভিজ্লনাং ॥ ২৭ ॥

^{*} অখানামিত্যস্য প্ৰাক্ ইক্টাহি পাণ্ডবানিত্য মিত্যেকরোকঃ ক পুস্তকে নাস্তি।

णाहार्या देव काकलिकाः शास्त्रारम्हारामितः । নৈতে মহাভায়ে প্রাপ্তে সংপ্রক্তিবাাঃ কদাচন ॥ ২৮ ॥ প্রাসাদেষু বিচিত্রেষু গোষ্ঠীষূপবনেষু চ। কথা বিচিত্রাঃ কুঝাণাঃ পণ্ডিতাস্তত্র শোভনাঃ॥২৯॥ বছুন্যাশ্চৰ্য্যৰূপাণি কৰ্ববন্তা জনসংস্দি। ইজ্যাস্ত্রে চোপসন্ধানে পণ্ডিতান্তত্র শোভনাঃ॥ ৩১॥ পরেষাং বিবরজ্ঞানে মনুষ্ট্রিভেষ্ চ। হস্তাশ্বরথচর্য্যাস্থ খরে।খ্রাজাবিকর্মণি ॥ ৩১ ॥ গেধেনেষু প্রতেগলীষু বরদারমুথেষু চ। জন্নসংকারদোষেষু পণ্ডিন্সং স্তত্ত্র শোভনাঃ॥ ৩২॥ পণ্ডিত্রণি পৃষ্ঠতঃ ক্লত্ত্বা পরেষাং গুলবাদিনঃ। বিধীয়তাং তথা নীতিৰ্যথা বধ্যেত বৈ পৰঃ ॥ ৩৩ ॥ গা বৈশ্বৰ প্ৰতিষ্ঠাপ্য দেনাং বৃহ্য সমন্ততঃ। আরক্ষাশ্চ বিধীয়ন্তাং যত্র যোৎস্যাম্বেই পরান। ৩৪॥ ইতি বিরাটপর্ঝনি গোহরণপর্ঝনি ছর্য্যোধনবাক্যে সপ্তচত্ত্বারিংশভ্রমোহধ্যায়ঃ॥ ৪৭॥

জেনি মুপহসতি আচার্না ইত্যাদিনা কাফণিকা ইত্যানেন যুদ্ধ ধর্মান ভিজ্জত্ব মুক্তং অপাপং অহিংসা তদ্দর্শিনঃ ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥ আশ্চর্যারপানি বিনোদদিনি ইজাত্তে যজ্জায়ুধে কপালাদেন তেষাং উপসন্ধানে আসাদন প্রোক্ষণাদেন পরেষাং ইজাত্তে জানাং যাজিকানাং বিবরজ্ঞানে দিছে দর্শনে "॥ ৩০ ॥ মহ্ব্যাচরিতেয় স্কানাচমন ভোজনাদিয় হস্তাহ্বরথচ্ব্যাম্ম হস্তাাদিনী বাহনেনচ্ন্যাগমনং ধরাদিনাং কর্মান্ চিকিৎসাদে ॥ ৩১ ॥ প্রতোলীয় গৃহবাহাবয়বেয় প্রদীয়নান বলিদানাদে ইতার্থঃ সংস্কারো বৈশ্বদেবাদি-লাদোষঃ কেশ কীট পাতাদিনা ॥ ৩২ ॥ ৩৩ ॥ গাঃব ইতিছেদঃ গাবশ্চ সং-প্রতিষ্ঠানিতি পাচান্তরে গাব ইত্যাকং পদং আরক্ষাঃ রক্ষকাঃ ॥ ৩৪ ॥

ইতি বিশ্বটি পর্ব্ধনি নৈল কণ্ঠারে ভারত ভাব দীপে দপ্ত চহা-কিংশোহধায়ে॥ ৪৭॥ কৰ্ণ উবাচ।

সৰ্বানাযুগতো ভীতান সংত্ৰস্তানিব লুক্ষয়ে। অবুদ্ধমনসকৈচৰ সৰ্বৰাপ কৈচবানৰস্থিত।ন্॥ ১॥ যদ্যের রাজা মৎস্থানাৎ যদি বীভৎস্থ্রাগতঃ। অহমাবারয়িষামি বেলেব মকরালয়ম্॥ ২॥ মম চাপপ্রযুক্তানাং শরাণাং নতপর্বণাম। নার্তির্গচ্তামন্তি * সর্পাণামিব সূর্পতাম। ৩॥ রুক্মপুখ্যাঃ স্থতীক্ষাগ্র! মুক্তা হস্তবতা ময়া। ছাদয়ন্ত শরাঃ পার্থং শলভা ইব পাদপম্। 🗷 । শরাণান পুস্থাসকানান মৌর্ব্যাভিহতয়া দৃত্য । শ্রেরতাং তলয়োঃ শব্দো ভের্ম্যোরাহ্তয়োরিব॥ ৫॥ • সমাহিতো হি বীভৎস্কুর্ব্বর্দাণাটো চ পঞ্চ। জাতৃম্বেহশ্চ যুদ্ধেহ্মিন ময়ি সংগ্রহরিষ্যতি ॥ ৬ ॥ পাত্রীভূতক কৌন্তেরো ব্লান্সণো গুণবানিব! শরৌঘান প্রতিগৃহ্ছাতু ময়া মুক্তান্ সহস্রশঃ॥ १॥ এষ চৈব মহেম্বাসন্ত্রিমু লেকেমু বিশ্রুতঃ। অহঞাপি নর শ্রেষ্ঠাদর্জ্জুনান্নবের: ক্রচিৎ॥ ৮॥ इंडरफठफ निसू देकः काक्षरनर्भ्युवाक्षिरेडः । দৃশ্যতামদ্য বৈ ব্যোম খদ্যোতেরিব সংর্তম্।। ৯॥

দকানিতি সকান্ ভীথাদীন্ অনবস্থিতান্ চঞ্চলান্ ॥ ১ ॥ ২ ॥ অর্ত্তিঃ ।
লক্ষ্যচ্যুতির্ন ॥ ৩ ॥ য় ॥ পুংখ সন্দোনাং সক্ত পুং খানাং ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥
॥ ৮ ॥ গাদ্বাজিতিঃ গৃধুপক্ষিঃ বাজঃ বেগাঃ শব্দঃ পক্ষব্সংজাতো ।
থেষাং তৈঃ বাজোনিঃ স্থন পক্ষাঃঃ বেগােগুমানিতি মেনিনী ॥ ৯ ॥ ।

থেষাং তৈঃ বাজোনিঃ স্থন পক্ষাঃঃ বেগােগুমানিতি মেনিনী ॥ ৯ ॥ ।

^{*} অস্তীতাত্রতেষা মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অদ্যাহমূণমক্ষয়ং পুরা বাচা প্রতিশ্রুতম্। ধার্ত্তরাষ্ট্রায় দাস্যামি নিহত্য সমরেহজ্জুনম্ ॥ ১০॥ 🗳 অন্তরাচ্ছিদ্যমানানা৲ পুঞ্জানা৲ ব্যতিশীর্য্যতাম্। শলভান।মিবাকাশে প্রচারঃ সংপ্রদৃশ্যতামু॥ ১১॥ ইন্দ্রাশনিসমস্পর্শং মহেন্দ্রসমতেজসম। অর্দ্ধবিষ্যাম্যহং পার্থমূল্কাভিরিব কুঞ্জরমূ॥ ১২॥ রখাদঠিরথং **'শূর**ং সর্কশস্ত্রভূতাম্বর্য। বিবশং পার্থমাদাত্তে গরুত্মান্বি প্রগন্॥ ১৩॥ তমগ্রিমিব তুর্ধর্যসিশক্তিশরেক্সনম্। পাওবায়িমহন দীপ্তং প্রদহন্দ্মিবাহিত্য ॥ ১৪॥ অশ্বেরপুরোবাতো রথৌঘন্তদ্যিত্নুমান্। শরধারো মহামেঘঃ শময়িষ্যামি পাওবম্॥ ১৫॥ মৎকান্ম কবিনিম্ম ক্তাঃ পার্থমাশীবিষোপমাঃ। শর্শ: সমভিসর্পম্ভ বল্মীকমিব পর্গা:-॥ ১৬ । স্থতেজনৈ রুক্সপুজ্মৈ † স্থপীতৈর্নতপর্ক্ষভিঃ। আচিত্ত পশ্য কৌন্তেয়ং কর্ণিকারেরিবাচলমূ॥ ১৭॥ জামদগ্ন্যান্ময়া হস্ত্রং সংপ্রাপ্তমৃষিদত্তমাৎ। ততুপাশ্ৰিত্য বীৰ্য্যঞ্ যুধ্যেয়মপি বাসবম্॥ ১৮॥

আক্ষাং ইতরৈঃ ক্পরিতু মশ্রাং ॥ ১০ ॥ পুংখানাং পুংখবতাং শরানাং । ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ নতপর্ব্বভিঃ সমীকৃত প্রস্থিদেশৈঃ " ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

[্]ৰী, * অন্তর্গান্ধিনামানামিতাসা প্রশৃক্ মৎকার্ম্ক বিমুক্তানাং শ্রানাং নতপর্বনাং। কঃসহেতাগ্রতঃ স্থাতু মিপি সর্বৈঃ স্থরাস্থরৈ রিত্যেকঃ লোকঃ ক পুস্তুক্সা পাচঃ।

[†] স্পীতৈরিতার স্থােতিরিতি পাঠঃ খ ঘ প্তকয়োঃ।

ধুজাগ্রে বানরন্তিষ্ঠন্ ভল্লেন নিহতো ময়া।
আন্যৈব পতিতাং ভূমৌ বিনদন্ ভৈরবান রবান্॥ ১৯॥
শ্রোম্মাভিপনানাং ভূতানাং ধুজবাসিনান্।
দিশঃ প্রভিষ্ঠমানানাম্স্ত শব্দো দিবক্সমঃ॥ ২০॥
আদ্য তুর্যোধনসাহং শলাং ক্লাদি চিরস্থিতম্।
সমূলমুদ্ধরিধ্যামি বীভৎস্কে পাত্যন্ রথাৎ॥ ২১॥
হতাশ্বং বিরথৎ পার্থৎ পৌরুষে পর্যাবস্থিতম্।
নিশ্বসন্তং যথা নাগমদ্য পশ্রুষ্ঠ কৌরবাঃ॥ ২২॥
কামং গচ্ছন্ত কুরবো ধনমাদার কেবলম্। ৯
রথেষু বাপি ভিষ্ঠন্তো যুদ্ধং পশ্রুষ্ঠ মামকম্॥ ২৩॥
ইতি বিরাটপর্কানি গোহরনগর্কানি উত্তর গোগ্রন্থে কিন্তান

"রূপ উন্মত। . े

স দৈব তব রাধের যুদ্ধে ক্রুরতর মতিঃ।

* অর্থানাং প্রকৃতিং বেৎসি নানুবস্বমবেক্ষসে॥ >॥

॥ ১৯॥ বিপদ্ধানাং ভংশিতানাং॥ ২০॥ ২১ ২২ ॥ ধনং গোধনং॥ ২০॥

ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে অফ চত্মারিংশেহগ্যায় ॥ ৪৮॥

অর্থানাং গ্রাদীনাং প্রকৃতিং প্রাপ্তিকার বং অত্বন্ধং প্রাপ্তের বা ফলং নছিন্তং অর্থ প্রাপ্তেমুখ্যং কারনং নাপি ততঃ প্রাপ্তানামর্থানাং পরিক্রণান্ত সন্ধ্রিকার এই প্রাপ্তিকার বিশ্ব

^{*} অর্থানামি ত্যত্ত নার্থানা মিতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

শ মারা হি বহনঃ সন্তি শাস্ত্রান্যাশ্রিত্য চিন্তিতাঃ।
তেষাং যুদ্ধন্ত পাপিঠং বেদয়তি পুরাবিদঃ॥ ২ ॥
দেশকালেন সংযুক্তং যুদ্ধান বিজয়দন ভবেং i
হীনকালন তদেবেহ ফলদনন ভবতুতে i
দেশে কালে চ বিক্রান্তং কল্যাণায় বিধীয়তে ॥ ৩ ॥
আমুকুল্যেন কার্য্যানামন্তরং সংবিধীয়তে।
ভারং হি রঞ্চারম্য ন ব্যবস্যন্তি পশুতাঃ ॥ ৪ ॥

মায়া ইতি যেষাং শকুন্যাদীনাং মায়াঃ কপটানি বহবঃ বহ্বাঃ মন্তি তেষাং দুষ্ট্যা যুদ্ধং পাণিষ্ঠং নাশকরত্বাং নুহীদানি মর্জুনো দূচতেনেব মায়া মাত্রেণ জেতুং শক্ষ্য ইতি ভাবঃপাঠান্তরেণ ক্ষমীতরঃ সামাদ্যাঃ তেবাৎ মধ্যে বৃদ্ধং পাপিষ্ঠং। ২।। দেশ ইতি ইদানীং এ ঘোন যুদ্ধকালঃ আন্ত্যা জলাভাবেন চ সদ্যোবাহনানাং নাশাপত্তঃ নাপিদেশো গিরিত্রগাদ্যা শ্রিতোস্তীতি ভাবঃ हेनर युष्कर कलर न लंडरंड कलर न लंडरंडर श्वायु (न नकालावस् কুলাবের বর্ত্তে ইতি ভাষ্ট বিক্রান্তং পরাক্রমঃ ॥৩॥ দেশাদেরাত্ কলেনে হেতুনা কার্যানাথ যুদ্ধাদীনাথ অন্তর্থ তাদর্থ্য ফলবন্ত্রাতিয়াবৎ সং বিধীয়তে সমাক্ ক্রিয়তে অন্তর মবকাশাবধি পরিধানান্তর্দ্ধিভেদ তাদর্থ্যে ইতি মেদিনী মন্ত্রাণা মিতি পাঠে দেশাদ্যাত্র কূল্যেন কার্যাং বিচার্ব্য মিত্যর্থঃ ভত্রাভাণক মাছ ভার মিতি যথা রথকারেণ দিব্যোয়ং ময়া নির্মিতো রথঃ স্দৃঢ়াঙ্গেছনেন বং দেবানপি কৰ্মণা জেষ্যদী স্থাক্তে তদ্বচিদ্যুক্তে তদ্ব-🕻 চাস ভারং দথা দেশকালাল্ল কুল্যমনপেকৈয়ব পণ্ডিতা ন ব্যবসান্তি বোদ্ধু মিতি শেষঃ এবং ব্রুচদি ভারং দক্ষ দেশাদারি কূলা মনবেক্ষা কথমসাভি ু যোদ্ধব্যং তবজু বচনং রথকার বচন বদর্থ শুন্য "মতি ভাবঃ সর্বানাযুম্বতো-' ভীতান্ সন্ত্র স্তানি বলক্ষয় ইতি যৎকর্ণেনোক্তং তদ্যৈ তত্ত্বরং॥ ৪॥

^{*} মায়াহী তাত্ত নয়াহীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

পরিচিন্তা ত পার্থেন সন্নিপাতো ন নঃ ক্ষঃ। একঃ কুৰুন * ভারক্ষদেকশ্চাগ্নিমতর্পন্ত ॥ ৫॥ একশ্চ পঞ্চ বর্যাণি ব্রহ্মচর্য্যমধারয়ে । একঃ স্বভক্রামারোপ্য বৈরথে রুফমাহররহ। ৬॥ একঃ কিরাতরপেণ স্থিত ক্রেম্মেরোধরং। অস্মিয়েব বনে পার্থে। হ্লতাং রুফায়ব্রজয়েও॥ ৭॥ এক শ্চ পঞ্চ বর্ষানি শক্রাদস্তাণ্য শিক্ষত। একঃসোহয়মরীন জিত্ব। কুরুণামকরোদ্যশঃ॥৮॥ (अरका शक्तर्वत । जान कि जिस्मान में । कि বিজিগ্যে তর্মা সংখ্যে সেনা ছাস্য স্বুছ রাম্। ১। তথা নিবাতকবচাঃ কালকঞ্জাশ্চ দানবাঃ। দৈবতৈরপ্যবধ্যাত্তে একেন যুধি পাতিভাঃ॥ ১০॥ ওকেন হি ত্বরা কর্ণ কিলামেহ কুত্রপ পুরা। একাকিনা যথা তেন ভূমিপালা বলীক্লতাঃ॥ >>॥ ইন্দ্রোহপি হিন পার্থেন সংগ্রামে যোদ্ধ মইতি। যন্তেনাশংসশে যুদ্ধণ † কর্ত্তমুক্তমতেজসা।। ১২।। णा-गैविवगा कुकमा পानिमूनामा मकिनम्। অবসূষ্য প্রদেশিন্য। দংষ্ট্রামদোত্রিচ্ছান 🕯 ১৩॥ অথবা কুঞ্জর সভামেক এব চরন্বনে। অনকুশঃ সমারুছ নগর ে গন্তমিচ্ছ সি॥ ১৪॥

বিচার ফল মাহ পরিচিন্ত্যেতি ॥ ৫॥ ৬॥ ৭ ୩ ৮॥ ৯॥ ১০॥ ১১॥ ১২॥ প্রদেশিনাতেজন্য ॥ ১০ ॥ ১৪॥

^{*} অভ্যরক্ষদিতাত্র অভ্যাগক্ষদিতি পাঠঃ খ পস্তকে। া কর্ত্বসূত্রতেজ্যে তাত্র কর্ত্ব্যং ত্সাভেষজ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

স্মিদ্ধ পাৰকং বাপি মৃত্যেদেবিশাছ্তম্। ঘূতাক্তশ্চীরবাসাস্ত্রং মধ্যেনে। হেলকু মচ্চুসি ॥ ১৫॥ णाञ्चानः कः मञ्जूषा करके वस्तु। महारिनामः। সমূদ্র প্রতরেদোর্ভ্যাং তত্র কিল্লাম পৌরুষন্॥ ১৬॥ রুত।স্ত্রমকুতাস্ত্রো বৈ বলবস্তুং স্থুতুর্বলঃ। তাদৃশ্শ কৰ্ম: পাৰ্থণ যোদ্ধ্মিচ্ছেৎ স দুৰ্ম্মতিং॥ ১৭॥ অস্মাভিরেষ নিক্কতো ব্র্ধাণীছ ত্রয়োদশ। সিপ্তঃ পাশবিমুক্তো বা ন নঃ শেষং করিষ্যতি ॥ ১৮ ॥ একাত্তে পার্থনাদীনং কুপেথ্যিমিব সংর্তম্। অজ্ঞানাদভাবক্ষন্য প্রাপ্তাঃ স্মোভয়মুক্তমম্॥ ১৯॥ সহ যুধ্যামহে পার্থমাগত ু যুদ্ধতুর্মদম ! সৈন্যান্তিষ্ঠস্ত সন্নদা ব্যুতানীকাঃ প্রহারিবঃ॥ ২০॥ क्रिंग पूर्वाप्रता जीका जवान् क्रोनिस्था वस्र। সর্কে যুধ্যামহে পার্থং কর্ণ মা সাহসং রূপাঃ॥ ২১॥ বয়ং ব্যবস্থিত পার্থ বজ্ঞপাণি মিৰোদ্যতম্। ষড় থাঃ প্রতিযুধ্যেম তিঠেম যদি সংহতাঃ ॥ ২২ ॥

মধ্যের মধ্যত উৎসত্থ উৎসপিতৃৎ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১১ ॥ ২০ ॥

। । ১১ ॥ যতুক্ত কামং গাছতু ক্রবোধনমাদায় কেবলং রথের বাপিতিঠিতোযুদ্ধং পশ্যতু মামক মিতি ততাহ্বত্থা ইতি সংহতাঃ বড়পি একীভূয়তে নৈকেন বোদ্ধা কথাং চিচ্ছক্ষাব্যা ন কেকেন্দ্র ইতিভাবঃ ॥ ২২ ॥

µ२० ॥

বৃচ্চানীকানি সৈন্যানি ষস্তাঃ পরমধন্তিন্য।

যুধ্যামহেহজুনং সংখ্যো দানবা বাস্বং যথা ॥ ২৩ ॥
ইতি বিরাটপ্রানি গোহরণপ্রানি উত্তর গোগ্রহে রূপবাক্যে

একোন পঞ্চাশন্তমেহিধ্যারঃ ॥ ৪৯ ॥

অশ্বথামোবাচ ৷

ন চ তাৰ্বজ্ঞিতা গাবো ন চ সীমান্তর্ব গতাঃ ।
ন হান্তিনপুর প্রাপ্তান্ত্র কর্ন বিকপ্তলে ॥ ১॥
সংগ্রামান স্বহুন জিল্বা লঁকা চ বিপুলং খ্নম্।
বিজিতা চ পরা শি ভূমিং নাইং কিঞ্চন পৌরুষম্ ॥ ২॥
দহত্যগ্লিরবাকান্ত ভূফী শুতি শিবাকরঃ ।
তূফীং ধারয়তে লোকান্ বস্থা সচরাচরান্॥ ৩॥
চাতুর্বির্নাস্য কর্মানি বিহিতানি স্বয়স্ত্বা ।
ধনং মৈরধিগন্তবাং মচ্চ কুর্বন্ ন চ্বাতি ॥ ৪॥
অধীত্য ব্যাম্বাণ বেদান্যাজ্যেত যজেত চ।
ক্ষিত্রিয়ো ধনুরাশ্রিত্য যজেচৈর ন যাক্রেং॥ ৫॥

স্থতি বিরাট পর্বাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে একোন পঞ্চাশভমোহধ্যায়ঃ ॥ ৪৯ ॥

নচেতি শ্রাঃ পরবিত্তং জিহা পরদীমামুলজ্যা স্থ নগরং প্রতিনীহাপি ন শাষ্টে বস্তু এতেবা মেক তম মপাক্ষা কথদে অতোনিলজ্জা দীতিভাবঃ ॥ ১॥ ২॥ ৩॥ মহজুং নৈতে মহাভায়ে প্রাপ্তে সংপ্রকাটা ইত্যাদিনা বাহ্মানাং ভোজনালাবেব কৌশলং নগুদে ইতি তত্ত তবাপি বৈশ্যভাল মুদ্দে সামর্থ্যমন্তীতি দশ্যিবান্ বর্ণনাং কর্মাণি বিভল্তে চাতুর্বন্তী সোড্যাদিনা॥ ৪॥ ৫॥

* ভূমি মিতাত্ত্র সেনা মিতি পাঠঃ খ গুস্তকে।

বৈশ্যোহ্ধিগনা নিজ্ঞানি ব্রহ্মকর্মাণি কারয়েৎ। भृजः শুশ্রাবণং কুর্য্যাক্রিয়ু বর্ণেষু সর্বাদা। বঞ্চনাযোগবিধিভিক্ষৈতসীং বুজিমাঞ্জিতাঃ। ৬॥ বর্তুমানা যথা শাস্ত্রং প্রাপ্য চাপি মহীমিমান্। সংকৃক্তি মহাভাগা গুকন্ স্বিগুণানপি॥ १॥ প্রাপ্য দুটিতন কো রাজাং ক্ষল্রিয়োস্তোষ্ট্র মই ডি। তথা সুশংসৰপোহয় পাৰ্ত্তরাষ্ট্রশ্চ নিঘুণিঃ॥ ৮॥ তথাভিগম্য বিস্তানি কো বিকথোৱিচক্ষণঃ। নিক্লত্যা বঞ্চনার্যেটিগশ্চরন্ বৈতংগিকো যথা ॥ ৯ ॥ কতমৎ দৈদ্বর্থং যুদ্ধং ২ত্রাকৈষ র্দ্ধনঞ্জয়ম্। নকুলং সহদেবঞ্ধন এবৰাং বুয়া হত্য_{়া} ১০ ॥ যুধিষ্টিরো জিতঃ কন্মিন্ ভীমশ্চ বালনাম্বরঃ। ইক্রপ্রস্থা কন্মিন্ সংপ্রামে নিব্রিতং পুরা ॥ ১১ ॥ তথৈব কতমদ্দাদেং যশ্মিনু কুফা ত্বরা জিতা। একবস্ত্রা সভাবে নীতা চুফীকর্ম্মন্ রজম্বলা॥ ১২॥ মূলমেধান মহৎ ক্লন্তন সারাধী চনদনং যথা। কর্ম্ম কার্য়েথাঃ স্থত * তত্ত্র কিং বিদ্যুরে হববীৎ ॥ ১৩॥

চিত্তান্যধিগমা ক্ষ্যাদিনা ইতি শেষ্ট এক্ষর্মানি আধানাদীনি কার্যেৎ
স্থার্থেনিচ্ ॥ ৬ ॥ বর্তমানা ইতি নাগ্যেন পৃথিবীং জিত্তাপি সভাে বিগুণানুনপি গুরুত্ব সংকুকান্ত বভুতানায়েন পাগুবং জিত্বা সাধুনপি গুরুত্ব
নিন্দুসীতিভাব্য ॥ ৭ ॥ এতদেবছে প্রাপাতি নিয়ণো নির্লজ্ঞঃ ॥ ৮ ॥
নির্ভাগ শাচোন বঞ্চনা যোগৈঃ ছিছে।পারিঃ বীতথ্যা বন্ধনাপ রস্তেন
জীবতীতি বৈতংগিকো ব্যাধঃ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥
ইত্রপ্রস্থাৎ তৎস্থাঃ পাগুবাঃ॥ ১১ ॥ ২২ মূলামতি এবাং পাগুবানাং মূলং মহৎ
মহচ্ছদ বাচাং এক্ষ্যাঞ্চাং বেদবাকাং প্রাক্তানান্চ বথাে গুং আদিপ্রবিনি

^{*} স্তেভাত্র শূরেভি পাঠঃ ক পুস্তাকে।

মূলং কুষ্ণোব্ৰহ্ম বাহ্মণাশ্তেতি তদেতদ্বেদ বিৰুদ্ধ মনৃতং দূৰ্যতং কুৰ্বত ধার্ত্তরাফ্রেণ ধর্মসা মূলং কৃতং চ্ছিলং ইদানীষ্ঠ ব্রাহ্মগান অবজানতা ড-য়াপি তদেবকৃতং অতোধৰ্মনাশাৎ ভবতাং নাশে হবশাং ভাবীতার্থঃ मृल कीमृगः हम्मनः यथा गास्तः नीउनः नजूमाइकः काधक्राः उथा ভূর্ব্যোধনঃ কেবলং ক্রেধিময় ইত্যুক্তং প্রাক্ ভূর্ব্যোধনোমভাময়ো মহা-ক্রম ইতি সারাধী কর্মকারয়িখ্য ইতিব্যবহিত্তেন সম্বন্ধঃ সারাধী ধন_ র্থী ধনেচ সার্মিতি মেদিনী পাওবান্ কর্মকারানিব ক্রওবানসি যত্ত-কালে তত্ত তদা বিহুরঃ কিমব্রবীংক্ষয় মূলং দূর্তমিতি তদিদানীং শরেতি ভাবঃ হতেতি সম্বোধয়ত্বকতিয়হা দদ্য মুদ্ধেষ্ঠেশলং ব্যনক্তি নবাদিতোবি দৈবং ক্তমিতি শ্রুতের্দিব্যাৎ ক্তাৎ ক্তাং জাতন্যাস্য কথমক্ষত্ৰহং যুদ্ধা কৌশল ঞেতি বিহুষাপ্যশ্ব খায়া বক্তুং যুক্তমিতি চেং-শূলু সর্বেষাং হি বর্ণানাং দিবিধং জুজামোনিজং সংক্ষারজ্ঞ তত্ত্ব যএব যোনিঃ স এব সংস্কর্তাচেং স একজোনপ্রকৃতিত প্রাবতে কর্ণ্যু দৈবক্ষত্র জোপাক্ষবিয়েণ স্তেন সংস্কৃত ইতি দ্বিজাতহাৎ ক্ষবিয়দ্ধেন প্রহন্ত্র্ কুশলোপি ভ্তত্বেন পরকীয় প্রহারং সোচুমক্ত ইতি যুদ্ধাৎ পলায়তে ইত্যাশয়ে নৈনং সূর্য্য পুত্রং জ্ঞানত্রাপি স্থতেতি সম্বোধয়তি তথাচ মন্ত্রবর্ণঃ সহস্মনো অভিমাতি মন্মৈকজন্ হণন্ প্রহণন্ প্রেহিশত্রু উপ্রস্তে পাজোনখাৰকংধ্বশীবশং নয় সএকজয় মিতিঅস্যার্থঃ তাপদো মহা ঋাষঃ সৎকম্পা ধিষ্ঠাত্রীং দেবতাং মহাসং জাং প্রার্থয়তে ত্রা মন্যো ইতি স্থক্তে তৃতীয়াইয়মুক্ যন্তেমন্য বিতি মধ্যৎ দিন ইতি মাধ্যৎ দিনে সবনেশ্যে-নয়াগে শক্রমারনার্থে ২সা স্কুল্য বিনিয়োগ: হেমন্যো অল্মে শর্ণাগ তায় রাজ্যায় বা এতদ্রক্ষণার্থ মিতি যবিৎ অভিমাতিং সর্বতঃ পীড়াং• পিএাদিভিঃ সহ বিরোধং জ্ঞাতি বধুদে। যং বা সহস্ব ক্ষমন্ত কথং তেষাৎ রক্ষণং স্যাদত আছে জজন্রোর্গং প্রাপ্রন্ মূণন্ বিষ্যামাণে। জরাতান্ত ইতার্থ: প্রমূ অত্যন্তং আসর মৃত্যুরী শত্ন প্রেহি প্রকর্ষেণ জেতুং গাছে। অত্রশরীরগতং রোগাদি তদভি মানিনি চেতসিউপচর্যাতে নম্বশক্তেন রোগাদ্যাক্রান্তেন ময়া কথং শত্রণো জেতুং শক্যা ইত্যাশক্ষাহ উত্রমিতি উত্তাং পরমর্দনক্ষণ তে তবপাজন্তেজোনস্থ নিশ্চিতং আৰুক্ধ্যেআুরোক্ষ্

ষণাশক্তি মনুষ্যাণাং শমমালক্ষয়ামহে।
আন্যেষাধ্যৈব ভূতানাম্পি কীটপিপীলিকৈ:।
টোপদ্যান্ত্ৰ প্রিক্লেশ্বন কন্তং পাগুবোহছতি॥ ১৪ ॥
ক্ষয়ায় ধার্ত্তরাষ্ট্রাণাং প্রাত্মভূ তো ধনপ্রয়:।
ত্বন পুনং পণ্ডিতো ভূতা বাচং বক্ত্রামহেচ্ছসি॥ ১৫ ॥
বৈরান্তকরণো জিফুর্ন নং শেষং করিষ্যতি॥ ১৬ ॥
নৈয় দেবান্ন গাঁক্রান্নাস্থরান চু রাক্ষসান্।
ভরাদিহ ন যুধ্যেত কুন্তীপুল্রো ধন্প্রয়ঃ॥ ১৭ ॥
যং যমেষোহভিশংকুন্ধঃ সন্প্রামে নিপতিষ্যতি।
বৃক্ষং * গরুড়বেগো বা বিনিষ্ট্রত্য তমেষ্যতি॥ ১৮ ॥

শত্ন্ সমর্থ মন্তি দৃষ্ট সংকশাসাহি'তেজঃ পরান্ অবশ্যং নাশরে দেবে তার্থঃ এতদেবাহ বলী সর্ক্রমা বশেস্তীতি বলী সংকশা দার্চ্যাদেব ছগা-স্ত্যাদিভিঃ সমুদ্র পানাদীনাপি রুতানি অতএব সর্কাং জগাং দ্বমেব বশং নয়সে বশিষে হেছুঃ হেএকজ একমাজ্জাত নুষেক্রেম্ব মনঃ সংকশাসো পাদান মিতি ব্যর্থং বিশেষণ মিতি চেরকুগুব্যার্ক্ত্যর্থতাৎ সছনোন জা-তোহনোন চ আত্মীয় বৃদ্ধ্যা সংস্কৃত ইতি নদৃঢ় সংকশ্যো ভবতি নচ পরাং আছুং শক্রোতি দিজভাৎ তথাচ লোকে আভাগকঃ বস্যাদেবচনে সাদিশিতৃক ইতি বজারো ভবন্তি অত, একজেতার্থ বদ্ধনাং দক্তর্জীতাদৌছু শাস্ত্রীয়ং একস্যাব স্বর্মস্তীতি নাসৌ কুগু তুলা ইতিদিক্ ॥ ১০ ॥ নহু মম স্বত্তাৎ দোষবত্বং চেৎ স্কুলাতা অপি তে কুতো ন শাম্যন্তি কুতোরা পর সাহায্যার্থ শাস্ত্রাভ্ বোদ্ধু মাগতা বালিবধে রামইবেত্যাশক্ষাহ য়্রথাশক্তীতি দান্ত্যাৎ পিপীলিকৈরপিকৃতং শমং লক্ষ্যামহে ইতি যোজ্যং বালিরাময়ো বি-হ্যাধা ভাবেপি রামেণ বালীহত ইতি সোহপরাধী পাণ্ডবান্থ যুম্বাভিরপ ক্রিটিত যুম্বান্ জিখাংসন্তো না পরাধ্যন্তীতিভাবঃ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ নৈবনমুধ্যতে অপিতু যুদ্ধা তৈবেত্যর্থঃ ॥ ১৭ ॥ এব্যতি গমিষ্যাতি॥ ১৮ ॥

^{*} গৰুড় বেগা ইত্যত্ৰ গৰুত্বান্ বেগেনেভি পাঠঃ থ পুশুকে।

স্বতো বিশিন্তং বীর্যোগ ধনুষ্যমররাট্সমন্।
বাস্থদেবসমং যুদ্ধে তং পার্থ- কো ন পুজরেং॥ ১০॥
দৈবং দৈবেনযুধ্যেত মানুষং মানুষেণ চ।
অন্তং হল্লেণ যো হন্যাৎ কোহজুনেন সমঃ পুমান্॥ ২০॥
পুজাদনস্তরঃ শিষ্য ইতি ধর্মবিদো বিছঃ।
এতেনাপি নিমিজেন প্রিয়ো জোণস্য পাপ্তবং॥ ২১॥
যথা স্মকরোদ্যতমিক্রপ্রস্থং যথাহরঃ।
যথানৈষীঃ সভাং ক্ষাং তথা যুধ্যস্ব পাপ্তবম্॥ ২২॥
অয়ং তে মাতুলঃ প্রাক্তঃ ক্ষত্রধর্ম্য্য কোবিদঃ।
ছদ্যতদেবী গাস্বারঃ শকুনিযুধ্যতামিহ॥ ২৩॥
নাক্ষান্ ক্ষিপতি গাপ্তবং ন কুছং দ্বাপরং ন চ।
জ্বাতো নিশিতান্ বাণাংস্তীক্ষান্ ক্ষিপতি গাপ্তবম॥ ২৪॥

১৯ ॥ দেবেন দেব যোগোন যুখ্যত ॥২০ ॥ ২১ ॥ অহরঃ ছত বানসি আনৈরীঃ আনীতবানাস যথা উৎসাহ পূর্বক মেতৎ কর্ম হয়া কৃতৎ তথৈবেদানী মপরারক্তো যুধ্যক্ষেত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ নচেতি চকারাৎ ত্রেতাপি ন ভব
তীত্যধাহার্যাৎ অয়মর্থঃ ক্রমেণ একদ্বিত্র চত্তরক্ষাক্ষিতঃ প্রদেশে রক্ষ
চতুইয়বান পাশো ভবতি তত্র একাকঃ কলিঃ দ্বাকো দাপর ত্রাক্ষ স্ত্রেতা
চতুরকঃ কৃতৎ তত্রদূতে পঞ্চন্দীয়াঃ পঞ্চনীয়ান্দ দীনারাদয়ঃ দ্বাপাস্তে
তান্তঃ পাশ প্রকেশে যদ্যে কাক্ষ উপর্যায়াতি তর্ক্তি স্বীয়েদেক এব জিতো
ভবতি যদি দ্বো ত্রদা পরকিয়ং দীনারদ্বহং স্বীয়শৈচকোজিতঃ যদিত্রাক্ষ
উপরি পতেত্রদাপরকীয়ৎ ত্রয়ং স্বীয়্রঞ্চ ত্রয়ং জিতং চতুরক্ষস্যোপরি
পত্রন সর্কেপি স্বীয়াঃ পরকীয়াশ্য জিতা ভবত্তি তথাচ কলিপাতে জক্ষো
নাত্তি দ্বাপরাদি পাতে উত্রোক্তর বৃদ্ধ্যা জন্মৈন্তি তেন গাতীবন্ধাঃ শরাঃ
সর্বধা নজ্মাবন্থা ইত্যর্থঃ ॥ ২৪॥

ন হি গাণ্ডীবনিমুক্তা

* অন্তরেষেব তিন্ঠতৈ গিরীণামপি দারণাঃ ॥ ২৫ ॥
অন্তবং পবনো মৃত্যুর্ত্তথাপ্লিক্তিতবামুখঃ ।
কুর্যুরেতে ক্চিচ্ছেষং ন তু কুকো ধনপ্লয়ঃ ॥ ২৬ ॥
যথা সভারাং দ্যুতং ত্বং মাতুলেন সহাদরোঃ !
তথা যুধ্যম্ব সংগ্রামে সৌবলেন স্করক্ষিতঃ ॥ ২৭ ॥

* যুধ্যতা কামমাচার্য্যে নাহং বোৎস্যে ধনপ্লয়ম্ ।
মৎস্যো হামাভিরাঘোধ্যো যদ্যাগচ্ছেদাবাং পদম্ ॥ ২৮ ॥
ইতি বিরাটপ্রক্ষণি গোহরণপ্রকাগ্র্মথামভর্ সনবাক্যে
পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫০ ॥

ভীম্ম উবাচ।

নাধুপশ্যতি বৈ দ্রৌণিঃ কুপশ্চ সাধু পশ্যতি।
কর্ণস্ত ক্ষপ্রধর্মেণ যথাবদেষাদ্ধ মিছতি ॥ ১ ॥
আচার্য্যো নাভিবক্তব্যঃ পুরুষেণ বিজানতা।
দেশকালো তু সম্প্রেক্ষ্য যোদ্ধব্যমিতি মে মতিঃ ॥ ২ ॥
যন্ত স্থ্যসমাঃ পঞ্চ সপত্রাঃ স্থ্যপ্রহারিণঃ।
কথমভ্যদয়ে তেষাং ন প্রমুষ্টেত পণ্ডিতঃ॥ ৩ ॥

। २०॥२७॥२१॥२৮॥

ইতি বিরাট পর্কাণ ইনলকথীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চা-শতমোহধারঃ॥ ৫০॥

সাধিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ যস্য হ্রোগুধনস্য পঞ্চপাশুবাং ॥ ৩ ॥ ৪ ॥

শ গার্দ্ধপরা ইত্যত্র গাৃধ্বপক্ষা ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।
 শ অন্তরেষেবেত্যত্র মান্তরেষেবেতি পাঠঃ থ য পুস্তকরোঃ।
 শ র্ধ্যতামিত্যস্য প্রাক্ যথা সভায়ামিত্যেক শ্লোকঃ ক পুস্তকে নান্তি॥

স্বার্থে সর্বে বিমুহ্নন্তি যেহপি ধর্ম্মবিদো ক্রনাঃ। তশাদ্রাজন ব্রবীমোত্ত বাকা< তে যদি রোচতে । ৪ । कर्ताहि यमरवाह जान एडकः मन्क्रमनाय छए। আচার্যাপুত্র ক্ষমতাং মহৎ কার্যামুপস্থিতম্।। ৫॥ নায়ং কালো বিরোধস্য কৌন্তেষে সমুপস্থিতে। ক্ষন্তব্যং ভবতা সর্বামাচার্য্যেণ ক্লেণ্ড। ৬। ভবতাং হি ক্লভাস্তবং যথাদিত্যে প্ৰভা তথা ৷ यथा हत्क्रमत्मा लक्ष्मीः मद्मथाः नाभक्रयारङ्ग १॥ এবং ভবৎস্থ ব্রাহ্মণ্যং ব্রহ্মান্ত্রঞ্ব প্রতিষ্ঠিত্য ি চত্ত্বার একতো বেদাঃ ক্ষাত্রমেকত্র দুশাতে॥ ৮॥ নৈতৎ সমস্তমভয়ং কক্মিংশ্চিদমুশুশ্রুম। অন্যত্র ভারতাচার্য্যাৎ সপুত্রাদিতি মে মতিঃ। ১॥ বেদান্তাশ্চ পুরাণানি ইতি হাসং পুরাতনং। कामनभा मृटजताकन् काद्रजाना मित्रका घटवर ॥ ১०॥ अञ्चलाखरिक्षव (विनाम्ह निकत्नाळ मुमारक। আচার্যাপুত্র: ক্ষমতাৎ নায়ৎ কাল: স্বভেরনে॥ ১১॥ সর্বে সংহত্য যুধ্যামঃ পাকশাসনিমাগতম্॥ ১২॥ 'বলম্ভ ব্যসনানীহ যাত্ম্যক্তানি মনীবিভিঃ।' মুখ্যো ভেদে। হি তেষান্ত পাপিষ্ঠো বিচুষাং মতঃ ॥ ১০ ॥

॥ ৪॥ যং অবেচি দান্ত্রিসা নিক্ষরপই তকুস্যৈর তেজঃ সংজননারৈর নতুদ্বেষ্থ ॥ ৫॥ ৬॥ ৭॥ ৮॥ ৯॥ ১০ ॥ ১১॥ ১২॥ বলসাসেন্যাস্য ব্যস্ত-। নানি বিনাশ কানি॥ ১৩॥

শ্রন্ত কৈবেতাসা প্রাক্রেনিভালেতাক শ্লেকঃ ক পুস্তকে নাতি।

ভাষ্ঠ থামে বিশ্ব।

নৈবং ন্যাষ্যমিদং বাদ্ধমন্মাকং পুরুষর্ষত। কিন্তু রোষপরীতেন গুরুণা ভাষিতা গুণাং॥ ১৪॥ শত্রোরপি গুণাণ বাচ্যা দোষা বাচ্যা গুরোরপি। সর্বাথা সর্ব্যান্ত্রন পুজে শিষ্যে হিত্ত বদেৎ॥ ১৫॥

ভূৰ্যোধন উবাচ।

আচার্য্য এষ ক্ষমতাং শান্তিরত্র বিধিয়তাম্। অভিদ্যমানে ভু,গুণ্টো তম্ব তুং † শেষকারিত্তম্॥ ১৬॥

বৈশাশারন উবাচ।

ততো'তুর্যোধনো ফোণ্ ক্ষময়ামাস ভারত। সহ কর্ণেন ভীয়েণ কুপেণ চ মহাত্মনা॥ ১৭॥

শ্রেণ উবাচ।

যদেব প্রথমণ বাক্যণ ভীষ্মঃ শান্তনধ্বোহব্রবীৎ। তেনৈবাহং প্রসন্ধোহন্মি নীতিরত্র বিধীয়তাম ॥ ১৮॥

নৈবেতি অস্মাক মিদং বচনং হয়া ন্যাযাং নৈবনিন্দাং রোবেণ ছুদ্যুতাদি
দর্শনজেন পরীত ভেন গ্রন্থ দোণেন গুণা অর্জন্য ॥ ১৪ ॥ হিতং বল
বতা সহ নির্থলৈভবিভিবিচার্যা যোদ্ধব্যমিত্যেবং রূপং ॥ ১৫ ॥ আচার্য্য
ইতি রোধাদেভ্রুচন মাচার্যোণেইক্রং নতুভেদার্থ মিতি ভাবঃ পাচান্তরে
আভিষ্ম মাণে অভিমূষ্য মাণে উপালভা মানে ইতি যাবং রোম কারিতং
শেষং কর্ত্তব্যং কারণীয়ঞ্চ তৎ সর্বাং ন কৃতং স্যাৎ প্রস্তুত কার্যা নাশো ভবে
দিতার্থ: ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ প্রথমং মুখ্যুৎ, ভেদো ন কার্যাঃ ক্ষন্তব্যঞ্জেত যতুক্তং
তেনেবাহ্যু বাক্ষান প্রসন্থোম্ম ॥ ১৮ ॥

^{*} বাচ্যেত্যত্র প্রাহেতি পাঠঃ খ পুস্তকে। * শেষেত্যত্র রোষেতি পাঠঃ খ ঘ গুস্তকরোঃ।

যথা ছুর্য্যোধন পার্থো নোপদর্পতি সঙ্গরে। # সাহসাৎ যদি বা মোহাত্তথা নীতির্রিধীয়তাম ॥ ১৯॥ বনবাদে ছনিক্ত দেশয়েল স্মর্জুনঃ। ধनং বা লভমানোহত নাদ্য তৎক্ষন্ত, ম≨ভি॥ २०॥ যথা নয়েং সমাযুঞ্জাদ্ধতিরাষ্ট্রং কথঞ্চন। ন চ সেনা পরাজয়াত্তথা নীতির্বিধীয়তাম ॥ ২৯॥ উক্ত^ ছুর্য্যোধনেনাপি পুরুম্ভাদাকামীদৃশম্। তদনুস্ত্য গাঙ্গের যথাবছজুমईসি ॥ ২২ ॥ ° ইতি বিরাটপর্বাণি গোহরণশর্বাণি ডোণবাক্যে এক

পঞ্চাশভ্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫১ ॥

॥ ১৯॥ ধনক্ষেতি ধনং লক্ষা অস্বাস্থপেক্ষা গৃহং গমিষাতি গোধনে অত্যন্তং দুরতোহ ন্যৈ নীতে যুধ্যতা মন্মাকং অন্তমেবায়ং ক্ষিয়তীতি ভাবঃ ॥ ২০ ॥ সমাযুজ্যাৎ সংপ্রাপ্ত পরাজয়াৎ পরাজয়প্রাপ্ত ॥ ২১॥ পুরস্তাদ্বাকা মুক্তং অজ্ঞাত বাসকালঃ পুর্ণোনবেতি প্রথমং বিচার্থা মিতোৰ রূপং॥ ২২॥

> ইতি বিরাটপর্মণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাব দীপে এক পঞাশতমোহধারঃ ॥ ৫১ ॥

^{*} সাহসাদিতাস্য প্রাক্ যথা হর্ষ্যোধনো রাজা নগচ্ছেদ্বিতাং বশ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ভীম্ম উপ্রচ।

কলাকাঠাশ যুক্সান্তে মুহুরিশ দিনানি চ।
আর্দ্ধমাসাশ মাসাশ নক্ষত্রাণি গ্রহান্তথা ॥ > ॥
আত্তবশ্চাপি যুক্তান্তে তথা সম্বংসর। অপি।
এবং কালবিভাগেন কলচক্রং প্রবর্ততে ॥ ২ ॥
তেষাং কালতিরেকেণ জ্যোতিযাঞ্চ ব্যক্তিক্রমাং।
পঞ্চমে পঞ্চমে বর্ষে দৌ মাসারু শ প্রসায়তঃ ॥ ৩ ॥
এবামপ্যধিকা মাসা পঞ্চ চ দাদশ ক্ষপাং।
তয়োদশানা শ বর্ষাণামিতি মে বর্ততে মতিঃ ॥ ৪ ॥

কলা কাঠানেত্তি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ফ্লাত্র চতু িংশত্যাপটিক্ষালাল: সম্বংসরঃ চতুষ্পাঞ্চাশ্দিকি শতত্রয়দিনাত্ম সাক্ষ্য স এব দ্বাদশ ব্যবিকাদি প্রতিজ্ঞা-হ গ্রাম্যনাদি সভাদিষ্ঠ উপগুজাতে ত্রীনি শতানি পঞ্চ ষ্টিশ্চ দিনানি পঞ্চশ ঘটকা একতিংশং পলানি তিংশ দক্ষরাণি সেবিস্যু সম্বং সরস্য মানং তত্ত্ব প্রায়েশ জ্যোতিনিদঃ মৌর সম্বংসগ্রাহ্রোগেনৈব বর্ষ প্রবে-শাদিকং কুর্বান্তি আতে বর্দ্ধাপনাদে ছ চাত্রেণেতি বিশেষে সভাপি यहा এতব্যোরান্তরালিকঃ সাংনাবেশীগণাতে তদা সৌরগতা রন্ধিন্তত্র গণাতে এবং প্রনার্থ ক্রিয়মাণায়াং এয়োদশ অব্দেয়ু পঞ্চান্দ্রামাদাঃ দ্বেদিনে সপ্তত্তিংশরাড়াঃ পঞ্চরারিংশংপলানি পঞ্চ দশাক্ষ্যাণিচ তথাচ কিঞ্চি দ্ধিকানিব দিনানাব্ধি পূর্ত্তে রধিকানি জাতানি জোতিয়াই নক্ষতানাং বাতিক্রমাৎ সূর্যোণ চল্ডেণ্ড লজ্জনাৎ উপজায়তঃ অধিকৌ ভবতঃ ॥৩॥ ',অত্ত্ৰু অৰ্দ্ধদাশত যুজাত ইতি গ্ৰহণাৎ তায়োদশানাং বৰ্ষাণাৎ চান্দ্ৰমাসাঃ, ষটু পঞ্চাশদধিকং শতং ভৰম্ভীতি হে এৰ গৃহীতা ইতি জেয়ং তথাচ বিজয়-• দশমাবং দূতেে পাগুৰপরাজীয়ঃ লোকে তদ্যৈৰ প্ৰীয়েন দূতে কালত্বাৎ 'জীমেচ গোগ্রহার্থং' প্রবৃত্তা ইত্যুক্তং তেন বিজয় দশম্যামাগামিন্যাং অয়োদশাক পুরনং ভবিষাতীতি হুর্যোধন প্রত্যাশা পাওবাস্থ চাত্রাক

^{*} উপজায়ত ইতাত্র উপদীয়ত ইতি পাঠঃ রু পুস্তকে।

সর্বাং যথাবচ্চরিত । যান্বদেভিঃ প্রতিশ্রুতম্। এবমেতদ্ধ্বং জ্ঞাত্বা ততো বীভৎস্কার্গতঃ। ৫॥ गर्व्य टेघ्व प्रशासानः गर्व्य धर्मार्थरकाविषाः। যেষা বুধিষ্ঠিরে। রাজা কথং ধর্মেইপরাধু য়ু: ॥ ৬ ॥ অলুক:শৈচৰ কৌন্ডেয়াঃ ক্লভবন্তুক্ষ চুষ্করম্। ন চাপি কেবলং রাজামিচ্ছেয়ুস্তেই্নুপায়তঃ॥ १॥ । তদৈব তে হি বিক্রাস্কমীয়ু: কৌরবনন্দনা:। > ধর্মপাশনিবদ্ধান্তে ন চেলু: ক্ষত্রিয়ব্রতাং । ৮ ॥ যক্ষানুত ইতি খ্যায়। দ্ব: স গচ্ছেৎ পরাভীবমু। রুণুযুর্দ্মরণং পার্যা নান্তত্ব কথ্ঞন। 🔊 ॥ প্রাপ্তে কালে তু প্রাপ্তব্য নে। স্থেজযুর্নরর্ষভাঃ। অপি বজ্ৰভূতা গুপ্তং তথাৰীৰ্যা হি পাণ্ডবা: ॥ ১•॥ প্রতিযুধ্যাম সমরে সর্বাশস্ত্রভাষ্ণরম্। * তম্মাদ্বদত্র কল্যাণং লোকে সদ্ভিরনুষ্ঠিতম্। তৎ সংবিধীয়তাং শীঘ্রং মা বো হুর্থে। হভাগাৎ পরম ॥ ১১ ॥ ন হি পশ্যামি সংগ্রামে কদাচিদপি কৌরব। একান্তদিদ্ধিং রাজেন্দ্র সংপ্রাপ্তশ্চ ধনঞ্জয়ঃ। ১২॥

মানেন ত্রাক্দশবৎসরান্ অতি বাহ্ন কৃত কৃত্যা অভূবন্ তত্তবিজয় দশমীতঃ
পূর্বং পঞ্চমাসাঃ দাদশদিনানি প্রকটা ভবিতবাং তত্তদশন্তি মাসে চৈত্রকৃষ্ণ সপ্তম্যামা বিভূতিঃ প্রতিজ্ঞাং নিস্তীর্যোব কানিচিদ্যিকানাপি দিনানি,
অতিবাহ্ন আবিভূতি ইতার্থঃ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ বচ্চ যদিচ পাশুবং
অন্তোয়মজ্জুন ইতি খ্যায়াৎ কথ্যেংসপরাভবং গঙ্গেং ॥ ১ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥
॥ ১২ ॥

^{*} তন্মাদিত্যস্ত প্রাক্ আগতং কাল্পনং রাজন্ সর্বেতত্ত্ব নসং শয়ঃ ইতি পাঠঃ ক পুতকে।

সংপ্রবৃত্তে তুসংগ্রামে ভাবাভাবৌ জয়াজয়ৌ।
অবশ্যমেকং স্পুশতো দুইমেতদস্শয়ম॥ ১৩।
তম্মাদ্যুদ্যোচিতং কর্ম্ম কর্ম্ম বা ধর্মস্থিতম।
ক্রিয়তামাশু রাজেক্র সংপ্রাপ্তো হি ধনঞ্জয়ঃ॥ ১৪।

হুৰ্যোধন উবাচ।

নাহং রাজ্য প্রদাস্থামি পাওবানা পিতামহ। যুদ্ধোপঁচারিকং যন্তু ভচ্ছীদ্রং সংবিধীয়ভাম । ১৫ ।

ভীষ্ম উবাচ

অত যা সামিকা বুদ্ধিং শ্রেষ্ঠাং যদি রোচতে।

সর্বাগাপি ময়া শ্রেষাে বৃত্তধ্যং কুরুনন্দন ॥ ১৬ ॥

ক্রিপ্রং বলচভুর্জাগা গৃছ গৃছ পুরুষ্ঠ প্রতি।

ততােহপরন্দভুর্জাগো গাঃ সমাদায় গচ্ছতু ॥ ১৭ ॥

বয়ং অর্দ্ধেন সৈন্যস্য প্রতিযাহস্যাম পাঞ্জবম্।

অহং দ্রোণন্দ কর্নন্দ অর্থামা কুপর্তথা।

অভিযোহস্যাম বীভহ স্থুমাগতং কুত্নিন্দয়ম্॥ ১৮ ॥

মহসাংবা পুনরায়াত্মাগত্বা শতক্রতুম্।

অহমাবার্যিয়ামি বেলেব্যক্রালয় ॥ ১৯ ॥

বৈশস্থায়ন উবাচ।

ভদাক্য করুচে ভেষাং ভীমেনোক্তং মহাত্মনা। তথা হি কৃতবানাজা কৌরবাণামনন্তরম্ ॥ ২০ ॥

ণা ১৩॥ ধর্মদং হিতং কর্ম অষুদ্ধেন এতিঃ সহঐক্যং গহা রাজ্য প্রদানং ॥১৪॥১৫॥,১৬॥১৭॥১৮॥১৯॥ অনস্তরং অবিলম্বিতং ॥২০॥

^{*} বৈশালায়ন উবাচে ভাষা প্ৰাকৃ অহমিতাৰ লোকঃ ক পুস্তকে নাতি।

ভীন্বঃ প্রস্থাপ্য রাজান গোধনং তদনন্তরম্। সেনামুখ্যান ব্যবস্থাপ্য ব্যহিতু সংপ্রচক্রমে,॥ ২১॥ ভীন্ম উবাচ।

আচার্য্য মধ্যেতিষ্ঠত্বমশ্বপামা তু সব্যতঃ।
ক্রপঃ শারন্ধতো ধীমান পাশ্বং রক্ষতু দক্ষিণ্ম॥২২॥
অগ্রতঃ স্তপুত্রস্ত কর্ণন্ডিষ্ঠতু দংশিতঃ।
অহস্ত সর্বাসন্যাস্য পশ্চাৎ স্থাস্যামি পালয়ন॥২০॥
ইতি বিরাট পর্বণি গোহরণপর্বণে ভীষ্ম সৈন্যব্যুহে বি
পঞ্চাশস্তমে। ১২॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

তথা ব্যুচেম্বনীকৈ মু * কৌরবানাং মহারথৈ:।
উপায়াদর্জুনন্ত ন রথঘোষেণ নাদয়ন্॥ >॥
দদৃশুন্তে ধজাগ্রন বৈ শুর্জন্ত রথম্বনম্।
দোধ্য মানস্য ভূশং গাঞীবস্য চ নিম্বনম্॥ ২॥
ততন্তৎ সর্বমালোক্য ডোনো বচনমত্রবীৎ।
মহারথমমুপ্রাপ্তং দৃষ্ট্য গাঞীবধন্থিনম্ ৫ ৩॥

॥ २० ॥ २२ ॥ २० ॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে দি-পঞ্চাশতমোহধ্যায়ঃ॥ ৫২॥

তথেতি॥১॥২॥৩॥

^{*} কৌরবানাং মহারথৈরিতা কৌরবৈয়ের ভারতেতি পাঠঃ খ প্রতকে।

দ্রোণ উবাচ।

এতদ্বজাপ্রং পার্থস্য দূরতঃ সংপ্রকাশতে।
এব ঘোষঃ স রথজা রোরবীতি চ বানর॥ ৪॥
এব তিঠন রথশ্রেষ্ঠে রথী রথবরপ্রপুৎ।
উৎকর্ষতি ধনুপ্রেষ্ঠে গাঞ্জীবনশনিস্থনম্॥ ৫॥
ইমৌ ছি বাণৌ সহিতৌ পাদয়োশ্বে বাবস্থিতৌ।
অপরৌ চ বাঁতিকান্তৌ কণৌ সংস্পৃশ্য মে শরৌ॥ ৬॥
† নির্বার্তা হি বনে বাসে ক্রমা কর্মাতিমানুষম্।
অভিবাদয়তে পার্থঃ শ্রোত্রে চ পরিপৃচ্ছতি॥ ৭॥
চিরদৃষ্টোহয়মম্মাভিঃ প্রজ্বানা বাক্ষবপ্রিয়ঃ।
অভীক্ষলিতো লক্ষ্মা পাভুপুল্রো ধনপ্রয়ঃ॥ ৮॥
রথী শরী চাক্রতলী নিষঙ্গী শন্ত্রী পতাকী কবচী কিরীটা।
থক্তী চ ধন্বী চ বিভাতি পার্থঃ শিখী, রতঃ প্রক্র্যান্তিরবাজ্যসিক্তঃ
॥ ৯॥

🗓 अड्डू न डेगांह।

ইষুপাতে চ সেনায়াপ হয়ান্ সপ্যচ্ছ সার্থে। যাবৎ সমীক্ষে সৈন্যেহ স্মিন্ ক্লাস্যো কুরুকুলাধমঃ॥ ১০॥

॥ १॥ ৫॥ মেমম কণো সংস্পৃশ্য অতিক্রান্তে। ৬॥ ৭॥ ৮॥ চাৰতলং হস্তা বাপশ্চাৰতলং তদান্ সাৰ্ভলী অগ্তিঃ জুহুপ্রভৃতিতিঃ॥ ৯॥ ইযুপাতে ইযুপাত প্রমিতে দেশে অসৌ হুর্যোধনঃ॥ ১০॥

^{*} রথী রথবর প্রণুদিত্যক্র রথে চ রথিনাম্বর ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

া নির্ব্বত্যেতাক্র নিরুষ্যেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

[া] অজ্জুন উবাচ ইতাসা প্রাক্। বৈশাপায়ন উবাচ। ততোহজ্জুনিঃ
কুরন্দৃষ্ট্বা সংগ্রামে সমবন্ধিতান্ তৎকাল সদৃশং বাক্যং সংস্যাপুত্র
মভাষতেতাক লোকঃ ক পুস্তকস্য।

স্কানন্যাননাদৃত্য দৃষ্ট্য তমতিমানিনম্।
তস্য মূদ্দ্নি পতিব্যামি তত এতে পরাজিতাঃ । ১১॥
এষ বাবস্থিতো দোণো দৌনিশ্চ তদনন্তরম্।
ভীষ্মঃ কুপশ্চ কর্ণশ্চ মহেম্বাসা বাবস্থিতাঃ ॥ ১২॥
রাজানং নাত্র পশ্যামি গাঃ সমাদায় গজ্তি।
দক্ষিণং মার্গমাস্থায় শঙ্কে জীবপরায়নঃ ॥ ১০॥
উৎস্কোতদ্রথানীকং গক্ত যত্র সুযোধনঃ।
তবৈর যোৎস্যে বৈরাটে ন্যুন্তি যুদ্ধং নিরামিষম্।
ভ তং জিত্বা বিনিবর্ভিষ্যে গাঃ সমাদায় বৈ পুনঃ ॥ ১৪॥

देवनान्यायम् छैश्ह ।

এবমুক্তঃ স বৈরাটি≨য়ান্ সংযম্য যতুতঃ।
নির্ম্য চ ততো রশ্মীন্ যত্র তে কুকুপুঙ্গবাঃ।
অচোদরৎ ততো বাইান্, † যতো রাজা স্থোধনঃ । ১৫॥
উৎস্ত্য রথবংশস্ত প্রযাতে শ্রেতবাহনে।
অভিপ্রায়^ বিদিল্লাস্য রূপো ‡ বচনম ত্রবীৎ॥ ১৬॥
নৈষোহত্তরেণ রাজানং বীভৎস্কঃ স্থাভুমিচ্ছতি।
, তস্য পাঞ্জি গুহীবায়ুমাে জবেনাভিপ্রযাস্তঃ॥ ১৭॥

॥ ১১ ॥ মহেলাসি । মহনীয় ধনুষঃ ॥ ১২ ॥ ১০ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ রথবংশং । রথসমূহং ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

^{*} তং জিমা বিনি বর্তিয়ো ইতাত্ত তং নিহতা নিব্তিয়ো ইতি প্রাচঃ কঁ পুস্তকে !

[†] যতোরাজান্মযোধন ইত্যত্ত যত্ত্ত হর্দ্ধে। নাগত ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কুপ ইত্যত্ত দ্রোণ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ন ছেনমতিলংকুদ্ধমেকো যুধ্যেত সংযুগে। অন্যো দেবাৎ মহস্রাক্ষাৎ কুফাদ্বা দেবকীস্কুতাৎ। আচার্য্যাক্ত স পুত্রাম্বাভার্ম্বাজ্বানু মহার্থানু॥ ১৮॥ * কিন্নো গাবঃ করিষান্তি ধনং বা বিপুলং তথা। ছুর্যোধনঃ পার্থজনে পুরা নৌরিব দীদ্ভি ॥ ১৯ ॥ তথৈব গ্রা বীভৎস্থর্কাম বিশ্রাব্য চাল্পনঃ। শঁলভৈরিব তাং সেনাং শব্রৈঃ শীঘ্রমবাকিরৎ । ২০। কীর্য্যমাণাঃ শরৌবৈষ্দ্ত যোধান্তে পার্থচোদিতৈ:। নাপশ্যনারতাং^{*}ভূমিন নান্তরীক্ষঞ্চ পত্রিভি: ॥ ২১ ॥ তেষামাপততাং যুদ্ধে নাপ্যানেহভবন্নতি:। শীভ্রমেব পার্থন্য পূজয়ন্তি শ্ম তে তদা॥ ২২ ॥ **ততः मञ्च**र श्वनरधूतो म विषठाः लामरुर्वनम्। বিক্ষার্য্য চ ধনুঃশ্রেষ্ঠং ধ্র্যে ভূতান্যচোদয়ন্ ॥ ২৩ ॥ তস্য শহুস্য শব্দেন রথনেমিস্বনেন চা গাণ্ডীবদা চ শব্দেন পৃথিবী সমকম্পত। ২৪॥ অমানুষাণাৎ ভূতানাং তেষাঞ্চ ধ্বজবাসিনাম্। উর্ত্ত পুচ্ছান্ বিধুম্বানা রেভমাণাঃ সমন্ততঃ। গাবঃ প্রতিন্যবর্ত্ত দিশমাস্থার দক্ষিণাম্॥ ২৫॥

> ইতি বিরাটপর্বাণ গোহরণপর্বাণি গোনিবর্ত্তনে ত্রি পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৩॥

॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ আরতাং তৃমিং নাপিশ্যান্নিতি অপিতৃ শরৈরারতামে রা পাশ্যন্ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৬ ॥ ২৪ ॥ রেভমানাঃ হস্বারবং কুর্বাণাঃ ॥ ২৫ ॥ ইতি বিরাট পর্বাণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাগদীপে ত্রি-পঞ্চাশভূমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৩ ॥

^{*} কিনো গাব ইতাস্য প্রাকৃ আচার্য্যাদিতার্দ্ধ লোকঃ ক প্রতকে নান্তি।

বৈশম্পায়ন উবাচ।

স শক্রসেনাং তরসা প্রপুদ্য,
গাস্তা বিজিত্যাথ ধনুর্ব্ধরাগ্রাঃ।
ছুর্য্যোধনায়াভিমুখং প্রযাতো,

* মৎস্তম্ভ রাজ্ঞঃ প্রিয়মাচিকীয়ু : ॥ ১॥
গোষু প্রয়াতাস্থ জবেন মৎস্তান,
কিরীটিন কার্যাকৃত্ত্ব মন্থা।
ছুর্য্যোধনায়াভিমুখ প্রযান্তং,
কুরুপ্রবীরাঃ সহসাভিপেতু । ২॥
তেষামনীকানি বহুনি গাডং,
ব্যুঢ়ানি দৃষ্ট্যী বহুলধ্বজানি।
মৎস্তম্ভ পুত্রং ব্বিষ্তাং নিহন্তা,
বৈরাটিমামন্ত্র্য ভুতোহভূযুবার্ট॥ ৩॥
এতেন ভূর্বং প্রতিপাদরৈতান,
শেতান্ হয়ান্ কাঞ্চনরশ্বিযোক্ত্রান্।
জবেন সর্বেণ কুরু প্রয়ণ্ধু,

সইতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ এতেন পথা কাঞ্চনমগারশারোরজ্জব স্তা এব থাক্তানি বন্ধনানি যেষাং তান্ কুঞ্সিংহস্য হুর্যোধনসা রুক্তং মুখ্যং রুহি রুদ্ধো অস্তাৎ কুঞ্জায়ে হ্যাদঃ ॥ ৪ ॥

यानाप्रात्र्र्र १ कुक्लिंग्श्ह्रक्ष्य । हे ॥

^{*} মৎসাসা রাজ্ঞপ্রিয় মাচিকীয়্রিতাত, ভূয়োরণং সোভি চিকীর্বমাণ ইতি পাঠঃ থ প্রস্তকে।

[†] কুৰু সিংহ বুন্দমিতাত্ৰ রথাসিংহ বুন্দ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

গজো গভেনেব ময়া চুরাত্মা, যো যোদ্যাকাল্কতি সূতপুত্রঃ। তমেব মাং প্রাপর রাজপুত্র, তুর্য্যোধনাপাশ্রমঙ্গাতদর্পন্। ৫॥ म टिड्र रेयस्राज्जरेवत्र इस्टिः পুত্রো বিরাটস্য স্থবর্ণককৈঃ। ব্যর্থং সয়ভদ্রথিনামনীক ... ততোহবহৎ প্রাপ্তবসাজিমধ্যে॥ ৬॥ ७१ हिन्द्रमत्ना विभित्येकिशारेकः मः आप्रक्रिक्जूमरहा जग्रक। প্রত্যুদ্ধযুর্ভারতমাপতন্তং, মহারথাঃ কর্মভীপামানাঃ ॥ ৭ ॥ ততঃ গ তেষাং পুরুষপ্রবীরঃ শরাসনার্চিঃ শরবেগতাপঃ। ব্রাতান্থানামদহৎ সম্ব্রা, स्तनः यथात्रिः कुक्रशुक्रवानाम्॥ ৮॥ তিমিংস্ত যুক্তে তুমুলে প্রবৃত্তে, পার্থ^ বিকর্বোহতিরথং রথেন। विभाठेरार्धन कुरू श्रवीरता, ভীমেন ভীমানুজনানস্দ ॥ ৯ ॥

॥ ৫॥ সুবৰ্ণ ককৈ: অৰ্ ময়ো ককে পলাগদা পদাদঞ্জল পলবো যেষাং তৈ: কক্ষ্য ন্যাদন্তবীয়দা পশাদঞ্জল পলবে ইতি মেদিনী ॥ ৬॥ অভীপ্যমানাঃ বৰ্ণ জীবন্ত মিচ্ছতঃ॥ ৭॥বাতং সমূহং॥ ৮॥ বিপাঠঃ ততো বিকর্ণস্য ধন্মবিক্লিয়া, জায় নদাত্য্যোপচিতং দুঢ়জ্যম্। **ज्राह्य अस्त्र**मा क्षेत्रथा, ছিন্নধুজ: সোহভাপয়াজ্জবেন॥ ১০॥ ত~ শাত্রবাণাং গ্রবাধিতার~, কর্মাণি কুর্বাণমমানুষাণি। † শক্তন্তপঃ কোপমমূষ্যমাণঃ, मगार्फत्र कृषानत्थन भार्थम् ॥ >> ॥ স তেন রাজ্ঞাতিরথেন বিদ্ধো, বিগাহমানো ধজিনীং কুধ্বণাম্। শক্রন্তপং পঞ্চিরাশু বিদ্যু, ° ততোহস্য স্থতং দশভিজ ঘীন॥ ১২॥ ততঃ স বিদ্ধো ভরতর্যভৈণ, বাণেন গাত্রাবরণাতিগেন। গতাস্থরাজৌনিপপাত মহাং,

নগো নগাঞাদিব বাতকুয়: । ১৩ ।

বিক্ষা বিলিথাছিতেতার্থ: অসা তং প্রসিদ্ধীং শ্বজঞ্চ মথা উদ্বথা পাতরংক অপযাৎ ॥ ১০ ॥ গণস্য বাধিতারং তেজোছরং শত্রুন্তপ নামা ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ নগোরকঃ নগাবাধিংপর্যকাগ্রাহিশন ব্রকৌ নগাবগাবিতামরঃ ॥ ১৩ ॥

^{*} মধ্যেতাত্র পার্থ ইতি পুাঠঃ ক পুস্তকে। •

† শক্তপ্তপঃ কোপমন্ব্যমাণঃ সমার্দ্ধরৎ কূর্মনখেন পার্থ মিতাত্র শক্ত স্তপঃ পার্থ মন্ত্রমাণঃ সমার্দ্ধরুছর বর্ষেণ পার্থ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

नतर्वजारङ जु नतर्वरज्ञन, বীরা রণে বীরতরেণ ভয়াঃ। চকল্পিরে বাতবশেন কালে, প্রকম্পিতানীব মহাবনানি । ১৪। হতাস্ত্র পার্থেন নরপ্রবীরা, শগতাদবোৰ গাং স্বৰূপুঃ স্থবেশাঃ। বস্থপ্রদা বাসবতুল্যবীর্য্যাঃ, পরাজিতা বাসবজেন সংখ্যে । ১৫। সৌবর্ণকাফান্ত্রসবর্দ্মনদ্ধা, নাগা যথা হৈমবতাঃ প্রবৃদ্ধাঃ। তথা স শকুন সমরে বিনিম্নন, গান্তীবধন্বা পুরুষপ্রবীরঃ ॥ ১৬ ॥ চচার স্পরো প্রদিশো দিশস্চ, দহলিবাগিধানমাতপান্তে। প্রকীর্ণপর্ণানি যথা বসন্তে, † বিশাভরিত্বাপবনোযুদাংশ্চ ॥ ১৭ ॥

॥ ১৪॥ গতাসব: উর্বা মিতিচ্ছেদ: সন্ধিরার্য: ॥ ১৫॥ ১৬ ॥ আডপাছে ধর্মস্বরূপে নিদাঘে অন্ত: ক্রেপে নাগে না ইতি মেদিনী॥ ১৭॥

^{*} গ্রাসবের্ব্যা মিত্যত্র ভূমৌ সুবান ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বিশাত্যিত্বা প্রনোষ্ট্রা শেত্যত্র বিশাত্যন্ বার্ রধে। স্নন্ধেইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

স তান্ সপত্নান্ বিকিরন্ কিরীটা,

চচার সংখ্যেহতিরখো রথেন।

শোণাশ্বাহ্য্য হয়ান্ নিহত্য

रिकर्जनखाञ्चतनीनमञ्जः।

একেন সংগ্রামজিতঃ শরেন,

শিরো জহারাশু কিরীটমালী ॥ ১৮ ॥

তিমান হতে ভাতরি স্তপুজো,

देवकर्त्वता वीद्यामधानमानः।

প্রগৃহ্ দন্তাবিব নাগরাজো,

নর্বভ^ সিংহ ইবাভ্যধাবঁৎ ॥ ১৯ ॥

স পাগুৰু দ্বাদশভিঃ পৃষ্ৎকৈ,

ঁ ধৈকৰ্ত্তনঃ শীঘ্রমুপাত্রঘান।

বিব্যাধ গাত্রেষু হয়াংশ্চ সর্বান্,

বিরাটপুত্রঞ্ করে নিজম্মে॥ २०॥

তমাপতত্ত> সহসা কিরীটী,

বৈকর্ত্তন বৈ সহসাভিপত্য।

প্রগৃহ বেগং ন্যপতজ্জবেন,

নাগং গরুত্মানিব চিত্রপক্ষঃ॥ ২১ ॥

শোনাখাঃ বাহে বাহকে রখে যদ্য তদ্য ॥ ১৮ ॥ আদদান আদাতু মিচ্ছন, এপ্র আগ্রহেণ দস্তাবিব পর্বত শিধরতুল্যো অর্কুনোন্তরে প্রতি অত্য-ধাবৎ দতঃসাহান কথ্যত ইতি বিশ্বঃ দন্তোজি কটকে কুঞ্জে ইতি মেদিনী ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ বেবাং গৃহ স্বীকৃত্য ॥ ২১ ॥

তাবুত্তমৌ সর্বাধনুধ রাণাং, महावत्नी मर्समभव्मारही। কর্ণসা পার্থস্য নিশম্য যুদ্ধং, দিদৃক্ষমাণাঃ কুরবোহ্বতন্থঃ । ২২ ॥ म পাওবন্তর্গমুদীর্ণকোপঃ, क्रुडानमः कर्गम्मीका व्याद । क्तराय मात्राः मत्रथः मरक्तु, মন্তর্দধে ঘোরশরৌঘরঠা। । ২৩॥ ততঃ স্থবিদ্ধাঃ সরবীঃ সানাগা, যোধা বিনেচুর্ভরতর্যভাগায় । অন্তর্ধিতে ভীরমুখাঃ স্থানীঃ কিরীটিনা কর্ণরথে পুষৎকৈ: ॥ ২৪॥ স চাপি তানজ্যবাহযুক্তান্, শরাঞ্জরৌঘেঃ প্রতিহত্য বীরঃ । তত্বৌ মহাত্মা সধনুঃ সবাণঃ, সবিস্ফুলিস্পেহগ্নিরিবাশু কর্ণঃ । ২৫॥ ততন্ত্ৰভূৱি তলতালশব্দঃ, সশস্থাভেরীপণবপ্রণাদঃ। প্রক্ষেডিতজ্যাতলনিম্বনম্বং, বৈকৰ্ত্তনং পূজয়তাং কুৰাণাম । ২৬ ॥

নিশম্য র্দ্ধাত্পরম্যদিদৃক্ত মাণীঃ তেছু: ॥ ২২,॥ ২০॥ কর্ণ স্যান্ত , ধানানন্তরং ইতরেপি শরৈরন্তর্কিতাঃ কৃতাঃ ॥ ২৪ ॥২৫ ॥ প্রক্ষেতিতো মুক্তো জ্যাতলয়োর্নিজ্বনো যেন তং পুজয়তাং তল তালশবঃ তলেন চপেটয়া তালঃ করা ক্যালনং তজ্জঃ শব্যোত্থ তলক্ষেপটে তালকজে ভালঃ করাক্ষালে ইতি চ মেদিনী ॥২৬॥ উक् उलाक लगराभाजाकः,

্ধজোত্তমাশাকুলভীষণান্তম্।

গাণ্ডীবনির্ঘোষক্বতপ্রণাদং,

`কিরীটিনং প্রেক্ষ্য ননাদ কর্ণঃ॥ ২৭॥

ग চাপিবৈকর্ত্তনমন্দিয়িত্বা,

সাশ্ব~ সস্থতং সরথং পৃষৎকৈ:।

তমাবৰ্ষ প্ৰসভং কিৱীটী,

পিতামহং জোণর্কপৌ চ দৃষ্ট্য।। ২৮॥

म ठालि পार्थः वद्यक्तिः পृषट्रेक,

दैर्वकर्रुता (मध हैवाजावर्षः ।

তথৈৰ কৰ্ণঞ্চ কিরীটমালী,

गः का प्रांगांग भिटें शुवर्कः ॥ २०॥

তয়ো: স্থতীক্ষান সজতো: শরৌদ্বান,

🌞 মহাশরৌঘাঠ্র রিবর্জনে রণে।

त्रत्थ विनशाविव हक्त सर्पारी,

घनास्त्रवाथ नम्म (लाकः॥ १०॥

উদ্ধৃতং উপ্রিক্তং লাস্থল মেব মহতী পতাকা ধ্রাঞ্চলো যান্দন্ তন্য
ধ্রজনা উত্তমৌ অংকৌ উপরিন্ধ তির্যাক্ কল কারা ভাগৌ তত্ত্ব আকুলা
ব্যগ্রাঃ যে ভীষণাঃ ভূতাদরঃ তে অন্তে সমীপে যদ্য তং গাণ্ডীব নিহ্রাদেন
সহক্তঃ প্রণাদো কিরীটিনং ধ্রুড়ে পরিন্ধ ভূত নাদৈঃসম্বর্ধিত নাদমিতার্থঃ
। ২৭॥ জ্যোনকুপৌচ দৃষ্ট্য বংশুর্বিত, অন্ত্র্বাতে ॥২৮॥২৯॥ মহন্তিঃ
শরোষে রক্ত্রোষৈ ক্রিবর্দ্ধনং চ্ছেদনং যত্ত্ব উন্মিন্ত বিলয়ে সংনিহিতৌ
চক্ত স্থাী যন মধ্যাদিবতৌ বাণ সংখ্মধ্যালোকোই স্কুদদর্শ॥ ৩০॥ ১৯

^{*} মহাশরে)খাত্ত বিবর্জনে বণে ইত্যত্ত মহাস্থােরাক্ত বতো বিমর্ফে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

'অথাশুকারী চতুরো হয়া**ং**শ্চ,

বিব্যাধ কর্নো নিশিতৈঃ কিরীটনঃ।

ত্রিভিশ্চ যন্তারমমুষ্যমাণো,

বিব্যাধ তুর্ণ ত্রিভির্স্য কেতৃম্ ॥ ৩১ ॥

তেনাভিবিদ্ধঃ সমরাবমর্দ্দী,

. প্রবোথিতঃ সি^হ ইব প্রস্থুপ্তঃ।

গাণ্ডীবধন্বা ঋষভঃ কুৰূণা

মজিন্দাগৈঃ কর্ণীময়ায় জিফুঃ॥ ৩২॥

স শস্ত্রবৃষ্ট্যাভিহতো মহাল্প

প্রাত্মকারাতিমনুষ্যকর্ম।

व्याष्ट्रामय़ कर्नत्रथ शृय टेक,

লোকানিমান্ সূর্য্য ইবাংশুজালৈ । ৩৩ ॥

স হস্তিনেবাভিহতো গজেন্দ্রঃ,

প্রগৃহ ভল্লানিশিতানিষঙ্গাৎ।

আকর্ণপূর্ণঞ্চ ধনুর্বিবক্লয্য,

বিব্যাধ বাবৈরথ স্থতপুত্রম্ ॥ ৩৪॥

অথাস্য বাহুরুশিরোললাট্র

গ্রীবাং বরাঙ্গাণি পরাবমর্দ্ধী।

* শিতৈশ্চ বাগৈয়ু ধি মির্বিভেদ,

গাঞ্জীবমুক্তৈরশনিপ্রকাশৈ: ॥ ৩৫॥

1 30 1 80 1 00 1 50 1 60 1

^{*} শিতৈশ্চেত্যত্ত্বিত সোতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

স পার্থমুকৈর্বিশিখিঃ প্রণুরো,
গজো গজেনেব জিতস্তরস্থী।
বিহায় সংগ্রামশিরঃ প্রয়াতো,
বৈকর্ত্তনঃ পাগুরবাণতপ্তঃ ॥ ৩৬ ॥
ইতি বিরাটপর্বাণ উত্তর গোগ্রহে কর্ণাপয়ানে চতঃপঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৪ ॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

অপযাতে তু রাথেয়ে তুর্য্যোধনপুরোগমা:।

অনীকেন তথা স্থেন শরৈরাচ্ছতি পাঞ্জবন্॥ ১॥

বছধা তদ্য দৈন্যে বৃদ্দ্যাপতিতঃ শরৈ:।

অবারয়ত বেগং দ বেলেব তু মহোদধে:॥ ২॥

ততঃ প্রহ্মা বীভৎসুঃ কৌন্তেয়ঃ গৈছত্বাহ্ন:।

দিব্যমস্ত্র^ বিকুর্বাণ: প্রভ্যয়াদ্রথসন্তম:॥ ৩॥

যথা রশ্মিভিরাদিত্যঃ প্রচ্ছাদয়তি মেদিনীম্।

তথা গাণ্ডীবনিম্ম্ কৈ: শরৈ: পার্থো দিশো দশ॥ ৪॥

ন রথানাং ন চাশ্বনাং ন গজানাং ন বর্দ্মণাম্।

ভবিবিদ্ধ^ শিতৈব্বাণৈরাসীদ্যুস্কুলমন্তরম্॥ ৫॥

শবিবিদ্ধ^ শিতৈব্বাণৈরাসীদ্যুস্কুলমন্তরম্॥ ৫॥

1 991

ইতি বিরাট পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চড়ুঃ পঞ্চাশতমেশ্হধায়িঃ॥ 🕫 ॥

আছতি আগতাঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ প্রতারাৎ প্রাতিকনোনভিমুখকা দিতার্থঃ
॥ ৩ ॥ দিশোদশ প্রচ্ছাদিতবান্ ॥ ৪ ॥ অনিবিদ্ধতিতরামবিদ্ধং অন্তরং
অবকাশঃ ॥ ৫ ॥

দিব্যযোগান্ত পার্থসা হয়ানামুন্তরস্য চ।

শিক্ষানিপোপপন্নস্থানন্তানাঞ্চ পরিক্রনাং।
বীর্য্যবান্তান্তুবং চাপ্রাং দৃষ্ট্ব। জিফোরপূজ্যন্॥ ৬॥
কালাগ্নিমিব বীভৎস্বং নিদ্দহন্তমিব প্রজাঃ।
নারয়ঃ,প্রেক্ষিতুৎ শেকুজ্বলন্তমিব পাবক্র্যা ৭॥
কালাগ্রমিব বীভৎস্বং নিদ্দহন্তমিব প্রজাঃ।
নারয়ঃ,প্রেক্ষিতুৎ শেকুজ্বলন্তমিব পাবক্র্যা ৭॥
কালি,প্রস্তান্যনীকানি রেজ্বরজ্বন্যার্থিং।
শৈলং প্রতি * বলাজানি ব্যাপ্তানীবার্করশ্মিভিং॥ ৮॥
কালাকানাং ব্যানীবৈজ্ঞানি * কুস্তমৈং শুভিং।
রেজুঃ পার্থশবৈস্তত্ত তদা সৈন্যানি ভারত॥ ৯॥
আজ্বে, পার্থশবৈস্তত্ত তদা সৈন্যানি ভারত॥ ৯॥
আজ্বে, পার্থশবৈস্তত্ত তদা সৈন্যানি ভারত॥ ৯॥
আক্রি, ক্রান্তাং শবিং শুষ্ট পূজাং হির্ণা, রন্।
ছত্ত্বান্যালন্তাং পরিপেতুর্দিন্যো দশ।
রথাঙ্গনেশানাদার পার্যজ্বির্য্যা হয়াঃ॥ ১১॥
কর্ণক্ষবিষ্যাণ্ড্রহ্বা সেমু চৈব ছ।
মর্ম্বস্তেমু চাহত্যাপাত্রৎ সম্বে গজান্॥ ১২॥

উত্তরদা হয়ানাং শিক্ষা শিল্পোপপর্যাদিতি সম্বন্ধ জতং বেগং অপুজয়ন্ অরয়হতাপ ক্ষাতে ॥ ৬॥ १॥ শৈলং প্রতি টেশল সমীপে বলাজানি বলবন্তি অচঞ্চলানি অজানি স্থ্যরশিকাপ্তানি যথা তয়। তানান কানি শর বাপ্তানার্জন সমীপে রেজ্রিতার্থঃ॥ ৮॥ শুতৈঃ পুট্পাঃ ফলস্থচকরাত্তেয়াং শুমহং ॥ ৯॥ শুজঃ পুস্পং হিরণায়ং স্থান কালি জলং শুষাং শরৈঃ শীর্ণপ্রতদ্বজ্জাদীনি, চ সদাগতিঃ বায়ু খে দধার বান জালান্তি হিত্যান্তেয়া মধঃ পতনংশা ভূদিতার্থঃ॥ ১০॥ রথান্ধ দেশান্ যুগাসাক দেশান্ আদায় হয়াঃ পরিপেইরিতানয়ঃ॥ ১১॥ গ্রাক্ষান্ কর্ণাদি প্রদেশ্য আইতা বিশ্বাপাতয়ং প্রাত্রতিমা॥ ১২॥

 ^{*} বলাভাণী তাত্ত নবাভাণীতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 * কুমুমেরিতাত্ত বহুশ ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কৌরবাপ্রাগজানান্ত শরীরৈর্গতচেতসাম্।
ক্রানের সংর্তা ভূমির্মেইছিরিব নভন্তলম্। ১০॥

মুগান্তসময়ে সর্বাং যথা স্থাবংজঙ্গমম্।
কালক্ষয়মশেষেণ দহত্যপ্রশিখঃ শিখী।
তদ্বৎ পার্থো মহারাজ দদাহ সমরে রিপূন্। ১৪॥
ততঃ সর্বান্তভোভির্ম বাে নিম্ননেন চ।
শব্দেনামানুষাণাঞ্চ ভূতানাং ধ্বজবাদিনাম্।
ভৈরবং শব্দমতার্থং বানরস্য চ কুর্বেতঃ। ১৫॥
ইদবারিপাচ্চ বীভংগ্রন্থান্দ্রিয়াধনে বলে।
ভয়মুৎপাদ্যামাস বলবানরিদর্দ্দের । ১৬॥
রথশক্তিমমিত্রাণাৎ প্রাগেব নিপতন্ত্রি।
গোহপ্রাৎ সহসা প্রশ্বাৎ মাহ্মীচ্চাভ্যুপেযিবান্। ১৭॥
শর্ত্রাতঃ স্থতীক্ষাত্রেঃ সমাদিক্তৈঃ থগৈরিব।
ভ্রন্ত্র থমাবত্রে লোহ্তপ্রাশনৈঃ থগৈঃ। ১৮॥

ত্তি প্রতিষ্ঠিত সাহসাদ অশক্ত বধর পাই প্রতান যুদ্ধর্থই উপেরিবান্

আপ্রানাং দেনাপ্র গামিনাং গজানাং গত চেতসাং স্থানাং ॥ ১৩ ॥

কালক্ষরং কালসা ঐশ্বনিং জগদিতার্গ্র অপ্রনিখ্য অপ্রবন্তীক্ষার নিখায়সা

॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ দৈবারিপাং দেবারীন সুরান্ পাতীতি দেবারিপ্র সমুদ্রস্তা

জাতো দৈবারিপ্র সংখ্য তত্মাৎ চাং ভৈরবং শব্দং কুর্বত ইতান্ত্র্ক্ষাতে

॥ ১৬ ॥ অমিক্রাণাং, বৈরিবাং রহশক্তি শরীর সামর্থাং রথঃ সান্দন-দেহরো

রিতি কোশং প্রাণেষ সহসা দর্শন মাত্রাদেবনিপতং নাপাতরং শক্তিরিত্ত্র

পাঠেনাপতং অভ ভাবাদি রার্য্য সোর্ত্রনঃ অপ্রয়ং প্রাণতী গতা
ভাবাদিতার্থ্য সাহসাদ্র অশক্ত বধর পাই প্রতাতান্ যুদ্ধার্থই উপেরিবান্
॥ ১৭ ॥ খবিগ পক্ষিভিরিব খগৈর্বাণেঃ ॥ ১৮ ॥

অত্তমধ্যে যথার্কন্স রশায়ন্তিগাতেজসং।

দিশাস্থা চ তথা বাজন্ ন সংখ্যাতাং শরান্তদা ॥ ১৯॥

সক্দেবানতং শেকুরথর্মভ্যাসভুং পরে।

অলভ্যঃ পুনরশৈস্ত রথাৎ সোহতিপ্রপাদয়েৎ॥২০॥

'তে শরা দিট্শরীরেষু যথৈব ন সসজ্জিরে।'

দিডনীকেষু বীভৎসোর্ম সসজ্জে রথন্ডদা ॥২১॥

সতেদিক্ষাভয়ামাস হ্রাতিবলমঞ্জ্যা।

অনভভোগো ভুজগঃ ক্রিডদিরি মহার্ণবে॥২২॥

অত্র মধ্যে অতং অমত্রং অত্রান্যাধ্যে পাড়িঃ সংভরন্তী-ত্যাদা-বিবাতাপি মধ্যম বৰ্ণ লোপ্শ্ৰুশান্দ্যঃ যদাহশৌনকো বৃহদ্দেবতায়াং বর্ণস্য বর্ণকোলোপো বহুনাৎ ব্যঞ্জনস্য বা অত্তাপীতি কপিনাভাদনো যামী-ত্য যাস্থচেতি অন্ত্রানাম্মে পড়িঃ অমন্ত্রানীত্যপেক্ষিতে বর্ণদ্য লোপঃ প্রিয়া নফানিমেকণিঃ বুলাকপিবিত্যণেক্ষিতে বুষাইত্যে তয়োর্বণয়োর্নোপঃ অয়ুং নাভাবদতি নাভানে দিই ইতাপেক্ষিতে বৰ্ণত্ৰয়লোপঃ দনো বিশ ইক্ত দনোদান মনস ইত্যপেক্ষিতে বহুনাৎ বৰ্ণানাৎ লোপঃ দনোদান মনস ইতিহাক্তঃ তত্ত্বামিয়া চামীতাপেক্ষিতে অঘাত্মহনাতে গাব মঘা-ব্বিত্যপেক্তি ব্যঞ্জন লোপঃ যথা পাত্তে প্রথিষ্ঠাঃ ভূষ্যরশ্বয়ে হ্বকা-শাভাবাৎ সংকুচল্ডিভদ্দ্গগণে২র্জুন বাণানমান্তীত্যর্থ: ॥ ३० ॥ जङ्-. দেব তৎক্ষণ মেব আনভং উপগতং রথং অর্জুন রথং পরে রিপবঃ ্গভাসিতৃৎ পরিচেতুৎ শেকুঃ তু একো ছেন্বর্থেছতঃ সপুনঃ ক্ষণান্তরে অ-লভাঃ পরৈজ্ঞানুমশকাঃ তএহেছু মাহ অধৈরিতিসঃ অধৈঃ সহপরান্ রথাৎ অতিপ্রপাদয়েৎ ইমংলোক মতিথাপরিত্বাহ্যুৎ লোকং নয়েৎ দৃষ্ট শৃত্রৈার্কুনঃ শরেঃ পরাৎপরলোকং গোপয়তীত্যর্থঃ॥ ২০॥ ন সসজ্জিরে ন সক্তাঃ কিন্তু ভিত্বা প্রতএব গতাঃ এবং রথোপি দ্বিষ্থ অনীকেষিতার্থঃ শরাণাং রথস্য চ পতির্কুষ্ঠিতা ভবতীতার্থঃ ॥ ২১ ॥ অনন্তভোগঃ বহুফলঃ শেষ ইত্যর্থঃ ॥ ২২ ।

অস্যতো নিত্যমত্যর্থং সর্ব্যমেবাতিগস্তথা। অশ্রুতঃ শ্রুরতে ভূতৈর্ধনুর্ঘেষেঃ কিরীট্নিঃ ॥ ২৩॥ সন্ততান্তত্র মাতঙ্গা বাগৈরপান্তরান্তরে। সংবৃতান্তেন দুশস্তে মেঘা.ইব গভন্তিভিঃ॥ ২৪॥ দিশোহনুভ্রমতঃ সর্বাঃ সব্যদক্ষিণমস্থতঃ। সততং দৃশ্যতে যুদ্ধে সায়কাসনমগুলম্॥ ২৫॥ পতন্ত্যৰপেষু যথা চক্ষু শ্বি ন কদাচন। নালক্ষ্যেমু শরাঃ পেতৃস্তথা গান্তীবধন্বনঃ ॥ ২৬ ॥ মার্গো গজসহস্রস্য যুগপদাচ্চতো বনে। যথা ভবেত্তথা জভ্তে রথমার্গঃ কিরীটিনঃ ॥ ২৭॥ নূনং পার্থজয়ৈষিত্বাচ্চক্রঃ সর্বামরেঃ সহ। হস্তাম্মানিত্যমন্যন্ত পার্থেন নিহতাঃ পরে॥ ২৮॥ ম্বন্তমত্যত্তমহিতান বিজয়ং তত্ত্ব মেনিরে। কালমৰ্জ্বৰূপেণ সংইবন্তমিব প্ৰজাঃ॥ ২৯॥ কুরুদেনাশরীরাণি পার্থে নৈবাহতান্যপি। সেত্রঃ পার্থহতানীব পার্থকর্মানুশাসনাৎ॥ ৩০॥

সর্প্রেরণিত গঃ সর্প্রাধিকঃ সর্প্র শকাভি ভাগী তার্থঃ ॥ ২৩ ॥ তার্রণ ভূমো অপপান্তরান্তরে অপে অন্যান্তরৈ পদে পদে সন্তা ইতার্থঃ তেনকারণেন তে গভন্তিভিঃ স্থ্যরশিভিঃ সংহতা মঘাইব দৃশ্যন্তে ॥ ২৪ ॥ সায়কাসনং ধল্প তস্যমঞ্চাৎ অভিবেগাৎ অলাতচক শান্দ্র্যান্তর্থঃ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ মার্গ ইতি গজ সহজেন বনমিবার্জন রথেন পরিসন্থ উপমৃদ্যভেইতার্থঃ ॥ ২৭ ॥ বিজয়ং অর্জনং কালমিব মেনিরে ॥ ২৯ ॥ পার্থেনিব হতানি পার্থ হতানীব সেন্ত্রিশীর্ণানি বভূর্তীরিতি রাম রাবন্যোরিবেতিবদ্ভূতোপমেরুমিতার্থঃ যতোরপ্রর্থ কর্মেন বাল্ল শাসনমূপমার্থৎ কর্ত্ব্যং নান্য কর্ম অতঃ পার্থ হ্তানীব সেন্ত্রিভার্থ ॥ ৩০ ॥

उम्बीनाः भिताः भीव विषक्तीर्वान (माश्चयाः । অবনেশুঃ কুরুণাং হি বীর্য্যাণ্যর্জ্জুনজান্তয়াৎ॥ ৩১॥ णर्ज्जुनानिल जिल्लानि वंनानार्ज्जुनविषिधाम्। চকুর্লেছিতধারাভির্ধরণীং লোহিতান্তরাম্। ৩২। লোহিতেন সমায়ুকৈঃ পাৎশুভিঃ প্রনােদ্ধতঃ। বভুরুর্লোহিতান্তত্র ভুশমাদিত্যরশায়ঃ॥ ৩৩॥ সার্কং খন্তৎ ক্রণেনাসীৎ সন্ধ্যায়ামিব লোহিতম্। অপ্যন্ত^ প্রাপ্য সূর্য্যোঽপি নিবর্ত্তে ন পাগুবঃ ॥ ৩৪ ॥ তান স্কান্ সমরে শূরঃ পৌরুষে সমবস্থিতান্। দিবৈ।রস্ত্রেরচিন্ত্যাত্মা সর্বানাচ্ছ দ্বন্তুর্ধরান্।। ৩৫। म ज्. (खानि खि. मश्रजा: 'कू ते खानाः ममार्थगर। जुःमइ० प्रमक्तितित्रों निम्नके। जित्र व । ०७ ॥ ছুঃশাসুনং দ্বাদশভি: কুপুং শারদ্বতং ত্রিভিঃ। ভীন্তং শান্তনবং ষট্যা রাজানঞ্চ শুঠেন চ। কর্ণঞ্চ কর্ণিনা কর্ণে বিব্যাধ পরবীরহা। ৩৭॥ তিমান বিদ্ধে মহেম্বাসে কর্ণে সর্বাস্ত্রকোবিদে। হতাশ্বস্থতে বির্থে ততোহনীক্মভজ্যত। ৩৮। তৎ প্রভগ্নং বলং কৃষ্টা পার্থমাজিস্থিতং পুনঃ। ভাতিজ্ঞানায় কৌল্পেয়ং বৈরাটিরিদমক্রবীৎ ॥ ৩৯ ॥

ওষধীনাং ব্রীহ্যাদীনাং শিরাংসিকণি শাণি অথয়াৎ অন্ক্রমাৎ প্রথনেশুঃ নফানি অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাৎ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ অর্ক্রমাণ আর্ক্রমাণ আর্

^{*} অভিজ্ঞানার কৌন্তের মিত্যত্ত অভিপ্রায়ং সমাজ্ঞারেতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

আস্থার রুচিরং জিফো রথং সারথিনা মুয়া। কতনংযাস্তাসেহনীকমুক্তো যাস্তাম্যহণু স্বয়া॥,৪০॥

অজ্জন উবাচ।

* লোহীতাক্ষমরিন্টং যং বৈরাত্রসন্তুপশ্যমি।
নীলাং পতাকামান্ত্রিতারথে তিষ্ঠন্তমুন্তর ॥ ৪১ ॥
কপস্যৈতদনীকাঞ্জ প্রাপ্যস্তেদেবমাম্।
এতস্ত দর্শরিষামি শীল্রাস্তং দৃতবৃদ্ধিনং ॥ ৪২ ॥
কমগুলুধ জৈ যক্ত শান্তকুন্তুমরং শুলুং ।
আচার্যা এব হি জোণঃ সর্বশেস্তভূতামরং ॥ ৪৩ ॥
সদা মমের মান্যক্ষ সর্বশেস্তভূতামুদি।
* স্থাসন্মনা বীর কুরুধেনং প্রদার্শন্ম্ ॥ ৪৪ ॥
অত্রবচাবরোহেরমের ধর্ম্মং সনাতনং।
যদি মে প্রথমং জোণঃ শরীরে প্রহুরিষ্যতি।
ততোহস্ত প্রহ্রিষ্যামি নাস্য কোপো ভবেদিতি ॥ ৪৫ ॥
ক্তাবিদূরে চ ধনুধ জাগ্রে যক্ত দৃশাতে।
আচার্যান্যৈর পুলো বৈ অশ্বণানা মহার্থঃ ॥ ৪৬ ॥
সদা মমের মান্যক্ষ সর্বশ্রভ্রামণি।
এতক্ত বং রথং প্রাণ্য নিবর্ত্বণঃ পুনঃ পুনঃ ॥ ৪৭ ॥

॥ ৪০॥ অরিষ্টং শুভং বৈরাজং ব্যাস্তর্ম প্রীর্তং ॥ ৪১ ॥ ৪২ ॥ ৪৩ ॥ ৪৪ ॥
"অত্বৈদময়ে এনং অব্দানর অব্রোহ্ চ অধ্যারতো ভব গুদার সজ্জে।"
ভব এনং অত্নক্ষীকৃত্যেতার্থঃ এতাদেব দ্বরং প্রক্রাতি যদি মে ইতি
প্রথমং অপ্রারামাননং পশ্চাৎ প্রহারেণার্থিরোহনং চেতার্থঃ ॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥

1 29 1

 ^{*} লোহিতার্থ মিতাত্র লোহিতামিতি পাঠঃ-থ পুস্তকে।
 * স্থানরমনা বীরেতাত্র স্থাপারং মহাবীর মিতি পাঠঃ থ পাস্তকে।

য এষ ভুরথানীকে স্থবর্ণককারতঃ। সেনাগ্রোণ্ ভৃতীয়েণ বাবহার্যোণ তিষ্ঠতি ॥ ৪৮ ॥ যক্ত নাগো ধুজাতো দৌ হেমকেতনসংবৃতঃ। ধূতরাষ্ট্রাত্মজঃ শ্রীমানেষ রাজা স্কুযোধনঃ 🖟 ৩৯ 🛭 এতস্যাভিমুখং বীর রখং পররথারুজং। প্রাপর বৈষ রাজাহি প্রমাথী যুদ্ধ দুর্মান:॥ ৫ ।। এষ ত্যোৰস্যৰ্শিষ্যাৰ্শং শীঘ্ৰাস্ত্ৰঃ প্ৰথমো মতঃ। এতস্থ দর্শরিষ্যামি শীঘ্রাস্ত্রং বিপুলং রণে। ৫১॥ নাগকক্ষা তু রুচিরা'ধঙ্গাগ্রে যদ্য তিষ্ঠতি। এষ বৈকর্ত্তনঃ কর্ণো বিদিতঃ পূর্ব্বমেব তে । ৫২ ॥ এতস্থারথমাস্থার রাধেশ্বর্যা জুরাত্মনঃ। যত্তো ভবেথাঃ সংগ্রামে স্পর্ক্তে হি সদা ময়া॥ ৫৩॥ যস্ত নীল্∤নুস†রেণ পঞ্চতারেণ কেতৃনা। হস্তাবাপী রহদ্ধরা রথে তিষ্ঠতি বীর্য্যবান্। ৫৪॥ যক্ত তার ধর্কচিত্রো ২ সৌরথে ধুজবরঃ স্থিতঃ। যভৈতৎ পাওরং ছত্র~ বিমলং মূর্দ্ধি, তিষ্ঠতি। ৫৫॥ মহতো রথবংশস্থ নানাধ্রজপতাকিনঃ। বলাহকাত্রে সূর্যো বা য এব প্রমুখে স্থিতঃ ॥ ৫৬॥ হৈমং চক্র।র্কদ্রকাশং ক্রবচং ষত্তা দৃষ্ণতে। 🖐 জাতৰূপশিরস্তাণস্তাসরলিব মে মনং ॥ ৫৭ ॥

ব্যবিহার্যোণ ব্যবহার যোগোন অজ্যান্তেনেতার্থঃ ॥ ৪৮ ॥ ৪৯ ॥ ৫০ ॥ ৫১ ॥ নাগককাহন্তাঙ্কিত পতাকাঞ্চাঃ হন্তি দুর্ভালেতান্যে ॥ ৫২ ॥ ৫০ ॥ নীলাম্ সারেণ নীল পতাকা বতা তারাঃ স্থবর্গ মণ্ডলানি হন্তাবাপোহন্ততান্থ তথান্॥ ৫৪ ॥ ৫৫ ॥ স্থোবা স্থাইব ॥ ৫৬ ॥ ৫৭ ॥

^{*} জাতরূপ শিরস্তাণং মনস্তাপয়তী বমে ইতি পাঠঃ ধ পুস্তকে।

এব শান্তনবো ভীন্নঃ সর্বেষাং নঃ পিভামহঃ।
রাজন্মিরা বিরুদ্ধস্ত তুর্য্যোধনবশানুগঃ ॥ ৫৮ ॥
পশ্চাদেষ প্রযাতব্যো ন মে বিল্লকরো ভবেং।
এতেন যুদ্ধমানস্থ যক্তঃ সম্যক্ত মে হয়ান্॥ ৫৯ ॥
ততোহভ্যবহদব্যপ্রো বৈরাটিঃ সব্যস্যাচিনন্।
যক্রাতিঠং ক্রপো রাজন্ যোৎস্থমনো ধনপ্রযম্ম ৬০ ॥
ইতি বিরাট পর্বিনি উত্তরং প্রতি ক্রপাচার্য্যাদীনাং পরিচয়দানে পঞ্চপঞ্চশশভ্রমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৫ ॥

देवनका (श्रम छैवकि।

তানানীকান্যদৃশ্যন্ত কুৰাণামুগ্ৰধন্মিনাম্।
সক্সপ্ৰিটা যথা মেঘা ঘৰ্মান্তে মক্সাৰুকাং ॥ ১॥ অভাানে বাজিনস্তস্থ সমাৰুকাং এহারিণঃ।
ভীমৰূপাশ্চ মাতজ্ঞান্তে মিরাঙ্কুশনোদিতাঃ।
মহামাত্রৈঃ সমাৰুকা বিতিকক্বচোজ্লাঃ॥ ২॥
ততঃ শক্রঃ স্থ্রগণৈঃ সমাৰুক্য স্থদশনিম্।
সহোপায়ান্তদা রাজন্ বিশ্বাশ্বিমক্তাং গণৈঃ॥ ৩॥

11 00 11 00 11 00 11

ইতি বিরাট পর্কাণ নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ পঞ্চাশতমোহধারঃ॥ ৫৫॥

তানীতি ঘর্মাতে প্রার্ট কালে ॥ ১ ॥ ২ ॥ সমাক্ষ্ বিমান মৈতি শেখঃ স্থদর্শনং শক্রসমাধ্যমং উপায়াৎ স্থদর্শনো হরেশ্চকে দীপে শক্রসমাধ্যমং ধ্যমিতানো ॥ ৩ ॥

তদ্বেরকার্মার্কমহে রেগসমাকুলম্। শুশুভেহত্ত বিনিশু ক্তং * গ্রহানামিব মণ্ডলম্ ॥ ৪ ॥ অস্ত্রাণাঞ্চ বলং তেবাং মানুষেষু প্রযুজ্যতাম্। ভচ্চ হোরে মহাযুদ্ধ ভীরাজ্জু নসমাগমে। দ্ৰষ্ট মঙ্গাগতা দেবা বিমানেঃ স্থৈঃ পৃথক্ পৃথক ॥ ৫॥ শতিং শতসহজাণা মত স্থা হিরণা্যী। মণিরত্নময়ী চান্যা প্রাসাদমুপধারয়ৎ॥ ৬॥ ভত্ত কামগম দিবাং সর্বারত্রবিভূষিতম্। বিমান্থ দেবরাজয়া শুশুতে খেচর শুভম্ ॥ ৭ চ তত্র দেবাস্ত্রযন্ত্রিং শত্তিষ্ঠন্তি সহবাসবাং। পক্ষর্কা রাক্ষদাঃ সর্পা: পিতৃর 🕶 মহর্ষিভিঃ। 🗸 🗈 তথা রাজা বস্থমনা বলাক্ষঃ স্থপ্রতদ্দন।। অফকশ্চ শিবিশৈচৰ ষ্যাতিৰ্নছ্ষে। পয়ঃ ॥ ৯ ॥ মন্তুঃ † কুপো রযুর্ভানুঃ † কুফাক্ষঃ সগরঃ শলঃ ١ বিমানে দেবরাজন্য সুমদৃশ্যন্ত সূপ্রভাঃ ॥ ১০ ॥

তৎমগুলং সভূমিভাগঃ গ্রহাণাং মগুল মিব রুতং শুশুভে ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ শত
সহস্রাণাং শতং লক্ষ শতং কোটি সংখ্যাঃ স্থাঃ প্রকাহির মারী স্থাাচ্
যদধাররং ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ জারস্তিংশং ক্ষৌবসব একাদশ ক্রাদাদশাদিত্যাঃ
প্রেলাপতিক বৃষ্ট্ কারকেটিও ব্যক্ষাং ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥

গ্রহানীমির মণ্ডলমিতাত গোহৈরিবনভন্তল মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।
 ক্পাইতাত পুরু রিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
 ক্ষাক্ষ ইত্ত কুণার্য ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অগ্নেরীশস্ত সোমস্ত বরুণক্ত প্রজাপতে:। তথা ধাতুর্বিধাতু 🕶 কুবেরস্ক ষমস্ত চ ॥ ১১ ।, অলম্বার্থেকেন্নাং গন্ধকার চ ভুমুরো:। ষ্থাভাগ * ষ্থোদেশং বিমানানি চ্কাশিরে। ১২। সর্ব্ব দেবনিকায়াশ্চ সিদ্ধাশ্চ পরমর্ব্যঃ। অৰ্জ্জনক্ষ কুৰাণাঞ্চ যুদ্ধ ক্ৰফ মুপাগতাঃ॥ ১৩ । দিব্যানাং † তত্ত্ৰ মাল্যানাৎ গল্প: পুণোহধ সৰ্বশং। প্রসার বসন্তাতো বনানামিব ‡ পুষ্পাতাম্॥ ১৪॥ ** রক্তারক্তানি দেবানাং সমদৃ**শান্ত** তিষ্ঠতাম্। আতপত্রাণি বাসাং দি অজশ্চ'ব্যন্তনানি চ। ১৫॥ উপাশামান্তজো ভৌমৎ সর্বাং ব্যাপ্তং মরীচিভি:। দিব্যান্ গন্ধানুপাদায় বায়ুর্ঘোধানদৈবত॥ ১৬॥ প্ৰভাষিত্মিবাকাশং চিত্ৰৰপ্মলঙ্কৃত্য। স্পত্তিঃ স্থিতিশ্চাপি নানারত্রাবভাসিতৈঃ॥ ১৭॥ विमारेनिकिविधिकितेवस्थानीरेवः स्टाराखरेमः। বজ্ৰভৃচ্ভুভে তত্ৰ বিমানস্থঃ সুরৈর্ক্তঃ॥ ১৮॥ ॥ ১১ ॥ অলমু ষোগ্রেদনানাং তৎপ্রভূতীনাং গদ্ধর্কাণাং ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ 🥦 1174 11 20 11 20 11 20 11

* ভাগমিতাত্ত্র মানমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

† তত্ত্বেতাত্ত্র দর্ব্বেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

‡ পুষ্পাতামিতাত্ত্র ভারতেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

** রজারকানীতাত্ত্র ভত্তরত্বানীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

বিজ্ঞালাপ মহাতেজাঃ পদ্মোৎপলসমাযুতাম।

* সপ্রোক্ষমানো বলভিন্নাতৃপ্যৎ স্থতমাহবে। ১৯॥
ইতি বিরাটপর্কানি গোহরণপর্কানি দেবানামাগমনে

বঁট্ পঞ্চাশস্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৬॥

देवभन्शाश्चन छेदा ।

দৃষ্ট্য ব্যাচান্যনীকানি কুৰণাং কুরুনন্দন:।
তত্র বৈরাটিমামস্ত্র্য † পার্ষোবচনমত্রবীৎ॥ ১॥
† জাফুনদময়ী বেুদী হজে যত্ত প্রকাশতে।
তস্য দক্ষিণতো যাহি রূপঃ শার্ষতো যতঃ॥ ২॥
বৈশ্লপায়ন উবাচ।

ধনপ্রয়বঁচঃ প্রান্থা বৈরাটিস্ত্ররিউস্তদা।
হয়ানুজতসঙ্কাশান্ হেমভাগুলচোদয়ৎ॥ ৩॥
আরুপূর্নীয়া তু তৎসর্কামাস্থায় জবমুন্তমম্।
প্রাহিণোচন্দ্রস্কাশান্ কুপিতানিব ভান্ হয়ান্॥ ৪॥
স গত্বা কুরুদেনায়াঃ সমীপং হয়কোবিদঃ।
পুনরাবর্ত্রামাস ভান্ হয়ান্ বাতর্
হশঃ॥ ৫॥

11 25 11

ইতি বিরাট পৃশ্ধনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাব দীপে ষট্-পঞ্চাশভ্ৰমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৬ ॥

দৃফেতি ॥ ১॥ ২॥ হেমভাওান্, অর্ণলঙ্কারান্ ॥ ৩॥ ৪॥ ৫॥

^{• *} সংপ্রেক্ষমাণোর লভিনাতৃপাৎ স্থতমাহবে ইত্যত্ত বিপ্রেক্ষ্য মাণো বহুভিনাতৃপাৎ স্থ মহাহবমিতি প্লাঠঃ খ পুস্তকে।

[†] পার্থোব্চন মত্রবীদিত্যত্ত পাওবোহথাত্রবীদিদ মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

‡ জালুন্দেত্যস্য প্রাক অর্জুন্টবাচেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রদক্ষিণমুপার্ত্য মগুলং স্ব্যুমের চ। কুৰন্ সম্মোহয়ামাস মৎস্যো যানেন তত্ত্ববিৎ ॥ ৬॥ ক্রপস্য রথমাশাদ্য বৈরাটিরকুভোভয়ই। প্রদক্ষিণমুপার্ত্য তত্থে তস্যাগ্রতো বলী ॥ ৭ ॥ ততোহজুনঃ শশ্ববরং দেবদন্তং মহারবম। প্রদধ্যে বলমাস্থায় নাম বিশ্রাব্য চাত্মনঃ ॥ ৮ । তস্য শব্দো মহানাসীদ্ধম্যমানস্য জিঞ্বা। তথাবীর্ঘ্যবতা সংখ্যে পর্বতস্যেব দীর্ঘ্যতঃ॥ ৯॥ পুজরাঞ্চল্রিরে শঙ্খণ কুরবস্তে সদৈনিক।।। অৰ্জ্জনন তথাধ্যাতঃ শতধা যন্ন দীৰ্যতে। ১০॥ দিবমারত্য শব্দস্ত নির্ত্তঃ শুশ্রুবে পুনঃ। স্টো মঘৰতা ৰক্তঃ প্ৰপতন্নিৰ পৰ্বতে ॥ ১১ ॥ এতিমান্নতরে বীরো বলদর্পসমন্তিত। অজ্বাং প্রতিরক্ষা রাপঃ পরম তুর্জ্বয়া। 🤲 অমুষ্যমাণস্ত শব্দং কুপঃ শার্দ্বতন্তথা ॥ ১২ ॥ অজ্ঞ নি প্রতি স্বর্রো যুদ্ধার্থী স মহারথঃ। মহোদবিজমাদায় দথাৌ বেগেন বীর্ঘাবান ॥ >৩॥ . স তু শব্দেন লোকাৎস্ক্রীনারত্য রথিনাং বরঃ। ধনুরাদায় স্থমহজ্জাশক্ষকরে।ত্তদা ॥ ১৪॥

মংস্যঃ উত্তরঃ ॥৬॥৭॥৮॥৯ ॥১০॥ বজাঃ অশ্নিঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥ মহোদ্ধিজং শংখিং ॥ ১৩॥১৪॥

^{*} অম্ব্যমাণ ইত্যদ্য প্ৰাক্ অৰ্জ্নং প্ৰতিশংরক্ক ইতি চুরাদ্বয়ং ক পুস্তকে নাস্তি।

(छो #वीर्वो स्वर्धानकारमो खाल्मामारनो महावरलो । শারদাবিব জীমূতো ব্যিরোচেতা ব্যবস্থিতো । ১৫ ॥ ততঃ শারদ্বতন্ত্র পার্থং দশভিরাশুগৈঃ। বিবাধে পরবীরত্নং নিশিতৈর্দ্মভেদিভিঃ ॥ ১৬ ॥ পার্থে। হপি বিদিত শাবেক গাণ্ডীবং পরমায়ুধম্। বিক্ষ্য, চিক্ষেপ বহুর†রাচাক্মর্যভেদিন: ॥ ১৭ ॥ कानआश्रक्षिरेक्वारेगमात्राचानुकरणाजनान् । ক্লপশ্চিচ্ছেদ পার্থস্য শতশোহথ সহস্রশঃ॥ ১৮॥ ততঃ পার্যস্ত সংকুদ্ধঃ † শীদ্রাক্রত্বং বিদর্শয়ন্। पिभाः প্রাচ্ছাদয়দাবৈ: প্রদিশ**শ্চ মহারথ:** ! একচ্ছায়মিবাক শং ‡ কুর্বন থগতঃ প্রভুঃ॥ ১৯॥ প্রাচ্ছাদয়দমেয়াত্মা পার্থঃ শরশতৈঃ রূপম্। স শরৈর দিকে: কুদ্ধঃ শিতৃর গ্লিশিখোপ সৈ: ॥ ২ । । ভূর্ণং শতসহত্রেণ পার্থমপ্রতিমৌজ্সম্। অর্দরিত্বা মহাত্মানং ননাদ সমরে কুপঃ॥ ২১॥ ততঃ কনকপ্রবাত্রেবীর সমতপ্রভিঃ 1 ত্বরন্ গাণ্ডীবনির্দ্ম কৈরজ্জুনস্তস্য বাজিন:॥ ২২॥

রথৌর থিনো ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ ২০ ॥ ২১ ॥ ক্রক পর্বা তৈত্রঃ কনক লিপ্ত ফলকৈঃ ॥ ২২॥ •

🗜 কুর্মনুখ গত প্রভুরিত্যত্ত অকরে।ৎ দর্মবৃতঃ প্রভুরিতি পাচখ গুস্তকে।

চত্রভিশ্চতুরস্তীকৈরবিধ্যৎ পরমেষ্ভি:। * তে হয়া বিশিথৈ: ऋषी জলদ্ভি: পাবকোপমৈঃ। উৎপেতৃঃ সহসা সর্কে কুপঃ স্থানাদথাচ্যবৎ।।২৩।। চ্যুতন্ত গৌতমৎ স্থানাৎ সমীক্ষ্যা কুরুনন্দনঃ। নাবিধ্যৎ পরবীরত্নে। রক্ষমাণোহ্স্য গৌরবম্॥ ২৪॥ ম তুলকা পুনঃ স্থানং গৌতমঃ স্ব্যাচিন্ম। বিব্যাধ দশভিব্যানৈস্থার ভঃ কঙ্কপাজি ভঃ ॥ ২৫॥ ততঃ পার্থো ধনুস্তস্য ভ ল্লন নিশিতেন চ। চিচ্ছে দৈকেন ভ্রশ্চ হস্তাবাপমথাহরৎ ॥ २७॥ অथाना करहर वारिनिर्मारेड र्यामार इति छि: । ব্যধমন্ন চ পার্থেহিন্য শরীরম্বপীডয়ৎ॥ ২৭॥ ত্রমা নিশ্ম চামানস্য ক্রচাৎ কায় আবভৌ। সমুয়ে মুচ্যমানদ্য সর্পদ্যেব তন্তুর্যথা ॥ ২৮॥ ছিলে ধরুষি পার্থেন সেবেন্যদাদায় কার্মাক্ষ্। চকার গৌতমঃ সজাং তদদুত্মিবাভবৎ॥ ২৯। স তদপাস্য কৌলেয়ন্চিচ্ছেদানতপ্রবণা। व्यवस्थानि हालानि वहूनि मृष्ट्छवर। • শারদ্বত্য্য চিচ্ছেদ পাওবঃ পরবীরহা ॥ 🗽 ॥ স চ্ছিন্নধনুরাদায় রথাচ্ছক্তিৎ প্রতাপবান । প্রাহিণোচ্চাপি পার্থায় প্রদীপ্তামশনীমিব॥ ৩১॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ क्रांनश्टेकं रीय मध्कामिकियां तथ ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

^{*} তেছয়া বিশিখৈঃ স্পৃষ্টা জ্লাড়িঃ পাবকোপমৈরিতঃত তেছয়ানি শিতের্বিজ্লাড়িরিব প্রথম।রতি পাচঃ খ পুত্তকে।

তামজ্জু নস্তদায়ান্তীং শক্তি ৎহমবিভূষিতাগু। বিয়দগতাং মহোলকাজাং চিচ্ছেদ দশভিঃ শরৈঃ॥ ৩২॥ সাপতদ্দশধা ছিল্লা ভূমৌ পার্থেন ধীমতা॥ ৩০॥ যুগপদ্ধৈৰ ভল্লৈস্ত তঙঃ সজ্যধনুঃ রূপঃ। তমাশু নিশিতেঃ পার্থং বিভেদ দশভিঃ শরৈঃ॥ ৩৪॥ ততঃ পার্থা মহাতেজাঃ শর্নাগ্রিশিখোপমান্ 1 চিকেপ সমরে কুদ্ধস্রয়েদশ শিলাশিতান্॥ ৩৫॥ অথাক্ত যুগমেকেন চুতুর্ভিশ্চতুরো হয়ান্। ষষ্ঠেন চ শিরঃ কাষাচ্ছারেণ রথসারথে। ৩৬। ত্রিভিস্তিবেণুং সমরে ঘাড়া।মক্ষং মহারথ:। দাদশেন চ ভল্লেন চকর্ত্তাম্বা ধ্রত্ত তথা।। ৩৭॥ ততো বজ্ঞনিকাশেন ফাল্গুনঃ প্রহ্মরিব। ত্রাদেশেনেন্দ্রমঃ কুপৎ পক্ষ্যস্যবিধ্যত ॥ ৩৮॥ স ছিন্নধনা বির্থো হতাখে। হতসার্র্থিঃ। গদাপাণিরবপ্পতা ভূর্ন চিকেপে তাং গদাম।। ৩৯। সা ভু মুক্তা গদা গুৰ্বী ক্রুপেন স্থপরিষ্কৃত।। অর্জুনেন শরৈরু না প্রতিমার্গমথাগমৎ॥ ৪০॥ তন্ত যোধাঃ পরীপেতঃ শার্ঘতমমর্থাম্। সর্বতঃ সমরে পার্থং শর্বধৈরবাকিরন্ ॥ ৪১॥ ততো বিরাটস্য স্থৃতঃ স্বামার্ভ্য বাজিনঃ। यमकः, मखनः कृषा जान् (यापान् श्राजाताव्यः ॥ ४२ ॥

॥ ৩২ । ৩৩ ॥ ৩৪ ॥ ৩৫ ॥ ৩৬ ॥ ৩৭ । ৩৮ ॥ ৩৯ ॥ নুরা দুরীকৃতা প্রতিমার্গৎ বিপরীত মার্গং অব্যামং পরারত্ত্তার্থঃ ॥ ৪০ ॥ ৪১ ॥ সবাং আর্ত্য প্রদ-ক্ষিণং ক্রেডার্থঃ 'যমক ০ শত্রুণাং নিরোধকং মণ্ডলং ক্রাথিমন্কতে শক্রপমানিতো লজ্জিতন্তিষ্ঠ তে ॥ ৪২ ॥ ততঃ ক্লপমুপাদায় বিরথং তে নরর্যভাঃ।
অপজগ্ম, শহাবেগাৎ কুন্তীপু জ্রাদ্ধন প্রগ্নাৎ॥ ৪৩॥
ইতি বিরাটপর্কানি গোহরণপর্কান ক্লপাপ্যানে সপ্তপঞ্চাশন্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৭॥

বৈশস্পায়ন উগাচ।

ক্পেহপনীতে দোণস্ত প্রগৃহ্য সশরং ধরুঃ। অভ্যদ্রবদনাধ্যাঃ শেশিশের শেতবাহনশ্। ।। স তু রুকারথং দৃষ্ট্বা গুরুমায়ান্তমন্তিকাং। অর্জুনো # রথিনাং শ্রেষ্ঠ উত্তরং বাক্যমত্রবীং। ২।

ञक्क् न डेवाह।

যুক্তবা কাঞ্চনী বেদী † প্রদীপ্তাগ্নিশিখোপমা।
উচ্ছি তা প্রবরে দণ্টে পুতাকাভিরলস্কৃতা।
তত্র মাং বহু ভদ্রুং তে দ্যোনানিকায় সার্থে॥ ৩॥
অশ্বাঃ শোনাঃ প্রকাশন্তে বৃহত্তশ্চারুবাহিনঃ।
স্থিপবিদ্রুমসন্ধাশান্তামাস্যাঃ প্রিয়দর্শনাঃ।
যুক্তা রথবরে যুদ্য সর্বশিক্ষাবিশারদাঃ॥ ৪॥

অপজনাুনীতবন্তঃ ॥ ৪৩ ॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভারদ্বীপো সপ্ত-পঞ্চাশতমেহিশ্বারঃ ॥ ৫৭ ॥

কুপ ইভি ॥১॥২॥৩॥৪॥

* রথিনামিতাত্ত জলতা মিতি পাঠঃ খ প্রস্তকে। ক প্রদীপ্তামিশিখোপমেতাত্ত হজেয়দ্য প্রকাশতে ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে। দীর্ঘবাহুর্গাতেজা বলকপ্রসাধিতঃ।
সক্ষণেকেষু বিখাতো ও ভারদ্ধাকঃ প্রতাপ্রান্ ॥ ৫॥
বৃদ্ধা তুল্যা হুশ্নসা বৃহস্পতিসমো নয়ে।
বেদাস্তথের চত্মারো ব্রহ্মচর্যাৎ তথৈব চ॥ ৬॥
সসংহারাণি দিব্যানি সক্ষাণ্য্রাণ্ড মারিষ।
ধনুর্বেদশ্চকাৎ স্থান যম্মিনিত্যং প্রতিষ্ঠিতঃ॥ ৭॥
কানা দমশ্চ সত্যক্ষ আনুশংস্যামথার্ক্তরম্।
এতে চান্যে চ বহুবো যামিনিত্যং বিদ্ধে গুণাঃ॥ ৮॥
তেনাহং যে কুমিছামি মহাভাগেন সংযুগে।
তক্মান্তং প্রাণিয়াচার্যাৎ কিন্তুস্তর বাহুয়॥ ৯॥

বৈশলাক্ষন উবাচ।

অর্জুনেনৈবমুক্তস্ত বৈরাটির্হেমভূষণান্।
চোদয়ামাস তানশ্বান্ ভারশ্বাজরথ প্রতি ॥ ১০ ॥
তমাপতত্তং বেগেন পাওবং রথিনাম্বরম্।
ডোলং প্রত্যাদ্ধ্যৌ পার্থ মন্তো মন্তমিব দিপম্ ॥ ১১ ॥
ততঃ প্রাধ্যাপয়চ্চজ্ঞ ভেরীশ্তনিনাদিতম্।
প্রচুক্ষ্ভে বলং সর্কামুদ্ধত ইব সাগরং ॥ ১২ ॥
তথ শোণান্ সদৃশ্বংস্তান্ হ শ্ববর্ণিনোজবৈং।
মিশ্রিতান্ সমরে দৃষ্ট্যা ব্যামান্ত রণে নরাং॥ ১০ ॥
তৌ রথৌ বীর্যাসম্পান্নৌ দৃষ্ট্যা সংপ্রামমূর্দ্ধনি।
তাচার্যাশিষ্যাবজিতৌ ক্তবিদ্যো মনশ্বনৌ ॥ ১৪ ॥

॥,৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১০॥১১॥ ১২॥ প্রতিদ্বন্ধি তের্ণার্জ্নযোধা-জিনাং মিশ্রনে নাতি সান্নিধাদিশযোজাতঃ॥১৩॥১৪॥

^{*} বিখ্যাত ইতাত্ত বিক্রান্ত ইতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

ममाञ्चिरको छमारनग्रनार द्वानभारशे मुश्यलो । দৃষ্টা প্রাকম্পত মুহুর্ভরতানাং মহদ্বলম্॥ ১৫॥ হর্ষযুক্তন্তভঃ পার্থঃ প্রহসন্নিব বীর্যাবান্। त्रथ्भ त्रत्थन (क्रिनिमा समामाना महात्रथः ॥ ১७ ॥ অভিবাদ্য মহাবা**হঃ * সান্ত,পূর্ব্যমিদ**^ বচঃ। উবাচ শ্লক্ষয়া বাচা কৌন্তেয়ঃ পরবীরহা॥ ১৭ ॥ উষিতাঃ স্মো হনে বাসং প্রতিকর্মাচিকীর্ঘরঃ। কোপং নাছসি নঃ কর্জুং সদাসমর্তুজ্য ॥ ১৮ ॥ অহন্ত প্রহার প্রহার বার্মি তেইন্ধ। • ইতি মে বৰ্ততে বুদ্ধিস্তত্বান্ কৰ্তুমুহতি ॥ ১৯ ॥ ততোহলৈ প্রাহিণোদ্যোলঃ শুরানিধিকবিংশতিম। অপ্রাপ্তাংকৈর তানু পার্থন্চিচ্ছেদ ক্লতহস্তবং॥২० ততঃ শর্বহন্ত্রেণ রথণ পার্থদ্য বী্র্যাবান্। ' অবাকিরন্ততো দ্রোগং শীঘ্রমস্ত্রং প্রদর্শরন্॥ ২১॥ হয়াংশ্চ রক্ষতপ্রথান্ কঙ্কপজৈঃ শিলাশিতঃ। ষ্পবাকিরদমেয়াত্মা পার্থ সংকোপয়লিব ॥ ২২ ॥ এবং প্রবরতে যুদ্ধ ভারদাঞ্জ কিরীটিনোঃ। ় সমং বিমুঞ্জোঃ সংখ্যে বিশিখানগ্নিতেজসঃ॥ ২৩॥

^{*} সাম্ভেত্ততে সামেতি পাঠঃ খ পুস্তকৈ।

তাবুভৌ খ্যাতকৰ্ম্মাণাবুভৌ ৰায়ুসমৌ জবে। উভৌ দিব্যাস্ত্রবিদ্ধ সারুভাবতুলতেজসৌ। ক্ষিপত্তৌ শরজালানি মেহয়ামাসত্র পান ॥ ২৪॥ ব্যস্ময়স্ত ততো যোধাঃ সর্বেব তত্ত্র সমাগতাঃ। শরান্ বিস্জতোস্তূর্ণ সাধু সাধিতাপুজয়ন ॥ ২৫॥ দোণং হি সমরে কোহন্যো যোদ্ধ মহতি ফাল্কনাৎ। রৌদ্রঃ ক্লির্থিন্মে। হয়ং গুরুণা যদযুধ্যত। ইত্যক্তবন্ জনান্তত্র সংগ্রামশিরসি স্থিতা:॥২৬॥ বীরো তাবভিদংরকো সন্নিক্ষেটা মহারথো *। ছাদয়েতাং শরব্রাতৈরন্যান্যমপরাজিতৌ ॥ ২৭॥ বিক্ষার্য্য স্থামহচ্চাপং হেমপ্রষ্ঠত্ব জুরাসদম্। ভারদ্বাজোহথ † সংকুদ্ধঃ ফাল্গুনং প্রত্যযুধ্যত ॥ ২৮ ॥ म भारतभरेयक रिलड़क्क् नस्म तथः अि । ভারুমন্তিঃ শিলাধৌতৈর্ভানোঃ প্রাচ্চাদরং প্রভাম ॥ ২৯ ॥ পার্থঞ স্কুমহাবাছর্দ্মহাবেগৈর্মহারথঃ। বিব্যাধ নিশিতৈকাবৈণক্ষেছে। বুফ্টোব পর্বতম্ ॥ ৩০॥ তথৈব দিব্যং গাঞ্জীবং ধনুরাদায় পাগুবঃ। শক্রমং বেগবান্ হৃঠে। ভারসাধনমুত্তমম্ ॥ ৩১॥

বিহুষৌ বিদ্বাংসো ॥ ২৪ ॥ ২৫ ॥ ২৬ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ শিলাধৌতৈঃ দৃষ্দি¸ তেজিতৈঃ ॥ ২৯॥ ৩০॥ ভার সাধনুং শক্তমর্দন ক্ষমং অচ্ছেদ্যমিত।র্থঃ ॥ ৩১॥

^{*} রংগাবিত্যত্র ভূঞাবিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
† সংকুদ্ধ ইত্যত্র সংরক্ক ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিসসজ শরাৎ শিত্তান্ স্বর্ণবিক্তান্ বহুন্। নাশয়ন শরবর্ষাণি ভারদ্বাজন্ত বীর্যাবান। তূর্ণ চাপবিমুক্তানি তদদ্ভতমিবাভবং ॥ ৩২ । म तर्थन हत्न भार्यः त्थकनीरमः धनक्षमः। যুগপদিকু সর্বান্ত সর্বতোহস্ত্রাণ্যদর্শয়ৎ॥ ৩০॥ একচ্ছায়মিবাকাশং বাবৈশ্চক্তে * ধনপ্তয়ঃ। নাদৃশ্যত ততো ছোণো নীহারেণেব সংবৃত॥ ৩৪॥ তম্যাভবত্তদাৰূপং সংবৃত্যা শ্লোভামঃ। জাজ্ব্যমানন্ত যথা পর্বতন্ত্রেব সর্ব্বতঃ । ৩৫॥ দৃষ্ট্র তু পার্থস্থ রণে শরৈঃ স্বর্থমার্তম্। স বিক্ষার্যাধনুশিত্র মেঘন্তনিত্রনিম্বনম্। ৩৬॥ অগ্রিচক্রোপম বোরং ব্যক্ষ্ত্রপরমায়ুধম। ব্যশাত্যচ্চরাংস্তাংস্ত দ্রোণঃ সমিতিশোভনঃ॥ ৩৭॥ মহানভূত্ততঃ শব্দো রুৎশান্যমিব^{*}দহতাম্ ॥ ৩৮ ॥ काञ्चनम्प्रदेशः शूरेश्वानिवैष्ठाशविनिर्गरेखः। প্রাচ্ছাদয়দ্মেয়াল্লা দিশঃ সূর্যাস্ত চ প্রভাষ্ ॥ ৩৯ ॥ ততঃ কনকপুস্থানাং শরাণাং নতপর্বণাম। বিষক্ষরাণাং বিষতি দুশ্যন্তে বহবো ত্রজাঃ॥ ৪০॥ জোণতা পুংখদক্রাশ্চ প্রভবন্তঃ শরাসনাৎ ১ একো দীর্ঘ ইবাদুশ্রদাকাশে সংহতঃ শর: ॥ ৪১॥ এবং তৌ স্বর্ণবিক্ষতান বিমুঞ্জী মহাশরান্। আকাশং স্কুতং বীরাবুল্ছাভিরিব চুক্র হুঃ ॥ ৪২ ॥ •

|| 02 || 00 || 08 || 00 || 09 || 09 || 09 || 08 || 80 || 81 || 81 ||

^{*} ধনঞ্জ ইত্যত্ত সমন্তত ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

শর স্থানে বিবভুঃ কল্পবভিণবাসস:। পংক্তাঃ শরদি থস্থানীং হংসানাঞ্চরতামিব ॥ ৪ **৩** ॥ যুদ্ধ সমভবস্তত সুস্পর্কং মহাত্মনোঃ। क्तां विश्व । ४८ विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य তৌ গজাবিব সংক্রম্বৌ বিষাণাজ্যেঃ পরস্পর্ম 1 শরৈঃ পূর্ণায়তোৎস্থ কৈরন্যোন্যমভিজন্ম হুঃ॥ ৪৫॥ তৌ ব্যবাহরতাং * শূরো স^রকৌ রণশোভিনৌ। উদীরয়ন্তো সমরে দিবগুন্যস্তাণি ভাগশং॥ ৪৬॥ অথ ত্রাচার্যায়ুখ্যেন শরান্ স্ফান্ শিলাশিতান্। नावादम्हिटेडक्वीरेनबर्द्धाता क्रम्डा९ वत ॥ ८१ ॥ দর্শরন্ বীক্ষমাণানামস্ত্রমুগ্রেপরাক্রমঃ। ইষুভিন্ত র্ণমাকাশং বছভিশ্চ সমার্ণোৎ ॥ ৪৮॥ জিঘাংসন্তং নরব্যান্ত্রমর্জুন ে তিগ্নতেজসম্। আচার্য্যমুখ্যঃ সমরে দ্রোণঃ শিক্তভূত্যমরং। অর্জ্জুনেন সহাক্রীডচ্চুরৈঃ সন্নতপর্বভিঃ॥ ৪৯॥ দিব্যান্যস্ত্রাণি বর্ষস্তং † তিম্মন্ বৈতুমুলে রণে। অস্ত্রৈরন্ত্রাণি সংবার্য্য কাল্কুনং সমযোধয়ৎ॥ ৫०॥ তয়োরাদীৎ সংপ্রহারঃ কুদ্ধযোর্নর সংহয়োঃ। 🗀 व्यमिति । १० ॥ विमान वर्षातिव ॥ १० ॥

া। ৪০॥ ৪৪॥ বিষাণা আৈদিন্তা আৈঃ ॥ ৪৫॥ ব্যবাহরতাং ব্যবহারং ধর্মযুদ্ধং কৃতবন্তে । ॥ ৪৬॥ ৪৭॥ ৪৮॥ জিঘাং স্তাপ্যর্জনেন সহবাং সল্যাৎুস্বয়ং ্সক্রডংনসুকুরোহভূং ॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥

^{*} শূরাবিত্যত্ত রুদ্ধে ইতি পাঠঃ খ প্রস্তকে।

† তিমান্থিতুমুলে রণ ইত্যত্ত ভারম্বাজো মহারণ ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

1 60 11 65 11

এক্রণ বায়ব্যমাগ্রেয়মন্ত্রমন্ত্রেণ পাওবঃ ৮ জোণেন * মুক্ত মাত্রস্ত প্রসতি সা পুনঃ পুনঃ॥ ৫২॥ এবং শুরৌ মহেষাসৌ বিস্কল্ডৌ শিতাঞ্গান্। একছা**র^ চক্রতুস্তাবাকাশ**্ শরর্ফি;ভঃ ॥ ৫০ ॥ তত্রার্জ্জুনেন মুক্তানাৎ পতিতানাং শরীরিষু। পর্বতেম্বি বজাণাং শরাণাং শ্রাণতে স্থনঃ॥ ৫৪॥ ততো নাগা রথাকৈব বাজিনক প্র বিশাম্পতে। শোণিতাক্তা ব্যদৃশ্যন্ত পুঞ্চাতা ইব কিংশুকাঃ॥ ৫৫॥ বাহুভিশ্চ সকেয়ুরৈকিচিত্রৈশ্চ মহারথৈঃ । স্থবর্ণ চিত্রৈ: কবচৈর্গক্তিশ্চাপি নিপ্লাভিতিঃ ॥ ৫৬ ॥ যোধৈশ্চ নিহতৈত্তত্ত পাৰ্থবাণ্থাপী ভটেত। বলমাদীৎ সমুদ্রান্তং দ্রোণার্চ্জুনসমাগমে ॥ ৫৭ ॥ विश्वारनो जु छो वीरहो धत्रुषी आवमाधरन। সপ্ছাদয়েতামন্যোহন্ত ; ততক্ষতুর্থেষুভিঃ ॥ ৫৮ ॥ তরোঃ সমভদ্দ্দং তুমুল ও ভরতর্বভ। ক্রোণকৌন্তেয়যোস্তত্র বলিবাসবয়োরিব॥ ৫৯॥ অথ পূর্ণায়তোৎস্থাটাঃ শরৈঃ সরভপর্বভিঃ। • ব্যদারয়েতামন্যোন্য প্রাণদাতে প্রবর্তিতৈ ॥ ৬০ ॥ অথান্তরীকে নাদে, হভূৎ দ্রোণং তত্র প্রশংসতাম্। তুষ্কর∿ কুতব্ংক্রোবেশ यদর্জ্বনমযোধয়ৎ॥ ৬১॥ ॥ वर ॥ वञ् ॥ वद ॥ वष् ॥ वष् ॥ वन्॥ उठक्क्यूः की ४१ ५क्यू ३ ॥ दुः ॥ वः ॥

^{*} মুক্তমাত্রভূইত্যত্ত মুক্তং মুক্তঞ্চেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† বাজিন ইত্যত্ত সাদিন ই ত পাঠঃ ক পুস্তকে।

‡ ততক্ষতুরখেমুভিরিত্যত্রমত ক্ষয়ৌমহেমুভিরিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

প্রমাথিনং মহাবীর্যাং দুর্দ্মৃষ্টিং পুরাসদম্। জেতারং দেব * মত্রানাং † সর্পাণাঞ্চ মহারথম্। ৬২॥ অবিভ্রমঞ্ শিক্ষাঞ্চ লাঘ্বন দুরপাতিতাম্। পার্থস্য সমরে দৃষ্ট্র। ক্রোণস্যাভূচ্চ বিস্ময়: ॥ ৬৩ ॥ ততে। গা গুবিমুদ্যম্য দিব্যং ধন্তুরমর্ষণঃ। বিচক্ষ রেণে পার্থে। বাছভ্যাং ভরতর্ষভ ॥ ৬३ ॥ তিন্য বাণ্ময় প্ৰধং শলভানামিবায়তিম। দুষ্টা তে বিশিকাঃ সর্কে সাধুসাম্বিত্যপূজয়ন্ ॥ ৬৫ ॥ ন চ বাণান্তরে বায়ুর্স্য শক্ষোতি স্পিতৃষ্। অনিশ্ সন্দ্রধানস্য শ্রান্-বিস্জতস্তথা ॥ ৬৬॥ मनुदर्भ नाख्र किल्ड পार्थभाममा जारे हि । ७१ ॥ া অথাস্তাযুদ্ধে ঘোরেত বর্তুমানে স্থদারুণে। শীঘ্রাচ্চীঘ্ররঃ পার্থ: শর্পনন্যানুদীরয়্ণ॥ ৬৮॥ ততঃ শতসহস্রাণি শরাণাং নতপ্রধাণাম। যুগপৎ প্রাপত তক্ত দ্রোণস্য রথমন্তিকাৎ ॥ ৬৯॥ আকীর্য্যাণে জোণে তু শরৈর্গান্তীব্ধন্থনা। হাহাকারো মহানাসীৎ দৈন্যানাং ভরতর্যভ ॥ १० ॥ পাওবস্চ শীঘাস্ত্রং মঘবা প্রত্যপুজন্নৎ ৷ গল্পর্সশৈরসভৈব যে চ তত্র সমাপতাঃ॥ ৭১॥

॥ ৬২ ॥ ৬৩॥ ৬৪॥ আগ্রন্তি সন্তৃতিং ॥ ৬৫॥ ১৬॥ ৬৭॥ ৬৮॥ ৬৯॥ ॥ ৭০॥ ৭১॥

^{*} মত্যানামিতাত্র দৈত্যানামিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

প সপ্থানিমিত্যক্ত সের্বেষামিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

1 অধান্ত যুদ্দে ছে,রেডু ইত্যক্ত তথা শীজান্ত যুদ্দেডু ইতি পাঠঃ খ
পুস্তকে।

ততে। রুন্দেন মহতা রথানা রথ্যুথপঃ। আচার্য্যপুত্র: সহসা পাণ্ডব প্রপ্রত্যবারয় । । १२॥ অশ্রথামা তু তৎকর্দ্ম হৃদয়েন মহাত্মনঃ। পুজয়ামাস পার্থস্য কোপঞ্চাস্যাকরোচ্ছ,শম ॥ ৭৩॥ স মনুবেশমাপন্নঃ পার্থমভাদ্রবদ্রণে ! কিরন্ শরসহস্রাণি পর্জন্য ইব র্ফিমান্॥ १৪॥ আর্তা তু ম**হাহাহর্যতে। ক্রৌ**ণিস্ততো হয়ান্। অন্তরং প্রদদৌ পা**র্থে। ছে!্ণন্ত বা**পসর্পি হুন্॥ ৭৫॥ म जू लक् । खत्र जूर्नमशास ज्ञान वरेन ईरेसः। ছিল্লবর্শ্মঞ্জঃ পূরো নিক্তঃ পরমেষুভি: ॥ ৭৬ ॥

ইতি বিরাটপর্ঝনি গোহরণপর্ঝনি দ্রোণাপয়ানে অর্টপঞ্চা-শত্তমোহধ্যায়ঃ॥ ৫৮॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো দ্রৌণির্মহারাজ ! প্রযযাবর্জ্জুন রণে। তং পাৰ্থঃ প্ৰতিজ্ঞাহ * তাক্ষ্যো নাগমিৰৌদ্ধতম্। শরজালেন মহতা বর্ষমাণ ইবাসুদঃ॥ > 1

॥ ৭২॥ ৭৩॥ ৭৪॥ অনন্তরং অবকাশং । ৭৫॥ নিক্তঃ প্রছতঃ॥ ৭৬॥

ইতি বিরাটপর্ম্মণি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে অঞ্চ-

পঞ্চাশত্রমোহধ্যায়ঃ ৮৫৮॥

তত ইতি ॥ ১॥

ভাক্তোনাগ মিত্যত্র বায়্বেগ মিতি পাঁচঃ থ পুস্তকে।

ত্যোদেব সুরসমঃ মৃত্রিপাতো সহানভুৎ। কিরতোঃ শরজালানি ব্রত্রবাস্বয়োরিব ॥ ২॥ ন স্ম স্থায়ে। দিবা ভাতি ন চ বাতি সমীরণঃ। • * শরপাকৈঃ ক্লতে ব্যোগি ছায়াভূতে সমন্ততঃ॥ ৩। মহাংশ্টেটটাশকো যোধ য়োণযুধ্যমানয়োঃ। দহতোমিব বেণুনামাদীৎ পরপুরঞ্জয় । ৪ ॥ হয়।নস্তাৰ্জ্বনঃ স্কুন্ত্ৰ ক্তব্যন প্ৰীবিতান্। তে রাজন প্রজানন্ত দিশং কাঞ্চন মোহিতাঃ॥ ৫॥ ততো দ্রৌণির্মহাবীর্য্যঃ পূার্থস্থ বিচরিষাতঃ। विवतः स्कागालाका का । किएक् कृत्त ह। তদক্ষাপুজয়ন্দেবাঃ কর্মা দৃষ্ট্যাতিমানুষম্॥ ১ ॥ क्तारना जीयम्ह कर्नम्ह कूर्यारेम्हव महात्याः। সাধুসাম্বিভিভাষতো পুজয়ন্ কর্মতক্ষতং ॥ ৭॥ ততো ! ক্রেণির্ধনুঃ শ্রেষ্ঠমপরুষ্য রথর্ষভং । পুনরেবাহনৎ পার্থ হৃদয়ে কম্বপল্রিভি:॥ ৮॥ ততঃ পার্থো মহাবাছঃ প্রহন্ত খনবত্তনা। যোজয়ামাদ নবয়া মৌবলা গাগুবিমোজনা॥ ৯॥

[॥]২॥৩॥৪॥ন প্রজানত অডভাব আর্বঃ নচজাতবভঃ ॥৫॥ বিবরং রন্ধুং॥৬°॥৭॥ অপকৃষ্য আর্ক্ষ । ৮॥৯॥ . '* * শরপাতেঃ কৃতে ইতাত শরজালারতে ইতি পাঠঃ খ পুতকে।

ততোহদ্ধিক্রমারত্য তেন পার্থ: সমাগম্ৎ। বারণেনেব মত্তেন মত্তো বারণ্য্থপ:॥ ১০॥ ততঃ প্রবরুতে যুদ্ধং পৃথিব্যামেকবীরুরোঃ। त्रपार्था घर्षारत्वः स्मारताम् ॥ >> ॥ তৌ বীরৌ দদৃশুঃ সর্বেক কুরবে। বিস্ময়ান্বিতাঃ। युधामारनी महावीर्रको यूथेशाविव मक्टरे ॥ >२ ॥ তৌ সমাজন্ম তুর্বীরাবন্যোন্যং পুরুষধ ভৌ। শরৈরাশীবিধাকারৈজলভিরিব পাবকৈঃ ॥ ১৩॥ অক্ষ্যাবিষুধী দিবোঁ পাগুৰস্থ মহাত্মনই টি তেন পার্থে। রণে শ্রস্তস্থো গিরিরিবাচলঃ॥ ১৪॥ অশ্বতামঃ পুনর্বাণাঃ কিপ্রমন্ত্রান্তােরণে। জগা: পরিক্ষয়ং শীঘ্রমভূত্তেনাধিকোইর্জ্জুনঃ ॥ ১৫॥ ত্তঃ কর্ণো মহচ্চাপণ বিক্নষ্যাভ্যুধিকং রুষা। অবাক্ষিপত্ততঃ শকৌ হাহাকারো মহানভূৎ। ১৬। ততশ্বন্ধবে পার্থে। যত্ন বিক্ষার্যাতে ধরু:। দদর্শ তত্র বাধেয়ং তত্ম কোপো ব্যবন্ধত । ১৭ ॥ স রোষবশ্যাপন্নঃ কর্ণমেব জিঘাৎ ন্যা। ত মৈকত বিরুত্তাভ্যাপ নেত্রাভ্যাং কুরুপুঞ্চবঃ॥ ১৮॥ তথা তু বিমুখে পার্থে দ্রোণপুত্রন্থ সায়কান। ত্বরিতাঃ পুরুষা রাজয়ুপাজয়ঃ সহস্রশঃ॥ ১৯॥ উৎস্জা চ্মহাবাহুদ্রে বিপুত্র ১ ধনঞ্জা। অভিচুদ্রাব সহসা কর্ণমেব সপ্তাজি । ২ ।।

তমভিক্রত্য কৌন্তেম্: ক্রোধসংরক্তলোচনঃ।
কাময়নু বৈরথং তেন যুদ্ধ বিচনমন্ত্রবীৎ ॥ ২১ ॥
ইতি বিরাটপর্বানি গোহরণ পর্বানি অর্জুনাশ্বত্থামযুদ্ধে
একোন স্ফিতমোইধ্যায়ঃ॥ ৫৯॥

অজ্জন উবাচ।

কর্ণ যতে সভামধ্যে বছ বাচা বিক্থিতম্।
ন মে যুধি সমোহন্তীতি তদিদ সমুপস্থিতম্॥ ১॥
সোহদা কর্ণ ময়া সাদ্ধং ব্যবহৃত্য মহামুধে।
আবোচা পরুষা বাচো ধর্মমুৎক্জা কেবলম্।
ইদন্ত তুদ্ধর মনো যদিদং তে চিকীষি তিম্॥ ৩॥
যত্ত্বয়া ক্থিতং পূর্বং মামনাদৃত্য কিঞ্চন।
তদদ্য কুরু রাধেয় কুরুমধ্যে ময়া সহু॥ ৪॥
যৎ সভায়াঞ্চ পাঞ্চালীং ক্লিশ্যমানাং তুরাছভিঃ।
দৃষ্টবানসি তজ্ঞাদ্য ফলম্যাপ্লাহি কেবলম্॥ ৫॥
ধর্ম্মপাশনিবদ্ধেন যম্মা মহি তং পুরা।
তক্ত রাধেয় কোপ্তাবিজয়৽ পশ্য মে মুধে॥ ৬॥

ইতি বিরাটপর্কাণি নৈলকতীয়ে ভারত ভারদীপে একোন-য**ন্টিতমোহ**ধ্যায়ঃ॥ ৫৯॥

কর্ণে ভিতেত্বা ॥ ১.॥ ২॥৩॥৪॥৫॥७॥

কাময়ন্ কাময়মানঃ ॥ ২১ ॥

^{*} জ্ঞাস্যাদে বলমান্ত্রীয় মিত্যত্ত্ব জ্ঞাস্যস্য বলমান্ত্রান মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

বনে দ্বাদশবর্ষাণি যানি সোঢ়ানি ছুর্ন্মকে। তন্তাদ্য প্রতিকোপন্ত কলমাপ্র হি স্ক্রেতম্ ॥ ৭॥ এহি কর্ণ ময়া সাৰ্দ্ধং প্রতিযুধাস্ব * সঙ্গরে। প্রেক্ষকাঃ কুরবঃ সর্বের ভবস্ত তব সৈনিকাঃ॥৮॥

কৰ্ণ উবাচ।

ব্রবীধি বাচা যথ পার্থ কর্দ্মনৈতথ সমাচর।
অতিশেতে হি তে বাক্যথ কর্দ্মিতথ প্রথিতথ ভূবি॥ ৯॥
যত্ত্বরা মর্ষিতথ পূর্বিশ তদশক্তেন মর্ষিত্র ।
ইতোগৃহ্চীম হে পার্থ তবদৃষ্ট্বা পরাক্রমম্॥ ১০॥
ধর্ম্মপাশনিবদ্ধেম যত্ত্বরা মর্ষিতথ পূরা।
তথৈব বন্ধমাত্মানমবন্ধমিব মন্যদে॥ ১১॥
गদি তাবদ্ধনে বাসো যথোক্তশ্বরিতস্ত্ররা।
তত্ত্বং ধর্মার্থবিথ † ক্লিফ্টঃ সময়া যোদ্ধ মিচ্ছিদি॥ ১২॥
যদি শক্রঃ স্বয়্রথ পার্থ মুধ্যতে তব কারণাথ।
তথাপি ন ব্যথা কাচিন্মম শুাদ্ধিক্রমিষ্যতঃ॥ ১৩॥
তায়শ কোন্তের কামস্তে নচিরাথ সমুপস্থিতঃ।
যোৎস্থানে স্থা মার্দ্ধমদ্য ক্লিফানি মে বলম্॥ ১৪॥

॥ १ ॥ ৮ ॥ তেতৰ বাক্যং কর্ত্তর্ম অতিগেতে অপ্পং কর্ম বাক্যন্তু বহুল 👡 মিত্যর্থঃ ॥ ৯ ॥ ইতঃ পরং তব পরাক্তমং গৃহীমতে অদী কুর্মতে ॥ ১০ ॥ -॥ ১১ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ ১৪ ॥

^{*} মুধ্যম্ভোত্র পদ্যম্বৈতি প্লাঠঃ ক পুস্তকে। ।

† ক্লিফ ইত্যত্ত ক্লমঃ সময়া ঘোদ্ধমিদ্দ্দীতাত্ত সময়ং ভেতু মিদ্দ্দীতি
পাঠঃ ক পুস্তকে।

অৰ্জ্জন উবাচ।

ইদানীমেব তাবজুং ব্যপুরাতো রণামম।
তেন জীবদি রাধের নিহতস্ত্রুক্তস্তব ॥ ১৫ ॥
ভাতর মহাতরিত্বা তু ত্যক্তা রণশিরশ্চ কঃ।
ত্বদনঃঃ পুরুষঃ সৎস্থ জ্বাদেবং ব্যবস্থিতঃ॥ ১৬ ॥

देवमम्भाग्नन छेदाह।

ইতি কর্ণং ক্রবন্নের বীভৎস্করপরাজিতঃ।

অভ্যয়াদ্বিস্থজন্ বাণান্ কায়াবরণভেদিনঃ॥ ১৭॥

প্রতিজ্ঞাহতান্ কর্ণ * প্রীয়মাণো মহারথঃ।

শরবর্ষেণ মহতা বর্ষ মাণ্ ইবাসুদঃ॥ ১৮॥
উৎপে'তুঃ শরজালানি ঘাররূপাণি সর্বশঃ।

অবিধাদশ্বন্ বাহ্বোশ্চ হস্তাবাপং পৃথক্ পৃথক্॥ ১৯॥

সোহমূধ্যমাণঃ কর্ণস্থা নিষক্ষ স্থাবলম্বনম্।

নিশিতাগ্রেণ চিচ্ছেদ শরেগানতপর্বলা॥ ২০॥
উপাসঙ্গাত্রপাদায় কর্ণো বাণমথাপরম্।
বিব্যাধ পাগুবং হস্তে তম্য মুট্টিরশীর্যাত॥ ২১॥
ততঃ পার্থো মহাবাছঃ কর্ণস্থ ধনুরচ্ছিনৎ।

স শক্তিং প্রাহিণোভিস্মৈ তাং পার্থো ব্যধমছ্টেরঃ॥ ২২॥
ততো নিপেতুর্বহবো রাধেয়ন্ত পদানুগাঃ।
তানু গাগ্রীববিনিমুবিজঃ প্রাহিনোদ্বম্যাদনম্॥ ২৩॥

॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ অবলং বনং স্কুত্রং চিচ্ছেদ ॥ ২০ ॥ ততো-নিবলে মহাতুনীরে পতিতেসতি উপাসঙ্গাৎ ক্ষুত্রনীরাৎ স্বদেহ বাছাৎ ॥ ২১ ॥ ২২ ॥ ২৩॥

^{*} প্রীরমাণো মহারথ ইত্যত্র শরান্মি শিখো পর্মানিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততোহস্ঠাপান্ শরৈকীকৈবিভিৎস্প্রির স্থিনিঃ।
আকর্ণমুক্তৈরহনতে হতাঃ প্রাপতন্ ভুবি॥ ২৪॥
অথপেরেণ বাণেন জ্বলিতেন সহৌজসা।
বিব্যাধ কর্ণং কৌন্তেমস্তীক্ষেনোরসি বার্যবান্॥ ২৫॥
তক্ত ভিত্ত্বা তনুতাণে কায়মভ্যগমচ্ছরঃ।
ততঃ স তমসাবিফো ন স্ম কিঞ্জিৎ প্রজ্ঞজিবান্॥ ২৬॥
স গাচবেদনো হিত্বা রণং প্রায়াত্বদ্ধ মুখা।
ততোহর্জুন উদ্ভোশস্তুর্শ্চ মহারথঃ॥ ২৭॥

ইতি বিরাটপক্ষণি গোহরণপক্ষণি কর্ণশ্পয়ানে ষ্টিতমোহধায়য় ॥ ৬০ ॥

বৈশস্পায়ন উবাচণ

ততো বৈকর্ত্বন জিল্বা পার্থে। বৈরাটিমপ্রবীৎ।
এতলাং প্রাপরানীক রুত্র তালো হিরন্মঃ। ১।
যত্র শান্তনবো ভীলো রুথেইস্মাকং পিতামহঃ।
কাজ্জমাণো ময়া যুদ্ধং তিষ্ঠত্যমরদর্শন্য। ২॥
অথ দৈনাং মহদ্ফী হয়নাগর্থাকুলম্।
অপ্রবীছ্তরঃ পার্থং প্রতিবিদ্ধঃ শবৈভূশিম্। ৩॥
নাহং শক্যামি বীরেই নিয়ন্তং তে ইয়োভ্রমান্।
বিষীদন্তি মম প্রাণা মনো বিহ্বলভীব মে॥৪॥

॥ २८ ॥ २० ॥ २५ ॥ २१ ॥

ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে ব্যক্তিমোহধ্যায়ঃ ॥ ৫৯ ॥

তত ইতি ॥১ ॥২॥৩॥৪॥

অস্ত্রাণামিছ দিব্যানাং প্রভাবাৎ সংপ্রযুজ্যতাম। স্বয়া চ কুরুভিদৈচব দ্রবস্তীব দিশো দশঃ॥ ৫॥ গল্পেন মুক্তি কেশ্চাব্সি বসাক্ষধিরমেদসাম। বৈধীভূতং মনো মেহদ্য * ত্রাসশৈচৰ প্রপশ্য তঃ॥ ৬ । অদুষ্টপূর্বঃ শূরাণাং ময়া সম্ব্যে সমাগমঃ। গদাপাত্তন † মহতা শভানাং নিন্দেন চ॥ १॥ णि०इन तिम्हं मृहावा० शकानाः तुः विटेक्छथा। গাণ্ডীবশব্দেন ভূশ্যশনিপ্রতিমেন্চ। প্রাতিক ব্য বীর প্রনন্তা মূচচেত্য:॥৮॥ অলাতচক্র গ্রিমং মণ্ডলং সতত প্রা। ব্যাক্ষিপ্যমাণং সমরে গাণ্ডীবঞ্চ ‡ প্রপশ্রতঃ। দৃষ্টিব্বিচলিতা বীর হৃদয়ং দীর্ঘ্যতীব মে॥ ৯॥ বপুশ্লোগ্রং তব রণে ক্রন্ধুম্ভেব পিনাকিনঃ। ব্যায়চ্চতঃ 🎎 শরান্ ছোরান্ দৃষ্ট্র ভীর্মে ভবত্যপি॥ ১০॥ नाममानः न मञ्जानः न मूक्षेत्रः भारतालमान् । ত্বামহং সংপ্রপশ্যামি পশ্যরপি বিচেতনঃ॥ >>॥ অবসীদস্তি মে প্রাণা ভূরিয়ণ চলতীব চ। ন চ প্রতোদণ রশ্মীংশ্চ সংয়ন্তঃ শক্তিরন্তি মে। ১২।

,॥৫॥৬॥৭॥৮॥৯॥১०॥ त সক্ষান্থ নসং দ্ধান্থ বৰ্ণ লোপ আর্থিঃ ॥১১॥১২॥

^{*} ত্রাসইত্যত্র ভাবেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

া গদাপাতে নেত্যত্র গোধাঘাতেনেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া প্রপশ্যত ইত্যত্র প্রকর্ষতা ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

** শরান্ হোরানিত্যত্র তবভুজ মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অৰ্জ্জন উগ্ৰচ।

মা ভৈষী: স্তম্ত্রাকানং জ্বাপি নরপুক্ষব।
অত্যন্তানি কর্মানি ক্রতানি রণমূর্কনি ॥ ১৩ ॥
রাজপুজোংসি ভদ্রন্তে কুলে মৎস্যায় বিশ্রুতে।
জাতস্ত্রুৎ সজুদমনে ন বিধীদিতুম ইসি ॥ ১৪ ॥
ধৃতিৎ কৃত্বা স্ক্রিপুলাং রাজপুজ্র রথে মম।
বুধামানস্য সমরে হয়ানু সংযাক্ত শাকু হন্॥ ১৫ ॥

বৈশস্থায়ন উবাচ। 💽

এবমুক্ত্বা মহাবাছকৈরাটি রথগন্তমঃ।

অর্জুনো রথিনাং শ্রেষ্ঠঃ লপুনরেবেদমন্ত্রবীৎ॥ ১৬॥

সেনাপ্রমাশু ভীষ্ম্য প্রাপারকৈতদেব মাম্।

আচ্ছেৎস্যাম্যহমেত্স্য ধরুর্জামিপি চাইবে॥ ১৭॥

অস্যুন্তং দিব্যমন্ত্রং মাং চিত্রমদ্য নিশাময়।

শতব্রদামিবায়ান্তীং স্তর্নায়ন্তোরিব্যুক্তরে॥ ১৮॥

স্বর্ণপৃষ্ঠং গান্তীবং ক্লমন্তি কুরবো মম।

দক্ষিণেনাথ বামেন কতরেণ স্থিদস্যতি॥ ১৯॥

ইতি মাণ সঙ্গতাঃ সর্কো তর্কয়িয়ান্তি শত্রবঃ।

শোণিতোদাং রথাবৃত্তীং নাপানকাং পুরত্য়াম্।

শোণিতোদা
 রথারতাং নাপানকাং ছুরতায়ায়।
 নদী
 প্রকাদয়িয়্যামি পরলোকপ্রবাহিনীয়॥২০॥
 পাণিপাদশিরঃপৃষ্ঠবাছশাখানিরত্তরয়।
 বনং কুরণাং ছেৎস্যামি শারেঃ মনতপ্রাভিঃ॥২১॥
 .

॥১৩॥১৪॥১৫॥১७॥১<mark>৭॥ নিশাময় পশা শতহুদাং বি</mark>জ্ঞ ॥১৮॥**.** ॥১৯॥২০॥২১॥

* পুনরেবেদমিতাত্র উত্তরং বাক্য মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

জয়তঃ কৌরবীং সেনামেকস্য মম ধ্রিনঃ। শত্ত মাৰ্গা ভবিষ্যন্তি পাবকস্যেব কাননে। ২২। ময়া চক্রমিব।বিদ্ধং দৈনাং দ্রক্ষ্যদি কেবলম্। ইম্বস্তে শিক্ষিত্ৰ চিত্ৰমহৰ্ষ দৰ্শয়িতাক্সি তে॥ ২৩॥ অসংভাতো রথেতি ঠ সমেষু বিষমেষু চ। দিবমার্ব্ত্য তিঠতং গিরিং ভিক্সাং স্ব পক্রিভিঃ॥ ২৪॥ অইমিক্রসা বচনাৎ সংগ্রামেইভাইন পুরা। পৌলোমান * কালথঞ্জাংশ্চ সহস্রাণি শতানি চ॥ ২৫॥ অহমিন্দ্রিং মুটি॰ ব্লাং ক্তহন্ত্তাম্। প্রগাঢ়ে তুমুলং চিত্রম † ভ্যাশিক্ষং প্রজাপতেঃ॥ ২৬॥ অহং পারে সমুদ্রদ্য হিরণ্যপুর্বাদিনাম্। জিত্বা যক্তিন সহস্রাণি রথিনামুগ্রধন্বিনাম,॥ ২৭॥ শীর্ঘামাণানি কুলানি ! প্রবৃদ্ধেনের বারিণা। ময়া কুৰণাং রুন্ধানি পাত্যমানানি পূশ্য বৈ ॥২৮॥ ধ্বজরক্ষং পত্তিতৃণ্ রথসিৎহুগণাযুত্ম। বনসাদীপুরিষ্যামি কুরুণামস্ত্রভেজ্পা ॥ ২৯ ॥

শতং মার্গা ইতি সর্বব্যে মার্গস্যা নিরোধ উক্তঃ সর্বব্যোরা মমবাণা রামিষ্যন্তীত্যর্থঃ ॥ ২২ ॥ আবিদ্ধং ভাষ্যমানাং শিক্ষিতং শিক্ষাং ॥ ২৩ ॥ ২৪ ॥ , ॥ ২৫ ॥ প্রার্গাচ্চে সংকটে চিত্তাং নানাবিধং তুমুলং সঙ্কট যুদ্ধৎ সর্ববিদ্ধা ভবেদ্দীতিশেষঃ ॥ ২৬ ॥ জিহাজেতুংশক্তঃ ॥ ২৭ ॥ ২৮ ॥ রথসিৎ হর্গবৈঃ আসমভাং, যুতং ॥ ১৯ ॥

^{*} কাল খঞ্জাংশেতাত্ত ক লকঞ্জাংশেতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

া অভ্যাণিক্ষমিতাত্ত হাত বিদ্ধীতি পাঠঃ খ গুস্তকে।
ই কুলানী তাত্ত তুলানী বারিণেতাত্ত বায়ুনেতি পাঠঃ ক গুস্তকে।

তানহু রুধনীডেভা শবেঃ সন্তপ্রভি:। যক্তান্ সকানতিবলান্ যোৎস্যানানবস্থিতান্। একঃ সঙ্কালয়িষ্যামি বজ্ঞপাণিরিবাস্থরানু ॥ ৩০ ॥ রৌদ্রং রুদ্রাদহং হস্ত্রে বারুণং বরুণাদ্বি। অস্ত্রমাগ্রেয়মগ্লেশ্চ বায়ব্য- মাতরিশ্বনঃ। বজাদীনি তথাস্তাণি শক্তাদহমবাপ্তবান॥ ৩১॥ ধার্ত্তরাষ্ট্রং বনং য়োরং নরসিশ্হাভিরক্ষিত্যুর্ অহ্মুৎপাট্য়িষ্যামি বৈরাটে ব্যেতু তে ভ্য়ম্॥ ৪২ ॥ বৈশক্ষায়ন উবাচ। এবমাশ্বাসিতক্তেন বৈরাটিঃ সব্যসাচিনা। ব্যবাগাহ্দ্থানীক্ ভীম্ ভীমাভিরক্ষিত্ম্ । ৩০ ॥ তমায়ান্ত শহাবাহুং জিগীয়ন্তং রণে কুৰন্। অভ্যবারয়দব্যগ্রঃ ক্রুরকর্মাপগা**স্থতঃ** ॥ ৩৪ ॥ ত্যা জিফুরুপার্ত্য ধ্রুং মূলে নাপাত্যং। বিক্লষ্য কলধৌতাগ্রৈঃ স বিদ্ধঃ প্রাপতদ্ধবি ॥ ৩৫॥ তং চিত্র মাল্যাভরণাঃ ক্বতবিদ্যা মনস্থিনঃ ! আগচ্ছন্ ভীমধন্বানং চত্বারস্ত * মহাবলাঃ ॥ ৩৬ ॥ ত্বঃশাসনো বিকর্ণচ ত্বঃসহোহথ বিবিঃশতিঃ। আগত্য ভীমধন্বান বীভৎস্ত্র পর্যারারয়ন্ । ৩৭॥ ছু:শাসনস্ত ভল্লেন বিদ্ধা বৈরাটিমুক্তরণ্। দ্বিতীয়েন।জ্জুনং বীরঃ প্রত্যবিধ্যৎ স্তনান্তরে ॥ ৩৮ ॥ ॥৩०॥৩১॥ ৩২ । বাবাগাহং আলোডিত বান্॥৩৩ । ৩৪॥ উপাহ্নতা সংমুখীভূয় বিক্ষা ছিত্বা ফলধোতিতি এঃ স্বর্ণ রঞ্জিত ফলকৈর্বাণেঃ॥৩৫ ॥

* মহাবলা ইতাত্ত মহারথা ইতি পাঠঃ ক প্রতকে।

1 00 109 100 1

ত্স্য জিফুরুপার্ত্য পৃথ্ধারেণ কামুকিম্। চকর্ত্ত গার্দ্ধপত্রেশ জাতরপপরিষ্কৃতম্।। ৩৯॥ অথৈন পঞ্চ ভিঃ পশ্চাৎ প্রত্যবিধ্যৎ স্তনান্তরে। নোহপ্যাতো রণ্ হিন্তা পার্থবাণপ্রপীডিতঃ ॥ ৪০ ॥ তং বিকর্ণঃ শরৈস্তীক্ষৈগার্দ্ধপল্রৈরজিক্ষাগৈঃ। বিব্যাধ পরবীরন্নমর্জুনং ধৃতরাষ্ট্রজঃ। ৪১॥ ভভস্তর্মপি কৌন্তেয়ঃ শরেণ্নভগর্কণা ললাটেহভ্যহনভূর্থ স বিদ্ধঃ প্রাপ্তদ্রথাৎ॥ ৪২ । ততঃ পার্থমভিক্রেত্য দুঃসহঃ স্বিবিৎশতিঃ। অব।কিরচ্ছরৈস্তীক্ষৈঃ পরীপ্সুন্ ভ্রতিরং রণে॥ ৪৩॥ তাবুভৌ গাৰ্দ্ধপজ্ঞাভ্যা নিশিত্যভ্যাং ধনঞ্জয়ঃ। বিদ্ধা যুগপদব্যপ্রস্তায়োক্ষাহানস্থদর । ৪৪ । তৌ হতাখো বিবিদ্ধাক্ষো ধৃতরাপ্রাত্মজাবুভৌ। অভিপত্য রু**থৈর**ন্যৈরপনীতৌ পদানুনিঃ ॥ ৪৫॥ সর্বা দিশশ্চাভাপতদীভৎস্করপরাজিত্য। কিরীটমালী কৌভেয়ো লব্ধলকৌ মহাবল: ॥ ৪৬॥ ইতি বিরাটপর্কণি গোহরণপর্কণি অর্জুন ছুঃশাসনাদি যুদ্ধে এক বৃষ্টি তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬১॥

ै॥७৯॥ এনং হুঃশ†সনং ।৪০ ॥৪১॥৪২॥ ৪৩॥৪४॥৪৫॥ ল∢লিকঃ অংপাচুতিলকঃ ॥৪৬॥

> ইতি বিরাট পর্ম্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপৈ একষষ্টি-তমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬১॥

বৈশম্পায়ন উবাচ।

অথ সঙ্গম্য সর্বের তু কৌরবাণাং মহারথাঃ 👢 অর্জুনং সহিতা যন্তাঃ প্রতাবিধান্ত ভারত॥ ১॥ म मान्नकपरेयक रिलः मर्वा उल्हास हात्र थान्। প্রাচ্ছাদয়দমেয়াত্মা নীহার ইব প্রবতান ॥ ২॥ नम्खि™ प्रशानारेशरईव्यारेग्र वाकि जिः। ভেরীশস্থানিনা দৈশ্চ স শব্দস্তমুলোহভবৎ ॥ ৩ ॥ * नागाश्वकाशाबिर्डिना (लोशांनि कवठानि छ। পার্থস্থ শরজালানি বিনিপ্সেরুঃ সহস্রশংগী ৪॥ ত্বরমাণঃ শ্রানস্থান পাগুবঃ স বভৌ রণে। মধ্যন্দিনগতে। ২ চিচিয়ানু শরদীবু দিংগকরঃ॥ ৫॥ উপপ্লবন্তি বিত্রস্থা রথেভ্যো রথিনস্তথা। সাদিনশ্চাশ্বপৃষ্ঠেভ্যে ভূমৌ চাপি পদাতয়ः॥ ৬ । শ্বৈঃ † সন্তাড্যমানানাং কবচানাৎ মহাত্মনাম। তামরাজতলৌহানাং প্রাত্রাসীশ্রহাম্বনঃ॥ १॥ ছন্নমায়োধন সর্বাব শরীরের্গতচেতসায়। গজাশ্বসাদিনাং তত্র পার্থবাণ প্রপীডিতৈঃ ॥ ৮॥ রথোপস্থাভিপতিতৈরাস্তীর্ণা মানবৈশাহী। া অনুত্যদিব সংগ্রামে চাপহস্তে। ধনঞ্জা । ৯॥

অথেতি ॥ ১ ॥ নীহারের ধূমোত্মণা ॥ ২ ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ উপপ্লবন্তি ইত ১ । স্ততোধাবন্তি ॥ ৬ ॥ ৭ ॥ আয়োধনং রণভূঃ গতচেতসাং মূঢানাং আন্তজীবি তৈমু তৈঃ শরী রৈঃ ॥ ৮ ॥ রথোপাছে ভাগেছিভঃ পতিতিঃ ॥ ১ ॥

* নাগাখেতাত্র নর্বাখেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।
 † সন্তাজ্যেতাত্র সংছিল্যেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।
 ‡ অনৃত্যাদিবেতাত্র প্রনৃত্যতীবেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

প্রাত্তা গাণ্ডীবনির্ঘে মুং বিক্সু জ্বিতমিকাশনেঃ। ত্রস্তানি সর্বাস্ক্রেন্যানি ব্যপাগচ্ছন্মহাহবাৎ॥ >०॥ কুণ্ডলোফীষধারীণি জাতৰপস্ৰজানি চ। পতিতানি মা দৃশ্যন্তে শিরাংসি রণ্মুর্কনি॥ ১১॥ বিশিখে মথিতৈগাত্তৈ বিভিজ্ঞ সকামু কৈঃ। সহস্তঃভর্বেশ্চান্যৈঃ প্রচ্ছরা ভাতি মেদিনী॥ ১২॥ শির্মাং প্রিমানানামন্তরা নিশিতেঃ শ্রৈ:। অশার্ফিরিবাকাশাদভবদ্ধরতর্ঘভ ॥ ১৩ ॥ দর্শয়িত্রা তথাত্মনিং রৌদ্রং রুদ্রপরাক্রমঃ। অবরুদ্ধশ্চরন পার্থে। বর্ষাণি দশ ত্রীণি চ। ক্রোধাগ্নিমকজনেবারং ধর্তিরাষ্ট্রেষু পাওবঃ॥ ১৪॥ তস্ত ভদ্দহতঃ দৈন্য~,দৃষ্ট্য চৈব পরাক্রমম্। সর্কে শান্তিপরা যোধা ধার্ত্তরাষ্ট্রক্ত পশ্যতঃ ॥ ১৫ ॥ বিত্রাসয়িত্বা সৈন্যানি জাবয়িত্বা মহারথান । অর্জ্জনো জয়তাং শ্রেষ্ঠঃ পর্যাবর্ত্ত ভারত॥ ১৬॥ প্রাবর্ত্তয়ন্দীং ঘোরাং শোণিতোদাং তরক্লিণীয়। * অস্থিশবালসংবাধাং যুগান্তে কালনির্মিতাম্॥ ১৭॥ শরচাপপ্লবাং ছোরা । কেশশৌবল শাছলাং। তনুত্রোফীষদং বাধান নাগকুর্দ্ম মহাদ্বিপান॥ ১৮॥

॥২০॥ ধারিনী শিরাংসি অঞ্জ পতিতানি দৃশ্যতে॥ ১১॥১২॥১৩॥ ত্রীনিচদশচেতি ত্রিদশানি বর্ষানি অবৰুদ্ধঃ পার্থঃ তদানীং স্বেচ্ছয়া২চর-দিতার্থঃ॥১৪॥১৫॥১৬॥১৭॥ নাগ্রা হস্তিন এব ক্র্মাঃ মহাদিপাজলগ জাশ্চ যস্যাৎ তাং॥১৮॥

^{*} অন্থীতাত্ত্ব কেশেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

া কেশশোবলশাদ্বলামিত্যত্ত্ব মাংসশোনিত কৰ্ম্মামিতি নাগকুৰ্ম মহাদিপা মিত্যত্ত্ব নাগনকাং রখোডুপা মিতিপাঠঃ ক পুস্তকে।

মেদোবসাস্কৃপ্রবহাং মহাভয়বিবর্দ্ধিনীমু।
রৌজনপাং মহাভীমাং শ্লাপদৈরভিনাদিতামু, ১৯॥
তীক্ষশস্ত্রমহাগ্রাহাং ক্রব্যাদগণসেবিতামু।
মুক্তাহারোর্মিকলিলাং চিত্রলঙ্কারভূহিতামু॥ ২০॥
শরসঞ্জমহাবর্ত্তাং নাপকুর্মাং ছুরত্যয়ামু॥ ২১॥
মহারথমহাদ্বীপাং শশুছুন্জুভিনিস্তনামু।
চকার মহতী পার্থো নদী ছুস্তরশোনিতামু।
আদদানস্য হি শরান্ সন্ধায় চ বিমুপ্ত হঃ।
বিকর্ষত হু গাঞ্জী ব ক ক কিঞ্চিছু শ্যুতেহ তুর্ম্ম ॥ ২২॥
ইতি বিরাট পর্কানি গোহরণপ্রকৃতি অর্জুন্স ক্লুলসংগ্রামে
দ্বিষ্টিত মোহরণপ্রকৃতি অর্জুন্স ক্লুলসংগ্রামে

বৈশলারন উলচ।
অথ ছুর্যোধনং কর্নে ছুঃশাসনবিবিংশতী।
ডোণশ্চ সহ পুত্রেণ † কুপশ্চাপি মহারথ!॥১॥
পুনরীয়ৣঃ স্কুসংরক্কা ধনঞ্জয়জিঘা~সবঃ।
বিক্ষারয়ন্তশ্চাপানি বলবন্তি দৃঢানি চ॥২॥

শ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ ২২॥ ইতি বিরাট পর্ব্ধণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাঁবদীপো দ্বিফি-তমোহধারঃ॥ ৩২॥

তত ইতি ॥ ১॥২॥

^{*} ন কিঞ্ছিদ্শাতে ২মর্মিতার ন কশ্চিদ্দশেজন ইতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

ণ কুপশ্লাপি মহারথ ইতাত্র কুপশ্লাতি রখোরণে ইতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ভানু প্রকীর্ণপতাকেনু রথেনাদিত্যবর্চসা। প্রভালেরো মহারাজ সম্ভাদানরধৃত্বঃ। ৩। ততঃ কুপশ্চ কর্ণ্ড দ্রোণশ্চ র্থিনাস্বরঃ। ত মহাক্রৈর্মহাবীর্য পরিবার্যা ধনঞ্জম্॥ । ।। ণ শরৌঘান্ সম্যগস্তো জীমুতা ইব া পর্বতে। ববষু : শেরবর্ষাণি † পাতরন্তোধনপ্রম্॥ ৫॥ इसू जिए इजिए न्र मगरत लामवाहिजिः। অদুরাৎ পর্যাবস্থাপ্য পূব্যামাস্তরাদৃতাঃ॥ ৬॥ তথাবকীর্ণসা চনতৈ দিবোরক্সেঃ সমন্ততঃ। ন তস্য দ্বাঙ্গুলমপি বিরুত্ত সমদৃশ্যতে ॥ ৭॥ ততঃ প্রহ্ম্য বীভৎস্ক দিব্যমৈক্তং মহারথঃ। অস্ত্রমাদিত্যসঙ্কাশং গাণ্ডীবে সমযোজয়ৎ॥ ৮॥ া শরঃশ্মিরিব।দিত্যঃ প্রতত্ত্বে সমরে বলী। কিরীটমালী কৌত্তেয়: সর্বান্ প্রাচ্ছাদ্রং কুৰন্ ॥ ৯॥ यथा दलाइर्क विद्वाद পावर्रका वा लिएलाफरस । তথা গাণ্ডীবমভবদিন্দায়ুধমিবাততম্ * ॥ ১০ ॥

বিকীণ্ণিস্তারিতা পুতাকাঃজাঞ্লোফ্যা তেন ॥ ৩ ॥ ৪ ॥ পাত্যতঃ
পীড্যতঃ ॥ ৫ ॥ পাঠ্যস্থাপ্য স্ত্রনী কৃত্য ইয়ুভি পুরয়ামাস্থঃ আর্তবভঃ
॥ ৬ ॥ ৭ ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ •

^{**} আততমিত্যত্র আনত্মিতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

যথা বর্ষতি পর্চ্জন্যে বিচ্ছান্তিভ্রাজতে দিরি।
দ্যোত্য়ন্তী দিশঃ সর্বাঃ পৃথিবীঞ্চ সমন্ততঃ ॥%>॥
তথা দশ দিশঃ সর্বাঃ পতদান গ্রীবমার্নোৎ।
* নাগাশ্চ রথিনঃ সর্ব্বে মুমুছস্তত্র ভারত ॥ ১২॥
সর্ব্বে শান্তিপরা ভূত্বা † স্বচিন্তানি ন লেভিরে।
সংগ্রামে বিমুখাঃ সর্বে যোধাস্তে হতচেত্সঃ ॥ ১৩॥
এবং সর্বানি সৈন্যানি ভ্রানি ভ্রত্রভ্র।
ব্যদ্রবন্ত দিশঃ সর্বা নিরাশানি স্বজীবিতে। ১৪॥
ইতি বিরাটপর্বানি গোহরনপর্বানি ভ্রুনস্কুলযুদ্ধে
ত্রি ষ্টিত্নোহ্ধ্যায়ঃ॥ ৬৩॥

বৈশস্পায়ন উব্ধি

ত ত শান্তনবো ভীক্ষঃ ! ভারতানীং পিতামহঃ।
বধ্যমানেষুদৈন্য় ধু ধনপ্রেষ্মুপাদ্রবং ॥ ১ ॥
প্রস্থ কার্ম্ম কপ্রেষ্ঠং জাতরপপরিষ্কৃতম্ ।
শরানাদার তীক্ষাপ্রান্ মর্মভেদান্ প্রমার্থিনং ॥ ২ ॥
॥ ১১ ॥ ১২ ॥ স্বচিতানি অয়মহমিতি নজাতবন্ধ ৯ ॥ ১০ ॥১৪ ॥
ইতি বিরাট পর্বানি নৈলকতীয়ে ভারত ভাবদীপে ত্রিষ্টিতমাহধ্যুয়ঃ ॥ ৬০ ॥

তত ইতি । 🖰 ॥ 🖈 ॥

^{*} নাগাশ্চ রথিনঃ দর্মে মুমুহ শুত্র ভারতেতাত ত্রপ্তাশ্চ রথিনঃ দর্মে বভূরু শুত্র শর্মাশ ইতি পাঠঃ কপুন্তকে। † ভূবেতাত্র যোধা ইতি পাঠঃ খ পুন্তকৈ। ‡ ভারতানাং পিতামহ ইতাত্র স্মন্ত্র্মিঃ প্রতাপবানিতি পাঠঃ ক পুন্তকে।

পাণুরেণাতপত্রেণ ধিরুমাণেন মুর্দ্ধনি। শুশুভে দ নরবাছিন্ন। হিরিঃ স্থানিদের যথা।। 🧿 । প্রাধায় শব্দং গাঙ্গেয়ে। ধার্ত্তরাষ্ট্রং প্রাহর্ষয়ন। প্রদক্ষিণমুপার্ত্য বীভৎস্থং পর্যাবারয়ৎ॥ ৪ । তমুদীক্ষ্য সমায়ান্তং কৌন্তেয়ং পরবীরহা। প্রত্যপূহাৎ প্রহৃষ্টাত্মা ধারাধরমিবাচলঃ॥ ৫॥ ততো ভীন্নঃ শরানফৌ ধজে পার্থদ্য বীর্ঘ্যবান্। ममर्भसम्हारवनान्, ध्रमभौना निरवातनान् ॥ ७ ॥ তে ধজং পাণ্ডুপুঁজন্য সমানাদ্য পতজিণঃ। জ্বন্তঃ কপিমাজন্প জাগ্রেনিলয়াংশ্চ তান্॥ ৭ । ততো উল্লেন মহতা পুথুধারেণ পাণ্ডবঃ। ছজ্ৰং চিচ্ছেদ ভীশ্বস্য ভূৰ্নং তদপতদ্ধবি ॥ ৮॥ धकः देवधाना कोटख्यः भठेतत्वाहनकृष्य । শীপ্রকৃত্রথবাহাতক তথোভৌ পাফি দার্থ। ১। অমুধ্যমান্ত্ত ভীয়ো জানন্ত্রপি চ পাত্তবম্ ৷ দিব্যেনাস্ত্রেণ মহতা ধনঞ্জয়মবাকিরৎ॥ ১ ।। তথৈব পাপ্তবো ভীশং দিবামস্ত্রমুদীরয়ন্। প্রত্যগৃহ্।দমেয়াত্মা মহামেঘমিবাচলঃ ॥ ১১ ॥ তয়োস্তদভবদব্দা তুমুল । লোমহর্ষণম্। ভীয়েণ সহ পার্থেন বলিবাসবয়োরিব ॥ >২ । ে প্রৈক্ষন্ত ,কুরবঃ সর্বে যোধাশ্ব সহুদৈনিকাঃ। ভলৈ इलाः ममानग जीश्रेमा स्वरताय्थि। অন্তরীক্ষে ব্যরাজন্ত থদ্যোতাঃ প্রার্ধীব হি॥ ১৩॥

19181101919191919191919191

অগ্নিচক্রমিব বিদ্ধং সব্যদক্ষিণ্মস্যতঃ। গা গ্রীবমভবদাজনু পার্থ্স্য স্জতঃ শরানু ॥১৪॥ 🖐 ততঃ স॰ছাদয়ামাম ভীন্নং শর্মতেঃ শিতৈঃ। পর্বতং বারিধারাভিশ্ছাদয়নিব তোরদ:॥ ১৫॥ তাপ্স বেলামিবৈদ্ধিতাং শরর্ফীমুপস্থিতাম। ব্যধমৎ শার্টকভীষ্ট পার্থঞ্চ সমবার্য়ৎ॥ ১৬॥ ততস্তানি নিরুজানি শরজালানি ভাগশঃ। সমরেহভিবাশীর্যন্ত কাল্কনন্ত র্থণ প্রক্রি। ১৭। ততঃ কনকপুত্থানাং শরর্ফিনুপস্থিতারী i • পাগুবস্থা রথাতুর্ণ শলভানামিবায়তিম। ব্যধমত্তা পুনস্তম্ভ ভীয়ঃ শরুশতৈঃ শিতেঃ ॥ ১৮ ॥ • ততত্তে কুরবঃ সর্কো সাধু সাধিতি চাক্রবন্। ছুষ্করং কুতবানু ভীয়ো যদৰ্চ্চুনমুযোধয়ৎ॥ ১৯॥ वनवा ॰ खक्रा पक्षः किथा काती ह शाखवः। কোহন্যঃ সমর্থঃ পার্থক্থ বেগং বার্য়িভু রবে। । ২০॥ খাতে শান্তনবান্তীয়াৎ ক্লফাদ্বা দেবকীস্থতাৎ। আচার্য্য প্রবরাদ্বাপি ভারদ্বাজামহাবলাও ॥ ২১ ॥ অস্ত্রৈরস্ত্রাণি সংবার্য্য ক্রীডুন্তৌ ভরতর্মভৌ। চক্ষু পৰি সৰ্বাভূতানাং মোহয়স্তো মহাবলী ॥ ২২ ॥ প্রাক্ষাপতা ॰ তথৈ বৈক্রমাগ্রেয়ঞ্চ ঠুদারুণম্। कोरवतः वाक्रविकव यात्राः वात्रवारमव ह। প্রযুঞ্জানৌ মহাজানৌ সমরে তো বিচেরতু॥ ২৩॥ অগ্নিচক্রং অলভিচক্রং আবিদ্ধং ভাষ্যমাণং ॥ ১৪ ॥ ১৫॥ ১৬ ॥ ১৭ 11 25 11 25 11 40 11 42 11 42 11 40 11

* তত ইতাত্ত সতৈরিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিক্সিতান্যথ ভূতানি তৌ দৃষ্ট্য সমরে তদা।
সাধু পার্থ মহাবাহে সাধু ভীষ্মেতি চাক্রবন্ ॥ ২৪॥
নারং যুক্তো মনুষ্যেষু যোহয়ং স্দৃষ্টতে মহান্।
মহাস্থাণাং সংপ্রয়োগঃ সমরে ভীন্ম পার্থয়োঃ ॥ ২৫॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

এবন সাবীস্তেবিত্বধারস্তায়্দ্দমবর্তিত।
অর্দ্রিয়দ্দি নির্ত্তিত পুলরমুদ্দমবর্তিত ॥ ২৬ ॥
অথ জিফুরুপারতা, ফুরুধারেন কাম্পুক্ম ।
চকর্তি ভীষ্মন্ত তদাঁ জাতরপপরিষ্কৃতম্ ॥ ২৭ ॥
নিমেষান্তরমাতেন ভীয়োহনাৎ কাম্পুক্ণ রনে।
সমাদার মহাবাছঃ সজ্যঞ্জে মহারথঃ।
শরাংশ্চ স্কুবছন কুদো মুনোচাশু ধনপ্রয়ে ॥ ২৮ ॥
অর্জুনোইপি শরাংশ্চিতান্ শ ভীষ্মায় নিশিতান্ বহুন্।
চিক্ষেপ স্কুমহাতেজান্তথা ভীষ্মন্চ পাত্তবে ॥ ২৯ ॥
তরোদিব্যাস্ত্রবিত্বধারস্যতোনিশিতান্ শরান্।
ন বিশেষন্তা রাজন্ লক্ষ্যতে স্ম মহান্থানাঃ ॥ ৩০ ॥
অথার্ণোদ্দশ দিশঃ শরৈরতিরথন্তদা।
কিরীটমালী কৌন্তের্য় শুরং শাক্তনবন্তথা ॥ ৩১ ॥
অতীব পাগুবো ভীষ্মণ ভীষ্মন্টাতীব পাগুবন্।
বভুব তিমান্ সংগ্রামে রাজন্ লোকে তদদুতম্ ॥ ৩২ ॥

^{*} চিত্রানিত্যত্র তীক্ষানিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

পাগুবেন হতাঃ শূরাঃ ভীন্নদা রথরক্ষিণঃ। শেরতে সামহারাজ কৌত্তেয়দ্যাভিতো রথ্ম॥ ৩০। ততো গাগুীবনিশা ক্রা নিরমিত্র চিকীর্ষবঃ। অগচ্ছন পুস্থস<শ্লিফী: শ্বেতবাহনপত্রিণ:॥ ৩৪॥ নিষ্পতত্তো রথান্তস্য ধৌতা হৈরণ্যবাসসং। আকাশে সমদশ্যন্ত হৎসানামিব পংক্তয়ঃ॥ ৩৫॥ তদ্য তদিবামস্ত্রং হি বিগাতং চিত্রমদ্যতঃ। বীক্ষত্তে স্মান্তরীক্ষন্তাঃ সর্কো দেবাঃ স্বাসবাঃ॥ ৩৬॥ তংদৃষ্ট্র। পরমগ্রীতো গন্ধর্ক শিক্তমদ্ভুত্ত । , শশংস দেববাজায় চিত্রসেনঃ প্রতাপবান ॥ ৩৭ ॥ পশ্যেমান্ পার্থনির্মা,ক্তান্ সংস্ক্রানিব গছত:। চিত্রৰপমিদ জিফে। দিব্যমস্ত্রমুদীর্য্যতঃ ॥ ৩৮ ॥ নেদ্প মনুষ্যাঃ সন্দধ্যর্ম হীদণ তেষু বিদ্যতে। · পৌরাণানাং মহাস্ত্রাণাং বিচিত্রোহ্রং সমাগম: ॥ ৩৯ ॥ আদদানতা হি শরান সন্ধার চ বিশুঞ্তঃ। বিকর্ষতশ্চ গাণ্ডীবং নান্তর্প প্রত্যদৃশ্যত ॥ ৪০ ॥ মধ্যন্দিনগত পর্য্যং প্রতপত্তমিবায়রে। ন শকুবন্তি দৈন্যানি পাণ্ডবণ্ প্রতিবীক্ষিতুম্ । ৪১ ॥ **उरेशव जीवाः नारक्रवः प्रकेः (नारमहराजः क्रनः ॥ ४२ ॥** উভৌ বিশ্রুতকর্মাণৌ উভৌ তীত্রপরাক্রমৌ। উভৌ সদৃশকর্দ্যাণাবুভৌ যুধি ছুরাসদৌ ॥ ৪৩॥ हेजुरका देवकाङ्ख পार्श्वीयम्गानवम्। পূজয়ামান দিব্যেন পুষ্পাব্যেণ ভারত॥ ৪৪॥ ॥ ৩৩॥ ৩৪॥ ৩৫॥ ৩৬॥ ৩৭॥ আন্তং বাণ নাং কেপণুং কর্ম ॥ ৩৮॥ ৩৯॥

1 80 11 82 11 88 11 88 11

'ভতঃ শান্তনবো ভীয়ো বামপাশ্ব'মতাডয়ৎ।

* পশ্বজঃ প্রভিদন্ধায় বিধাতঃ দ্বাসাচিনঃ॥ ৪৫॥

ততঃ প্রহয় বীভৎসুঃ পৃথ্ধারেন কামুক্ম।

চিছেদ গার্ধ পত্রেণ ভীয়য়াদিত্যতেজসং॥ ৪৬॥

অবৈনং দশভিবানেঃ প্রতাবিধাৎ স্তনান্তরে।

যতমানং পরাক্রান্ত কুস্তীপুজ্রো ধনপ্রয়ঃ॥ ৪৭॥

সা পীডিতো মহাবাহগু হীত্বা রথকুবরম্।

গাঙ্গেরো যুদ্ধর্দ্ধিস্থা শে দির্ঘমিবাতুরঃ॥ ৪৮॥

ত বিদংজ্ঞাপে বিহি দংযায়া রথবাজিনাম্।

উপদেশমনুষ্ঠা রক্ষমাণো মহারথম্॥ ৪৯॥

ইতি বিরাট পর্বানি গোহরণপর্বানি ভীশ্বাপয়ানে চতুঃ ষ্টিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৪॥

रेनम्लागान छन्।

ভীয়ে তু দংগ্রামশিরো বিহায়, "

পলায়মানে ধৃতরাষ্ট্র পুজঃ। উচ্ছিত্য কেতুং বিনদন্মহাল্পা,

া ধনু বিগৃহাজ্জুনমাসসাদ॥ ১॥

॥ ৪৫ ॥ ৪৬ ॥ ৪৭ ॥ ক্বরং রথ মুগন্ধর । ৪৮ ॥ অপোবাছঅপদারয়ামাদ ॥ ৪৯ ॥

ইতি বিরাট পর্ব্বণি নৈলকগীয়ে ভারত ভাবদীপে চতু:-ষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ ॥ ৬৪॥

ধতরাক্ত প্রভো হর্ষোধনঃ উৎসূজ্য উন্মৃত্য কেছু পভাকাং॥ ১॥

্ * পশাত ইত্যত্ত অস্যুত ইতি পাঠঃ ক প্সুকে।

† দীর্ঘমিবাদুর ইত্যত্ত দীর্ঘমিবাস্তর মিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

‡ ধহুরিত্যত্ত স্বয় মিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

म जीयसम्बानमूमखाबीर्घा०

धनक्षरः भक्तिगर्ग हतस्य,

জাকর্পূর্ণায়তচোদিতেন

ভল্লেন বিব্যাধ ললাটমধ্যে॥ ২ %

স তেন বাণেন সমর্পিতেন

জাম্বদাতো সুসংশিতেন।

ররাজ রাজমহনীয়কর্মা

যথৈকপ্রবা ক্রচিরৈকশুক্ষঃ গ ৩॥

অথায় ভলেন বিদারিতয়

প্রাত্রবাস্থ্যজন্ত ফুফ্র i

🕏 সতম্ভ জামূনদপুষ্ঠাচিত্রে।

িভিত্বাললাটং স্কৃবিরাজতে স্মান্ত ॥

† তুর্যোধনশ্লপি তমুগ্রতেজাঃ

পাर्थम् पूर्यग्राधनसम्बद्धाः।

অন্যোন্যমাজৌ পুরুষপ্রবীরৌ

সমং সমাজগাতুরাজমীলৈ 🕮

॥ ২ ॥ এক শৃক্ষঃ পর্কতো যথ। একেন প্রথনতা দীর্ঘ বংশেন একঃ পর্কা মন্মিলিত সমাসঃ মতুব লোপ আর্ষঃ॥ ৩ ॥ অসৃক্রক্তং ॥ ৪ ॥ ৫ ॥

^{*} সত্যা জাখুন্দ পুঞ্চিত্রো বভিণা লল্টং স্বিরাজতে আ ইতার সাত্যা জাখুন্দ পুষ্পচিত্রামালেন দ্বিন্তি বিরাজতে আইতি পাঠঃ কুঞ্ পুস্তুকে।

প ছর্বোধন ইতাস্যপ্রাক্ মতেন বাণের হতন্তরন্থী ছর্বোধনেনােদ্ধত মহ্যবেগঃ। শরাহ্পাদায় বিধায়িকপান্ বিব্যাধ রাজান মদীনসত্তঃ ইত্যেক শ্লোকঃ ক পুশুক্ষা।

ততঃ প্রভিনেন মহাগজেন
মহীধরাভেন পুনার্রিকর্নঃ।
রথৈশ্চ তুর্ভির্গজপাদরকৈঃ
কুন্তীস্থতং জিফুমথাভাধাবং॥৬॥
তমাপ্রতিং প্রতিং গজেন্দ্রু
নপ্রতং প্রতিং গজেন্দ্রু
নপ্রতং পুরিভাগমধ্যে।
আকর্নপূর্বেন মহায়ুদেন
বানেন বিবাধে মহাজবেন॥৭॥
পার্থেন স্ফ: স তু গার্থপ্রত্র
আপুশ্বদেশাৎ প্রবিবেশ নাগম্।
বিদার্য্য শৈল প্রবর্প্রকাশক
যথাশুনিঃ পর্বতিমিক্রস্ফ: ॥৮॥
শরেণ ভপ্তঃ স তু নাগরাজঃ
প্রবেপিতাক্রো ব্যথিতান্তরাল্লা।

নিপাতিতে দন্তিবরে পৃথিব্যাং আসাদ্বিকর্ণঃ সহসাবতীর্য়।

সংগীণমানো নিপপাত মহাং

তুর্ণ পদান্য**উশতানি গ্রা** ব্বিশতেঃ শুন্দনমারুরোই॥ ১৫॥

বজাহতং শৃঙ্গমিবাচলন্ত । । ।

॥ ७ ॥ मश्त्रात्मन मश्कनत्कन् ॥ १ ॥ ৮ ॥ ১ ॥ ১० ॥

নিহত্য নাগন্ত শরেণ তেন, বজোপমেনা * দ্বিরাম্বদভিম্ ৷ তথাবিধেনৈব শরেণ পার্থো, তুর্যোধনং বক্ষদি নির্বিভেদ। ১১। ততো গজে রাজনি চৈবভিন্নে ভগ্নে বিকর্ণে চ সপাদরকে। গান্তীবসুকৈর্কিশিখেঃ প্রণুলা ত্তে যোধমুখ্যাঃ মহসাহপর্জগ্নাঃ॥ ১২॥ দুষ্ট্রৈ পার্থেন হতন্ত নাগং যোধা শচ সর্বানু দ্রবতো নিশ্ম্য। রথং সমারত্য কুরুপ্রবীরো রণাৎ প্রদ্রাব যতো ন পার্যঃ ॥ ১৩॥ তং ভীমৰূপং স্বরিতং দ্রবন্তৎ তুর্য্যোধনং শত্রসহোহভিষঞ্চাৎ। † आद्याधिसदम्बाक्तमनाः कितीषी । বাবেন বিদ্ধা রুধির প্রমন্তম্ ॥ ১৪॥ অৰ্জ্জন উবাচ :

বিহার কীর্ত্তি বিপুলাং যশক
যুদ্ধাৎ পরার্ত্য পলারেসে কিম্।
ন তেংদ্য তুর্যাণি সমাহতানি

‡ তথৈবরাজ্যা দবরোপিতভা । ১৫॥

॥ ১১ ॥ অপ্পাজস্মুঃ পালাসনং কৃতবন্তঃ ॥ ১২ ॥ ১৩ ॥ অভিষদাৎ পারাভ দ্ববন্তং আলক্ষ্য প্রাক্ষেণ্টিয়ৎ আঁথিফাটিং • বাহুশদং কৃতবীন্ ॥ ত ভুষ্যানি জয়বাদ্যানিতথৈ বেত্যাদি উত্তধাধ্য়ি ॥ ১৫ ॥

* অদ্রিবরাষ্ট্রান্ত মিতাত্র অদ্রিম্বেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

† প্রাক্ষেটিয় দিতাত্র প্রাক্ষে পরাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

1 তথৈবরাজ্যাদবরোপিত্রাে তাত্র যথা বন্ধ্বান্তি গতদা মুদ্রে
পাঠঃ ক পুস্তকে।

মুখিন্টিরস্থান্মি নিদেশকারী
পার্থস্থান্ধির মুখিন্চ স্থিতােহ্নি।
তদর্থমারত্য নুখং প্রক্ষ
নরেন্দ্রন্থং প্রক্ষ
নরেন্দ্রন্থং প্রক্ষাং।
ব্যেহা তবেদং ভূবি নামধ্য়েং
কুর্য্যাধনতা তবাস্থি,
পলায়মানস্থান্ধ্রণ বিহায়॥ ১৭॥
ন তে প্রস্তাদর্থ পৃষ্ঠতাে বা প্রস্তাদর্থ বিরাট পর্বাণি ব্যোহরণ প্রস্তাদর্থ দ্বান্ত ॥ ৬৫॥

रेनमण्णासम छेन्।

অ ভ্রমানস্ত স তেন সংখ্যে মহাত্মনা বৈ প্রতরাষ্ট্র পুত্রঃ।

নিবর্ত্তিতম্বস্থ গিরাঁক্সুশেন

মহাগজো মত্ত ইবাঞ্জেন॥ ১॥

ভূত য়ঃ পাথঃ পৃথাসতোহজ্জনোনি রতং দ্রতাদিষণর্মঃ ॥ ১৬॥॥১৭॥১৮॥

হাত বিরাটপর্ব্ধনি নৈলক্তীয়ে ভারত ভাবদীপে পঞ্চ-২ফিতমোহধ্যালঃ॥ ৩৫॥

আহুয়েতি॥১॥

সোহমুষ্যমাণে বচসাভিমুফে মহারথেনাতিরথস্তরস্বী। পर्याविवर्ज्य त्राथन वीद्रा ভোগী যথা পাদতলাভিমুটঃ ॥ ২ ॥ ত্র প্রেক্ষ্য কর্ণঃ পরিবর্ত্তমানং নিবর্ত্তা সংস্কৃতা চ বিদ্ধগাত্রম। দুর্য্যোধনস্থোত্তরতোহভাগচ্ছৎ পার্থং নূবীরো যুধি হেমমালী। ও॥ ভীগস্ততঃ শান্তনবো # নিবর্ত্তা † হিরণ্যকক্ষাংস্তরগান্ পিষঙ্গান্। ছুর্য্যোধনং পশ্চিমতে হৈভ্যরক্ষ্ 🖟 পার্থামহাবাহুরবিজ্যধন্য। 3 ॥. দ্ৰোণঃ ক্লপ**শ্চেব** বিবিং**শতিশ্চ** ष्ट्रभागनरेन्डव-निवर्डा भीष्यंग् । সর্বে পুরস্তাবিততোর্ফুটাপা ছুর্য্যোধনার্থ ত্রিত।ভ্যুপেযুঃ ॥ ৫॥ म जानानीकानिनवर्द्धमाना ন্যালোক্য পূণৌ ঘনিভানি পার্থঃ ়া হ~দো যথা মেঘ্মিবাপতন্তং ধনপ্রয়ঃ প্রত্যতপত্তরস্বী ॥ ৬॥

পর্যাববর্ত্ত পরাবৃত্তবান্ ॥ ২ ॥ নৃণীরো ছুর্টোগনঃ ॥ ৩ ॥ অভিষদীশত্র-পরাজয় সমর্থঃ ॥ ৪ ॥ ছরিতাঃ অভ্যূপৈয়ঃ, সন্ধিরার্ধঃ ॥ ৫ ॥, হংসঃ স্থাঃ প্রতাতপৎ প্রতাপিতবান্ ॥ ৬ ॥

^{*} নিবর্ত্যেত বির্ত্যেতি পাচঃ থ পুস্তকে।,

া হিরণ্য কক্ষাংস্তরগান্ পিষদা নিত/ত্র হিরণ্যকক্ত্রুরয়া ভিষদীতি
পাচঃ থ পুস্তকে।

ৈ সর্ব্বতঃ সংপরিবার্য্য পার্থ মস্ত্রাণি দিব্যানি সমাদদানাঃ। ধুরভ্যেত্য শরেঃ সমন্তা মেঘা যথা পৰ্বতমমুজালৈঃ॥१॥ .ভাহস্ত্ৰমস্ত্ৰেণ বিদাৰ্য্য তেষাং गाः छीवथवा कुक्शुक्रवानाम्। ন্মাহনং শত্রুসহোহন্যদস্তং প্রাত্ম-চকা दৈরন্দ্রমৰারণীয়ম্। ৮॥ তা দিশঃসংজ্ঞদিশো বিরুক্ত শরৈঃ স্থারৈর্নিশিতেঃ স্থপুঞ্জৈঃ। धोवाघारम् मनाश्मि (उमार মহাবলঃ প্রব্যথয়াঞ্জকার ॥ ৯॥ ঃ পুনর্ভীমরবং প্রগৃষ্ দোর্জ্যাং মহাশপ্রমুদ্রিঘোষম্। নয়ৎ খং প্রদিশো দিশশ্চ ভূবঞ্চ পার্থো দ্বিষতাণ নিহন্তা ॥ ১০॥ ্রস্থানাদেন কুরুপ্রবীরাঃ সম্মোহিতাঃ পার্থসমীরিতেন। 😳 হজ্য চাপানি গ্রাসদানি সর্বে তদা শান্তিপরা বভূবুঃ । ১১ ॥ া বিসংজ্ঞেষু পরেষু পার্থঃ স্থা চ বাক্যানি তথোত্তরায়াঃ। 🐪 📑 ই মধ্যাদিতি মৎশুপুত্ৰ मुर्वाठ यावर कुत्रदवा विमरख्वाः॥ ३२॥

🕝 🖟 ॥ বিরুত্য ব্যাপ্য ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ শান্তিপরাঃ উপরত্চিত্তাঃ ॥ ১১ ॥ ১২ ॥

আচার্য্যশার্দ্ধত্যোপ্ত শুক্রে কর্ণস্থা পীতং রুচিরঞ্চ বস্ত্রম। দ্রৌণেশ্চ রাজ্ঞশ্চ তথৈব নীলে বস্ত্রে সমাদৎস্থ নরপ্রবীর॥ ১৩॥ ভীশ্বন্দ্র ভাষ্টে তথৈব মন্যে জানাতি মেহস্তপ্রতিঘাতমেষঃ। এতভা বাহান কুরু সব্যতন্ত মেবং হি যাতব্যমমূদ্সংক্রৈঃ ॥,১৪॥ রশ্মীন্ সমুৎস্ক্য ততো মহালা. রথাদবপ্ল,ত্য বিরাটস্থনুঃ। বস্ত্রাণ্যুপাদায় মহারথানাৎ जूर्र श्वनः अश्तर्थमाक्टताह ॥ ১৫ ॥ ততেহিস্বশাসজতুরঃ সদস্থান্ পুত্রে৷ বিরাটস্থাহরণ্যকক্ষান্ । তে তদ্যতীযুধ জিনামনীকৎ শ্বেতা বছরে। হর্জুনমাজিমধ্যাৎ ॥ ১৬॥ তথা মু যান্ত^ পুরুষপ্রবীর^ ভীয়াঃ শরৈরভ্যহনন্তরস্থী। স চাপি ভীম্মন্ত হয়ানিহত্য বিব্যাধ * পাশ্বে দশভিঃ পৃষ্ৎকৈঃ ॥ ১৭ ॥

॥ ১৩ ॥ অমূচনং জৈঃ ভীত্মাদিভিঃ সব্যত্ঃ ক্লুতিৰূপলক্ষিতেন ভবতা যা-তব্যং গন্তব্যং ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ ১৭ ।

* পাৰে' ইত্যত্ৰ পাৰ্থ ইতি পাচঃ খ পদ্ধকে।

'ততোহজুনো ভীগ্যমপান্ত যুদ্ধৈ বিদ্ধাতা যতারমরিউগরা। **७ एको विश्वदङ्गा तथत्रन्मं ग**या। সেঘং বিদার্যোব সহস্ররশ্মিঃ।। ১৮।। লকা তুসংজ্ঞান্ত কুরুপ্রবীরাঃ পার্থং সমীক্ষ্যাথ স্তুরেক্রকণপথ। রুণেহিযুক্তপ' স্থিতমেকমাজৌ স ধার্ত্তরাষ্ট্রস্থারিকুং বভাষে॥ ১৯॥ অয়ং কথ^ বৈভূষকো বিমুক্ত ন্তথা নিমগীত যথা ন মূচ্যেৎ। তমব্রবীজান্তনবং প্রহন্ত ক্ত গতা বুদ্ধিরভূৎ ক্ব বীর্য্যয়। ২০॥ শান্তিং পরাং প্রাপ্য যদা স্থিতো২ভূ রুৎস্ক্র্য বাণাংশ্চ ধরুশ্চ চিত্রম্ । नरत्रव वीडं ९ स्र तल भूग नार कर्जुः न পाপেহस्र मत्ना निविधिम् ॥ २ ॥ ত্রৈলোক্যহেতোর্ন জহেৎ স্বধর্মং তস্মান্ন সর্কো নিহতা রণেহস্মিন্। ক্ষিপ্ৰং কুৰন্ যাহি কুৰুপ্ৰবীর ' বিজিত্য গাঁশ্চ প্রতিযাত পার্থ:। মা তে স্বকোহর্থো নিপতেত মোহাৎ তৎ সংবিধাতব্যমরিষ্টবন্ধং ॥ ২২ ॥

॥১৮॥ ১৯॥ অয়ং অর্জনঃ ভগতঃ বিসংজ্ঞান্ যুখান্ যথা ন মুচ্যেৎ ন মোচনং ন্যাওথা প্রমথীত উপমৃদ্যাৎনতু মুদিতবানিতি ভাবঃ ॥ ২০॥ শাতিং নফচিত্ততাং নৃশংসংকর্তুংসংমৃ্চান্ মারয়িতুং র অলং ন যোগ্যঃ তত্তহেতুঃ ন পাপেস্য মনোক্তি যতো বিশিষ্ঠং শ্রেষ্ঠং॥ ২১॥ অরিষ্ঠবন্ধং কল্যাণাস্থ্ বন্ধিকর্ম॥ ২২॥

रेवमञ्चात्रम छेव। । ।

ছুর্য্যোধনস্তস্য তু তরিশ্ন্য

পিতামহস্থাত্মহিত্ত বচোহধ।

অতীতকামো যুধি সোহত্যমর্ষ

রাজা বিনিশ্বকা বভূব ভূফীম্। ২৩।

তদ্বীয়াবাকা^ হিতমীকা সর্বের

धनक्षत्राधिक विवक्षिमानम्।

নিবৰ্জনাবৈৰ মতি শানধা

र्फ (र्याधनः (ज পরিরক্ষমাণাঃ ॥ २ ।

ভান্ প্ৰস্থিতান্ প্ৰীতমনাঃ স পাৰ্থে!

धनक्षतः (अका कूरु अवीतान्।

অভাৰমাণোহনুনয়ং মুদ্ধৰ্ত্তং

*** বচোত্রবীৎ সংপরিহ্ন ত্য ভূয়ঃ ॥ ২৫ ॥**

পিতামহং শান্তনবঞ্চারুজ্ং

দ্রোণ গুরুপ প্রতিপূজা মুর্দ্ম।

प्रोवित कृत्रदेशव कुब**ः क गान्यान्**

শবৈবিতিতৈরভিবাদ্য চৈব ॥ ২৬ ॥

, ছুর্যোধনস্যোত্তমরত্রচিত্রং ,

চিচ্ছেদ পার্থো মুকুটং শরেণ।

আসন্ত্র্য বীরাণশ্চ তথৈব মান্যান্

शा औवरघारयन विनामा लाकान्॥ २१॥

॥ ২৩ ॥ ২৯ ॥ পরিক্ষতা পরিরতা ॥ ২৫ ॥ শারীরেব পাদদেশে পাঁতিতৈরভি বাদ্য মান্যান্ বাহলীক সোমদত্তাদীন্ ॥ ২৬ ॥ মুকুটং চিচ্ছেদেতি হুর্যোঃ-ধনস্য মরণমেব স্থতিং ॥ ২৭ ॥

ন বলোববীং সাপারহৃত। ভূম ইত্যাত্র সংপূ*র*রং স্তাত্র কুক্পবীরা নিতি। পাচিঃ কু গুন্তকে।

স দেবদত্তং সহসা বিনাদ্য
বিদার্য্য বীরো দ্বির্দ্তাং মনাংসি।

য়জেন সর্বানভিভূয় শত্রন্
সহেমজালেন বিরাজনানঃ॥ ২৮॥

দৃষ্ট্রা প্রযাভাংস্ত কুরান্ কিরীটা
ক্টোইত্রবীন্তত্র স মংস্থাপুত্রম্।
আবর্ত্তবাস্থান্ পশবো জিতান্তে

যাভাঃ পরে,ঘাহি পুরং প্রক্টিঃ॥ ২৯॥
দেবাশ্চ দৃষ্ট্রা মহদদ্ভতং ত

দযুক্ত কুরাণাণ মহ ফ জ্বনেন।
জগ্ম র্যাস্থাস্থা ভবনং প্রতীভাঃ।
পার্যস্তা কর্মাণি বিচিত্ত্যক্তঃ॥ ৩০॥
ইতি বিরাট পর্বানি গোহরণপর্বানি সম্প্র কৌরব পলায়নে
যাই ষ্টি ইমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৬॥

रेवनम्भाशन छेवात्र।

বিজিত্য হৈব সংগ্রামে কুরন্ সর্বভেক্ষণঃ।
সমান্যামাস তদা বিরাটকা ধনং সহৎ॥ >॥
গতেষু তেষু ভয়েষু ধার্ত্রাষ্ট্রেষু সর্বশঃ।
বনালিছ্ম্য গহনাদহবঃ কুরু সোনকাঃ॥ ২॥
হেমমাল্রাসহিতেন সহেমুমালেন ধ্রেন ॥ ২৮॥ ২৯॥ ৩০॥
ইতি বিরাটপর্বাণি নৈলকগুরি ভারত ভাবদীপে ধট্
যক্তিমোহধার॥ ৬৬॥

হুষভেক্ষণঃ শ্রেষ্ঠ দৃষ্টিঃ ॥ ১ ॥ ২ ॥ ।

ভরাৎ স্থতস্তমনসঃ সমাজগ্মুস্তত্ত্তঃ। মুক্তকেশা ব্যদৃশ্যন্ত স্থিতাঃ প্রাঞ্জলব্দুদা ॥ ৩ ॥ কুংপিপাসাপরিশ্রান্তাঃ বিদেশস্থা বিচেত্সঃ। উচুঃ প্রণম্য মন্ত্রান্তাঃ পার্থং কিৎ করবামহে ३ ৪ ॥

অৰ্জুন উন্চ।

স্বস্থি ব্ৰজত ভদ্ৰু বোন ভেতব্যং কথঞ্চন। . নাহমাত্ৰীন্ জিঘাংসামি ভূশমাশাস্যামি বং॥ ৫॥

বৈশালপায়ন উবটি। ু

তক্ত তামভয়াং বাচং শ্রুত্বা যোধাঃ সমাগতাঃ। আয়ুংকীর্ভিযশোদাভিরাশীর্ভিস্তনন্দুয়ন্॥ ৬॥ ততােহজ্জুনিশ নাগমিব প্রভিন্ন,

মুৎস্জ্য শকুন বিনিবর্ত্তমানস্। বিরাটরাপ্রাভিমুখং প্রায়তং, নাশক বংস্তং কুরবোহভিয়াকুষ্॥ ৭॥

নাশকুবংস্তং কুরবোহাভ্যাতুম্॥ ৭ ততঃ স তন্মেঘ মিবাপতত্ত

বিদ্রাব্য পার্থঃ কুরুমেষ্ দৈন্যং।
তং মৎস্থপুত্রং দ্বিষ্ঠাং নিহন্তা,
বচোহত্রবীৎ সংপরিগৃহ্য ভূয়ঃ॥৮॥.

ত।৪।৫।৬।৭। অপিডভং পুং শুমাৰ্বং।৮।

^{*} ততঃ স ত্রেঘমিবাপততঃ বিজ্ঞাব্যপার্গঃ কুরু মেঘদৈন মিতাত্র ততে। মহাবাত ইবাত ধূন্দং বিজ্ঞাব্য প্লার্থঃ কুরু সৈন্ম হন্দ শ্মতি পাচঃ ক প্রতকে।

পিতুঃ সকাশে তব তাত সংক্রি।
বসন্তি পার্থা বিদিত্র তবৈব।
তালা প্রশংসের্নগর প্রবিশ্য,
ভীতঃ প্রণশ্যেদ্ধি স মৎস্থারাজঃ ॥ ৯ ॥
ময়া জিতা সা ধজিনী কুরণাং,
ময়া চ গাবো বিজিতা দ্বিষদ্যাঃ।
* পিতুঃসকাশং নগর প্রবিশ্য,
ত্বমাল্মনা কর্ম্ম, কুতং ব্রবীহি॥ ১০॥
উত্তর উবার।

যতে ক্বত^ কর্মান পার্থীরং,
তৎ কর্মা কর্তুং মম নান্তি শক্তিঃ।
ন ত্বাং প্রবক্ষ্যামি পিতুঃ স্কান্দে,
যাবন্ন মাং বক্ষ্যাসি স্বাসাচিন্ ॥ ১১ ॥
বৈশন্পায়ন উবাচ।

ন শক্রনোমভিজিত্য জিঞু,
রাচ্চিদ্য সংবাঞ্চ ধন্ কুরুভাঃ।
শুশানমাগত্য পুন্ঃ শমীং তা,
মভোত্য তত্তো শরবিক্ষতাঙ্গঃ॥ ১২ ॥

11/911 20 11 22 11 25 11

^{*} পিতৃ: দকাৰ মিভাত্ৰ প্ৰীতস্ত্ৰ কাম মিভি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততঃ দ বক্লিপ্রতিমো মহাকপিঃ, সহৈব ভূতৈ ৰ্দ্দবমুৎপণাত। তথৈব * মায়ান্তরিতা বভুব, शक्क टेमर्ट्र युगुरक तर्थ श्रूनः ॥ ১०॥ নিধায় ভচ্চাযুধমাজিবর্দ্ধনং, कुबखमानाभिषुधीः मद्गा रख्या। প্রায়াৎ স মৎস্যো নগর প্রাকৃষ্টঃ, কিরীটনা সার্থিনা সুহাত্মনা ॥ ১৪॥ পার্থস্ত কুত্বা পরমার্ঘাকর্মা, নিহত্য শতূন্ দ্বিষতাং নিহুন্তা। চকার বেণীক্ষ তথৈব ভূয়ো, ' জগ্রাহ রশ্মীন্ পুনরুত্তরস্যা। বিবৈশ হৃষ্টো নগরং মহাত্মা, র্হন্নলাৰপমুপেত্য সার্থিঃ॥ ৩৫॥ রৈশস্থায়ন উনাচ। ততো নিরুত্তাঃ কুরবঃ প্রভগ্ন। বশমাস্থিতাঃ। হস্তিনাপুরমুদ্দিশ্য সর্বে দীনা যযুস্তদা ॥ ১৬ ॥

পন্থানমুপদংগম্য ফাল্কনো-বাক্যমত্ত্রবীং ॥ ১৭ ॥

গোকুলানি মহাবাহো বীর গোপালকৈ: সহ॥ ১৮॥

রাজপুত্র প্রত্যবেক্ষ্য সমানীতানি সর্বশः।

দৈংহংধজং বিরাটীয়ং পূর্বস্তিত স্থাপিতং ॥১৩॥ নিধায় যথাবং স্থাপয়িত্বা ॥১৪॥ ১৫॥ বশং পরবস্তাং আস্থ্রিতাঃ প্রাপ্তাঃ ॥,১৬॥ ১৭ । ॥১৮॥

^{*} মায়ান্তরিতে তাত্ত মায়া বিহিতেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ততোহপরাত্নে যাস্যামো বিরাটনগরৎ প্রতি। আশ্বাস্য পার্যিত্বাপঃ প্রিপ্লাব্য চ বংজিনঃ ॥ ১৯॥ গল্পন্ত ত্রিতাশৈচব গোপালাঃ প্রেযিতান্ত্রুয়া। নগরে প্রিরমাখ্যাতুং ঘোষরস্তু চ তে জয়ম্॥ ২০॥ বৈশ্পায়ন উব্যুচ।

অথোত্তরস্তর্মাণঃ স দূতা,

नः जाशने कहना पर्ज्जनमा।

আচক্ষরং বিজয়ং পার্থিক্স্তর্,

ভগ্নাঃ পরে বিজিতাকৈর গাঁবঃ ॥ ২১॥

ইত্যেবন্তো ভারতমৎস্থপুজৌ,

সংমন্ত্রা সৎগম্য ততঃ শমীৎ তাম।

অভ্যেত্য ভূয়ে৷ বিজয়েন তৃপ্তা,

ুবুৎস্ফীনারোপয়তাং স্ব ভাওম্ । ২২ ॥

স শক্রসেনামভিভূয় সর্বা,

মাচ্ছিদ্য সর্বাঞ্চ ধনৎ করুভাঃ।

বৈরাটিরায়ানগরণ প্রতীতো,

রুহন্নলাসার্থিনৈক্বীরঃ॥২৩॥

ইতি বিরাটপারেণি গোহরণপর্বাণি উত্তরাগমনে

সপ্ত যফিতমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৭॥

'॥ ১৯॥ ২০॥ ২১॥ বিজয়েত তৃপ্তে ইতোপ্যধিকং যুদ্ধং প্রার্থনী বৃদ্ধা জয়েন স্বীয়েন তৃপ্তে আনন্দিনে স্বদ্যভাণ্ডং অলঙ্কারাদিকং যৎপূর্ব নুৎসৃষ্ঠং ভত্তথৈব শরীরে রণ্ণেচ্ আন্ধাণায়তাং আরোপিও বভৌ॥ ২২॥ বন্ধ গোধনং প্রতীতোহ্নষ্টঃ॥ ২৩॥

> ইতি বিরাটপর্বাণ নৈল্কগীয়ে ভারত ভাবদীপে সপ্ত-শ্বিতিমোহধ্যায়ঃ॥ ৬৭॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ধনঞাপি বিজিত্যাশু বিরাটো বাহিনীপতি:। বিবেশনগরং হৃষ্টশ্চ হর্ভিঃ পাপ্তবৈঃ সহ॥১॥ জিলা ত্রিগর্ভান সংগ্রামে গালৈবাদায় সর্ক্ষাঃ। অশোভত মহারাজ সহপার্থ: শ্রিয়া রতঃ ॥ ২॥ তমাসনগতং বীরং স্কুনাং প্রীতিবর্দ্ধনম। উপাসাংচক্রিরেদর্কে মহ পার্থিঃ পরন্তপাঃ॥ ७॥ উপতস্থঃ 🦠 প্রকৃত্য় সমস্তা ত্রান্সণৈঃ সহু 🖟 সভাজিতঃ সদৈনাস্ত প্রতিনন্দ্যাথ মৎসারীট্র ৪॥ বিদৰ্জনামান তদা দিজাংশ্চ প্রকৃতীস্তথা। ততঃ স রাজা মৎস্যানাং বিরাটো গাহিনীপতিঃ॥ ৫ ।। উত্তর< পরিপপ্রচ্ছ ক যাত ইতি চাত্রবীৎ। অ্ভখ্যস্তস্য তৎসর্বং 🕆 স্ত্রিয়ঃ ক্ন্যাশ্চ বেশ্মনি॥ ৬.॥ অন্তঃপুরচরাশৈতব কুঞ্জিতির্গোধনং হৃতম। বিজেত্মভিসংরক এক এবাতিসাইমাৎ। -বৃহ্নলাসহায়•চ নির্যাতঃ পৃথিবীঞ্জয়ঃ ॥ ৭ ॥ উপায়াতানতিরথান দ্রোণং শান্তনবং ক্লপম। कर्न पूर्वाप्तिन देशव टान शुक्त श्र पान् ॥ ৮॥

• দক্ষিণ গোগ্ৰহ রভান্ত মাহ ধনক্ষেতি॥১॥২॥৩॥সভাজিতঃ পূজিতঃ । ॥৪॥৫॥৬॥,৭॥৮॥

^{*} উপতস্থারিতাসা প্রাক্ উপাসামিতি চরণদ্বরং ক পুস্তকে নান্তি। শৃতংসর্ক মিতাত সংক্ষণ ইতি পাচঃ ক পুস্তকে।

বৈশস্থায়ন উবাচ।

রাজা বিরাটোঃখ ভূশাভিতপ্তঃ,

শ্রুতং হেকরথেন যাতম্। বুহন্নলাসারথিমাজিবর্দ্ধন^,

প্রোবাচ সর্বানথ মন্ত্রিমুখ্যান ॥ ৯ ॥ সর্বাথা কুরবস্তে হি যে চান্যে বস্তুধাধিপাঃ।
ত্রিগর্তালিজিতান শ্রুজা ন স্থাসান্তি কদাচন ॥ >০
তক্ষাদাচ্ছন্ত মে যোধা,বলেন নহতারতাঃ।
উত্তরম্য প্রীপ্রার্থক যে ত্রিগ্রেরিকিডাঃ ॥ >>॥
হয়াংশ্চ নাগাক্ষ রথাংশ্চ শীঘ্র,

পদাতিসংঘান্ পুরুষপ্রবীরান্। প্রস্থাপয়ামাস স্কুতস্য হেতো,

র্বিচিত্র * বস্ত্রাভরদোপপন্নান্ ॥ >২ ॥
এবং স রাজা মৎস্যানাং বিরাটো বাহিনী পতিঃ
ব্যাদিদেশাথ তাং ক্ষিপ্রং বাহিনীং চতুরঙ্গিনীম্ ॥ > ৩ ॥
কুমারমাশু জানীত যদি জীবতি বা ন বা ।
যস্য যন্তা গতঃ ষণ্ডো মন্যেহহ্ম স ন জীবতি ॥ >৪ ॥

ে বশন্পায়ন উবাচ ।

তমত্রবীদ্বর্শারাজো বিহ্ন্য,

বিরাটরাজন্ত ভূশাভিতপ্তম্। রহন্নলা সারথিশেন্বরেক্ত্র,

ণরে ন নেষ্যন্তি তরাদ্য গাস্তা: ॥ ১৫ ॥

11212062211261120112811201

[🌞] বক্ষেত্যত্র শব্রেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

সকান্ মহাপান্ সহিতাত্ কুৰংশ্চ,
তথৈব দেবাসুর নিদ্ধাকান্।
তলং বিজেতুং সময়ে স্তত্তে,
সুরক্ষিতঃ সার্থিনা হি তেন॥ ১৬॥

বৈশস্থায়ন উবাচ।

অথোত্তরেণ প্রহিতা দূতাতে শীঘ্রগামিন:।
বিরাটনগরং প্রাপ্য বিজয়ৎ সমরেদরন্ ॥ ১৭ ॥
রাজ্ঞন্তৎ সর্বামাচখাৌ মন্ত্রী বিজয়মুক্তমঁম্ । ১৮ ॥
পরাজয়ং কুরুণাঞ্চাপ্যপায়ান্ত> তথোত্তরমূ ॥ ১৮ ॥
সর্বা বিনিজি'তা গাবং কুরবশ্চ প্রাপ্তিতাঃ।
উত্তরঃ সহ স্থাতেন কুশলী তে পরিত্তপ্ ॥ ১৯ ॥

দিন্টা বিনিজি তা গারঃ কুরবশ্চ পঁলায়িতাঃ। নাছুত প্রেব মন্যেহহং যতে পুজেহিজয়ং কুরন্ । ২০॥ ধ্ব এব জয়স্তন্য যদ্য যন্তা বৃহন্না।

বৈশস্পায়ন উব্চ।

যুধিষ্ঠির উবাচ।

ততো বিরাটো নৃপতিঃ সংপ্রৃক্ষতনূর্করে ॥ ২১॥
শ্রুত্বা তু বিজয়ং তস্য কুমারস্যানিতৌজসঃ।
আচ্ছাদ্যিত্বা দূতাংস্তানান্ত্রিণ্ সোধভাচোদয়ৎ ॥ ২২॥
রাজমার্গাঃ ক্রিয়ন্তাং যে পতাকাভিরলক্তাঃ
পুপ্পোপহারেরস্ঠানা দেবভাশাধি দর্বশ ॥ ২৩॥

॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥ ১৯ ॥ ২০"॥ ২১ ॥ জীক্ছিণ্দরিস্থা । বক্সাদিভিরভ্যচর্ত্ত ॥ ২২ ॥ ২৩ ॥ কুমারা যোধস্থ্যাশ্চ গণিকাশ্চ স্বলঙ্ক তাঃ।
বাদিতাণি চ সর্বাণি প্রভ্যানান্ত স্তব্ধ মম ॥ ২৪॥
ঘণীবাঝানবঃ শীঘ্রং মন্তমারুহ্ম বারণম্।
শৃক্ষাটকেম্ব সর্বেম্ব সমাখ্যাভু জয়ং মম ॥ ২৫॥
উত্তরা চ কুমারীভিক্ষ্রীভিরভিন্নতা।
শৃক্ষার্বেশভিরণা প্রভ্যানাভু শ্বহন্নান্॥ ২৬॥
শ্রুত্বিত্তিনং নূপায়,

সর্বাৎ পুরং মুক্তিকপানি ভূতে। ভেষ্যান্চ ভূষ্যানি চ বারিজ্ঞান্ত,

বেশৈঃ পরার্জ্যৈঃ প্রমৃদাঃ শুভাশ্চ ॥২৭॥ তথিব স্থতিঃ সং মার্গ্রেশ্চন

नान्नोवानाः পণ্বাস্থাবানাঃ।

পুরাদ্বিধাটস্য মহবেলস্য, ন

প্রত্যুদ্বযুঃ পুত্রমন্ত বীর্য্যম্ ॥ ২৮ ॥

रेनमञ्जाशम छेनाह।

প্রস্থাপ্য সেনা> কন্যাশ্চ গণিকাশ্চ স্বলঙ্কৃতাঃ। মৎস্যরাজো মহারাজ্ঞঃ প্রহৃষ্ট ইদমব্রবীৎ॥২৯॥

, ॥ ২৪ ॥ শৃদ্ধতিকের চতুম্পথের শৃষ্ধতিকংদ্বারি কণ্টকেচ চতুম্পথে ইতি
,মেদিনী ॥ ২৫ ॥ শৃদ্ধারবেশা ভরণা নাট্যরম বেশাভরণা শৃদ্ধারঃ হ্বরেরে
'নাট্য ইতি, মেদিনী ॥ ২৬ ॥ স্বভিকেং, মন্দলা রার্তি কাদি দ্ধি দুর্ব্বাদি চ
পাণো যায় তৎস্বস্তিক পানি ভূতং ঋদিমৎ বারিজাঃ শংখাঃ ॥ ২৭ ॥
নান্দীবাদ্যাঃ মন্দলবাদ্যানি ভূগ্য বাদ্যা জয় ব্রাদ্যানি ॥ ২৮ ॥ ২৯ ॥

^{*} ব্রহরলামিতাত স্তৎ ম্মেতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

অকানাহর সৈরক্সি কক্ষ দ্যতং প্রবর্ত্তকাম।
তং তথাবাদিনং * হৃদ্দিন পাপ্তবং প্রত্যৈভাষত ॥ ৩০॥
ন দেবিতব্যং হৃষ্টেন কিতবেনেতি নঃ প্রত্যমু।
† স স্বসদ্য মুদা যুক্তো নাহন দেবিতুমুৎসহে।
প্রিয়ন্ত তে চিকীর্ষামি বর্ত্তহাং যদি সন্যসে॥ ৩১॥

বিরাট উবাচ।

স্ত্রিয়ো গাঝে হিরণ্যঞ্চ যচ্চান্যদ্বস্থ কিঞ্চন। ন মে কিঞ্জিন্তুরা রক্ষ্যমন্তরেণাপি দেবিতুক্ষ্যুত্ত ॥

কঙ্ক উবাচ।

কিন্তে দূতেন রাজেন্ত্র বহুদোবেল সান্দ।
দেবনে বহুবো দোষাস্তমান্তং পরিবর্জ রৈছে। ৩৩।
ক্রান্তাং বাদ বা দৃষ্টঃ পাগুবো বৈ যুবিষ্ঠিরঃ।
সংরাজ্যং স্থমহংক্ষীত্র ভাতুংশ তিদশোপমান। ৩৪।
দূতে † হারিতবান্ সার্মং তক্ষাদ্যতি ন রোচমে।
অথ বা মন্যানে রাজন্ দীবাবো যদি রোচতে। ৩৫।

रेगमञ्जातम छेता ।

প্রবর্ত্তমানে দূততে ভু মৎস্যঃ পাপ্তবসত্ত্রবীং। পশ্য পুজেন মে যুদ্ধে তাদৃশাঃ কুরবো জি্তাঃ॥ ৩৬॥

.॥ ৩০॥ হৃদ্ধেন জ্য়া দহ কিত্বেন ময়ান দেবিত্বা॥ ৩০॥ অভরেণ বিনা পিদৃতেং॥ ৩২,॥ ৩০ ॥ ৩৪॥ ৩৫॥, ৩৯॥

[া] হাত মিতাত দৃষ্ট্য ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

কু সহমদ্যমুদা মুক্ত ইতাত তংহামদ্যমুদাহুক্ত ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ই দৃতে ইতাত বাজামতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

তভোহত্রবীন্থলারালে ধর্মপুজাে মুথিকির । ব্রন্তনা যানা যন্তা † কণং ন স বিজেষাতে ॥ ৩৭॥
ইত্যুক্তঃ কুপিতাে রাজা মৎস্যঃ পাগুবমত্রবীৎ।
সমৎ পুজেল মে ষণ্ডশ ত্রন্ধবন্ধাে প্রশংসসি। ৩৮॥
বাচাবিচিঃ ন জানীষে ভূনৎ মামবমনাসে।
ভীন্মটোলমুখান সর্বানা কথৎ যণ্ডাে বিজেষাতে॥ ৩৯॥
ব্যুসাত্বাভূ তে ত্রন্ধানাং ক্রমণ ক্রমে।
নেদৃশন্তে পুনর্বাচাং যদি জীবেতুমিছিসি। ৪০॥

মুধিষ্ঠির উবাচ।

যত্র জোণস্তথা ভীমো জৌনিবৈকর্তনঃ কুপঃ।
ছুর্য্যোধনশ্চ রাজেন্দ্র তথৈবানো মহারথাঃ॥ ৪১॥
নরুদ্দানৈঃ পরিষ্ঠঃ সাক্ষাদিপি ** শতক্রতুঃ।
কোহন্যো বৃহন্নলাযাস্তান্ এতিমুধ্যেত সৃঙ্গতান্॥ ৪২॥ ।
যক্ত বাহুবলে তুল্যো ন ভূতো ন ভবিষ্যতি।
অতীব সমরং দৃষ্ট্যা হর্ষো যক্ষোপজারতে॥ ৪৩॥

॥ ৩৭॥ ব্ৰহ্মবন্ধে বিশ্বিম ॥ ৩৮॥ ৩৯॥ বরস্ত্রে স্থার্থ ॥ ৪০॥ ৪১॥ ॥ ৪২॥ ৪৩॥

ততে। ব্রবীয়ৎসা রাজং ধর্মা পুলে। যুধিষ্ঠির ইত্যত্র ততে। ব্রবীয়হায়া
নং স এনং রাজা মুধিষ্ঠির ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

^{&#}x27; † কখং নু স বিজেষাতে ইতাল কথং সমজারেদ্যুধীতি পাচঃ থ

[্]ৰ কথং বণ্ডোনিজেষাতে ইতাত্ৰ কন্মান্ত সাহিত্য প্ৰতি পাচিঃ খ প্ৰস্তুকে।

[🐃] শতক্রত্রিতাত্র মৰুৎপতি বিভি পাঠঃ খ গুন্তকে।

যো জয়েৎ সঙ্গতান্ সর্বান্ন স্থ্রাস্থ্রমহোরগান্। তাদৃশেন সহায়েন কথ ্ন স বিজেষ্টত ॥ ৪৪ ॥ বিষ্টি উবাচ।

ব্ছশঃ প্রতিসিদ্ধোহ্দি ন চ বাচং নিযক্ষসি। নিযন্তা চেল্ল বিদ্যৈত ন কশ্চিদ্ধর্ম্মাচরেৎ॥ ৪৫॥ বৈশ্পায়ন উবাচ।

ততঃ প্রকুপিতো রাজা ভমক্ষেণাহনদ্ট্য।
মুখে যুধিষ্ঠিরং কোপালৈরমিতোর ভূৎ গ্রন্॥ ৪৬॥
বলবৎ প্রতিভিন্নস্ত নস্তঃ শোন্তমাগতন্ত্র।
তনপ্রাপ্ত মহীশ পার্থা পোনিভামপ্রহান্তিরা ॥ ৪৭॥
তাবৈক্ষত স ধর্মাত্রা দৌপদীশ পার্ম্ম তঃ স্থিতাম।
সা জ্ঞাত্রা তমভিপ্রায়ং ভর্তুক্তিরবশারুগা॥ ৪৮॥
পাত্রং গৃহীত্বা সৌবর্ণং জলপূর্নম্নিক্তা।
তাজ্যেণিতং প্রত্যুক্তাৎ যথ প্রস্ত্রাব নস্ততঃ দা ॥ ৪৯॥
তাজ্যেণিতং প্রত্যুক্তাৎ যথ প্রস্ত্রাব নস্ততঃ দা ॥ ৪৯॥
তাজ্যেণিতং প্রত্যুক্তাৎ যথ প্রস্ত্রাব নস্ততঃ দা ॥ ৪৯॥
তাজ্যেণিতং প্রত্যুক্তাৎ গ্র প্রস্ত্রাব নস্ততঃ ॥ ৫০॥
সভাজ্যমানঃ পৌরক্ত স্রীভিজ্জানপদৈন্তদা।
আসাদ্য ভবন্দ্রেরং পিত্রে সংপ্রত্যবেদ্য়েৎ॥ ৫১॥

়॥ ৪৪॥ নিবচ্ছসি নিগৃহ্লাসি ।॥ ৪৫॥ নৈবং বাচামিতি ॥ ৪৬॥ নস্তঃ নাসিকাতঃ । ৪৭॥ ৪৮॥ নস্ততঃ নাসিকা নাডীতঃ তনোতি দেহং প্রথয়তীতি তচ্চকো নাডী বচনঃ পুরীততি শেতে ইত্যাদি প্রয়োগ দর্শনাৎ ॥ ৪৯॥ ৫০॥ ৫১॥

^{*} নম্ভত ইত্যত্ত পাণ্ডবাদিতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

ততা দাংস্থা প্রবিশ্ব বিরাটমিদমন্ত্রবীৎ।
রহনলাসহায়স্তে পুজো দ্বায়াস্তরঃ স্থিতঃ ॥ ৫২ ॥
ততো ক্রটো মৎস্তরাজঃ ক্ষস্তারমিদমন্ত্রবীৎ।
প্রবেশ্যতামুটোশীঘ্রং দর্শনেপ্রহণ তয়োঃ॥ ৫৩॥
ক্ষন্তারং ধর্মারাজস্ত সনৈঃ কর্ণ মুপাজপৎ।
উত্তরঃ শ্রবিশ্বেকো ন প্রবেশ্যা রহনলা॥ ৫৪॥
এঠস্ত হি মহাবাহো ত্রতমেতৎ সমাহিত্য।
যো মনাঙ্গে বাং কুর্য্যাক্টোনিতং,বাপি দর্শয়েৎ।
অন্ত সংগ্রামগতার স জীকেন্সংশয়য়॥ ৫৫॥
ন ম্ব্যাৎ ভূশসংকুদ্ধে! মাণ দুকৈব সশোনিত্য।
বিরাটনিহ সামাত্যং ইন্যাৎ সনলবাহনম্॥ ৫৬॥

বৈশস্পায়ন উবাচ।

ততো রাজ্ঞঃ স্বতো জ্যেষ্ঠঃ প্রাবিশ্ব পৃথিবীঞ্জয়ঃ।
সোহভিবাদ পিতুঃ পাদৌ । ধর্মরাজনপশ্যত ॥ ৫৭॥
ততো রুধির সংযুক্তমনেক্াগ্রমনাগসম্।
ভূমাবাসীনমেকান্তে সৈরজ্যা প্রভ্যুপস্থিতম্॥ ৫৮॥
ততঃ পপ্রচ্ছ পিতরং ত্বরমান ইবোত্তরঃ।
কেনায়ং তাড়িতো রাজন্ কেন পাপমিদং কৃতম্॥ ৫৯॥
বিরাট উবাচ।

ময়ায়৲ ভাড়িত জিকো ন চ†প্যেতাবদ≨তি। প্রশংস্থামানে যং শুরে ত্বয়ি মুঞ্ং প্রশ৲সতি ॥৬০,॥

।। ৫২। ৫০। কুকরাজঃ মুধিষ্ঠিরঃ কর্ণে কর্ণে উপাজয়ৎ উপাংশু উক্তবান্ ॥ ৫৪॥ ৫৫। ৫৬॥॥ ৫৭॥ অনেকাগ্রং ব্যগ্রং॥ ৫৮॥ ৫৯॥ ৬০॥

[🕸] ধর্মরাজ মপশাতে তাত্র কঙ্কং চাপ্যাপতিষ্ঠতেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

উত্তর উন্চ।

অকার্য্য তে কৃতং রাজুন্ কিপ্রমেধ্-প্রসাদ্যতাম্। মা ড্বাং ব্রহ্মবিষ ঘোরং সমূলমপি নির্দ্ধিং ॥ ৬১॥ বিশম্পায়ন উবাচ।

স পুজুসা বচং শ্রুবা বিরাটো রাষ্ট্রবর্জনং
ক্ষময়ামাস কৌরব্যং ভক্ষজ্ঞনমিবানলম্॥ ৬২ ॥
ক্ষময়াত্মন কালন্দ পা গুবং প্রত্যভাষত।
চিরং ক্ষান্তনিদং রাজন ন মনুম্ফিলিয়তে মৃম॥ ৬৩॥
বদি হোতৎ পতেদুমৌ ক্ষিরং মন নস্তভং ।
সরাষ্ট্রস্বং মহাবাহো বিনশ্যেথা ন সংশয়ং॥ ৬৪॥
ন দূষ্যামি তে রাজন্ যদৈ হন্যদিদৃশক্ষ্।
বলবন্তন প্রভুন রাজন্ ক্ষিপ্রক্ষামাপুষাৎ ॥ ৬৫॥
বলবন্তন প্রভুন রাজন্ ক্ষিপ্রক্ষামাপুষাৎ ॥ ৬৫॥

বৈশস্থায়ন উ্বচ।

শোণিতে তু ব্যতিক্রান্তে প্রবিবেশ রহন্নলা।
অভিবাদ্য বিরাটঞ্চ ক্ষ্ণোপ্যপতিষ্ঠত

ভঙ্গা
ক্ষাময়িত্বা চ কৌরব্য মন্তর্মান্ত্র্মান্ত্র্মান্ত্র্যা
প্রশাশংস ততো মংস্যঃ স্থা
ত্র্যা দায়াদ্বানন্মি কৈকেয়ীন্ন্বির্দ্ধন।
ত্রা মে সদৃশঃ পুজো ন ভূতো ন ভবিষ্যতি

ভঙ্গা মান্ত্র্যা স্থা

ভিত্যা স্থা

ভ্যা মান্ত্র্যা

ভ্যা

ভ্যা

॥ ৬১ ॥ ৬২ ॥ ৬৩ ॥ ৬৪ ॥ হে রাজন তেওে তৎকর্ম ন দ্যরামি যৎ অদ্যকং ।
পরাপবাদ হীনং হনা দন্যায়ি তৎ দ্যামিপ ন দ্যরামি যতঃ বলবতং ,
প্রভূথ ক্ষিপ্রথ শীত্রং দাক্তবং নৃশংসং কর্মপ্রাপ্রেরাদেবছটো দ্পাতি
ভূপ্তো ধর্মমতিক্রামতীতি স্ত্তেঃ কলয়ত মিতি পাঠে জানত্রদ্পি ॥ ৬৫ ॥
॥ ৬৬ ॥ ৬৭ ॥ দায়াদবান্ প্রত্রান্ ॥ ৬৮ ॥

পদং পদসহত্তেণ যশ্চরন্নাপরাধ্যাৎ।
তেন কর্নেন তে তাত কৃথমাদীৎ সমাগমঃ॥ ৬৯॥
মনুষ্যলোকে সকলে যমা তুলোন বিদ্যতে।
যঃ সমুদ্র ইবাক্ষেভাঃ কালাগ্নিরিব তুঃসহ।
* তেন ভীয়েন তে তাত কথমাদীৎ সমাগমঃ॥ ৭০॥
আচার্যো রুফিবীরাণাং কৌরবাণাঞ্চ যো ছিজঃ।
স্বৈক্ষিত্রস্য চাচার্যঃ স্বাধ্যস্ত্তাম্বরঃ।
তেন দ্রোণেন তে,তাক কথমাদীৎ সমাগমঃ॥ ৭১॥
আচার্যপুত্রায়ঃ শ্রঃ স্বাধ্যস্ত্তাম্বরঃ।
অপ্রথামেতি বিখ্যাতঃ কৃ কথং তেন সমাগমঃ॥ ৭২॥
রণে যং প্রেক্ষ্য সীদান্ত হৃত্তমা বণিজো যথা।
কুপেণ তেন তে তাত কথমাদীৎ সমাগমঃ॥ ৭৩॥

পদমিতি পদং বাণ নিশাত স্থানং পদ সহজেণ লক্ষা সহ আর্থং হেরথে তৃতীয়া সহস্তুক্ষ্যাণিবেদ্ধুমিতার্থঃ চরন্ বালৈঃ প্রচরন্ একম পিস্থানং নাপরাধ্যাং নরিক্তং কুর্যাৎ ধ্রাপল্লক্ষ্য সহস্তম্প্রশাং বালিক্ররে কমপিলক্ষাং নজহাদিতার্থঃ পদংপদ মিতিপাঠে সর্বাং পদং নাপরাধ্যাং সহজেণ চরন্নিতার্থাং পদ সহজো দেশেনেতি বোধাং সমাগমঃ সংগ্রামঃ । ৬৯॥ ৭০॥ ৭১॥ ৭২॥ হৃতস্বাঃ হৃতধনাঃ ব্লিজইন-সীদন্তি শ্রাইতিশেষঃ॥ ৭৩॥ •

^{*} তেনে তাস্য প্রাক্ যঃসমুদ্রেইবা ক্ষোভাঃ কালাগ্রিরিবজঃসহেতি পাঠঃ
কৈ পুস্তকৈ।

ণ কথং তেন, সমাগমইত্যত্ত তেনামীৎস্পরঃ কথমিতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

পর্বতং যোহভিবিধ্যেত রাজপুলো মদেষুভিঃ।
ছুর্যোধনেন তে তাত কথমাদীং সমাগ্রমঃ॥ দি৪॥
অবগাঢ়া দ্বিদ্যো মে স্থাথা বাতোহভিবাতি মাম।
যস্তং মে ধনমালৈনীঃ কুরুভিপ্রসাহবে॥ ৭৫॥
তেযাং ভয়াভিপরানা মর্কোষাং বলশালিনাং।
নূনং প্রকালা তান্ সর্কান্ ত্রা যুদ্ধে নর্বভান্।
আছিরং গোধনং সর্কাং শার্দ্ধ লানামিবামিষম্॥ ৭৬॥
ইতি বিরাটপ্রবিণি গোহরণ প্রবিণি থিকাটোভর সং-বাদে হৃতীষ্টিতমোহ্যায়ঃ॥ ৬৮॥

উত্তর উপাত।

ন স্য়া বিজিতা গাবো ন স্য়া বিজিতাঃ পরে।

* ক্তুপ্ত কর্মা তৎ স্কাণ, দেবপুজেন,কেন্চিৎ॥ ১॥

স হি ভীতং দ্রবন্তং মাং, দেবপুজো ন্যবারয়ং।

স চাতিঠদ্রবোপত্তে বজ্ঞাংহননো যুবা॥ ২॥

নিও ॥ অবগাদ্যে পরাভূতাঃ ॥ ৭৫ ॥ প্রকাল্য নির্জিত্য ॥ ৭৬ ॥ ইতি বিরাটপর্মানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভার্থদীপে অফ ষ্টিত্যোত্যায়ঃ ॥ ৬৮ ॥

ন হয়েতি॥১॥২॥

^{*} কৃতঞ্চ কর্ম তৎসর্ক মিতাত্র কৃতঃ তৎ সকলং,তেনেতি পাঠঃ খ প্তকে।

তেন তা বিজিতা গাঁঘস্তেন * তেঁ কুরবো জিতাঃ ৷ ত্য্য তৎ কর্ম ধীরস্য[']ৰ ময়া তাত তৎ ক্লুতম্॥ **৩**॥ স হি শারদ্বতং জোনং জোনপুত্রায় † বীর্যাবান্। স্তপুত্রপ ভীষাঞ্চকার বিমুখান্ শরৈঃ॥ ৪॥ ছুর্য্যোধন বিকর্ণি দ নাগমিব মূথপম্। প্ৰেম্মৱবীজীতং দেবপুলো মহাবলঃ॥ ৫॥ ন হাস্তিনপুরে তাণং তব পুশ্যামি কিঞ্চন। ব্যায়ামেন পরীপশুষু জীবিতং কৌরবাত্মত ॥ ৬ ॥ न भाकारम प्रनाशःखु ९ ताकन् यूथि मनः कूझ । পৃথিবীং ভোক্ষাদে জিন্থা হতো বা স্বর্গমাপ্সাসি॥ ৭॥ স নির্ত্তো নরব্যাছো মুঞ্দন্ ইজনিভাঞ্রান্। সচিবৈঃ সংর্তো রাজা রথে নাগইব শ্বসন্ । ৮ ॥ ত^ দৃষ্ট্রা রোমহর্ষোহভূদুক্ষকপশত মারিব। স তত্র সিংহসঙ্ক।শমনীক্র ব্যধমচ্ছটারং ॥ ৯ ॥ তৎপ্রপূদ্য রথানীকং সিশ্হসশ্হননে যুবা। कुबर्छान् अहमन्। जन् । वामारमा পाहतकारे ॥ ১०॥

॥৩॥৪॥৫॥ ব্যাষা মেন নিতাং দৈশান্তর সঞ্চারেণ এতেন স দেব পুত্রস্তেবাং অগ্রেপি নাশং করিবাতীতি স্থৃচিতং ॥৬॥৮॥৮॥ রোম সংযোজুলমেতি শেষঃ॥৯॥১০॥

^{*} তেন তে কুরবো জিতা ইতাত্র কুরব*চ পরাজিতা ইতি পাচঃ খ গ্রস্তকে।

[†] বীষ্যবীনিতাত্ত্ব হড়্থানিতি পাঠঃ খ প্রস্তকে। ্র বাসংখ্যপাহরদলীতাত্ত সংস্থিতান্ হুতবাসস ইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

একেন তেন বীরেণ ষভুথা: পরিনিজ্জিতা:।
শার্দ্দুলেনেব মন্তেন যথা বনচরা মৃগ্রা ॥ ১১॥
বিরাট উবাচ।

ক্ব স বীরো মহারাছর্দ্দেবপুজ্রো মহাবলঃ।
বো মে গোধনমাজৈষীৎ কুরুভিপ্র'ন্তমাহবে॥.১২;
ইচ্ছামি তমহং দ্রুফু মহিবলম্।
যেন মে স্বঞ্চ গাবিশ্চ রক্ষিতা দেবসুরুনা॥১৩॥
উদ্ভর উবাচ নি

অন্তর্জানং গতন্তত্ত দেবপুত্রঃ মহাবলঃ। স তু শ্বো বা পরশ্বো বা মন্যে প্রাঞ্জিবিয়াতি॥ ১৪॥ বৈশন্পায়ন উবাদ্।

এব্যাখ্যার মানং তং ছন্ন^ সত্তেণ পাপ্তবম্।
বর্গ তক কাজ্ঞাসীদ্বিরাটঃ * পার্থ মৃজ্জুনম্॥ ১৫॥
ততঃ পার্থে হভানুজ্ঞাতো বিরাটেন মহাল্মনা।
প্রদদৌ তানি বাসাংসি বিরাট ছহিছুঃ স্বয়ম্॥ ১৬॥
উপ্তরা তু মহা≨াণি বিবিধানি † নবানি চ।
প্রত্যগৃহ্ছাত্তঃ প্রীতা তানি বাসাংসি অন্মিনী॥ ১৭॥

॥ ५२ ॥ ५८ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ मर्जन बस्ट्रिस ॥ ५० ॥ ५० ॥

* পার্থমজ্জুনমি তান বাহিনীপতি রিতিপাচঃ খ পুতকে,।

† নবানীতাত্র তত্ত্বীতিপাচঃ খ পুতকে।

মন্ত্রিরা তু কৌতের উত্তরেণ রহস্তদা *।
ইতিকর্ত্রিরাণ শর্কাং বাজন্ পার্থে মুধিন্তিরে। ১৮॥
তত্ত্বথা তদ্বাদবাদ্বিপাবছরতর্বভঃ।
তহ্বপুত্রেণ মৎস্যাস্য সংগ্রহৃষ্টো নর্ব্রহ্ন। ১৯॥
ইতি বিরাটপর্কণি গোহরণপর্কণি বিরাটোভরসংবাদ্ একোন সপ্ততি ত্যোহ্ধ্যায়ঃ। ৬৯॥

সমাপ্তৃক্ষ গোহরণপর্ম।

অথ বৈবাৰ্হিকপৰ্বন । S ॥ বৈশুস্থায়ন উধার।

তত্তত্তীয়ে দিবদে জাতরঃ প্রশ্ব পাপ্তবাঃ।
স্নাতাঃ শুক্লায়রধরাঃ দানরে চরিতত্ততাঃ॥ >॥
যুধিন্দিরং পুরদ্ভা দকাভ্যাণভূষিতাঃ।
প্রতিপ্রা মুখা নাগা জাজীমান। মহারখাঃ॥ ২॥

মন্ত্রিরেতি রুধিন্তিরে রুধিন্তির বিষয়ে ইতি কর্ত্রতাং অগ্রেকর্মিন্তাং ভদাদনে রাজ উপবেশনাদি রূপাং ক্রিয়াং উত্রেণ সহমন্ত্রির। তথা যথামন্ত্রং তৎতাং বংদ্ধাদিত্বা ভ্রোরবলঃ হেরাজন্ জনমেজয়॥১৮॥ প্রস্থাতিত্ব রিতিশেষঃ॥১৯॥

> ইতি বিরাট পর্ব্ধনি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারত ভাবদীপে একে:ন সপ্ততি তম্পেক্ষপায় ॥ ৬৯ ॥

ं उउई उंग २॥२॥

^{*} রহস্তদা ইতাত্র মহাত্রনাই তি পাঠঃ খ পুস্তকে।

বিরাটিস্য সভাং গত্বা ভূমিপালাসনেম্বর।
নিষেত্বং পাবকপ্রথাঃ মর্কে বিফ্যেম্বিরায়ঃ ॥ ৩ ॥
তেষু তত্রোপবিষ্টেম্ব বিরাটঃ পৃথিবীপতিঃ ।
আজগাম সভাৎ কর্ত্বং রাজকার্যানি সর্কাশঃ ॥ ৪ ॥
শ্রীমতঃ পাগুবান দৃষ্ট্বা জলতঃ পাবকানিব ।
মুহূর্ত্তমিব চ ধ্যাত্বা সরোষঃ পৃথিবীপতিঃ ॥ ৫ ॥
অথ মৎস্যোহত্রবীৎ কঙ্কং দেবৰূপম্বস্থিতম্ ।
মরুলানৈরূপাসীনং ত্রিদশানামিবেশ্রম্ ॥ ৬ ॥
স কলাকাতিবাপস্তঃ সভাস্তারো ময়া রতঃ !
তথ রাজাসনে কম্মাত্রপবিষ্টস্ত লৃক্তঃ ॥ ৭ ॥
বৈশল্পানে উপাচা
পরিহাসেপ্রা বাক্যং বিরাট্গ্য নিশ্ব্য তৎ ।
স্মান্মানোহর্জুনো রাজন্নিং বচন্মত্রবীৎ ॥ ৮ ॥

্অর্জুন উবাচন।
ইন্দুস্যার্কাসনং রাজন্ম সারোচুম ईতি।
ব্রহ্মণাঃ প্রত্বাপ্ত্যানী যজ্ঞশীলো দৃতব্রতঃ ॥ ৯॥
এব বিগ্রহবান ধর্ম্ম এব বীর্যবেত ষরঃ।
এব বুদ্যাধিকো লোকে তপ্সাঞ্চ পরায়ণঃ ॥ ১০॥
% এষোহস্ত্রবিদ্বান সংগ্রামে ত্রৈলোক্যে সচারাচরে।
নৈব্যন্যঃ পুমান্ বেন্তি ন বেৎস্যতি কলাচন॥ ১১॥

ধিষ্টেয়ু আয়তনের ॥ ৪ ॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অক্ষাতিবাপঃ অকান্ অতি ৰপতীতি, তথাদূতেকারী ॥ ৭ ॥ পরিহাদেপার! সমিন্দোপালন্ত মপেক্ষা যদিরটিন্য বাকাং তল্লিশম্য ॥ ৮ ॥ ৯ ॥ ১০ ॥ ১১ ॥

^{*} এমে২স্ত্রবিদ্বান্ সংগ্রাধ্যে ইত্যত্ত এবৈস্ত্রিং বিবিধং বেক্তীতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

ন দৈবা নাস্থর।: কেচ্নি মনুষ্যা ন রাক্ষসাঃ। গল্পবিষক্ষপ্রবরাং,স কিন্ধুরা মহোরগাঃ॥ ১২॥ দীর্ঘদশী মহাতেজাং পৌরজানপদপ্রিয়ং। পাণ্ডবানামতিরথো যজা ধর্মপরো বশী॥ ২৩॥

মহর্ষিকপোরাজর্ষিঃ সর্বলোকেয়ু বিক্রতঃ।
বলবান্-প্রতিমান দক্ষঃ সত্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ।
ধনৈক পঞ্চবৈশ্বের শক্রাব্রেরবাণাপমঃ॥১৪॥
যথা মরুর্মহাতেজা লোকানাং পরিরক্ষিতা।
এবমেষ মহাতেজাঃ প্রজানুগ্রহ্কারকঃ॥১৫॥
আয়ঃ কুরণাম্যভঃ কুন্তীপুজ্রো যুধিন্তিরঃ।
আসা লোকে স্থিতা কীর্ত্তিঃ স্থ্যসোব দিবি প্রভা॥১৬॥
সংসরন্তি দিশঃ সর্বাঃ যশসোইস্য ইবাংশবঃ।
উদিতদেশে স্থ্যসা তেজসোই কুগভন্তয়ঃ॥১৭॥
এনং দশ সহুত্রানি কুপ্ররাণাং তর্ম্বিনাম্।
আর্ম্যু পৃষ্ঠতো রাজন্ যাবদধ্যাবস্থ কুরন্ম।১৮॥
বিংশদেবং সহত্রানি রথাঃ কাঞ্চনমালিনঃ।
সদক্ষ্রেপ্যংপলাঃ পৃষ্ঠতোই মুয্যু সদা॥১৯॥
এনমন্টশ্রাঃ স্তাঃ স্থ্যিসনিকুগুলাঃ।
আব্রের্বাণিধাঃ সার্দ্ধং পুরা শক্রমিবর্ষয়ঃ॥২০॥

^{ি।} ১২ ॥ ১৯ ॥ ১৪ ॥ ১৫ ॥ ১৬ ॥ অসাইবেতাত্ত্র সন্ধি রবিবক্ষিতঃ উপমের দ্বংস্যো পদ্ধান স্চনং একেন[পি ইবশব্দেন কবিতি তথাপ্যত্র স্পষ্টার্থং পুনরিব গ্রহণং ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥ ১৯ ॥ অক্রবন্ অস্তুবন্ ॥ ২০ ॥

এন< নিত্যমুপাসন্ত কুর[্] কিঙ্করা **য**থা। সর্কোচ রাজন্র জোনো, ধনেশ্রমিব্সমরঃ ॥ ২১ ॥ এষ সর্বামহীপালান * করমাহারযন্তদা। বৈশ্যানিব মহারাজো বিবশান্ স্বৰণানপি॥ ২২। অফাশীতিসহত্র। বি স্নাতকানাং মহাত্মনাম্। উপজীবন্তি রাজানমেন**ু সু**চরিতব্রতম্ । ২০ । এষ বৃদ্ধাননাথা শচ পঙ্গুনন্ধাংশ মান্বান্। পুত্রবৎ পালয়ামাস প্রজাধর্মেন বৈশিছু: ॥ २८॥ এষ ধর্ম্মে দমে চৈব কোষে চাপি জিতাবঁতঃ। মহাপ্রেসাদে। ত্রহ্মণাঃ সত্যবাদী চ পার্থিবঃ॥ ২৫॥ † শীঘ্রংতাপেন চৈবাদ্য তপাতে গ শ্বযোধনঃ। স্বাণঃ সহ কর্নেন সৌবলেন ভ'থা বিভো॥ ২৬॥ নশকান্তেই সাচ গুণাঃ প্রসংখ্যাতুং নরেশ্বর। এষ ধর্মপরে। নিত্যখন্ শসক পাপ্তবः ॥ ২৭॥ এবং যুক্তো মহারাজ পুণ্ডেবঃ পুরুষর্বভ:। ক্থ্ম নাইতি রাজাইমাসনং পৃথিবীপতিঃ॥ ২৮॥ ইতি বিরাটপর্বাণি বৈবাহিকপর্বাণি পাগুবপ্রকাশে সপ্ততি তমোহধার:। १०॥

২১॥ ২২॥ ২০॥ ২৪॥ ২৫॥ শীব্রং তীব্রং ॥ ২৬॥ ২৭॥ ২৮॥ ইতি বিরাটপর্বানি নৈলকণ্ঠীয়ে ভারতভাবদীপে সপ্ততি তমেহিধ্যায় ৪৭০॥

করমাহারয়ন্তদা ইন্তাল্লকরদান্ সমকার য়িদতি পাঠঃ এ পুস্তকে।
 ক শীঘং তাপেনেতাল লীপ্রতাপেনেতি পাঠঃ ক পুস্তকে।

বিরাট উন্নাচ।

যদ্যেষ রাজা কৌরব্যঃ, কুন্তী পুজো, যুধিষ্ঠিরঃ। কতমোৎস্যার্জ্জুনো ভ্রাতা ভীমশ্চ কতমো বলী॥ ১॥ নকুলঃ সহদেবশ্চ দ্রৌপদী বা যশস্থিনী। যদা দ্যুত্জিতাঃ পার্থান প্রজ্ঞাযন্ত তেক্কচিৎ ॥ ২॥

অৰ্জ্জন উবাচ। যঁ এষ বল্লে ক্রেড সুন্তব্নরাধিপ। এষ ভীমো মহাবাছ ইমিবেগপর ক্রেম:॥ ৪॥ এষ ক্রোধবশান হত্ত্বা পর্বেষ্টে গল্পমাদনে। সৌগল্পিকানি দিব্যানি রুখ্ণর্থে সমুপাছরৎ ॥ ৪॥ भक्तर्सं अव देव इन्छ। की हे का नृष्ट हू दा ज्ञानाय । বাছানৃক্ষান্ বরাহাং क হতবান্ স্ত্রীপুরে তব ॥৫॥ यन्हार्भी नश्चरकारख नकूला १ यः পর छ ।। লোসংখ্যঃ সহদেব চ মন্ত্রীপুত্রৌ মহাবলৌ ॥ ৬॥ শৃঙ্গারবেশাভরণৌ ৰূপবস্তৌ যশস্থিনৌ! মহারথসহস্রাণাং সমথৌ ভরতর্ষভৌ ॥ ৭ ॥ এষা পদাপলাশাকী স্থমধা চারুহাসিনী। দৈরস্থ্রী দ্রৌপদী রাজন্ যৎক্ততে কীচকাহতাঃ । ৮॥ অর্জ্রনাহহং মহারাজ রাক্তং তে তোত্রমাগতঃ। ভীমাদবরজঃ পার্থো যমাভ্যামপি পূর্বেজঃ॥ ৯॥ উষিতাঃ স্মোমহারাজ, স্কুখণ তব নিবেশনে। অজ্ঞাতবাসং নিহিতা গর্ৱবাস ইব প্রজাঃ । ১০ ।

यमी जि ॥ २ ॥ ० ॥ ८ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ० ॥ ० ॥

रेतमान्याक्रम छेताता.

यमार्क्क् नित তে বীরাঃ ক্থিতাঃ পাঞ্পাঞ্বাঃ।
তদার্ক্নস্য বৈরাটিঃ কথ্যামাস্বিক্রমং॥ ১১॥
পূন্রেব তু তান্ পার্থান্ দর্শ্যামাস চেত্রেঃ॥১২॥
উত্তর উবাঃ।

य এष जात्रु नम खक्राशीत,

তমুর্মাই।সিংহ ইব প্রবৃদ্ধঃ।

व्यव खरवानः भृश्रुनोर्घरनज्ञ,

স্তামায়তাস্যঃ কুরুরাজ এবঃ ॥ ১৩না

অষং পুনর্মাত্তগজেন্দ্রগামী,

প্রতপ্ত গোকর শুদ্ধগোরঃ 🚶 👌

.পৃথ্বতাংসো গুরুদীর্ঘবাহু,

র্ক্তোদরঃ পশ্যত পশ্যতৈন্যু॥ ১৪॥

্যত্ত্বে পাথে হিষ্য মহাধনুষান্,

भारमा यूवा वात्रव्यूथरभाभरीः।

मि~ (श्रेन जा॰ तमा * भ करें ता जगा भी, '

' পদাযতাক্ষেত্র জ্জুন এয বীরঃ॥ ১৫॥

় রাজ্ঞ সমীপে পুরুষে।ত্তমৌব্রা,

বেতৌ যমৌ বিষ্ণু সহেন্দ্রকণ্পৌ। মনুষ্যলোকে সকলে সমোহস্তি, '

यायार्म काल न † याल न भी तल ॥ १७॥

॥ ১১॥ ১২॥ প্রত্তীবাণঃ পৃথুনাসিকঃ গোণী কর্রেভাপি॥ ১০॥ ১৪॥

* গজ রাজ গামীতান্ত্র গজখেল গামীতি পাঠঃ খ পুরুকে। কবলে ইত্যত্র কুলে ইতিপঠঃ কপুন্তকৈ। আভ্যান্ত পাথে কনকোত্তমাঞ্জী বৈষা প্রভা মুর্ত্তীর্মন্তীব গৌরী। নীলোৎপল।ভা * পুরদেবতেব,

'ক্লফা স্থিতা মূৰ্ত্তীমতীব লক্ষীঃ॥ ১৭॥

বৈশপায়ন উপাচ।

এবং মিবেদ্তান পার্থান্ পাওবান্পঞ্চ ভূপতে ।। ততে। হৰ্জুনগ্য বৈরাটিঃ, কথ্যামাস বিক্রমম্ ১৮।

ভ্রতির উবাচ। ভ্রমণ স হিষ্ট প্রতিষ্ঠান হৈ স্থানামিব কেশরী। ব্যুহরদ্রথর্ন্দেষু নিল্পস্তাঃস্তান্ বরান্ রথ'ন্ । ১১ ॥ অনের বিদ্ধো মাতঙ্গে। মহানেকেষুণা হতঃ। হিরণাককাঃ সং প্রামেন্ত্রভামগমন্তীমৃ॥ ২০॥ অনেন বৈজিতা গাবে। জিতা শুকুরবে। যুধি। অস্য শত্থপ্রণাদেন কণৌ, মে বধিরীক্লুতৌ ॥ ২> ॥ বৈশিষ্পায়ন উপচ।

তস্য তদ্বচনং প্রত্থা মৎস্যাক্ষ প্রতাপবান্। উত্তরং প্রত্যুবাচেদং অভিপন্নো যুধিষ্ঠিরে॥ ২২॥ थमानन भा खनमा । था खना न १ इ ता हर । উত্তরাঞ্ব প্রদাস্থামি পার্থায় যদি তে মতমু ॥ ২৩॥

্। ১৭॥ ১৮॥ ১৯॥ ২০২১॥ অভিপল্লোই পরাধং কৃতবান্॥২২॥

^{, *} পুরদেবতা ইত্যবস্থাদেবতা ইতিপাঠঃ খপুস্তকে। 🕆 উত্তরউবাচ ইতা সাপ্রাক্ম্ছেল্ড কম্পাসা তদাসং প্রহাষ্টতন্ত্রহঃ ইতি পাঠঃ ক গুন্তকে।

উত্তর*উবাচ ৷

আর্যাঃ পূজাশ্চ মান্যাক্ষ প্রাপ্তকালপ্প মে মত্য্। পূজান্তাং পূজনার্হাশ্চ মহাভাগাশ্চ পাওবাং॥ ২৪॥
বিরাট উবার।

অহং থল্প সন প্রামে শত্রণন বশমাগতঃ।
রিক্ষিতো ভীমদেনেন গাবশ্চাপি জিতান্তথা ২৫।
এতেষাং বাছবীর্যোণ অন্মাকন বিজয়োম্বে॥
বয়ন সর্বে সহামাত্যাঃ কুন্তিপুত্রন যুথিন্তিবৃদ্।
প্রসাদ্যামো ভদ্রং তে সানুজন পা গুরম্বভন্ম ২৬॥
যদস্মাভিরজানভিঃ কিঞ্চিত্রো ন্যাধিপঃ।
ক্রমেইতি তৎ সর্বাং ধর্মালা হেম পাঁগুবঃ॥ ২৭
বৈশশ্যান উবাচশ

ত্যুতা বিরাটঃ পরমপ্রক্ষটঃ।

সমেত্য রাজ্ঞা পম্মুৎ চকার;
রাজ্যঞ্চ সর্বাৎ বিসমর্জ তুলৈ,
সদগুকোরৎ * সপুরং মহাত্মা॥ ২৮॥
পাণ্ডবাং স্তু ততঃ সর্বান্ মহদ্যরাজঃ প্রতাপবান্।
ধনঞ্জযং পুরস্কৃত্য দিন্ট্যা দিন্ট্যেতি চাত্রবীং॥ ২৯॥
সমুপান্দ্রায় মূর্জানৎ সং শ্লিষ্য চ পুনঃ পুনঃ।
ঘধিষ্টিরঞ্চ ভীমঞ্চ মাদ্রীপুত্রো চ পাণ্ডবৌ॥ ৩০॥

॥ २८ ॥ २८ ॥ २५ ॥ २५ ॥ मर्पाणा श्रूर्टिन मङ्गंभातः निम्हतः हक्तंत्रिममङ्ख मटनो ॥ २৮ ॥ २৯ ॥ ७० ॥

[🤻] কোষমিতাত্র কোশমিতিতাল ব্যান্ত পাঠঃ খ গস্তকে।

নাতৃপাদ্দর্শনে তেষাং বিরাটো বাহিনীপতিঃ!
স প্রীয়নাণো রাজানং মুধিন্তিরমথান্তবীৎ॥ ৩১॥
দিন্ত্যা ভবন্তঃ সংপ্রাপ্তাঃ সর্বের কুশলিনো বনাৎ।
দিন্ত্যা চ পালিত কুচ্ছু সজ্ঞাতং বৈ তুরাত্মভিঃ॥ ৩২॥
ইদং চ রাজ্যং পার্থায় যক্ষানাদপি কিঞ্চন।
* প্রক্রিয় প্রতিগৃহাতু সব্যাচী ধনপ্তায়ঃ।
ভাষাং প্রৌ প্রিকো ভর্মীতস্যাঃ পুরুষসন্তমঃ॥ ৩৪॥
এবমুক্রো ধন্মরাজঃ পার্থমিক্ষালনপ্তায়।
ক্রিকেশ্চার্জ্রনো ভাত্রা মুংসু বচনমন্তবীৎ॥ ৩৫॥
প্রতিগৃহামাহমিমা স্মানী বিং ত্রুহিতর তব।

া যুক্ত এবাবযোরেষ সম্বন্ধঃ কুরুমৎস্যযোঃ॥ ৩৬॥
ইতি বিরাটপর্বিণি বৈবাহিকপ্র্বেণি উত্তরাবিবাহ প্রস্তানে
এক সপ্ততিত্বমোহ্য্যায় ॥ ৭১॥

* প্রতি, গৃহ্ণন্তু তৎসর্বং প্রতিব। অবিশঙ্কা ইত্যক্ত যাত বন্ধ্যমি তৎ কার্যামর্জনেনাবিশঙ্করা ইতি পাঠিঃ ক পুস্তকে। † যুক্ত এবা ব্যোৱেষ সম্বন্ধঃ কুঞ্মৎসায়ে।বিত্যুক্ত যুক্তশ্বাংছি সম্বন্ধো মৎস্যভারতবোর পীতি পাঠঃ থ পুস্তকে। বিরাষ্ট উবাচ্য। ,
কিমর্থং পাণ্ডবশ্রেষ্ঠ ভার্য্যাং তুহিতরং মম।
প্রতিগ্রহীতুং নেমাং ত্বং মধা দক্তামিহেচ্ছসি॥ ১॥
স্বর্জন উবাচ।

অন্তঃপুরেহ হয়ুষিতঃ সদা পশ্যন্ স্থতাং তব।
রহস্যঞ্চ প্রকাশঞ্চ বিশ্বস্তা-পিতৃবয়ি ॥ ২ ॥
প্রিয়ো বছমতশ্চাসন নর্তকো গীতফোবিদঃ।
আচার্যবচ্চ মাং নিতাং মন্যতে তুলিতা তব ॥ ০ ॥
ক্ষুষ্যা তয়া রাজন্ সহ সংক্ষ সরে। বিভা ॥
তন্মানিমন্ত্রযেহ হতে তুহিতান মন্তুলাবিপ। ৪
শুনো জিতেক্রিযো দান্তস্তস্যাঃ শুক্তিঃ কৃতা মযা॥ ৫ ॥
ক্ষুষ্যাং তুহিতরিবাপুত্রে চাল্লানিবা পুনঃ।
ক্ষুষ্যাং তুহিতরিবাপুত্রে চাল্লানিবা পুনঃ।
ক্ষুষ্যাং তুহিতরিবাপুত্রে চাল্লানিবা পুনঃ।
ক্ষুষ্যাং হুহিতরিবাপুত্র চাল্লানিবা পুনঃ।
ক্ষুষ্যাং হুহিতরিবাপুত্র চাল্লানিবাতি ॥ ৬ ॥
অভিশাপাদহং ভীতো মিথ্যাবাদাৎ পরন্তপ।
স্বার্যমুক্তরাং রাজন্ প্রতিগ্রহামি তেম্বতাম্॥ ৭ ॥

ি কমর্থমিতি ॥ ১ ॥ ২ ॥ ৩ ॥ যা শঙ্কা ভবেৎ সাস্থানে উচিতা অয়মহং
তে তক ছহিতাং নিমন্ত্রয়ে সুষারেন যাচে ছহিতা ছহিতা দুরে হিতে
তিয়াক্ষেন্টনিকজন্বং বর্ণ বিকারেণ ছহিতাশন আকারাতে পান্তি॥ ৪ ॥

• এবঞ্চ সুষারেন এনাং বর্য়তো মের্মাচর্যা শুদ্ধিরপি ভবিষ্যতীত্যাহ

শুদ্ধ ইতি॥ ৫ ॥ ৬ ॥ অতিশাপাং ব্লিফার্টার্থে প্রতিপ্রহে ২ নয়োঃ প্রাণে সম্ম আনীদিতি কপ্রতোলোকস্য ছুর্কাক্য ভয়াং॥ ৭ ॥

^{*} বয়স্থা তথা বাজন সহসংবংস্বোষিত ইত্যত্ত বয়স্থা) তয়ারাজ লহং সম্বংস্বোষিত ইতি পাঠিঃ ক পুস্তকে।

ষ্ঠ্ প্রীয়ো বাস্থদেবস্য সাক্ষাদেবলিশুর্যথা। দরিতশ্চক্রহস্তস্য # বাল এবাস্ত্রকোবিদঃ ॥ ৮॥ অভিমন্মার্মহারাজ মম পুজো বিশাম্পতে। জামাতা তব যুক্তোহমৌ ভর্তা চ ছহিতুম্বব॥ ৯॥

বিরাট উবাচ।

উপপন ' কুরু শ্রেষ্ঠে কুন্তীপুত্রে ধনঞ্জযে।
য এব ধর্মানিষ্ঠ শ্চ জাতজ্ঞানশ্চ পাশুবং ॥ ১০॥
যৎ কুত্যং মন্যদে পুর্থ কৈয়তাং তেদনন্তরম্।
সর্বে কামাঃ সঠুদ্ধা মে সম্বন্ধী যদ্য চার্জ্জুনঃ ॥ ১১॥

द्वम् भारतम छेवाह।

এবং ক্রবতি রাজেন্দ্রে কুন্তীপুর্ত্তো যুধিষ্ঠিরঃ।
অন্তল্যান্ত্র সমং যোগং সমযে মৎস্যপার্থযোঃ॥ ১২॥
ততাে মিত্রেষ্ব সর্বেষ্কু † বৃদ্ধিদেবে চ পার্থিবঃ।
প্রেষধামাস কৌন্তেযাে বিরাইশ্চ মহীপতিঃ॥ ১৩॥
ততক্রযোদশে বর্ষে নির্ত্তেত্র পাপ্তবাঃ।
উপপ্লবাং বিরাইস্য সমপদ্যন্ত স্বশাঃ॥ ১৪॥

॥৮॥৯॥১০॥১১॥ অথশাসৎ আজ্ঞাপিতবান্ সংবোগং বিবাহ সম্বন্ধ "১২॥ প্রেষয়। মাস আহ্বানার্থং দুতানিতিশেষঃ॥১০॥উপপ্লব্যং বিরাট নগ্র সমীপস্থ নগরান্তরং॥১৪॥

^{*} বাল এখান্ত্রকোবিদ ইত্যত্ত্ব সর্ব্বান্তেমুচকোবিদ ইতি পাঁঠঃ থ পুস্তকে।

ক বাস্থদেবে চ পার্থিব ইত্যত্ত্ব বাস্থদেবঞ্চ ভারতেতি পাঠঃ থ পুস্তকে।

🐡 তিমান বসন্ স বীভৎস্কুরারিনায জনার্দ্দনম্। আনত্তেভ্যোহি দাশাধানভিমন্যুঞ্পাপ্তবং॥ ১৫॥ काश्विताक रु देगवार श्रीयमार्ग युविष्ठिरत । অকৌহিণীভ্যা^ সহিতাবাগতৌ পৃথিবীপতী॥১৬॥ অকৌহিণ্যা চ †তেজস্বী যজ্ঞসেনো মহাবলঃ! দৌপদ্যাশ্চ স্থতা বীরাঃ শিখণ্ডী চাপরাজিতঃ। ধৃউচুয়েশ্চ চুধৰ্ষঃ সৰ্কশিস্ত্ৰভূতায়রঃ য় ১৭ ॥ मप्रखारकोहिनीभाना यजारना जुतिर्द्धिकनाः। বেদাধ্যরনসম্পন্নাঃ সর্কে শূরী সমুত্যজন ি দ্ব ॥ তানাগতানভিপ্রেক্ষ্য মৎস্যো ধ্রুফুতাম্বর :। পূজযামাদ বিধিবৎ সভ্ত্যবল্বাহন্দ্ৰ। প্রীত্যেহভবদ হিতরং দন্ত্য ভাষভিষন্যবে ॥ ততঃ প্রত্যুপষাতেষু পার্থিবেষু ত্তুন্ততঃ ॥ ২০॥ তত্রাগচ্ছবাস্থদেবো খনমালীহলাযুধঃ॥ ক্লতবর্মা চ হার্দ্দিক্যোসুযুধানশ্চসাত্যকিঃ। ২১॥ অনাধ্রফিন্তথাক্রেরঃ শাস্থে নিশঠ এব চ। অভিমন্ত্রসুপাদায়নহমাতা পরন্তপাঃ ॥ ২২ ॥

॥ ১৫॥ ১৬॥ ১৭॥ दिन्धियन मण्यास इंड्याल পाठ्य ॥ ১৮ ॥ ১৯॥ ॥ २०॥ २०॥ २२॥

^{*} তন্মিন্ বসন্ স বীভংস্বিত্য অভিমন্থ বীভং স্বিতি পাচঃ খ পুস্তকে।

ণ তেজস্বীতা ত্রসহিতঃইতি পাঠঃ খ পুস্তকে।

হিন্দ্রদেনদেষদৈতের রথৈতৈঃ স্কুদ্রনাহিতৈঃ। ভাষেয়ুঃ সহিকাঃ সর্বে পরিসম্বৎসরোষিতাঃ ॥ ২৩॥ দশনাগসহস্রাণি রথানাঞ্জ তথাযুত্যু! ह्यानां प्रस्तु पर भूवं निश्चर्यक भवाजिनाम्॥ २८॥ বৃষ্ণাক্ষকাশ্চ শতশো ভোজাশ্চ পরমৌজসঃ। जनयूक् किनाक नः वास्रातवः जनाकनम् ॥ २०॥ श्वातिपर्देश मध्मोक्रिकः शृक्षवानात्र महाज्ञनाम् । জ্রিরে। রত্নানি বাফ্লাং ট্রাপৃথক্পূথ্যনেকশং ॥ ততো বিবাহে∤, বিশি⊲দ্বর্ধে শ্লংস্যপার্থযোঃ॥ ২৬॥ ত্যিঃ শঙ্খাশ্চ ভের্যাশ্চ পুর্বুলকগোমুখাঃ। পার্টর্থ:সংযুজ্যমানদা নেন্দ্রর্ন্মহদ্যদ্য বেশ্বানি ॥ ২৭ ॥ উচ্চবেচান মৃগান্ জন্মু শৌধ্যা শত শতশঃ পশ্ন। স্থরটিমরেয়পানানি প্রভূতুন্ত্রভারয়ন্। ২৮॥ গায়নাখ্যানশীলাশ্চ নটা বৈতালিকান্ত্রধা। স্তবত্ত নামুপাতিষ্ঠন স্থতা দুট সহ মাগ্ধৈঃ ॥ ২৯ ॥ स्राप्तकाक श्रुतकृत्य महमानि। क वर्तास्त्रके । আজগা, শ্চারুসকাঙ্গাঃ স্থয়উমণিকু ওলা॥ ৩০॥ বৰ্ণোপপন্নাস্তা নাৰ্যো ৰূপবতাঃ খলস্কৃতাঃ। সৰ্ব্বাশ্চাভ্যভবৎ কৃষ্ণা ৰূপেণ যশসা প্ৰিয়া॥ ৩১॥

॥২৩॥২৪,॥২৫॥২৬॥২৭॥ স্বা নানা দ্রব্যসার রূপং মদ্যং মেরেয়ং বুক্ষ বসরূপং মদ্যং॥ ২৮ ॥ ২১॥ ৩ ॥ অভ্যভ্রন্ অভিভূতাঃ ॥৩১॥ পরিবার্যোত্তর তান্ত রাজপুত্রীমলস্কুরাম্। প্রতামির মহেন্দ্রস্থারস্কৃত্যোপতস্থিরে । ৩২॥ তা॰ প্রত্যসূহ্রত কৌন্তেষঃ স্কুত্রস্যার্থে ধনপ্রয়ঃ। সৌভদ্রস্যানবদ্যান্ত্রীং বিরাটতনযাং তদা।। ৩৩।। ততাতিষ্ঠন হাজ। রূপমিন্দ্র স্থার্যন্। স্যাং তাং প্রতিজ্ঞাহ কুন্তীপুজো যুধিষ্ঠির:॥ ৩৪ । প্রতিগৃহ তু তাৎ পার্যঃ পুরস্তা জন দিন্য। বিবাহণ কার্যামাস সৌভ্দুস্য মহাত্রিঃ ॥ ৩৫ । **७८ेगा मश्र महञ्जानि इयानाः व्यक्तिः इमार्गः (** ৰে চ নাগশতে মুখ্যে প্ৰাদাৰ্ছধ ব্ৰ্তথা । ৩৬ ॥ छ्या मगुक् मिक्याश्चम्छियद्वाः विक्रित्रेनः । ताका ~ वलक टकायक मर्स्याचा निरंगवह॥ ७०॥ #ক্তুতে থিবাহে তু তদা ধর্মপুত্রো মুধিষ্ঠিরঃ। ব্রাহ্মণেভ্যো দদে বিবীতং যতুপাহরদ্যুতঃ। ৩৮। গোসহসু। বি র্জানি বাসা প্রিবিধানি চ। ভূষণানি চমুখ্যানি বানানি শ্যনানি চ। ৩৯ ॥

়া ৩২॥৩০॥৩৪॥৩৫॥ ৩৬॥ আত্মানমেবচ প্রাদাদিতি পূর্বেবিধার্যঃ ॥ ৩৭॥৩৮॥৩়১॥

^{*} কৃতে বিবাহে ইতাদাপাক নাবেদন্ৎ পাওবেভা। বিরাট প্রতি
মাংস্তদাইতি পাঠঃ ক প্রস্তক।

ভাজনানি চ হৃদ্যানিপানানিবিধিধানিচ তন্মহোৎসবসধ্বশ । ইন্টপুষ্টজনাকুলম। নগরং মৎস্যরাজম্য শুশুভে ভরতর্ষভ॥ ৪০॥

ইতি শ্রীমহাভারতেশতসাহস্ত্যাৎ সংহিতামাৎ বৈয়াসিক্যাং ুবিরাটপর্বাণি বৈবাহ্কিপর্বাণ উত্তরাবিবাহে দিসপ্ততিত্বোহধ্যায়ঃ॥ ৭২॥

> সমাপ্তং বৈবাহিকপর্ব। সুমুঠি হিরাটপর্ব।

1 80 1

ইত্রি এমং পদ বাকা প্রমাণ মর্যাদা ধুরন্তর চতুধর বংশাবতংশগোবিন্দ । । ব. স্থারস্নো নীলকণ্ঠস্যা কুট্টো ভারতভাবদীপে বিরাটপর্কার্থ 🛝 ় প্রকাশে দ্বিসন্তি তিমাই শাসং ॥ ৭২॥

> সমাপ্তেয়ং বিরাটপর্কটীক।। শকাকাঃ ১৮০০

শ্রীযুক্ত উমেশচূদ্রে নিয়ারত্ব ভট্টাচার্রোন সংশোধিত্য প্রকাশিত্য সর্বাৎ পর্যাবেক্ষিতঞ্চ।